नालाल बजाज ग्रंथ-माला : बीसवां ग्रंथ

जमनालाल बजाज की डायरी

(१ जनवरी, १९४० से १० फरवरी

छठा खण्ड

•

भूमिका-लेखक
काकासाहेब कालेलकर

•

सम्पादक
रामकृष्ण बजाज

•

१९८७
स्ता साहित्य मण्डल प्रकाशन

सम्पादकीय

पूज्य काकाजी की डायरियों के इस छठे, अन्तिम, भाग के प्रकाशन में पर्याप्त विलम्ब हो गया, इसका हमें दुख है। इस बीच श्री मार्तण्ड उपाध्याय का निधन हो गया। उन्होंने डायरी के सभी भागों के संपादन में विशेष योगदान दिया था। उनके निधन के कारण भी डायरी के इस भाग का प्रकाशन कुछ पिछड़ गया।

पांचवें भाग में ३१ दिसम्बर, १६३६ तक की डायरी आ गई थी। इस भाग में डायरी का आरंभ १ जनवरी, १६४० से होता है और समापन १० फरवरी, १६४२ यानी काकाजी के निधन से एक दिन पूर्व तक। इन दो वर्षों से कुछ ऊपर के काल में, काकाजी के जीवन में जो घटनाएं घटीं, उनका संक्षिप्त विवरण इस भाग में आ गया है। काकाजी को व्यक्तिगत सत्याग्रह के सिलसिले में नौ महीने की सजा हुई थी। वह २१ दिसम्बर, १६४० को नागपुर जेल ले जाये गए, और वहां से अस्वस्थता के कारण ३ अप्रैल, १६४१ को रिहा हुए।

डायरी के पन्नों में हम देखते हैं कि जयपुर प्रजामंडल, सीकर की जकात आदि के मसले उनके सामने रहे। राष्ट्र के प्रमुख नेता, रचनात्मक कार्यकर्ता तथा समाजसेवी व्यक्ति उनसे मिलने आते रहे और अपनी समस्याओं में उनकी सलाह लेते रहे।

इसके बावजूद डायरी की घटनाओं से हम देखते हैं कि इस अवधि में महाप्रयाण से कुछ समय पूर्व से ही जमनालालजी का मन बड़ी तेजी से अध्यात्म की ओर झुक रहा था। वह प्राय. एकनाथ, तुकाराम आदि संतों के अभंग सुनते थे और बापू, विनोबाजी और आनन्दमयी मां से अपनी मानसिक स्थिति की चर्चा करते थे।

सम्पादकीय

पूज्य काकाजी की डायरियों के इस छठे, अन्तिम, भाग के प्रकाशन मे पर्याप्त विलम्ब हो गया, इसका हमे दुख है। इस बीच श्री मार्तण्ड उपाध्याय का निधन हो गया। उन्होने डायरी के सभी भागो के सपादन मे विशेष योगदान दिया था। उनके निधन के कारण भी डायरी के इस भाग का प्रकाशन कुछ पिछड गया।

पाचवें भाग मे ३१ दिसम्बर, १९३९ तक की डायरी आ गई थी। इस भाग मे डायरी का आरभ १ जनवरी, १९४० से होता है और समापन १० फरवरी, १९४२ यानी काकाजी के निधन से एक दिन पूर्व तक। इन दो वर्षों मे कुछ ऊपर के काल मे, काकाजी के जीवन मे जो घटनाए घटी, उनका सक्षिप्त विवरण इस भाग मे आ गया है। काकाजी को व्यक्तिगत सत्याग्रह के सिलसिले मे नौ महीने की सजा हुई थी। वह २१ दिसम्बर, १९४० को नागपुर जेल ले जाये गए, और वहा से अस्वस्थता के कारण ३ अप्रैल, १९४१ को रिहा हुए।

डायरी के पन्नो मे हम देखते हैं कि जयपुर प्रजामडल, सीकर की जकात आदि के मसले उनके सामने रहे। राष्ट्र के प्रमुख नेता, रचनात्मक कार्यकर्ता तथा समाजसेवी व्यक्ति उनसे मिलने आते रहे और अपनी समस्याओ मे उनकी सलाह लेते रहे।

इसके बावजूद डायरी की घटनाओ से हम देखते है कि इस अवधि मे महाप्रयाण से कुछ समय पूर्व से ही जमनालालजी का मन बडी तेजी से अध्यात्म की ओर झुक रहा था। वह प्राय. एकनाथ, तुकाराम आदि सन्तो के अभग सुनते थे और बापू, विनोबाजी और आनन्दमयी मा से अपनी मानसिक स्थिति की चर्चा करते थे।

डायरी के संपादन में नित्य क्रम की कुछ बातें, जैसे प्रार्थना, भ्रम
घूमना, चर्खा कातना, आराम करना, घर के लोगों से बातचीत, प्रवा
स्वास्थ्य-चर्चा संक्षिप्त या कम कर दी गई है।

डायरी की कुछ तिथियों का भी समावेश नहीं किया गया, यद्
काकाजी ने हर दिन की डायरी बराबर लिखी थी। उन तिथियों
कुछ विशेष न होने के कारण उन्हें छोड़ दिया गया है।

डायरी के कुछ पन्ने पेंसिल से, या रेल-यात्रा में लिखे होने से, व
बहुत छोटे अक्षरों में होने से अस्पष्ट हो गये थे। वे पढ़े नहीं जा सके।
इसलिए कई जगह व्यक्तियों, स्थानों तथा विवरणों के उल्लेख में भूलें
रह जाने की संभावना है। पाठकों को इसकी ठीक जानकारी हो तो
कृपया हमें सूचित करें।

डायरी के इस खण्ड के संग्रह, सम्पादन आदि में हमें जिन-जिन
की मदद मिली है, उनमें श्री यशपाल जैन तथा श्री मुकुल उपाध्याय
और पृष्ठभूमि लिखने में डा० पृथ्वीनाथ शास्त्री ने जो परिश्रम किया है,
उसके लिए शब्दों में आभार मानना पर्याप्त नहीं होगा।

डायरियों का क्रम इस भाग से समाप्त होता है। हमें विश्वास है
कि इन डायरियों के विवरण अत्यन्त संक्षिप्त होते हुए भी इनमें
ऐतिहासिक महत्व की बहुत-सी सामग्री संग्रहीत है। भारतीय स्वतन्त्रता-
संग्राम के शोधार्थियों को इन डायरियों से सहायता मिलेगी, ऐसा हमारा
विश्वास है।

—संपादक

भूमिका

सूक्ष्म रूप से देखा जाय तो पता चलेगा कि साहित्य का प्रादुर्भाव श्रवण से हुआ है। बाद में आई लेखन-कला। मनुष्य की वाणी पहले तो बोलने के लिए ही होती है। भाषा का अर्थ ही है बोलने का साधन। लेकिन मनुष्य कितनी चीजें कंठ करे? अपनी स्मरण-शक्ति पर बोझ भी कितना डाले? और जहां आवाज पहुंच नहीं सकती, वहां अपनी सूचनाएं भी जैसी-की-तैसी कैसे भेजें? तो मनुष्य ने भाषा को लिपिबद्ध करने की कला ढूंढ निकाली। मानवीय संस्कृति की प्रगति में लिपि का आविष्कार एक महत्व की चीज है। लिपि की कला हाथ में आते ही मनुष्य खत लिखने लगा और हिसाब के आंकड़े भी लिखकर रखने लगा। कभी-कभी याददाश्त के लिए थोड़े वचन भी लिखकर रखने लगा। इससे लिखित साहित्य के दो रूप हुए—एक खत (पत्र) और दूसरा स्मरण के लिए लिखी हुई 'यादियां'।

विदेशों में दैनंदिनी लिखने का रिवाज शायद ज्यादा होगा। हमारे यहां जो पठान और मुगल राज्यकर्त्ता हुए, वे अपनी रोजनिशी लिखते थे। इसके लिए आजकल हम अंग्रेजी शब्द 'डायरी' चलाते हैं। अंग्रेजी शब्द 'डे' पर से डायरी शब्द आ गया है। दैनंदिनी शब्द है तो अच्छा, लेकिन कुछ बड़ा और भारी है। हमारे यहां दिन को 'वासर' कहते हैं। रविवासरे, सोमवासरे इत्यादि शब्द बोलते हैं। इस 'वासर' शब्द पर से दैनंदिनी के लिए 'वासरी' शब्द बनाया गया। वासरी अथवा वासरिका शब्द अब चलने लगा है।

डायरी या वासरी लिखने वाले लोगों के दो प्रकार होते हैं। एक में सारे दिन में किन-किन लोगों से मिले, किन-किन लोगों से क्या-क्या बातें हुईं, लोगों को कौन-से वचन दिये, जो लोग मिले, उनके बारे में अपना

अभिप्राय क्या हुआ, इत्यादि विस्तार से लिखा जाता है। इनमें लोग बौद्धिक, हार्दिक और मर्मात्मक बातें भी लिखते हैं। ऐसी डायरियां औरों के पढ़ने के लिए नहीं होतीं। वे होती हैं आत्मनिवेदी—अपने ही लिए। इनका उपयोग आत्म-चरित्र लिखने में अथवा समकालीन इतिहास लिखने में अत्यन्त महत्त्व का होता है।

जो दूसरे प्रकार की डायरी लिखनेवाले लोग होते हैं, वे महत्त्व की चर्चा या घटना कौन-सी हुई, उसका जिक्र तो करते हैं, लेकिन क्या बातचीत हुई, उसमें अपना अभिप्राय क्या था और अपने स्वयं क्या करने का सोचा है, इत्यादि कुछ भी नहीं लिखते। सिर्फ कोई घटना आदि ही लिखते हैं।

महात्मा गांधी इसी तरह की डायरियां लिखते थे। उनमें तो बहुत ही कम शब्दों में अत्यन्त जरूरी बातों का ही जिक्र होता था। अमुक दिन गांधीजी कौन-से शहर में थे, किससे मिले और उस दिन क्या किया, इसका जरा-सा जिक्र ही उसमें मिलता है। गांधीजी की जीवनी लिखने वालों के लिए ऐसी डायरी काम की चीज है सही, लेकिन गांधीजी की ओर से उसमें कुछ भी नहीं मिला।

श्री जमनालालजी की ये जो डायरियां हैं, इनमें भी केवल याददाश्त के लिए आवश्यक सूचनाएं ही लिखी हैं। इनमें न उनका हृदय पाया जाता है और न उनके अभिप्राय।

अगर किसी अच्छे प्रभावशाली नाटक का पहला ही अंक पढ़ा हो तो उस पर से उस समस्त नाटक की कल्पना तो क्या, पहले अंक की खूबियां भी ध्यान में नहीं आ सकेंगी। समस्त नाटक पढ़ने के बाद ही प्रथम अंक में वर्णित छोटी-मोटी घटनाओं और संभावनाओं का रहस्य ध्यान में आता है। इसी तरह जमनालालजी के जीवन का प्रथम भाग ही जानने वाले व्यक्ति को पता नहीं चलेगा कि प्रारंभ के दिनों में कौन-सी सूक्ष्म शक्तियां आगे जाकर विकसित रूप धारण करने वाली हैं। पूरा जीवन जानने वाले आज के लोग ही उनके प्राथमिक जीवन के संस्कारों की सूक्ष्मातिसूक्ष्म खूबियां समझ सकेंगे और उनकी कद्र कर सकेंगे।

धार्मिक प्रवचन सुनना, नाटक देखने जाना, संगीत के जल्से का आनंद लेना, टेनिस खेलना, ब्रिज खेलना, वन-भोजन आदि विशुद्ध आनंद को प्रोत्साहन देना, नेताओं के व्याख्यान सुनना, इस तरह की जीवन की सब प्रवृत्तियां उनमें पाई जाती हैं। सबमें सरसता, जीवनशुद्धि, सेवाभाव और दिल की उदारता पाई जाती है। २२ से २५ वर्ष की उम्र में जितने लोगों से उन्होंने संपर्क साधा था, इसकी सूची देखकर सचमुच आश्चर्य होता है।

जमनालालजी के स्वभाव में जैसी विशेष आत्मीयता या ममता थी वैसे ही गांधी, स्वदेशी और राष्ट्रीय कार्यकर्ताओं के व्यक्तिगत जीवन में भी प्रवेश करके उनके सुख-दुःख के साथ एकरूप होने का माद्दा था। इसलिए आगे जाकर जब उन्होंने गांधीजी से प्रेरणा प्राप्त की और उनके पांचवें पुत्र बने, तब समूचे विशाल गांधी-परिवार को अपनाना उनके लिए आसान और स्वाभाविक बन गया। बचपन से सबको अपनाने का स्वभाव न होता तो आगे जाकर वह इतना काम नहीं कर सकते थे। तरह-तरह के राष्ट्र सेवक, उनके परिवार के लोग, राष्ट्रीय संस्थाएं और उनकी कठिनाइयां सबके साथ जमनालालजी एक-हृदय हो सकते थे, यह थी उनकी विभूति की विशेषता। गांधीजी में भी ये गुण थे। इसीलिए तो गांधीजी को जमनालाल-जी का इतना बड़ा सार्वभौम सहारा मिल सका। गांधीजी का विस्तार चाहे जितना बड़ा और जटिल हो, उसे संभालने की हिम्मत और कुशलता जमनालालजी में थी, और इस दिशा में जमनालालजी गांधीजी को सब तरह से निश्चित कर सके थे। जमनालालजी की और गांधीजी की ऐसी विशेषता जिन्होंने ध्यान से देखी है, उनके लिए तो उनकी डायरी के छोटे-छोटे पन्ने और उनके पत्र भी विशेष महत्व के प्रतीत होते हैं।

केवल अपने को और अपनी धन-संपत्ति व कौशल-शक्ति को ही नहीं, बल्कि अपने परिवार के सब लोगों को राष्ट्रसेवा में अर्पित करने की उनकी तैयारी थी। केवल तैयारी ही नहीं, उत्साह भी था। इसी से वह अपने

को कृतार्थता मानते थे। लेकिन यह सब होते हुए भी उनकी श्रेयार्थी
साधना ही सर्वोपरि थी। उसी का थोडा चिंतन करना आवश्यक है।
जब कभी कोई 'श्रेयार्थी' आत्म-साधना शुरू करता है, तब कुटुम्ब-
, आजीविका या व्यवसाय और सार्वजनिक सेवा सबकुछ झंझट
कर, सबको त्याग देने की कोशिश करने लगता है। हमारे देश में
ही आत्मार्थी अधिक पाये जाते हैं। ऐसे ही लोगो ने सन्यास-आश्रम
सबसे प्रधान माना है।

हमारी संस्कृति मे शुरू मे सन्यास का महत्व नही था। संन्यास आश्रम
पुनरुज्जीवन शंकराचार्य ने बड़े उत्साह के साथ किया। पर हमारे
माने मे सन्यास-आश्रम को बढ़ावा दिया स्वामी विवेकानन्द और स्वामी
मानन्द ने। गाधीजी ने संन्यास-आश्रम के प्रति पूरा आदर दिखाकर उसे
क बाजू रखा और गीता मे बताये हुए सन्यास-योग को पसन्द किया है।
मनुष्य गृहस्थ-आश्रम मे प्रवेश करे या न करे, ब्रह्मचर्य-पालन का महत्व
वह समझे और संयम बढाते हुए गृहस्थ-आश्रम को कृतार्थ बनाये, यही था
गाधीजी का आदर्श। मनुष्य ब्रह्मचर्य का पालन करके कौटुम्बिक जीवन की
एकागिता और सकुचितता छोड़ दे और जीवन मे कर्मयोग को ही प्रधान
बनाकर सेवामय जीवन व्यतीत करते-करते समस्त मानव-जाति के साथ
अपने ऐक्य का अनुभव करे और, वहा भी न रुककर, समस्त जीव-सृष्टि के
साथ तादात्म्य का अनुभव कर विश्वात्मैक्य की साधना चलावे, यही है
गाधीजी का मार्ग। इस मार्ग को युगानुकूल समझकर जमनालालजी ने भी
पसन्द किया था। अपनी मर्यादा को पहचानकर वह यथाशक्ति 'जनक
मार्ग' का अनुसरण करते रहे। उस जीवन साधना का प्रारभ अगर को
ढूढ़ना चाहे, तो इन डायरियो मे कुछ-न-कुछ मसाला उसे मिलेगा ही

एक बात खास ध्यान में लेने की है। भारत के लोगो को स्वरा
चाहिए था। योग्य नेता मिले और सफलता की आशा हो तो लोग ल
... की तैयार थे। लेकिन लोग नहीं जानते थे कि स्वराज्य को चल

कर ले, राज्य चलाने का काम भले ही क्षत्रियों का माना जाय, पर दर-असल यह है बनिये का ही काम। चार आश्रमों में जिस तरह अनुभव से सिद्ध हुआ है कि गृहस्थाश्रम ही सर्वश्रेष्ठ है, उसी तरह हमें समझना चाहिए कि चार वर्णों में भी श्रेष्ठता कबूल करनी चाहिए वैश्य-वर्ण की। वैश्य-धर्म की सार्वभौमता के नीचे ही ब्राह्मण-धर्म और क्षात्र-धर्म अपने-अपने काम में कृतार्थ हो सकते हैं। 'बनिया गांधीजी' का सामर्थ्य किसमें है, यह अचूक देख सके थे 'बनिया-शिरोमणि जमनालालजी' ही।

यह सब जाननेवाले लोग जमनालालजी की डायरियों के प्राथमिक वर्षों में भी रचनात्मक प्रवृत्ति की ओर उनका झुकाव देख सकेंगे। इस प्रेरणा को समझने के बाद ही हम खयाल कर सकते हैं कि जमनालालजी सारे देश में इतनी तेजी से क्यों घूमते थे? देश के छोटे-बड़े सब कार्यकर्ताओं का संपर्क साधकर उनके साथ हृदय की आत्मीयता कैसे स्थापित करते थे? जमनालालजी की यह विशेषता और उनका हृदय सामर्थ्य देखकर ही मैंने उन्हें 'सबों के स्वजन' कहा था।

आज देश के हितचिंतक एक आवाज से रो रहे हैं कि देश की एकता कहां गई? क्यों सर्वत्र फूट-ही फूट बढ रही है? क्या इसका कोई इलाज नहीं हो सकता?

इलाज हमें गांधीजी के और जमनालालजी के जीवन में ही मिलता है। छोटे-बड़े सब भेदों को भूलकर सबको अपनाने के लिए हृदय की जो विशालता और प्रेम की संजीवनी चाहिए, वह जमनालालजी में पूरी मात्रा में थी। इसलिए वह सारे देश के, सब धर्मों के, सब क्षेत्रों के और तरह-तरह के विचारों के लोगों को अपना सके थे। संत तुकाराम ने कहा है, "आप जो प्रेम अपने लड़के-लड़कियों और रिश्तेदारों के प्रति बताते हैं, वही यदि आप अपने दास-दासियों के प्रति, नजदीक के लोगों के प्रति और पड़ोसियों के प्रति बता सकें, तो आपके अंदर दैवी शक्ति अवश्यमेव प्रकट होगी।"

जमनालालजी जहां-जहां जाते थे, वहां के कार्यकर्ताओं के साथ और उनके परिवार के साथ एकरूप होते थे। व्यवहार-चतुर जमनालालजी लोगों के दोष और उनकी खामियां नहीं देख सकते थे, सो नहीं, किन्तु उनका हृदय क्षमाशील और उदार था। उनका अनुकरण करनेवाले उनकी निःस्पृह भाषा का प्रयोग कर देते हैं, किन्तु उनकी उदारता कहां से लावें? और उनके प्रेम की निःस्वार्थता भी कहां से प्रकट करें? जिनमें ऐसी उदारता है, उनको जमनालालजी के जैसी सिद्धि भी मिल रही है। अध्यात्म के नियम अटल और सार्वभौम होते हैं।

एक-एक व्यक्ति मिलकर राष्ट्र बनता है इसलिए हरेक में हमें दिलचस्पी होनी चाहिए और हरेक के यथाशक्ति सहायक होने की हमारी तत्परता भी होनी चाहिए। जमनालालजी की यह कामकाजी आत्मीयता जिसमें होगी, वे ही सच्चे राष्ट्र-पुरुष बनेंगे।

सन् १९१५ से १९२८ तक जो कार्य गांधीजी ने और उनके साथियों ने धैर्य के साथ किया, उसी का शुभ परिणाम सन् १९३० से शुरू होने वाली और सन् १९४५ में सफल होनेवाली क्रांति में हम देख सकते हैं।

इस क्रांति के राजनैतिक क्षेत्र में जवाहरलालजी ने अपना बल लगाया। किन्तु जीवन-परिवर्तन के और राष्ट्र के नव-निर्माण के क्रांतिकारी क्षेत्र में अपना पूरा-पूरा बल लगाया जमनालालजी ने और उनके छोटे बड़े सब साथियों ने।

मैं साथियों का नाम इसलिए लेता हूं कि लोग सारा ध्यान मुख्य मुख्य नेताओं के नाम पर ही लगाते हैं। राष्ट्रजीवन को सजीवन करनेवाली क्रांति एक आदमी से कभी नहीं होती। जिस तरह व्यक्ति का कुटुंब-कबीला और वंश-विस्तार होता है, वैसे ही संन्यासियों की शिष्य-शाखाएं और भक्त-परिवार भी होते हैं और राष्ट्रपुरुष के पुरुषार्थों में शरीक होनेवाले और उसे सिद्ध करने में अपना हिस्सा अदा करनेवाले साथियों की भी संख्या कम नहीं होती। सबके पुरुषार्थ का सम्मिलित फल ही राष्ट्र का उत्थान

है। इसलिए जमनालालजी के जीवन-कार्य का जिक्र या चिंतन करते समय उनके सब साथियो का भी स्मरण करना चाहिए। जमनालालजी कभी अकेले थे ही नही। जितने लोगों को उन्होने अपनाया है, वे सब उनकी विभूति मे सम्मिलित है।

अगर देवो मे नये अवतार को पहचानने की शक्ति होती है तो अवतार मे भी अपने साथियो को पहचानने की शक्ति होनी ही चाहिए। हम इसे 'तारा-मैत्रक' कह सकते हैं। गाधीजी के पास असंख्य लोग आये। चद लोगों को गांधीजी ने स्वयं बुलाया। चद अपने-आप आकर गाधीजी से चिपक गये। लेकिन दो आदमियों के बारे में मैं जानता हू, जिन्हें देखते ही गांधीजी ने पहचान लिया कि इनके साथ अभेद-भक्ति का सबध बधनेवाला है। एक थे महादेव देसाई और दूसरे थे जमनालालजी, और खूबी यह कि इन दोनो ने जैसे ही गाधीजी को पहचाना, वैसे ही एक-दूसरे को भी तुरंत पहचान लिया। महादेवभाई ने जमनालालजी को जो खत लिखे थे, उसमे से चंद खत मैंने पढे हैं। उस पर से कह सकता हू कि दोनो का परस्पर आकर्षण भी कम अद्भुत नही था। गाधीजी के आश्रमियो में से श्री विनोबा भावे का वर्धा जाना भी मैं इसी तरह का ईश्वरीय सकेत या युग-रचना या व्यवस्था मानता हूं।

अन्योन्य संबध की यह प्रेम-शृंखला कैसे बढ़ती गई, यह देखने का आनद जैसे गाधीजी के चरित्रकार को मिलता है, वैसे ही जमनालालजी के चरित्रकार को भी मिलेगा। परस्पर मिलन, परस्पर सहयोग, यह कोई आकस्मिक घटना नही होती। सृष्टि मे परस्पर सबध का विशाल जाल फैला हुआ रहता है। उसी के अनुसार सबकुछ होता है। कोई भी घटना अकस्मात नही होती। हरेक घटना का 'कस्मात्' हम जानें या न जानें, होता ही है। जब मनुष्य-जाति को ज्ञान-शक्ति बढ़ेगी, तब मनुष्य, ऐसे संबंध को पहचानकर ही, इतिहास लिखने बैठेगा। आजकल के इतिहास अधों के प्रयास हैं। ज्ञानमय प्रदीप प्राप्त होने के बाद ही मानव-जाति की

उनकी जीवन-गाथा लिखी जायगी। गांधी-कार्य का प्रयोग रहस्य और उसकी कृतार्थता तभी दुनिया के सामने पूर्ण रूप से प्रकट होगी।

गांधीजी के संपर्क में आने के बाद जमनालालजी का सारा जीवन ही बदल गया था। उसका प्रतिबिंब उनकी डायरियों में जरूर मिलेगा। ऐसी डायरियों के लगभग कई खंड प्रकाशित होने वाले हैं। इन सब खंडों को पढ़ने के बाद ही जमनालालजी की इन अन्तर्मुखी आत्मनेपदी प्रवृत्तियों के लिए योग्य भूमिका लिखी जा सकती है। इन प्रथम खंडों में तो उनकी पूर्व-तैयारी की थोड़ी कल्पना ही आ सकती है।

गांधीजी ने हिन्दू-धर्म में और हिन्दू-समाज में जो महान परिवर्तन किये, उनमें गृहस्थ जीवन को नया रूप दिया, जिसका महत्त्व कम नहीं है। उसका प्रत्यक्ष उदाहरण जमनालालजी के जीवन में चरितार्थ होता पाया जाता है। यह समझकर ही जमनालालजी की ये डायरियां पढ़नी चाहिए।

सन्निधि, राजघाट,
नई दिल्ली

—काका कालेलकर

(चौथे-पांचवें खण्ड से

पृष्ठ-भूमि

श्री जमनालाल बजाज की इस डायरी का लेखन-काल (१ जनवरी, १९४० से १० फरवरी, १९४२ तक) विश्व-इतिहास में उथल-पुथल का समय है। १९३९ में दूसरा विश्वयुद्ध शुरू हो गया था और १९४२ में बंगाल के अकाल का पूर्वाभास भारतीय चेतना को झकझोर रहा था।

कहना न होगा कि हिन्द को इस लड़ाई में तत्कालीन ब्रिटिश सरकार ने 'जबर्दस्ती' घसीट लिया था, अन्यथा कांग्रेस और मुस्लिम लीग —ये दोनों बड़ी और छोटी राजनीतिक पार्टियां विश्वयुद्ध में ब्रिटेन का साथ देकर, हिन्द के जन-धन की व्यर्थ हानि के लिए तैयार नहीं थीं। इनकी दृष्टि में यह तो साम्राज्यवादी और तानाशाही ताकतों की आपसी लड़ाई थी। एशिया और अफ्रीका के सारे परतंत्र देश, अविकसित राष्ट्र और उपनिवेश पश्चिमी गोरी ताकतों द्वारा कमोबेश शोषित ही हो रहे थे।

गांधीजी अपने हिन्द में राजनीतिक क्रांति को सभी तरह की खून-खराबियों से मुक्त रखना चाहते थे। उनका खयाल था कि हर देश का 'स्वराज्य' या आजादी उसकी अपनी परम्परा, संस्कृति, संपदा और स्वावलंबन से जुड़ी रहे तो वह ज्यादा ठीक होती है। उन्होंने सोचा कि भारत में स्वराज्य और अहिंसक क्रांति के लिए सत्याग्रह, असहयोग और वैधानिक परिवर्तन ही कारगर हो सकते हैं।

सचमुच, यह एक बहुत ही विचित्र-सी स्थिति थी कि राजनीतिक क्षेत्रों में तो सभी जगह पश्चिमी विचार-धारा एक साथ जोर पकड़ती गयी, लेकिन तकनीकी और औद्योगिक विकास और प्रगतिशील वैज्ञानिक जानकारी के क्षेत्रों में सारे राष्ट्रों और देशों के कदम एक साथ

ही भी नहीं उठ पाये।

न्द की दशा-दिशा (१९४०-४२)

ब्रिटेन ने अपने सर्वोपरि आधिपत्य के कारण भले ही उन दिनों ..खण्ड भारत को दुनिया की इस सबसे बडी दूसरी लड़ाई में खींच लिया था, लेकिन वस्तुतः यहां की दोनो मुख्य राजनीतिक पार्टियो (कांग्रेस और मुस्लिम लीग) ने तो ब्रिटिश सरकार के युद्ध-प्रयत्नो से अपना असहयोग ही घोषित किया था। सिर्फ कुछ देशी राजे-महाराजे बड़े उत्तरादरो और उद्यमियो ने ही तब बर्तानवी सरकार का पूरा साथ दिया था। इसीलिए उसे लड़ाई के लिए यहां नित नये रंगरूटो की भर्ती मे और साज-सरजाम जुटाने मे कोई कठिनाई या तकलीफ नही हुई। फिर भी १९४० की गर्मियो तक मित्र-राष्ट्रो की हालत इतनी खस्ता रही थी कि फ्रांस, बेल्जियम, हालैंड, नार्वे और डेनमार्क पर धुरी-राष्ट्रो का कब्जा हो गया था। तब तो ऐसा लगता था कि किसी आखिरी लड़ाई में ब्रिटेन भी जैसे अपने पतन के दिन गिन रहा हो।

लेकिन तभी, अचानक ब्रिटेन की शाही (रॉयल) वायुसेना (एअर फोर्स) ने अपनी जावाज बहादुरी दिखाकर जर्मनी की तगडी वायुसेना शक्ति को नाकाम कर दिया, और इस तरह इंगलैंड खत्म होते-होते बच गया। जून १९४० के बाद, बर्तानवी लोक सभा ने भारत के वाइसराय को वे सब अधिकार दे दिए, जो पहले वहां सिर्फ ब्रिटिश राज्य सचिव को ही मिले हुए थे। इसका यही उद्देश्य था कि युद्ध के दौरान यदि भारत की (विदेशी) सरकार के ब्रिटिश साम्राज्यशाही से सम्पर्क-सम्बन्ध टूटे तो वाइसराय स्वत जो भी ठीक समझें, वहां कार्य-वाही करें।

जो हो, द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान अफ्रीका और मध्य पूर्व में हुई लड़ाई के मैदानो में भारतीय सिपाहियो ने अपनी परम्परागत वीरता कायम रखी।

भारत के महान् बमवाजो ने बर्मा की रणभूमि में दुश्मनो के दांत

गट्ठे कर दिये। इस लड़ाई के दौरान भारत के देशी राज्यों ने लगभग पौने चार लाख रंगरूट और साढ़े छह करोड़ नकद रुपयों से ब्रिटेन की मदद की थी। अंग्रेजी राज के निजी और फौजी उद्योग-धन्धों के कुछ कारखानों ने भी फौजी माल और अन्य कुछ बनाकर और उन्हें यथास्थान पहुँचाकर खूब वाहवाही लूटी थी। भारत को तब सभी अन्तर्राष्ट्रीय संस्थाओं में सम्मानित किया गया। बाद में भी आजाद भारत ने अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में अपनी यही महत्वपूर्ण भूमिका निभायी।

आजादी की रणनीति

१९३९ के अन्तिम चरण में जब कांग्रेस मन्त्रिमण्डलों ने २२ अक्तूबर को पदत्याग किया तबतक राजनीतिक गतिरोध की स्थितियां बनी हुई थीं। श्री जमनालाल बजाज इन दिनों अपना ज्यादा समय सीकर और जयपुर की प्रजा के हित में बिता रहे थे। श्री घनश्यामदास बिड़ला भी इसमें उनकी कुछ मदद कर रहे थे। द्वितीय विश्व युद्ध के बारे में जमनालालजी गांधीजी की राय के हामी थे। ३ अक्तूबर, १९३९ को जब वे दिल्ली में थे, तब बापू, पंडित जवाहरलाल नेहरू, मौलाना अबुलकलाम आजाद और राजेन्द्रबाबू से उनकी काफी बातें हुई थीं। जयपुर के बारे में भी चर्चा हुई थी।

उन्हें मौलाना आजाद की वाइसराय लार्ड लिनलिथगो से न मिलने वाली बात भी ठीक लगी थी, यद्यपि गांधीजी को इस पर कुछ बुरा लगा था, और जमनालालजी ने ही गांधीजी को समझाया था। गांधीजी स्वयं ही ५-१०-३९ को वाइसराय से मिले थे, लेकिन जमनालालजी को पहले से ही उसका कोई संतोषप्रद परिणाम निकलने की आशा नहीं थी। सरदार पटेल की भी यही राय थी कि गांधीजी ने वाइसराय से जो कहा था, शायद वह नहीं कहते तो ही अच्छा रहता, क्योंकि वाइसराय ने उन दिनों चलती हुई लड़ाई में ब्रिटेन की ओर गांधीजी की नैतिक सहानुभूति की बात को, अपनी चालाकी से, ३५ करोड़ भारतीयों का वादा समझा, ऐसा मान लिया, और एक तरह

से, महात्माजी की मनमनगाहन अंग्रेजी कूटनीति का शिकार बन गयी।

फिर भी वर्धा मे जब ७ से १० अक्तूबर (१६३६) तक कांग्रेस कार्यकारिणी और बाद मे अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी की बैठकें हुईं तब जमनालालजी उनमे शामिल होते रहे, यद्यपि वे कई कारणों से अपने तन-मन से कुछ अस्वस्थ ही थे। जयपुर राज्य की 'कृपा' से ६ मास तक अनावश्यक कारावास भोगकर उनका शारीरिक स्वास्थ्य बहुत खराब हो चुका था। अपने मानसिक कष्ट को तो वे गांधीजी के परामर्श से भी ठीक नही कर पा रहे थे। डा० विधानचन्द्र राय (बाद मे पश्चिम बंगाल के मुख्य मन्त्री) ने उन्हे जो नुस्खा लिखकर दिया, उसका वे तभी से इस्तेमाल करने लगे थे।

उधर दिल्ली मे वाइसराय ने ५२ मुख्य राजनीतिक नेताओ और भारत की राजनीति में जाने-माने लोगो से मुलाकात की। लेकिन कांग्रेस का रुख इस बात से कुछ नही बदला। उसने सारे उपनिवेशो मे लोकतन्त्री स्वाधीन सरकारों की स्थापना की बाबत अपनी पहली बात ही दुहराई और भारत को एक स्वतन्त्र राष्ट्र घोषित करने की अपनी माग बहुमत से बरकरार रखी। उस समय के हिन्द मे मौजूद ११ प्रान्तो और ५६२ देशी राज्यो की अधिकाश जनता ने भी अपनी यही राय घोषित की थी। १६३५ के भारत सरकार कानून को भी सभी ने अस्वीकृत किया था।

इसीलिए फिर जब आठ प्रान्तों की कांग्रेस सरकारों ने एक साथ पदत्याग किया, तब भारत की स्वतन्त्रता के इतिहास मे और एक नवीन गौरवपूर्ण अध्याय जुडा। लेकिन गाधीजी को आनेवाले समय की दो खास परेशानियां भी खूब मालूम रही : एक, मुस्लिम लीग से शायद ही कोई स्थायी समझौता होगा, दो, कांग्रेस अपनी कार्यवाहिया शायद पूरी तरह अहिसा के उसूल से ही नही चला पायेगी। वे यह भी अच्छी तरह जान गये थे कि जनता की भावनाएं उभारना तो इस वक्त बहुत आसान है, लेकिन आगे कोई कड़ा कदम उठाने के लिए बहुत सोच-विचार करना भी जरूरी है। यह तो उन्हें भी साफ जाहिर था कि

'ब्रिटिश सरकार अभी हिन्द को आजाद देखने के मनोभाव में नहीं है। पहले विश्वयुद्ध की तरह यह दूसरा विश्वयुद्ध भी साम्राज्यवादी शक्तियों के लाभ के लिए ही चल रहा है। तब फिर भारत इस लड़ाई में फंस-कर अपने जानोमाल से क्यों हाथ धोये ?

हिन्द में, समय के साथ ही, राजनीतिक और आर्थिक परि-स्थितियां बड़ी तेजी से बदल या बिगड़ रही थी। श्री जिन्ना की 'मेहर-बानी' से 'राजनीतिक साम्प्रदायिकता' का सवाल बहुत ज्यादा मह-हो उठा था। अंग्रेजी राज की केन्द्रीय सरकार तो सदा यह चाहती ही थी कि भारत में साम्प्रदायिकता का झगड़ा कभी न सुलझने वाला साबित करके, फिलहाल, वह किसी भी स्पष्ट वादे के लिए मजबूर न हो। उस समय उसका अपना एकमात्र लक्ष्य तो पहले लड़ाई में जीत हासिल करना ही था।

जमनालालजी इन दिनों पूना में डा० दिनशा मेहता से अपनी बिगड़ी हुई सेहत का इलाज करा रहे थे। फिर भी उनके सामान्यतः व्यस्त जीवन में कोई खास कमी नहीं आई थी। स्वदेश के हालात भी उन्हें बहुत चिंतित करते रहते थे। वाइसराय की रेडियो स्पीच सुनकर वे भी भांप गये थे कि आजादी के रास्ते का गत्यावरोध अभी आसानी से मिटने वाला नहीं। यथा-सम्भव वे पूना आने-जाने वाले नाते-रिश्तेदारों और दोस्तों तथा शुभ-चिंतक मुलाकातियों के बीच, अपने को प्रायः खुश ही रखने की कोशिश करते और अपने व्यावसायिक मसलों को भी हल करते रहते। उनसे मिलने आने वाले कितने ही लोग अपनी व्यक्ति-गत समस्याएं सुलझाने के लिए सुझाव लेते थे। समाज-सेवा और जनहित के लिए उत्साह की तो उनमें कभी कोई कमी नहीं रही थी। पचास की उम्र में भी वे डा० दिनशा के आग्रह पर साइकिल चलाना
ताकि उस तरह के व्यायाम से गोडों का दर्द कुछ कम
चानक साइकिल मोड़ते समय गिर पड़ने से उनके हाथ
गयी।

१९४० में, जनवरी २६ तारीख के लिए कांग्रेस ने जो 'स्वाधीनता दिवस की प्रतिज्ञा निर्धारित की, उसमें भी यह एकदम स्पष्ट कर दिया गया था कि पूर्ण स्वराज्य ही हमारा उद्देश्य है और शांतिपूर्ण वैधानिक तरीकों से वह हमें प्राप्त करना है हिंसा द्वारा कदापि नहीं। इसी से कांग्रेस द्वारा रचनात्मक कार्यक्रम अपनाने और चरखा और खादी को आवश्यक तथा अनिवार्य मानने पर गांधीजी ने बहुत जोर दिया था। साथ ही यह भी तय हो चुका था कि कांग्रेस-जन अब निकट भविष्य में किसी भी महान् त्याग के लिए तैयार रहेंगे और कांग्रेस की निर्धारित रीति-नीति से कभी पीछे नहीं हटेंगे।

आखिर ५ फरवरी १९४० को हुई गांधीजी और वाइसराय की चौथी मुलाकात के बाद यह साफ जाहिर हो गया कि मौजूदा केन्द्रीय अंग्रेजी सरकार और कांग्रेस में कोई भी समझौता होना असम्भव है।

रामगढ़ में जब कांग्रेस का ५३वां अधिवेशन हुआ, अध्यक्ष के रूप में मौलाना अबुलकलाम आजाद ने घोषित किया कि "हिन्द यूरोप में फासीवाद और नात्सीवाद की प्रतिष्ठा नहीं चाहता, लेकिन वह अंग्रेजों के साम्राज्यवाद का भी समर्थक नहीं बन सकता। यह जो विश्वयुद्ध चल रहा है वह तो सिर्फ यूरोप और यूरोपियनों के हितों की रक्षा के लिए है, एशिया और अफ्रीका को इसमें कोई आशा नहीं करनी है। अतः हिन्द की जनता अब साफ यह कह दे रही है कि उसे अपनी औपनिवेशिक हैसियत नहीं रखनी है। वह अपनी साम्प्रदायिक समस्याओं को भी अपनी एक संविधान सभा बुलाकर खुद ही सुलझा सकती है।"

जमनालालजी अखिल भारतीय कांग्रेस के कोषाध्यक्ष के रूप में मौलाना की कार्यकारिणी में भी चुने गये। मौलाना आजाद ने नेहरूजी को भी श्री राजगोपालाचारी, डा० सैयद महमूद और श्री आसफअली के साथ-साथ कार्यकारिणी का सदस्य नामजद किया। अभी १५वें सदस्य की घोषणा बाकी थी कि सारी कार्यकारिणी गिरफ्तार कर ली गई।

होने के 'समर्थक' हो गये थे। चौथा नेमा उनका था, जो हमेशा गोरे प्रभुओं के दास बने रहे और उन्हीं के इशारे पर चलने में अपना और देश का कल्याण समझते थे।

कांग्रेस कार्यकारिणी में बहुमत गांधीजी के अनुयायियों का ही रहा। अत: कांग्रेस ने किसी भी तरह हिन्द की आजादी की बात पक्की न होने तक द्वितीय विश्वयुद्ध में सहयोग नहीं देना चाहा, और जब व्यक्तिगत सत्याग्रह आन्दोलन शुरू हुआ तब जमनालालजी अस्वस्थ रहने पर भी उसमें शामिल हुए। आचार्य विनोबा भावे इसमें पहले सत्याग्रही थे और पण्डित जवाहरलाल नेहरू दूसरे। जमनालालजी का तो अपना सारा परिवार ही इसमें शामिल हो गया था। तन-मन-धन सभी कुछ वे देश-सेवा के लिए सपरिवार समर्पित कर चुके थे। धीरे-धीरे यह आंदोलन देशव्यापी हो उठा, यद्यपि अंग्रेजी सरकार ने एक मजाक की तरह इसकी खिल्ली उड़ाने की भी कोशिश की थी। मसलन एक पंजाबी (संपूर्णसिंह) को, जो गांधीजी या कांग्रेस की इजाजत के बिना ही सत्याग्रह करते हुए पकड़ा गया था, उसके द्वारा 'डिफेंस' किया जाने पर (ध्यान रहे कि कांग्रेस की नीति यही थी कि सत्याग्रही कोई और 'डिफेंस' नहीं करेगा) उसे एक आना जुर्माना करके छोड़ दिया, और यह 'एक आना' भी न्यायाधीश ने अपनी गांठ से दिया। मौलाना आजाद को इलाहाबाद में बड़े तड़के सत्याग्रह करने से पहले ही सरकार ने पकड़ लिया और दो साल की कड़ी सजा देकर नैनी जेल में बन्द किया, जहां कुछ दिनों बाद डा० कैलासनाथ काटजू भी पहुंचाये गए।

जैसाकि यहां पहले कहा गया है, १९४१ में, जर्मनी द्वारा रूस पर और जापान द्वारा अमरीका पर, अचानक हमला होते ही यह युद्ध सच-मुच एक भयंकर महाविनाशक विश्वयुद्ध बन गया था। बहुत जल्दी ही, जापानी सेनाएं भारत के दरवाजे तक आ पहुंचीं। मलाया, सिंगापुर, जीतकर उन्होंने बर्मा (जो १९३७ से पहले तक भारत का ही एक हिस्सा था) हथिया लिया और फिर हमारा अंडमान द्वीप भी जापानी

नौ-सेना के कब्जे मे आ गया। लड़ाई जब भारत के दरवाजे तोड़ने पर आमादा देखी, तब अमरीका ने ब्रिटेन पर जोर डाला कि वह शीघ्र ही भारत की जनता का 'स्वैच्छिक' सहयोग ले। अतः दिसम्बर १६४१ मे कांग्रेस अध्यक्ष मौलाना आजाद और पंडित नेहरू आदि कांग्रेस कार्यकारिणी समिति के सदस्य छोड़ दिये गए। बारडोली में कार्यकारिणी समिति की बैठक हुई। गांधीजी को उस समय तब ऐसा लग रहा था कि चर्चिल सरकार हिन्द की आम मदद लेने के लिए शायद हमें आजादी देने से नहीं हिचकिचायेगी। वस्तुत. उसका इरादा इतना ही था कि कांग्रेस भी अपनी राजी से ही वाइसराय की कार्यकारी परिषद में आ जाये।

तूफान से पहले की शांति

२६ जनवरी, १६४१ के दिन सभी को यह जानकर भारी खुशी हुई कि सुभाषचन्द्र बोस अपनी नजरबन्दी की जगह से गायब हो चुके हैं। मार्च १६४२ मे जब बर्लिन रेडियो से उनका भाषण सुना गया तब यह मालूम हुआ कि ब्रिटेन के खिलाफ उन्होंने एक 'आजाद हिन्द फौज' बना ली है। भारत के ऐसे लोगों की अब एक बड़ी तादाद बन चुकी थी, जो यह मानते थे कि जापान भी भारत को आजाद करने के लिए एक ताकतवर एशियायी गुट बनाने वाला है। तभी गांधीजी को एक बार यह सोचना पड़ा था कि मित्र-राष्ट्र तो अब शायद ही जीतेंगे। उन्होंने नेताजी सुभाषचन्द्र बोस की हिम्मत और बहादुरी की प्रशंसा भी की। बाद में यहां जब 'क्रिप्स मिशन' आया तबतक हवाई दुर्घटना में नेताजी सुभाष की मृत्यु की खबर फैल चुकी थी। गांधीजी ने उनकी मा को एक शोक-संदेश भेजा था, जिसमें नेताजी सुभाष की हार्दिक प्रशंसा पढ़कर सभी विस्मित हो गये।

जमनालालजी १६४० के शुरू मे, पूना, बम्बई और वर्धा मे रहे, बाद मे सीकर, जयपुर, दिल्ली। साल के आखिरी महीनों मे वे फिर वर्धा आ गये। उसके बाद अपने रहन-सहन और व्यावसायिक नीति के बारे मे भी मग्न होने लगे। जैसे, पुरानी कार (फोर्ड) बदलकर ३०

और भी एक खास बात पर नजर पड़ेगी। वह यह कि जो भी व्यक्ति उनके अपने दायरे में आ गया, उसे फिर उन्होंने अपने से कभी नहीं अलगाया। लेकिन उनके बारे में अपनी निरपेक्ष दो टूक राय व्यक्त करने में ये कभी नहीं हिचकचाये। वे दूसरों के दुख को बड़ी तीव्रता से महसूस करते थे। मसलन, तुलसीराम और शिवबक्स ढोकवाल के लड़कों की मृत्यु पर उन्हें सचमुच बहुत दुःख हुआ था।

गांधीजी और विनोबाजी से अपने हर छोटे-बड़े काम में जमनालालजी प्रायः परामर्श करते थे। अनावश्यक जिद करने या अपने किसी भी नियम पर 'लकीर के फकीर' बनने से वे हमेशा बचते रहे। रेल में वे प्रायः तीसरे दर्जे में ही चढ़ते। लेकिन संग-साथ के लिए कोई आग्रह करता तो, या किसी अन्य अनिवार्य परिस्थिति में, वे कभी-कभी दूसरे या पहले दर्जे में भी चले जाते।

उनकी मानवीयता की बहुत-सी मिसालें तो बेजोड़ हैं। जैसे फरवरी, १६४० के अन्तिम दिन वह पटना में कांग्रेस की कार्यकारणी समिति की एक बैठक में शामिल हुए और वहां अपनी पूरी व्यस्तता में भी वे यह नहीं भूल सके कि हमीदा और प्रबोध के अन्तर-साम्प्रदायिक विवाह के बारे में प्रसिद्ध वकील श्री भूलाभाई देसाई से सलाह लेनी है। 'शादीलाल', जो उनका एक नाम रखा गया था, वह इसी तरह सदा सार्थक होता रहा। ऐसे ही, मार्च १६४० में, कई महीनों बाद उन्होंने दिल्ली में एक रोटी, थोड़ी-सी कढ़ी और साग खाये तो, जिसने प्रेम से यह सब बनाकर परोसा, उसके नाम को अपनी डायरी में लिखना नहीं भुलाया। जयपुर के महाराजा और प्रजामडल का संघर्ष तो उनकी अधिकांश शक्ति और समय को ले ही रहा था। मुख्यतः उसी में उनका स्वास्थ्य भी चौपट हुआ, और फिर कड़े कारावास के बाद तो वह फिर धरा ही नहीं। यह उनके व्यक्तित्व के उत्कर्ष में बहुत बाधा डाल सका। हां, उनकी सेहत पर अवश्य ही इसका बहुत प्रतिसर पड़ा।

जमनालालजी मार्च-अप्रैल १९४० में, जयपुर राज्य प्रजामण्डल की समस्याओं के समाधान में लगे रहे। मोरासागर का सहज प्राकृतिक सौंदर्य देखकर उन्हें अपनी पत्नी, बहू और बेटी की याद आयी कि वे सब भी देखतीं तो कितना अच्छा होता। यहीं वे उन सब व्यक्तियों का उल्लेख करते हैं, जिन्हें जयपुर सरकार ने सिपाही के तौर पर और परिचर्या के लिए रखा था, और जिन्हें उनकी स्थिति में दूसरा कोई शायद ही कभी याद करता, जैसे—चौथा गूजर, घन्ना पटेल, गणेश भगत, नवाउद पटेल वगैरा। हिंडौन के एक नजदीकी गांव में चमारों के घर जल गये, यह जानकर उन्हें दुख हुआ। वहां फौरन जाकर हम-दर्दी से मदद की। चर्खा दंगल और खादी प्रदर्शनी से वे बहुत हर्षित हुए। उन्होंने जगह-जगह पर जुलूस और सभाओं में चर्खा, खादी और प्रजामण्डल के उद्देश्यों के बारे में लोगों को काफी कुछ समझाया। जय-पुर के महाराजा को वस्तुस्थिति बतादी। जयपुर के कुछ मुख्य कार्य-कर्ताओं में निष्ठा की कमी से उन्हें हार्दिक दुख हुआ। राजा ज्ञाननाथ जयपुर के दीवान के दोहरे बर्ताव से भी उन्हें कोई कम चोट नहीं पहुंची। लेकिन उन्होंने स्वयं कभी कहीं अपनी भलाई मर्यादा का उल्ल-घन या परित्याग नहीं किया। सिर्फ सही स्थितियां ही सदा स्पष्ट कीं। वे जहां भी जाते, कुछ कार्यकर्ता अवश्य ही तैयार कर देते। सज्जनों की दिल खोलकर तारीफ करते, उनके अच्छे कामों की सराहना करते और सबके [illegible] होने के नाते, दुर्जनों से भी, द्वेष का तो कोई ख्याल ही नहीं उठता था।

सिर्फ जयपुर ही नहीं, अन्य देशी राज्यों से भी इनके पास आने वालों का तांता लग गया। राजपूताना में जोधपुर और उदयपुर के लोग भी प्रजामण्डल का महत्व समझने लगे। उधर जयपुर के दीवान ने कई दमन और ज्यादती की कार्यवाहियों से डराने की कोशिश की। लेकिन नतीजा कुछ नहीं निकला। उसमें दीवान साहब की ही हार हुई

एक नजर से, इन डायरियो मे दी गयी छोटी-से-छोटी बातो का, तथ्यो का, घटनाओ का, मूल्यांकन इसी परिपेक्ष्य मे हो सकता है ।

आज के हालात, राजनीति और अन्तरराष्ट्रीय स्थितियो मे बहुत अन्तर आ गया है, फिर भी ये डायरियां पढते वक्त बार-बार यही खटकता है कि यदि तब देश के अगुआ या नेता लोग अपनी मति-गति, रीति-नीति, भाव-विचार, शील, चरित्र आदि इतने चुस्त-दुरुस्त रख पाते थे तो आज के नेतागण क्यों नही रख सकते ? क्या सिर्फ इसीलिए कि वह आजादी के जंग का जमाना था, आज की तरह की आपाधापी तृष्णा-तुरग की दौड़, जुआरी प्रवृत्ति इतनी नहीं बढी थी ।

विनोबाजी और जमनालालजी बापू के ये दो अनुयायी सारे स्वातंत्र्य संघर्ष युग मे बेजोड ही रहे । बाद मे भी, विनोबाजी की तरह, यदि बापू का पाचवां पुत्र भी जिन्दा रहता तो पता नही, वह क्या-क्या कर दिखाता । शायद उसे भी बापू की शहादत का सदमा वैसे ही सहना पडता जैसेकि विनोबा ने सहा था । विनोबा को जमनालालजी अपना गुरु मानते थे—अपने ही नहीं, अपने परिवार के गुरु । ये दोनो अगर दो-तीन युग और भी साथ-साथ काम कर लेते तो शायद भूदान, ग्रामदान, जीवनदान, गो-सेवा, गो-सरक्षण, खादी, ग्राम स्वास्थ्य, ग्रामोदय, हिन्दी प्रचार, गीता-ज्ञान-यज्ञ आदि कार्य और भी अधिक व्यावहारिक स्तर पर प्रतिष्ठित होते रहते । विनोबा तो इनकी पूर्ति मे जीवनदानी ही बन गये थे ।

महाराजा हो या मामूली आदमी, महारानी हो या कोई सामान्य महिला, सभी पर जमनालालजी का ऐसा असर पड़ता था कि सब उनके परिचित बन्धुओ मे शुमार जाते । स्वयं पदारूढ बने रहने की इच्छा तो उन्हे कभी नही रही । अपनी मानवीयता और स्वभाव के अलावा और किसी घमण्ड या फिजूल दिखावे से वे ज्यादातर बरी ही रहे । लेकिन जिन्दगी के मामूली सुखो मे उन्हे न कोई विशेष विरक्ति थी, न उनमे तीव्र आसक्ति । न उनका किसी से कोई दुराव था, न बहुत ज्यादा

लगाव या अलगाव। वे पत्ते (ताश) भी खेलते, और नाटक-सिनेमा देख लेते, शतरंज खेलते, उर्दू पढ़ते, चर्खा कातते और हंसी-मजाक भी कर लेते। जेल में भी वे गीता, एकनाथ के पद, अच्छे उपन्यास, जीवन-चरित पढ़ने और सुनते रहे। संत-महात्माओं के संपर्क में आने को वे सदा ही उत्सुक और उत्साहित रहते थे। एक ओर बड़े-से-बड़े आदमियों से अहम मसलों पर उनके गम्भीर विचार-विनिमय, विमर्श-परामर्श चलते तो दूसरी ओर वे हर एक परिचित के दुःख-सुख की खबर भी लेते। उसके लिए कुछ-न-कुछ कर गुजरने की ललक तो वे कभी नहीं मिटने देते थे। इन डायरियों में इसकी मिसालें प्राय. हर पन्ने पर मौजूद हैं। स्वय उनका ही नहीं, धर्म-पत्नी जानकीदेवी का भी बहुत कुछ यही हाल था। वे 'ज्ञानदेव' फिल्म देखने के बाद बहुत उदास होकर रोती रही थी।

यहां पर सबसे बड़ी बात है जमनालालजी की स्वीकारोक्तियां, जिनमे छोटी-सी-छोटी कमजोरियों पर मुलम्मा चढ़ाकर पेश करने की बनावटें कतई नहीं हैं।

अपनी अगाध मानवीय सम्वेदना से भी उन्हें प्रायः सुख-दुख की कुछ तीखी अनुभूति या पीड़ा मिलती। मद्रास मे समुद्र-स्नान करते वक्त डूबते हुए चार युवकों में से दो ही बचते देखे तो उनका मन खराब हो गया। अपने नाती राहुल की जन्मतिथि के उत्सव मे वे स्वयं भी बाल-गोपाल बन बैठे। शिकार करते वक्त शेर ने शिकारी ठाकुर को मार गिराया तो परेशान हुए। किसी भी परिचित की शादी की खबर से वे खूब खुश हो जाते थे।

दूरदेश वे इतने थे कि १३ जून, १९४० को ही यह आखिरी फैसला कर डाला कि अभी रंगून में कोई फैक्टरी नहीं लेंगे (कुछ समय बाद ही वहां जापानियों का प्रभुत्व हो गया था)। वर्धा में कामर्स कालेज होना था तो इसका पूरा आयोजन वे शुरू से ही करने लगे थे। आज वहां उनका शिक्षा मंडल और भी कितने ही शिक्षण-संस्थान चला रहा है।

डायरी लेखन-अवधि में ही वर्धा में कांग्रेस कार्यकारिणी समिति की बैठकें हुईं। गांधीजी के प्रति असीम भक्ति और निष्ठा होने पर भी जमनालालजी ने अपनी राय स्वत. ही तय की। वे यही चाहते थे कि कांग्रेस में सब लोग साथ रहें। वहां उन दिनों सुभाषचन्द्र बोस भी थे। सिख नेता मास्टर तारासिंह भी आये थे। हिन्दू-मुस्लिम एकता का सवाल तो मुंह बाये खड़ा ही रहता था, हमेशा। मौलाना आजाद, डा० सैयद महमूद, रफी अहमद किदवई और आसफ अली जैसे नेता भी उसका ठीक जवाब नहीं खोज पाये थे। पंजाब और बंगाल की लीगी सरकारों ने तो कांग्रेस का कभी साथ नहीं दिया। कायदे आजम जिन्ना राष्ट्रीय कांग्रेस को एक हिन्दू संस्था मानने लगे थे। उन्होंने तो मौलाना आजाद से भी यही कहा था कि वे कांग्रेस छोड़ दें, मुस्लिम लीग में आ जायें।

जो हो, जमनालालजी ने १६४० के पहले छ: महीने तो अपना अधिक समय, श्रम और शक्ति देशी राज्य प्रजा परिषद की ओर लगाया था। वर्धा में कामर्स कालेज के लिए गोविन्दरामजी सेक्सरिया से एक-मुश्त १। लाख का अनुदान लिया तो कामर्स कालेज के नाम के साथ यह नाम भी जुड़ गया। वैसे जमनालालजी की इस कामयाबी पर घनश्यामदास बिड़ला भी चकित हो गये थे। बापूजी भी खुश हुए थे। जुलाई १६४० के प्रथम सप्ताह में वे दिल्ली आये। कांग्रेस कार्यकारिणी की एक बैठक में शामिल हुए। अपनी छोटी बेटी उमा की शादी तय की—बापू की राय लेकर। महामना मदनमोहन मालवीयजी से मिले तो दोनों ही बहुत खुश हुए।

अपना मत साफ जाहिर करने में वे हमेशा आजाद रहे। उन्होंने चक्रवर्ती राजगोपालाचारीजी के प्रस्ताव को कांग्रेस कार्यकारिणी में अपना समर्थन दिया, यद्यपि पं० जवाहरलाल नेहरू, मौलाना आजाद और डा० खानसाहब उसके खिलाफ रहे।

विनोद-प्रियता जमनालालजी की एक खासियत थी। वर्धा में अपने

मगने पर उमा की शादी तय होने का आनन्द-मंगल हुआ तो बापू ने जमनालालजी की मां के और मां ने बापू के पांव पकड़े। डायरी में इसका उल्लेख करना नहीं भूले। ठीक व्यवस्था न होना भी उन्हें सदा खटकता था। इस बारे में तो अपने बड़े बेटे (श्री कमलनयन) को भी माफ नहीं कर पाते थे। छोटी बेटी उमा की विदा में बहुत ही अभिभूत हुए। बस, कुछ सन्तोष था उन्हें तो यही कि दूसरी बेटी मदालसा और उनके पति श्रीमन्नारायणजी वर्धा में ही बस गये थे।

पूना में फिर कांग्रेस कार्यकारिणी की बैठक में उन्हें गांधीजी की आलोचना सह्य नहीं हुई, यद्यपि उनका मत गांधीजी से स्वतंत्र हो रहा था। वे यही मानते थे कि कांग्रेस के अपने राजनीतिक संघर्ष में भले ही हमलोग अहिंसा का व्रत न छोड़ें, पर स्वतंत्र राष्ट्र की रक्षा के लिए तो केवल 'अहिंसा' से ही सारा काम नहीं चल सकता। ऐसी थी उनकी विशिष्ट व्यक्तिगत वैचारिक निष्ठा।

पूना से वर्धा आने पर वे बहुत व्यस्त हो गये। फिर भी बापू के कहने पर मीराबेन (मिस स्लेड) की शादी पृथ्वीसिंह आजाद से होने की कोशिश करने का वादा किया। अगस्त १९४० में, ८,११,१६,१८ और २२ तारीखों की डायरी के पृष्ठों में, पाठक देखेंगे कि सरदार पृथ्वीसिंह आजाद किसी भी तरह यह शादी करने को राजी नहीं हुए थे।

जमनालालजी फिर कांग्रेस कार्यकारिणी और आवश्यक कार्यों में व्यस्त हो गये। उन्हें इस बात का भी दुःख था कि बापू कांग्रेस से अलग रहना चाहते हैं, क्योंकि सारे कांग्रेसी लोग पूरी तरह सर्वत्र अहिंसा के प्रतिपालन के लिए प्रस्तुत नहीं हैं। बापू की यह पक्की धारणा बन गई थी कि वे अब कांग्रेस का भला, आइंदा से, अलग रहकर ही ज्यादा कर सकेंगे, कारण कि कांग्रेस में तो वे तभी रह सकते थे जब कि कार्यकारिणी के सभी सदस्य उनके अनुगत हों।

पं० जवाहरलाल नेहरू की अगस्त के अन्त में तो यही इच्छा थी कि सारे कांग्रेसी पहले से पूना प्रस्ताव को रद्द समझकर रामगढ़ कांग्रेस

प्रस्ताव को ही अपनी व्यावहारिक नीति मानें।

गांधीजी के लिए यह बर्दाश्त से बाहर की बात थी कि लोग बैठे-ठाले यह मजाक उड़ायें कि कांग्रेस ने वर्धा में हुई बैठक में अहिंसा त्याग दी और दिल्ली में हुई बैठक में सत्य। वे यह भी खूब समझ रहे थे कि इन दिनों भारत की रक्षा का मतलब सिर्फ 'ब्रिटेन की रक्षा' ही लिया जा रहा है। कोई भी ठोस-सी कार्यवाही शुरू न कर सकने से कांग्रेसी युवा यह सोचते थे कि वह कायर बन रही है, और सरकार यह सोचती थी कि कांग्रेस कमजोर पड़ गई है।

एक त्रिकालदर्शी ऋषि की तरह गांधीजी यह साफ समझ गये कि वर्तमान (तात्कालिक) वातावरण में हिंसा की भावना ही अधिक व्याप्त है और कांग्रेस में भ्रष्टाचार भी जगह-जगह बढ़ गया है। इसीलिए, वे खुले आम कांग्रेस की कटु आलोचना से कभी नहीं चूके थे। वे यही चाहते थे कि अब जिस महान समूची क्रांति का आन्दोलन शुरू होने वाला है, लोग पहले उसके लिए ठीक से तैयार तो हो लें।

उन्हें यह भी स्पष्ट झलक रहा था कि १५ सितम्बर, १९४० को बम्बई में होने वाली अखिल भारतीय कांग्रेस की बैठक में सारे अन्तर्विरोधों का शमन होना ही चाहिए। और यही हुआ भी।

जमनालालजी फिर जयपुर चल दिये। उन्हें प्रजामण्डल का काम आगे बढ़ाना था और वह बढ़ा भी। दीवान का विरोध, महाराज से मुलाकात। जनता का सहयोग। सभी कार्रवाइयां हुईं। सारे राज्य का दौरा किया। उत्तेजना के मौकों पर संयम बरता। प्रचार ने और भी ज्यादा जोर पकड़ा।

बम्बई की कांग्रेस की बैठक में वे शामिल नहीं हो सके। बापू की वजह से वहां तनाव कुछ तो कम हो ही गया, क्योंकि लोग यह समझ गये थे कि गांधीजी के नेतृत्व में कोई गहरा आन्दोलन शुरू होने वाला है।

तभी २६ सितम्बर को लन्दन से दिये एक वक्तव्य में मि० एमरी ने जो बातें कहीं, उनसे यह भी साफ झलकने लगा था कि अंग्रेज अपनी

कूटनीति से कभी बाज नहीं आवेंगे। वे आपस में आसानी से इकट्ठे नहीं होने देंगे।

आखिर कांग्रेस को १७ अक्तूबर, ४० से सत्याग्रह फिर करना पड़ा। गांधीजी द्वारा बढ़ाया गया दोस्ती का हाथ दुबारा झटक दिया गया।

जन-सेवक और जन-नायक

एक बहुत व्यापक सत्याग्रह देश में तीसरी बार शुरू हुआ। उसमें पहले सत्याग्रही बने श्री विनोबा भावे। दूसरे श्री जवाहरलाल नेहरू। सत्याग्रह के लिए निश्चित तारीख से पहले ही नेहरूजी को छिवकी (इलाहाबाद) रेलवे स्टेशन पर गिरफ्तार किया गया। विनोबाजी को २१ अक्तूबर को ३ माह की सजा हुई तो नेहरूजी को ४ साल की। फिर सरदार पटेल और बी० जी० खेर को जेल में बंद किया गया। यह सिलसिला जारी रहा और २१ दिसम्बर को जमनालालजी भी ६ महीने की सादी कैद काटने नागपुर जेल पहुंचा दिये गए। लेकिन इससे पहले वे सारे जयपुर में अपनी महत्वपूर्ण सेवा के 'चन्दन बिरवा' जगह-जगह रोप चुके थे। 'जंकात आन्दोलन' की जड़ें वहां गहरी जम गयीं। खादी प्रसार हुआ। उन्होंने जन-हित में चलते अच्छे-भले कार्यों को हर जगह बढ़ावा दिया। दिल्ली में आठ घंटे की कड़ी मेहनत के सात आने मर्द मजूरों को और पांच आने औरत मजूरों को रोजाना मजूरी मिलते देखकर वे द्रवित हो उठे, क्योंकि ये लोग वहां ५ मील दूर से पैदल चलकर आते थे। गांधीजी ने जमनालालजी से अखिल भारतीय कांग्रेस की फिक्र न करके पहले देशी राज्यों की राजनीति में ही व्यस्त रहने को कहा था। लेकिन गांधीजी की वाइसराय से शिमला में हुई वार्ता जानकर जमनालालजी ने अपनी डायरी (३०-६-४०) में लिखा "संघर्ष अनिवार्य है।"

जयपुर में जमनालालजी के साथ डा० राजेन्द्रप्रसाद (बाद में,

भारत के प्रथम राष्ट्रपति), हरिभाऊजी उपाध्याय, गीतारामजी सेकस-रिया, हीरालालजी शास्त्री, भागीरथीबहन आदि रहे। उदयपुर मे भी उनका जोरदार स्वागत हुआ। उदयपुर मे राणा और दीवान, जयपुर के महाराजा तथा उनके दीवान से ज्यादा समझदार निकले। जमनालालजी से उनकी सतोषप्रद बातचीत हुई।

अक्तूबर १९४० के पहले पखवाडे मे जमनालालजी वर्धा आये और वहा रहे। काग्रेस कार्यकारिणी की बैठक मे शामिल हुए। वर्धा की बैठक मे ही सत्याग्रह शुरु करने का निर्णय हुआ। यहा देश के प्रमुख काग्रेसी नेताओ से उनका विचार-विनिमय हुआ। जवाहरलालजी और मौलाना आजाद गाधीजी से पूरी तरह सहमत न होकर भी उनके नेतृत्व मे अनुशासन-पालन के पक्ष मे थे। महान् शीर्षस्थ नेता के प्रति यह भावना ही उन दिनो कांग्रेस की सबसे बडी शक्ति थी।

जमनालालजी ने जयपुर के बारे मे सबसे सलाह-मशविरा किया। फिर वे दूसरे पखवाडे के शुरू मे बम्बई मे रहे। अपने सारे व्यावसायिक काम-काज भी सुव्यवस्थित किये। कई कपनियो के अध्यक्ष पद से उन्होने त्यागपत्र दिये और १७ अक्तूबर को जब विनोबाजी ने सत्याग्रह शुरू किया तब वे सुरगाव मे मौजूद थे। वहा से वे दोनो सेलू और वर्धा आये। विनोबाजी के जोशीले सत्याग्रह-भाषण जारी रहे। वहा से देवली, फिर वर्धा। २१ ता० को तडके से पहले ही विनोबा पवनार से गिरफ्तार होकर नागपुर जेल पहुचा दिये गए। सरकार ने उन्हे तीन ही बार भाषण करने दिये थे। वर्धा में उस दिन एक व्यापक हडताल द्वारा विरोध प्रदर्शन हुआ।

बम्बई-पूना होकर जमनालालजी फिर जयपुर आये। पूना मे उन्होने बडौदा की राजमाता से मुलाकात की थी और रतलाम मे उदयपुर के दीवान सर टी० राघवाचारी से। जयपुर से वे सीकर और काशी-का-बास गये। दिवाली सीकर मे मनायी—राजेन्द्रबाबू के साथ। गाधीजी की इच्छा से राजेन्द्रबाबू वहा अपनी सेहत ठीक कर रहे थे। वहां

से वे दोनों जयपुर आ गये। आगाह चौक (जयपुर) में राजेन्द्रबाबू का भाषण हुआ था, जाहिर सभा में। जयपुर प्रजामंडल की गतिविधि वालों से दुःखी होकर जमनालालजी ने भी यह स्पष्ट कह दिया था कि वे अब प्रजा मंडल के सभापति नहीं रहना चाहते। लेकिन वहां के लोग पीछे पड़े रहे कि जमनालालजी ऐसा न करें, क्योंकि सारा उत्तरदायित्व संभालने वाला वहां अभी और कोई नहीं था।

वर्धा से तार मिलने पर वे फिर वहां आये। यह सुनते ही कि सिर्फ एक नौकरानी लेकर जानकीदेवी अकेली बम्बई इलाज के लिए गयी हैं, उन्होंने तुरन्त कमलनयन (बड़े बेटे) को वहां भेजा। नागपुर में उस समय गांधीजी की उपवास-योजना की अफवाह फैली थी। ५ नवम्बर से वर्धा में कांग्रेस कार्यकारिणी बैठी। उसमें आसफ अली और सरदार पटेल की आपसी भड़प से जमनालालजी बहुत दुःखी हुए। बापू ने किसी तरह सारी स्थिति समझ-बूझकर अपने उपवास की जिद छोड़ दी। जमनालालजी को आचार्य कृपालानी का बर्ताव भी अच्छा नहीं लगा। लेकिन स्वयं ही सबके मेजबान होकर वे किसी से कुछ कह सकने की स्थिति में नहीं थे। वे सभी कुछ सहन करते रहे। इसी बीच अपने कई सुपरिचितों की मृत्यु के समाचारों ने भी उन्हें व्यथित किया।

७ नवम्बर को इसी बीच एक खुशी का मौका आया, अर्थात् डा० सुन्दरम (ब्राह्मण कन्या) का रामचन्द्रन नायर से विवाह, जिसमें गांधीजी ने 'कन्यादान' किया और परचुरे शास्त्री ने पौरोहित्य। परचुरेजी सेवाग्राम के वह कुष्ठरोगी थे, जिनकी सेवा करने में गांधीजी बराबर संलग्न रहे। वर-वधू को कन्या के मा-बाप का आशीर्वाद नहीं मिला, लेकिन चक्रवर्ती राजगोपालाचारी, मौलाना आजाद, गोविन्दवल्लभ पंत, सरोजनी नायडु आदि ने यह कमी पूरी कर दी। सेवाग्राम में ही कुमारी शरद पारनेरकर से डा० प्रभाकर माचवे की शादी हुई। यह भी एक अन्तर्जातीय विवाह था, जो बापूजी और जमनालालजी की उपस्थिति
... सम्पन्न हुआ।

चर्खा संघ के ट्रस्टी, खजाची और राजस्थान के एजेन्ट पदो से त्यागपत्र देने के बाद जयपुर और उदयपुर राज्य के कर्ताधर्ताओ को पत्र लिखकर जमनालालजी बम्बई आये और वहां कई व्यापारिक सस्थानो मे त्यागपत्र दिये। कुछ दिनो तक वे फिर डा० जस्सावाला के 'नेचर क्योर क्लिनिक' मे अपनी पत्नी जानकीदेवीजी के साथ अपना इलाज कराने मे व्यस्त रहे।

४ नवम्बर, १९४१ से उनका ५२वा वर्ष शुरू हुआ। कामकाज का दबाव बढता गया। बम्बई मे उन्होने 'स्टेट पीपुल्स कमेटी' का काम पूरा किया। वहा से फिर वे अहमदाबाद आये। सरदार पटेल को यही गिरफ्तार किया गया था, लेकिन सरकार ने जमनालालजी को उनसे मिलने की अनुमति नहीं दी। तब मोरारजीभाई, रविशकर महाराज, निर्मलाबेन आदि के साथ मिलकर और एक बडी विरोध-प्रदर्शन सभा मे शामिल होकर वे बम्बई वापस आ गये। वहा राज्य प्रजा परिषद आदोलन के लिए मदद लेने की बाते की। खेर साहब भी बैठक मे जाने वाले थे, लेकिन उनकी गिरफ्तारी की खबर आ गई तो वे खार जाकर उनसे मिले।

विले पार्ले की सभा मे आखिर जमनालालजी को ही अपना भाषण देना पडा। फिर बापू का तार पाकर वे वर्धा की ओर चल दिये। वहा उन्होने एक चीनी राष्ट्रीय प्रतिनिधि मडल का स्वागत-सत्कार किया। वे लोग गाधीजी से भेंट करने आये थे। साथ ही, सत्याग्रह आदोलन मे भाग लेने के लिए जमनालालजी ने अपना कार्यक्रम भी निश्चित किया। तभी च० राजगोपालाचारी वहा आये। गाधीजी उन दिनो अचानक बढते हुए अपने ब्लड प्रेशर से परेशान थे। भूलाभाई देसाई ने गाधी चौक (वर्धा) मे हुई एक आम सभा मे काग्रेस की असेम्बली-कार्यनीति और वर्तमान स्थितियो पर प्रकाश डाला। गाधीजी से जमनालालजी को सारे प्रात मे आन्दोलन के लिए घूमने और वही से भी 'व्यक्तिगत सत्याग्रह' करने की आज्ञा मिल गयी। श्री सत्यमूर्ति

का भी एक भाषण गांधी चौक में हुआ, जिसका हिन्दी तर्जुमा दादा धर्माधिकारी ने सभापति के पद का निर्वाह करते हुए किया।

वर्धा में जमनालालजी के बच्छराज भवन से संलग्न एक बड़ी-सी जगह है 'गांधी चौक', जो भारत के राजनीतिक इतिहास में अपना अलग स्थान रखती है। उन दिनों शायद ही कोई ऐसा अखिल भारतीय स्तर का नेता था, जिसका स्वागत-सत्कार यहां न हुआ हो, और जिसने अपने भाषण से वर्धा शहर की जनता में राजनीतिक चेतना का गहरा संस्कार न जगाया हो। आज भी गांधी चौक में कोई-न-कोई महत्वपूर्ण सभा अथवा सांस्कृतिक आयोजन होता रहता है। इसके पार्श्व में ही वह लक्ष्मीनारायण मंदिर है, जिसे भारत में सर्वप्रथम हरिजनों के लिए अपने द्वार खोलने का गौरव प्राप्त हुआ था।

नवम्बर १९४० के अन्त में श्री बजाज ने कुमारी रमा और श्री निवास रुइया की शादी का प्रबन्ध किया। गांधी चौक में मौलाना आजाद का भाषण हुआ, जिसमे आचार्य कृपालानी भी मौजूद थे। दिसम्बर के पहले सप्ताह में ही जमनालालजी ने नागपुर के टाउन हाल में भाषण दिया। फिर ये कामठी, रामटेक, काटोल आदि में बोले। सेवाग्राम वापस आकर वे केलोद और सावनेर गये। बापू से जलियांवाला बाग के ट्रस्ट के बारे में बातचीत की। उन्ही की इच्छानुसार सेवाश्रम की अतिरिक्त जमीन की व्यवस्था की। कलकत्ता मे भी एक जमीन दान कर दी। तुमसर, भंडारा, साकोली, गोंदिया, पोहनी, आरमोरी, ब्रह्मपुरी आदि में कांग्रेस की सभाएं की और भाषण दिये। फिर नागभीड़, सीन्देवाई, राजोरी मूल चादा, चिमूर तथा वरोरा में भी उनका वैसा ही सम्मान हुआ। १५ दिसम्बर को दौरे से वर्धा वापस पहुंचने पर वे नवभारत विद्यालय में महादेव देसाई की सभा में शामिल हुए। सेवाग्राम जाकर बापू को अपने समस्त यात्रा-कार्यक्रम का ब्यौरा सुनाया। अपने अनुभव बताये। विदर्भ प्रांत की राजनीतिक परिस्थिति र जन-चेतना का महात्माजी को एक अच्छा-खासा जायजा दिया।

वर्धा में वह बस मुश्किल से एक सप्ताह ही रह पाये। इसी बीच कई जरूरी काम किये और भी कई जगह सभाओं में भाषण किये, हरिजनों के लिए एक कुआ खुलवाया। कई अन्य प्रान्तों के नेताओं का वर्धा में स्वागत-सत्कार किया। भावी कार्यक्रम तय किये। २१ दिसम्बर को गांधी चौक में फिर एक आम सभा होने से पहले ही उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया। पुलिस मोटर लेकर सेवाग्राम पहुंच गई थी—बड़े सवेरे। उस दिन की डायरी बड़ी मार्मिक है।

बंदी जीवन

जमनालालजी की जेल डायरी—२२ दिसम्बर ४० से ३ मार्च ४१ तक—उनका एक और ही व्यक्तित्व पेश करती है। उन्होंने वहां (नागपुर जेल में) भी सभी कुछ व्यवस्थित करने का प्रयत्न किया था। साथी राजनीतिक बंदियों और जेलर तथा सुपरिटेंडेंट जेल से भी उनका अच्छा व्यवहार रहा, और उन लोगों को भी 'ए' क्लास के बंदी होने के कारण उन्हें कुछ खास सुविधाएं मिली थीं, लेकिन अपनी खातिर वे जेल का कोई भी कानून भंग करने के खिलाफ रहे। उन दिनों वहां उन्हें विनोबाजी का सत्संग भी खूब मिला। उनसे मिलने जाने वालों की भी संख्या कम नहीं रहती थी। लेकिन गोडे का दर्द परेशान किये था। 'मालिश से इलाज' नहीं, सिर्फ कुछ 'आराम' होता था।

कांग्रेसी बंदी-जन महीने के हर आखिरी इतवार के दिन, जेल में भी, झंडावादन किया करते थे। विनोबाजी का 'गीता' क्लास चलता था। उन्होंने १९३१ में अनुष्टुप छंद में ही गीता का मराठी अनुवाद 'गीताई' (गीता-माता) नाम से किया था, जो बाद में बहुत प्रसिद्ध हुआ। यह एक अलग कहानी है कि आज वर्धा में एक बहुत ही दर्शनीय 'गीताई मंदिर' है, जिसमें 'गीताई' के ७०० श्लोक एक-एक शिला-खंड पर अत्यन्त कुशल कारीगरी से खचित हैं। वे सब गोपुरी की पुण्य-भूमि के एक विस्तृत भूखंड पर इस तरह रोपे गये हैं कि उनसे एक ऐसी रूपरेखा बनी है, जिसमें गाय और वर्धा की आकृतियां समायी-सी

लगती है । इस मंदिर में और कोई भी मूर्तियां, नक्काशीदार खंभे, छत, महराब अथवा तोरण आदि नहीं हैं । 'गीताई' कंठस्थ करने की पद्धति और उसके नित्य पाठ और अध्ययन का प्रचार भी गीता-मंदिर करता है ।

जेल में दोपहर बाद २॥ से ३॥ बजे तक जेल में हुए प्रवचन के शुभारंभ के लिए जमनालालजी ने ही आग्रह किया था, ताकि विनोबाजी के अगाध पांडित्य और महान् चारित्र्य का लाभ अधिकाधिक लोगों को हो सके । प्रतिदिन विनोबाजी कोई-न-कोई महत्वपूर्ण विषय लेते और उसकी मौलिक व्याख्या करते थे । जेल भी उनकी साधना-भूमि बनी थी । जमनालालजी की डायरियों के पृष्ठों में यह बहुत अच्छी तरह, संक्षेप में, निर्दिष्ट है ।

विनोबाजी की परिकल्पना थी कि भारत के पांच-सात लाख गांवों में रचनात्मक कार्य के लिए कम-से-कम एक लाख प्रशिक्षित कार्यकर्ता होने चाहिए । जमनालालजी उनसे इस बात में पूर्णतया सहमत थे । जेल से विनोबाजी १५ जनवरी, १९४१ को छूट गये । लेकिन उन्होंने फिर सारी वर्धा तहसील में युद्ध-विरोधी भाषण शुरू कर दिये थे । २२ जनवरी, १९४२ को विनोबाजी फिर नागपुर जेल पहुंचा दिये गए । जमनालालजी के अनुरोध के बावजूद पहले तो इन दोनों को साथ नहीं रहने दिया गया, बाद में यह संभव हुआ ।

परमार्थी

जमनालालजी की सेहत, जो जेल में खराब हुई और गिरी, वह फिर कभी सुधरी ही नहीं । पर उन्होंने अपने नियम बिलकुल नहीं छोड़े । सुबह जल्दी उठना, तकली और चर्खा कातना और आध्यात्मिक साधना, प्राकृतिक चिकित्सा से संपूर्ण आरोग्य-लाभ की चेष्टा और एलोपैथी से यथा-सम्भव बचना (परीक्षण या सर्जरी आदि के लिए वे कभी-कभी इसका इस्तेमाल गांधीजी की तरह कर लेते थे) । साथ ही, किसी का [illegible] करने का कोई भी अवसर कभी न छोड़ना—जेल-जीवन में भी ।

जेल में रहते हुए उन्होंने कितनी ही श्रेष्ठ पुस्तकें पढ़ डाली, उर्दू पढ़ना सीखा। बाहर-अन्दर के खेल भी खेले (जैसे बॉलीबॉल और शतरंज)। यहीं इनसे मिलने डा० राजेन्द्र प्रसाद आये। जेल में ही कवि श्री भवानी प्रसाद मिश्र की कविताओं का आनन्द लेते रहे। राजकुमारी अमृतकौर से मिले। बापू की सेहत के बारे में भी वे सेवाग्राम से आने वाले हर शख्स से खोद-खोदकर पूछते थे।

पत्नी जानकीदेवी की सेहत उनकी चिन्ता की एक बड़ी वजह बनी रही। कुछ लोगों का बर्ताव भी उन्हें पीडित करता रहा। किन्तु वे क्षमाशीलता और सहिष्णुता के ही व्रती बने रहे। डायरी तो वे रोज लिखते ही थे, और जो भी सत्य उन्हें जीवन में 'निधि' जैसा लगता, वे समय पर उसकी याद के लिए उसे अत्यन्त सक्षेप में प्रतिदिन लिखकर सहेजते रहे। मसलन, २० फरवरी को लिखा डायरी का यह अंश देखें-

"व्यवहार में जीवन-वेतन। औसत आयु हिन्दुस्तान की इक्कीस साल, इगलैंड की बयालीस साल। लड़कपन के पहले चौदह साल छोड़ देने से हिन्दुस्तानी सात वर्ष और इगलैंड वाले अठाईस साल, यानी चौगुने जीते हैं।

"समाजवाद का मत्र—जो धनिक अपने आसपास के लोगो की परवा न करता हुआ धन इकट्ठा करता है, वह धन प्राप्त करने के बदले अपना 'वध' प्राप्त करता है।

"सायणाचार्य ने इस मत्र का भाष्य करते हुए 'वध' और 'मृत्यु' के भेद की तरफ ध्यान दिलाया है। (वध—दूसरे के हाथो मारा जाना, अथवा किसी को मारना और मृत्यु जो स्वाभाविक या प्राकृतिक तरीके से हो)।

"त्याग तो बिलकुल मूले कुठार करने वाला है। दान ऊपर-ही-ऊपर से कोपलें नोचने के जैसा है। त्याग पीने की दवा है, दान सिर पर लगाने की सोंठ है। त्याग में अन्याय के प्रति चिढ है, दान में नामवरी का लालच है।

जाहिर है कि सद्गुण के ज्ञान-संचय में जमनालालजी एक के पारसी जौहरी को भी मात करते थे। संत एकनाथ के जो पद उन्होंने डायरी में दिये हैं, वे भी यही प्रकट करते हैं। विनोबा द्वारा व्याख्यात ऋग्वेद की यह पंक्ति भी उन्हें बहुत प्रिय थी "व्यचिष्ठे बहुपाय्ये यतेमहि स्वराज्ये"—अर्थात्, हम अपने स्वराज्य में 'बहु' में 'अन्य' की रक्षा का प्रयत्न करेंगे। इसी तरह उनकी और एक बात ६-३-४१ की डायरी में दी गई है : "बापूजी के लेख मुझे कम याद आते हैं, लेकिन उनके हाथ का परोसा हुआ भोजन मुझे हमेशा याद आता है, और मैं मानता हूं कि उससे मेरे जीवन में बहुत परिवर्तन हुआ है।"

जमनालालजी के व्यक्तिगत विचारों की भी यहां अपनी खासियत है। जैसे, १३-३-१९४१ को वे लिखते हैं : "परमात्मा की लीला अपरम्पार है। जहां सच्चाई से काम करने की इच्छा थी, वहां सेवा लेने वालों का अभाव है। जहां सेवा लेना चाहते हैं, वहां काम करने का उत्साह नहीं होता। आखिर मैंने अपनी कमजोरियों के ख्याल से संतोष कर लिया।"

"निश्चय छोटा-सा ही क्यों न हो, मगर उसका पालन पूरा-पूरा होना चाहिए।"

कहीं-कहीं वह बड़े सुन्दर शब्द भी गढते हैं : जैसे १८-७-१९४१ की डायरी में 'खुश-नसीब' की जगह 'सुख-नसीब।'

नये परिचितों के बारे में भी उनके मत मननीय हैं। आदमियत और हैवानियत की बड़ी अच्छी परख थी उन्हें। 'स्पष्टवक्ता न वंचक' उनमें पूरी तरह चरितार्थ होता था। शिमला में राजकुमारी अमृतकौर के मेहमान रहते वक्त उनके कुछ ऐसे ही चारित्र्यवैशिष्ट्य बड़ी मनोहारिता से इस डायरी में व्यक्त है।

अपनी 'जीवन-चर्या' के बारे में वे कभी किसी के अनुयायी या अन्धभक्त नहीं रहे। उन्होंने अपना मार्ग स्वयं और सबसे अलग चुना था और ... २१-६-४१ की डायरी में बापू की राय-सहित यों उल्लिखित है :

जमनालालजी के प्रश्न	बापू की राय
१. सत्याग्रह कर जेल जाना	नहीं, (बिलकुल नहीं)।
२. जयपुर का बाकी कार्य करना	नहीं।
३. पवनार या अन्य स्थान में चर्चा व भजन, वाचन में समय बिताना	यह भी ठीक नहीं।
४. गो-सेवा का कार्य अगर उपयुक्त व इस समय जरूरी समझते हो तो करना	यह मुझे पसन्द है। अवश्य किया जावे।

इसीलिए शायद वे गोपुरी में अपने लिए एक मामूली-सी नयी कुटिया बनाकर रहने लगे थे। 'गो-सेवा संघ' की ओर से तभी एक गो-सेवा कान्फ्रेंस भी आयोजित की गई थी।

१४-१-४२ से १७-१-४२ तक वे अखिल भारतीय कांग्रेस के अधिवेशनों और कार्यकारिणी की बैठकों में शामिल रहे। यह विचार-विनिमय बजाजवाड़ी में ही हुआ था। १६-१-४२ को उन्होंने श्री रामेश्वर नेवटिया से यह साफ कह दिया था कि अब व्यापार की बातें उन्हें और अच्छी नहीं लगतीं। लेकिन जन-सेवा-कार्यों में उनकी पूरी दिलचस्पी बनी रही। जनवरी के अन्तिम सप्ताह में 'आई-ऑपरेशन कैम्प' (नेत्र-यज्ञ) के आयोजन में उन्होंने भी हाथ बटाया। विनोबाजी के पीछे पकड़कर उनकी आंखों की जांच करायी और चश्मा पहनने को उन्हें राजी किया।

१ जनवरी से १० फरवरी १९४२ की अवधि में जमनालालजी ने कई शीर्षस्थ व्यक्तियों से मुलाकातें कीं, जिनमें प्रसिद्ध कृषि-विशारद

सार दातारसिंह भी शामिल थे। उनके गो-संरक्षण सम्बन्धी विचार उन्हें बहुत अच्छे लगे। 'गो-सेवा संघ'* कार्य में भारी गो-सेवा, विशेषकर से बातें कर उन्हें खूब अच्छा लगा था।

अविस्मरणीय युग-पुरुष

१० फरवरी को वे डा० राममनोहर लोहिया से मिले। बंबई जनरल च्यांग काई शेक के ठहरने का प्रबन्ध किया। बच्छराज कम्पनी में जमा सार्वजनिक फंड के बारे में अपनी राय वे पहले ही बता चुके थे।

११ फरवरी १९४२। यही तो उनका अन्तिम दिन रहा। अधिक रक्तचाप से हृदयगति रुकने के कारण अचानक अनन्त की महायात्रा पर चले गये। उस दिन वे अपनी डायरी में कुछ नहीं लिख पाये। उनकी मृत्यु से सारा देश स्तम्भित हो गया।

१९४० से ४२ के प्रथम चरण तक बनी हुई युग की पृष्ठ-भूमिका में यदि देखें तो सचमुच एक अचरज-सा होता है कि जमनालालजी अपने सहज भाव से किस प्रकार अपनी ५२ वर्ष की अल्पायु में ही एक महा-मानव जैसी चरितावली के नायक हो सके थे।

—पृथ्वीनाथ शास्त्री

'गोरक्षा' की जगह 'गोसेवा' शब्द जमनालालजी की एक देन है। गांधीजी ने भी उनके इस शब्द-परिवर्तन को तुरन्त स्वीकार किया था, क्योंकि जमनालालजी ने यह दलील पेश की थी कि गोरक्षा से तो ऐसा लगता है कि गायें काटने या बलि देने वालों से हमारी दुश्मनी है। साथ ही, गायें तो जीवन-भर और मृत्यु के बाद भी हमारी रक्षा करती हैं, हमारे काम आती हैं। गायों की तो सारी अर्थ-व्यवस्था उन्हीं के इर्द-गिर्द घूमती है। अतः गायें सिर्फ गोधन ही नहीं, हमारे लिए पूज्य प्राणी हैं। गायों से मतलब समूचे गोवंश से था। —सम्पा०

१९४०

नेचर क्योर, पूना १-१-४०

आज एक मंदिर पार्टी में गये। सुबह से शाम तक वहीं रहे।

श्री शारदा बहन बिड़ला, चम्पा बहन बम्बई से आये। चि० मदालसा को बुखार था, सौ डिग्री के करीब। श्री चिरंजीलाल बड़जाते (अनूपशहर वाले) आये व गये।

२-१-४०

शारदा बहन बम्बई गईं।

कृष्णा बहन और कोल्हटकर मिलने आये।

कमल, सावित्री, राम से बोलचाल की सभ्यता व व्यापार के विषय में बातचीत।

सर गोविन्दराव मडगांवकर से प्रताप सेठ के साथ मिले। देर तक बातचीत।

रेहाना के बहनोई श्री हमीद खां जी से मिलना।

३-१-४०

गुणाजी बेलगांव वाले तथा श्रीराम धुलिया से आये।

घूमना—हडपसर व रामटेकड़ी। शाम को रामटेकडी से पूना का दृश्य ठीक मालूम देता है। हडपसर में साग-तरकारी ठीक मिलती है, सस्ती भी।

४-१-४०

श्री धर्मनारायणजी । ठीक बातचीत।

बाबा

सर गोविन्दराव मडगांवकर मिलने आये व बापू गोरदपान भी।
चि० रेहाना के भजन सुन्दर हुए। बालासाहब भी प्रार्थना में शामिल थे।

५-१-४०

श्री धर्मनारायणजी मैनपुरी वाले व श्री गुणाजी बेलगांव वालों से बातचीत।

श्री धर्मनारायणजी मैनपुरी गये।
श्री बालासाहब कालेलकर व गंगाबाई के साथ महिला आश्रम का बजट देखा। बालासाहब से गुणाजी व डा० दीनशा के ड्राइवर के बारे में बातचीत, वे वर्धा गये।
आज एकादशी के कारण केवल सन्तरों पर रहना हुआ।
गोपालराव काले आये व गये।
प्रार्थना के समय रेहाना के भजन।
डा० दिनशा से चि० मदालसा के बारे में जरा कठोर बातचीत हुई। थोड़ा विचार रहा।

६-१-४०

श्रीमन्नारायण, श्रीराम (पुलिया वाले) आये। गुणाजी बेलगांव गये। हरिभाऊ, नारायणलाल करवा मिलने आये। रात को श्रीनिवास व श्रीकृष्ण भी आये।
जयपुर से फोन आया। कपूरचन्दजी पाटणी से बातचीत। अभी तक जयपुर के प्राइम मिनिस्टर का पत्र नहीं आया।

शाम को मदू की कमर में दर्द शुरू हुआ। डा० (मिस) रेनकिन को बुलवाया। उसके पेट में जो कुछ था वह आपसे ही निकल गया। गठान थी, उसमें जीव नहीं पड़ा था। डा० रेनकिन ने कहा, बहुत अच्छा हुआ। बुखार आया, यह भी ईश्वर ने मदद की। बिना आपरेशन के खराबी निकल गई। इससे आज चिन्ता कम रही। मदू भी राजी हुई।

१५-१-४०

[बि]ड़ला परिवार से मिलना व उनका प्रोग्राम निश्चित करना। शाम [क]ो उन्हें वर्धा आश्रम, पवनार, सिंधिया छत्री, मुद्रंग गार्डन वगैरा दिखाया। [र]ेहाना के सुन्दर भजन गाने सुने।

प्रताप सेठ अमलनेर वालों की बीमारी की खबर मिली। मदन कोठारी की बेपरवाही पर टोका दिया। वहां जाना पड़ा, इसलिए व्यायाम आदि नहीं हुआ।

प्रताप सेठ से बीमारी तथा विल (मृत्युपत्र) वगैरा के बारे में ठीक विचार-विनिमय। उनको मदालसा जानी। श्री जाजूजी को भी बुलाया जा सकता है, वहां।

१६-१-४०

श्री रेहाना से मिलने जाना। उसमें मिलकर मन की कमजोरी व स्थिति कही। उसने प्रेम के साथ अनुभव की बातें की, उत्साह दिलाया। प्रताप सेठ से मिलना। आज थोड़े ठीक मालूम हुए।

आज १ बजे करीब मोटर से सोनावला गये। रेहाना व सरोज साथ में। वहां सुबह बिड़ला परिवार व अपने घर के सब रामनारायणजी रुइया के बगले गये थे। साथ में खानपान, रेहाना के भजन, उसे स्टेशन से बम्बई रवाना किया। डा० मडकमकर से प्रताप सेठ के स्वास्थ्य के बारे में बातचीत। उन्हें कैंसर होने की संभावना मालूम होती है।

१७-१-४०

कुवलयानन्दजी आज भी आये। थाइसिस के इलाज आदि की बातें। शाम को प्रताप सेठ को देखने जाना। जानकीजी भी साथ थीं, शान्ताबाई भी।

१८-१-४०

आज डा० एच० एम० भट्ट डेन्टिस्ट ने ऊपर के ६ दांत एक सिटिंग में निकाले। नौ इंजेक्शन दिये व बाद में ऊपर का टेम्परेरी सेट बैठाया। आज थोड़ी तकलीफ रही।

आज मशामना राजी रही। जानकी देवी को दूसरा रोज है ट्रीटमें
कराने व गारे पर रहते हुए।
जलगांव से फोन देवकीनंदन का आया सरदार जिवे के लिए।

९-१-४०

पू० नाथजी से मिलना। कृष्णाबाई कोल्हटकर से बातें।
नाथजी ने 'जीवन शोधन' शुरू किया, तीन से साढ़े चार तक।
चि० शान्ता से घूमते समय आश्रम-सम्बन्धी बातचीत।
श्रीमन्नारायण से ज्ञान मंदिर व अन्य बातचीत।
नाथजी ने 'जीवन-शोधन' से गुण-प्रकरण सुनाया, ठीक रहा।
मिलने वाले—हरिभाऊ फाटक, मुरलीधर व नारायणदास करवा आ -

११-१-४०

रेहाना से मिलने जाना। उसने जानकीजी व शान्ता का हाथ दे
विनोद।

१२-१-४०

श्री शुभराजजी व लाली बहन आज यहां से गये। थोड़ा बुरा
दिया। उनकी आंखो में तो पानी भी आ गया।
उदयपुर महाराणा को तार, पत्र भेजा।

१३-१-४०

नासिक से रामेश्वरदासजी का व बम्बई से भी उनके यहा से फोन आ
श्री शारदाबाई वगैरा कल आने वाले हैं—उनके ठहने की व्यवस्था की

१४-१-४०

बम्बई से बिडला परिवार की शारदा बहन, रुक्मणीबाई, कु० अन
गंगा, शान्ति भट्ट आये। इन्हे पुरन्दरे को दिखाया। शारदाबा
गई और सब पैदल गये व आये। यहा से लाईड लेक गये।
स्थान है। सब मिलाकर ७२ मील मोटर से गये, चार मील
लड़कियो ने ब्रेन व्यायाम, गायन वगैरा किया।

१५-१-४०

बिड़ला परिवार से मिलना व उनका प्रोग्राम निश्चित करना। शाम को उन्हें कर्वे आश्रम, पर्वती सिंधिया छत्री, एंप्रेस गार्डन वगैरा दिखाया। रेहाना के सुन्दर भजन सबने सुने।

प्रताप सेठ अमलनेर वालों की बीमारी की खबर मिली। मदन कोठारी की बेपरवाही पर ठपका दिया। वहा जाना पड़ा, इसलिए व्यायाम आदि नहीं हुआ।

प्रताप सेठ से बीमारी तथा विल (मृत्युपत्र) वगैरा के बारे मे ठीक विचार-विनिमय। उनकी मशा जानी। श्री जाजूजी को भी बुलाया जा सकता है, कहा।

१६-१-४०

श्री रेहाना से मिलने जाना। उससे मिलकर मन की कमजोरी व स्थिति कही। उसने प्रेम के साथ अनुभव की बातें की, उत्साह दिलाया।

प्रताप सेठ से मिलना। आज थोड़े ठीक मालूम हुए।

आज १ बजे करीब मोटर से लोनावला गये। रेहाना व सरोज साथ मे। वहां सुबह बिड़ला परिवार व अपने घर के सब रामनारायणजी रुइया के बगले गये थे। साथ मे खानपान, रेहाना के भजन, उसे स्टेशन से बम्बई रवाना किया। डा० भडकमकर से प्रताप सेठ के स्वास्थ्य के बारे मे बातचीत। उन्हें कैंसर होने की सभावना मालूम होती है।

१७-१-४०

कुवलयानन्दजी आज भी आये। थाइसिस के इलाज आदि की बातें। शाम को प्रताप सेठ को देखने जाना। जानकीजी भी साथ थी, शान्ता-बाई भी।

१८-१-४०

आज डा० एच० एम० भट्ट डेन्टिस्ट ने ऊपर के ६ दांत एक सिटिंग मे निकाले। दो इजेक्शन दिये व बाद में ऊपर का टेम्परेरी सेट बैठाया। आज थोड़ी तकलीफ रही।

प्रताप सेठ से मिलकर आना। आज कोई ठीक मालूम दिये।
बापूजी से "जीवन शोधन" सुना।
श्री डी० हुनराज व उनकी भावी पत्नी आईं। बातें—साथ बने।

१६-१-४०

बापूजी, जीवन शोधन, बातचीत।

२०-१-४०

आज प्रथम बार गाड़ीवान से सड़क पर घूमने जाना। बेटू (डॉक्टर बना) गाईड देना। रामनारायणजी के यहाँ गये। मदन कोठारी दुर्गा सागरमल पर साथ में रहे।
प्रताप सेठ के यहाँ जाकर खाना। उनके पास देर तक बैठना। डा० सहस्रबुद्धे से बात करना। प्रताप सेठ की स्त्री, भाभी से भी बातें की। डी० हुनराज का विवाह—गाड़ी की सवारी हाथी। मेयर बर्वोर बिल्डिंग में ही विवाह का रजिस्ट्रेशन हुआ। चाय पार्टी, गायन वगैरा। विवाह की ठीक तैयारी हो गयी थी। कुंवर महेन्द्र प्रताप व राम के गाने सुने।

पूना-बम्बई, २१-१-४०

सुबह जल्दी तैयार होकर बम्बई रवाना—मेल से, ७-१० बजे, वर्धा में। जानकीजी, मदालसा, शान्ताबाई, बिट्ठल, डा० मेहता साथ में।
बिड़ला हाउस में ठहरना। रामेश्वरजी व बृजमोहन से थोड़ी बातचीत। डा० पुरन्दरे को मदालसा को दिखाना था। वह बम्बई में नहीं था। केशवदेवजी, रामेश्वर नेवटिया, आदि से बातचीत, खासकर धाकर मिल के बारे में।
शाम को सुव्रता बहन के साथ नई चौपाटी पर घूमने जाना। बहुत-से विषयों पर बातचीत।
शाम को सर बद्रीदासजी गोयनका, लाला साहब खेर, श्री मणिलाल नाणावटी से बातचीत।
बिड़ला हाउस भोजन में शामिल होना।

रामनिवास रुइया के गीगले को देखना। दस रतल का हुआ बतलाया, विनोद।

बम्बई, २२-१-४०

डा० जस्सावाला के क्लिनिक में ट्रीटमेंट। मैंने स्टीम बाथ, इलैक्ट्रिक मसाज ली। मदालसा, जानकीदेवी ने भी ली।
रामेश्वरजी बिड़ला व बृजमोहन बिड़ला से रात के ११॥ बजे तक गोला शुगर मिल को लेकर बातचीत। श्री केशवदेवजी व रामेश्वर के व्यवहार के बारे में ठीक विचार-विनिमय खुलासा होता रहा।
नये ऑफिस में बच्छराज कम्पनी, बच्छराज फैक्टरी, हिन्दुस्थान शुगर के बोर्ड की मीटिंगें हुईं।

२३-१-४०

रामेश्वरदासजी बिड़ला, बृजमोहन, केशवदेवजी, रामेश्वर व कमल से बातचीत।
सरदार वल्लभ भाई मिलने आये। शाम को मैं उनसे मिला।
डा० बार्जेर मिलने आया। बहुत देर तक बातचीत। प्रताप सेठ और अपने सम्बन्ध में सन्तोषप्रद बातें हुईं।
मुन्ना बहन से भी थोड़ी बातें। जैना रज्जब अली से मिलना।
नागपुर मेल से वर्धा से वर्धा रवाना। विट्ठल, शान्ताबाई रानीवाला वगैरा साथ में। शान्ता के भजन हुए। मोतीलालजी केला से बीमा की बातचीत।

वर्धा, २४-१-४०

राजकुमारी अमृतकौर से बातचीत। वह ग्रान्ड ट्रंक से अहमदाबाद गयी।
बापू का मौन, स्वप्न में डकैती, मौन में बोलना। मीरा, पृथ्वीसिंह आदि के बारे में।
बापू के पास—स्वास्थ्य आदि समाचार कहे। किशोरीलाल भाई,

जयरामदास, कृष्णदास, परचुरे शास्त्री, आशा आर्यनायकम् वगैरा मित्रों से मिलना, बातचीत।
महिला आश्रम में प्रार्थना के समय उपस्थित रहना।

२५-१-४०

घूमते समय राधाकृष्ण, कालीलालजी, शान्ता, बालजी वगैरा से बातें।
महिला आश्रम की जमीन में कुआ बनाने को जगह देगी।
पवनार में विनोबा से मिलना।

२६-१-४०

पू० मां से बातचीत।
जल्दी तयारी करना। गोड़े में दर्द कम। स्वतंत्रता दिन निमित्त झण्डा-वन्दन। गांधी चौक में महादेव भाई का व्याख्यान ठीक हुआ।
पू० बापू से मिलना—जयपुर का तार बताया। वाइसराय से वह बात करेंगे।
गो सेवा संघ के बारे में व सेगांव की जमीन और ग्राम उद्योग संघ आदि पर विचार-विनिमय।
किशोरीलाल भाई से गांधी सेवा संघ आदि पर विचार-विनिमय।
जयरामदास दौलतराम, आशा आर्यनायकम् आदि से मिलना, बातें।
नायडू से वर्धा में मकान बनाने के बारे में बातचीत। सत्यप्रभा वगैरा मिलने आये।

गांधी चौक—चर्खा एक घण्टा काता। स्वराज्य प्रतिज्ञा सुनी। अमल करने का प्रयत्न करना है।
ऊपर का मकान देखा। नागपुर मेल से थर्ड में पूना रवाना। दामोदर, श्रीमन, विट्ठल, सीता नौकरानी साथ में। बडनेरा से कल्याण तक जीवराज जीवनजी के आग्रह से सेकण्ड में बैठना।

वर्धा-पूना, २७-१-४०

कल्याण में उतरना। कल्याण से पूना। थर्ड में भीड़ ज्यादा थी। रास्ते

मे असदार व कृज जाजोदिया का 'निर्दोष आश्रम' नाम का हस्त-लिखित नाटक पढा। लडका होनहार निकलता दीखता है।

पूना पहुचकर गोडे मे बडा दर्द मालूम दिया। नेचर क्योर क्लिनिक पैदल गये। स्टेशन पर पू० नाथजी, हंसराय वगैरा आये थे।

ट्रीटमेंट—मसाज, गरम पानी बाथ, सोनाबाथ, वजन १८० पौंड के करीब। शाम को फुट बाथ, माटी गरम बांधना।

प्रताप सेठ से मिलकर उन्हें धीरज के साथ बीमारी का स्वरूप व उन्हें क्या करना चाहिए, बतलाया।

सरला बहन के क्लिनिक का खर्च, फी वगैरा देने के बारे मे बापूजी जो फैसला करेंगे, वह ठीक रहेगा।

डा० मोहनसिंह वगैरा से बातचीत।

पूना, २८-१-४०

प्रताप सेठ से डा० भडकमकर के साथ हुई बातचीत, उनकी बीमारी व व्यवस्था के बारे मे समझाकर कहा।

जयपुर से फोन आया। 'जयपुर रहस्य' को लेकर पुलिस ने तलाशी ली—मिश्रजी, पाटणी, प्रजामडल वगैरा की। लोगो को शायद वे भयभीत करना चाहते हैं।

कमल से बातें। सट्टा व दलाली मुझे पसन्द नहीं, उसे कहा।

२९-१-४०

बापूजी को जयपुर के बारे मे पत्र भेजा।

चर्चा, मायजी ने 'श्रेय साधन' शुरू किया।

शाम को लिथिया हमी घूमने गये, राहुल के साथ खेलना।

जयपुर स्थिति की चिन्ता बनी रही। मन से नही निकली। रात को थोडी देर पत्ते खेलना।

डा० दिनशा से खान-पान, रहन, विचार आदि पर विचार-विनिमय।

३०-१-४०

प्रताप सेठ को नायजी के साथ देखकर आना। तुकाराम के अभंग सुनना।

किशोरलाल भाई को नाथजी समझाकर लिखेंगे कि वह अभी सभापति बने रहें। किशोरलाल भाई का पत्र उन्हें पढ़ाया।

चर्खा, नाथजी ने 'श्रेय साधन' सुनाया।

मास्टर कृष्णराव ने आज यहां आकर भजन वगैरा डेढ़ घंटे तक सुनाये। बहुत सुन्दर भाव-पूर्ण गीत हैं। ठीक मालूम दिया।

नर्मदा व सहाने बीमा कम्पनी व पिक्चर कम्पनी की बात करने आये।

श्रीमन्नारायण अहमदाबाद, सूरत होकर आये। वहां के हाल कहे।

३१-१-४०

प्रताप सेठ से मिलना। नाथजी, श्रीमन, हुसराय साथ में। प्रताप सेठ ने कहा, मुझे व्यवस्था पत्र (विल) लिखना है। उन्होंने थोड़ा लिखवाया। अपने विचार बताये और कहा, मैंने मगन (बापू) से बात कर ली है।

श्रीमन्नारायण वर्धा गये।

रामकुमार (वर्ल्ड टूरिस्ट) मिलने आया।

नाथजी से 'श्रेय साधन' सुना, चर्खा काता।

जयपुर का पत्र हीरालालजी के नाम का पढ़ा। राजा ज्ञाननाथ का व्यवहार, वकीलों का डर का जवाब पढ़ा, दुःख व चिन्ता हुई। जयपुर जाकर बैठना ही कर्त्तव्य दिखाई दिया। बापू को तार। डा० से बातचीत।

१-२-४०

आज से दूध का प्रयोग बन्द हुआ। दोनों समय खाना मिलने लगा। अभी दाल-भात शुरू नहीं हुआ।

बायें गोडे में ऊपर से उतरते समय जीने की पाड़ जोर से लगी। दर्द देर तक रहा।

पू० नायजी से 'श्रेय साधन' सुना, चर्खा काता।
माणिकलालजी वर्मा (उदयपुर वाले) व सोनीराम जोशी आये। हालत समझी।
प्रताप सेठ से मिलना। वसीयत लिखने की उनकी इच्छा के बारे मे देर तक विचार-विनिमय। उनकी आन्तरिक इच्छा समझ सका।
आज अपनी जूनी मोटर (फोर्ड) धुलिया वाले ले गये। सन् १९३६ का माडेल तीस हार्स पावर का दे गये। थोड़ा बुरा मालूम दिया। मुझे उसमे ज्यादा सुभीता मालूम देता था।
बापू का तार आया। अभी जयपुर जाने की मनाही लिखी। इलाज चिन्ता छोड़कर करने को लिखा। तो भी जयपुर जाने के विचार मन से निकाल नहीं सका। कल बापू की चिट्ठी व हीरालालजी आवेंगे।

२-२-४०

ट्रीटमेंट—सायकल आध घण्टा, आसन, थोड़ी मसाज। गरम बाथ, ठीटा बाथ, वजन (१७९), शाम को फूट बाथ।
बायें गोडे मे कल ददं लगी थी, आज दर्द कल से कम मालूम दिया।
मास्टर कृष्णराव गायनाचार्य आये। देर तक विनोद, बातचीत।
हीरालालजी शास्त्री, हरलालसिंहजी, रमाबाई बिड़ला (रामकुमारजी की स्त्री), मौकर आये। माणिकलालजी वर्मा गये।
हीरालालजी शास्त्री के साथ जयपुर स्थिति के बारे मे देर तक विचार-विनिमय।
पू० बापू का पत्र पढ़ा। मेरे वहां अभी न जाने के बारे मे उनकी आज्ञा का पालन करना पड़ेगा। परन्तु मन मे सन्तोष नही हुआ।

३-२-४०

प्रताप सेठ से मिलना। उनकी वसीयत का हवाला अमलनेर के बाबा साहब वकील के जिम्मे कर दिया गया। चिन्ता कम हुई।
आज वरोंडो का आश्रम देखा। वहां कुछ बोलना भी पड़ा। अच्छा कहें

वह पूना में ही रहने को आई है। उसे गणेश जोशी वैद्य का दिखाया उनकी दवा शुरू की। मेरे भी गोडे में दद आज ज्यादा मालूम दिया भगवती, रमाबाई, रामनिवास, नौकर बम्बई गये। मोटर वाला बराब टाइम पर नहीं आया। बुरा लगा।

श्री रेहाना अब्बास तैयबजी की माता की मृत्यु का तार आया। सरो नाणावटी ने फोन से सूचना दी। तार भेजना। शाम को सरोज मिलना है।

पू० बापूजी व वाइसराय की मुलाकात सन्तोषकारक नहीं हुई। हीर लालजी शास्त्री का तार आया। मेरा पत्र व स्टेटमेन्ट बापू ने पसन किया, लिखा।

श्री नाथजी 'श्रेय साधन'। चर्चा।

डा० दिनशा को मदालसा व भगवती के कारण बहुत बुरा लगा। मु भी बुरा लगा, परन्तु उपाय क्या!

पूना, ७-२-४०

मद्दू ने कल रात को जोशी वैद्य का काढा शुरू किया।

आज सुबह उसे अपने नीचे के स्थान में ले गये। उससे, सावित्र जानकीजी व राम से व्यवहार आदि पर बातचीत।

नाथजी—'श्रेय साधन', चर्चा।

घूमते समय सरोज नाणावटी व रेहाना मिली। जमशेद के बारे बातचीत।

रेहाना को आया हुआ पत्र पढा।

मद्दू के साथ पत्ते खेलना।

८-२-४०

श्रीमन का दुखी हृदय का पत्र व 'सर्वोदय' में हरिभाऊजी का जयपु

से देर तक बातचीत । जीवन बनाने की बातें उनके चारों [illegible] बारे में विस्तार से सुनी ।

४-२-४०

बालाववश बिड़ला से बातचीत । उन्होंने अपने व्यापार की हालत कही । तीन-चार लाख की नुकसानी बतलाई । मोहिनी के मस्तक की बात का वर्णन किया ।

प्रताप सेठ ने बुलवाया । वहां गये । उनके वकील बाबा साहब [illegible] वाले ने जो वसीयत प्रताप सेठ की मर्जी मुजब लिख रही थी, वह पढ़कर सुनायी ।

प्रताप सेठ ने उसमें थोड़ा फेर-फार किया । बाद में उन्होंने सही की । मगन (बाबू) ने पढ़कर उस मुजब बर्ताव करना स्वीकार किया । डा० भडकमकर, बाबा साहब व मैंने गवाही डाली । प्रताप सेठ बाद ठीक रंग-विनोद में दिखाई दिये । वहीं सतरे का रस लिया । माधवी व इन्दु को पहिले भेज दिया था ।

इन्दु, नवल फिरोदिया, कमल आदि से बातें ।

सावित्री ने 'हरिजन' सुनाया । चर्चा ।

५-२-४०

रात को नींद ठीक नहीं आई । खांसी भी ज्यादा रही । [illegible] के विचार भी खूब चलते रहे ।

सुबह [illegible] बिड़ला से बातचीत, देर तक ।

बाबा साहब [illegible] पर चर्चा रही । रेहाना बहन, [illegible], [illegible], [illegible] नानावटी से महिला आश्रम, हिन्दी प्रचार [illegible] आदि के बारे में बातें ।

माधवी ने '[illegible]' सुना, [illegible] ।

६-२-४०

[illegible] उदास थी, बुखार के कारण । [illegible]

[illegible]

वह पूना में ही रहने को आई है। उन गणेश जोशी वैद्य को दिखाया।
उनकी दवा शुरू की। मेरे भी गार्ड में दर्द आज ज्यादा मालूम दिया।
भगवती, रमाबाई, रामनिवास लोग बम्बई। मोटर वाला बराबर
टाइम पर नहीं आया। बुरा लगा।
श्री रेहाना अब्बास तैयबजी की माता की मृत्यु का तार आया। सरोज
नाणावटी ने फोन से सूचना दी। तार भेजना। शाम को सरोज से
मिलना है।

पू० बापूजी व वाइसराय की मुलाकात सन्तोषकारक नहीं हुई। हीरा
लालजी शास्त्री का तार आया। मेरा पत्र व स्टेटमेन्ट बापू ने पसन्द
किया, लिखा।
श्री नायजी 'श्रेय साधन'। चर्चा।
डा० दिनशा की मदालसा व भगवती के कारण बहुत बुरा लगा। मुझे
भी बुरा लगा, परन्तु उपाय क्या!

पूना, ७-२-४०

मद्दू ने कल रात को जोशी वैद्य का काढ़ा शुरू किया।
आज सुबह उसे अपने नीचे के स्थान में ले गये। उससे, सावित्री,
जानकीजी व राम से व्यवहार आदि पर बातचीत।
नायजी—'श्रेय साधन', चर्चा।
घूमते समय सरोज नाणावटी व रेहाना मिली। जमशेद के बारे में
बातचीत।
रेहाना को आया हुआ पत्र पढ़ा।
मद्दू के साथ पत्ते खेलना।

८-२-४०

श्रीमन का दुखी हृदय का पत्र व 'सर्वोदय' में हरिभाऊजी का जयपुर

भिमडी वालों से वहाँ के नेताओं के दोष के बारे में सुना। मन चाहु० महना था, कहा। सरदारजी के प्रति उनके रोष का समाधान करने का प्रयत्न किया।
बापू गा० (भिमडी) से मिलने पर उनका पता समझ सकूंगा।

९-२-४०

आबिद बम्बई से आया। वहीं से रणछोड़दासजी का फोन आया, जवाहरलालजी मुझे वहां चाहते हैं, कहा। कमल को बम्बई फोन किया। पं० जवाहरलालजी से मिलकर मुझे बताने के लिए।
आबिद से बातें देर तक।
प्रताप सेठ से मिलना। नायजी आये। चर्चा। शाम को प्रो० दडवते से उनके व बहिणा बाई के भजन व पोवाड़े सुने।
बृजकुमार नेहरू व सरोज नाणावटी को नेचर क्योर क्लिनिक भोजन पर बुलाया। बातचीत, परिचय।
कमल बम्बई से आया। वहा मेरे जाने की जरूरत नहीं बतलाई।

१०-२-४०

दिनशा, कमल, राम, शापुर-शिकार के लिए जगल मे गये। बघेले नहीं मिले। दिनशा ने एक जगली सुअर को मारा।
कालूराम बाजोरिया से कहा—आर्वी केस के बारे मे कुन्दनबाई से मिलकर उसके विचार जान लेना, गंगाबिसन के साथ। बोबडे की राय लिखी हुई ले लेना।
वर्धा बिजली के कारखाने की पूरी स्थिति समझना—व्यापार की दृष्टि से। आगे के काम के लिए इस्टेट, मशीनरी वगैरा की दलाली के बारे मे भी उसे कहा।

पूना-बम्बई, ११-२-४०

सुबह जल्दी तैयार होकर पूना स्टेशन से ७-१० मेल से बम्बई रवाना। दादर उतरकर जुहू जाना। साथ मे मदन, विट्ठल। सरोज नाणावटी

सिमर्दी वालों से यहां के नेताओं के दोष के बारे में सुना। मैंने जो कुछ कहना था, कहा। सरदारजी के प्रति उनके रोष का समाधान करने का प्रयत्न किया।

बापू सा० (सिमर्दी) से मिलने पर उनका पक्ष समझ सकूंगा।

९-२-४०

आबिद बम्बई से आया। वहीं से रफीअहमदजी का फोन आया, जवाहरलालजी मुझे वहां चाहते हैं, कहा। कमल को बम्बई फोन किया। पं० जवाहरलालजी से मिलकर मुझे बताने के लिए।

आबिद से बातें देर तक।

प्रताप सेठ से मिलना। नायकजी आये। चर्चा। शाम को प्रो० दडवते से उनके व बहिणा बाई के भजन व पोवाड़े सुने।

बृजकुमार नेहरू व सरोज नाणावटी को नेचर क्योर क्लिनिक भोजन पर बुलाया। बातचीत, परिचय।

कमल बम्बई से आया। वहां मेरे जाने की जरूरत नहीं बतलाई।

१०-२-४०

दिनशा, कमल, राम, शापुर-शिकार के लिए जंगल में गये। बघेले नहीं मिले। दिनशा ने एक जंगली सुअर को मारा।

कालूराम बाजोरिया से कहा—आर्वी केस के बारे में कुन्दनबाई से मिलकर उसके विचार जान लेना, गंगाबिसन के साथ। बोबडे की राय लिखी हुई ले लेना।

वर्धा बिजली के कारखाने की पूरी स्थिति स की दृष्टि से। आगे के काम के लिए इस्टेट, मशीनर ली के बारे में भी उसे कहा।

गैरीन मर्टिन से मिलना।
ऑफिस में केशवदेवजी, कमल से बातचीत देर तक
में, माल का प्रश्न लेकर।
रामनिवास रुइया ऑफिस में आया—रामेश्वरदासजी व
की मिलों की आपस में नहीं बनती। इस बारे में विचार-वि
युक्त होता है, वगैरा कहा। गोविन्द-नाडुल्ला से मिलना
पूनमजी साथ में।

१३-२-४०

डा० पुरुषोत्तम पटेल व श्रीमती पटेल से उनकी आर्थिक स्थिति
में थोड़ी बातें।
कमला नेहरू मेमोरियल मीटिंग—जवाहरलाल, डा० जीवराज, मा
यामा, जोशी बहन मिले।
रामेश्वरदासजी बिड़ला के साथ भोजन। केशवदेवजी भी वहीं थे।
हिन्दुस्तान शुगर के बारे में देर तक बातचीत हुई। योजना पर विच
विनिमय। मुझे शुरू और हिन्दुस्तान शुगर व हरगांव मिल के मैनेजर
एक करने के बारे में, दोनों के इन्टरेस्ट बराबर संभालकर।
नारायणलालजी पित्ती से भी देर तक बातचीत। विचार करने को
कहा।
रामेश्वरदासजी व उनके मेल के बारे में चर्चा।
प० जवाहरलालजी हमारे ऑफिस में आये। उन्होंने 'नेशनल हेराल्ड'
के बारे में व्यक्तिगत जिम्मेदारी ली है। इस बारे में उन्हें उत्साहना
दिया।
रामेश्वरजी बिड़ला उन्हें मदद करेंगे, उनसे मिलने को कहा।

पूना, १४-२-४०

नाथजी से विचार-विनिमय। चर्चा।
प्रताप सेठ से मिलना। तबियत थोड़ी ठीक मालूम दी।

रेहाना के भजन सुने।
जयपुर से फोन आया, चिन्ताजनक स्थिति।

२३-२-४०

रात को नींद पूरी नहीं आई। जयपुर के विचार बहुत देर तक चलते रहे। पत्रों का जवाब लिखवाया। जयपुर प्राइम मिनिस्टर को तार भेजा। पू० बापूजी, घनश्यामदास बिड़ला और जयपुर प्रजामण्डल को तार भेजे।

राजनारायण अग्रवाल से बातें, सुबह व रात को।
फर्ग्युसन कालेज में हिन्दी, हिन्दुस्तानी सभा की ओर से बोलना पड़ा।
प्रिंसिपल महाजनी से परिचय। बातचीत स्पष्ट तौर से हुई।
सिनेमा देखा—आस्ट्रिया की ऐतिहासिक घटना दिखाई। ठीक था। भावना-प्रधान अंग्रेजी टॉकी आज तक यह दूसरी बार देखी। साथ में रेहाना, सरोज, दिनशा, गुल, जानकी, राजनारायण, कमल, सावित्री, राम, द्रौपदी व गिरधारी थे।
नाथजी आये, बातचीत।

२४-२-४०

रामकिसनजी धूत आये। उनसे हैदराबाद की स्थिति समझी।
रेहाना ने हमीदा-प्रबोध का पूरा किस्सा व हमीदा के मुस्लिम रहने व हिन्दू न होने से विवाह करने में जो कानूनी कठिनाई व कुटुम्ब में दुखी स्थिति हुई, उसका वर्णन रोते हुए सुनाया। उसका कहना समझ सका। प्रयत्न कर देखने को कहा। बम्बई में रजिस्ट्रेशन विवाह (सिविल मैरिज) कर लेने से सब अड़चनें चली जावेंगी, उन्होंने कहा है। बाद में इन दोनों से नाणावटी के बंगले पर मिलना। आज बहुत-सी बातें खुलासेवार प्रेम-मित्रता की हुईं। इनकी व्याख्या समझी। घर की अड़चनें आदि भी। रेहाना डाह्याभाई वगैरा से। रेहाना सरोज में इतना प्रेम व्यवहार देख हृदय में प्रेम-भाव उत्पन्न होता है।

२५-२-४०

मोटर से बम्बई रवाना। जानकीदेवी, गुलवँन, डा० दिनशा, राजनारायण (आगरा वाले) साथ मे। ३ बजे निकले १२॥ बजे करीब बम्बई पहुँचे। रास्ते में सड़कें बन रही थीं इसलिए रुके रहना पड़ा।

जाते-जाते खड़की मे रेहाना, सरोज से मिले। उनका फोन आया था। रेहाना ने जानकीदेवी के सामने बातचीत की। उनकी स्थिति मानसिक आदि समझी।

रेहाना-सरोज का जो सम्बन्ध बढ़ता जा रहा है उसका आखिरी क्या परिणाम होगा? ईश्वर की क्या इच्छा है? दोनों को अभी तक पूरी तरह नहीं समझ सका। सरोज तो जैसे रेहाना के पीछे पगली है। :ममे दोनो क्यों इतने प्रेम का बर्ताव करती हैं, पूरी तरह यह भी समझ :हीं सका।

बिड़ला हाउस—रामेश्वरदासजी से बहुत देर तक जयपुर स्थिति के बारे मे बातचीत। इन्होंने जवाहरलालजी को दस हजार पत्र (ने० हेराल्ड) के लिए दी, कहा।

हिन्दुस्थान शुगर मिल व हरगाव एक करने पर विचार।

गुब्रता बहन से वनस्थली व प्रजामण्डल सहायता की बात। ज्ञान मदिर की चर्चा। थोड़ी मदद तो वह करेगी ही। हिन्दी प्रचार को रु० पांच हजार देने का विचार।

मुन्शी के यहां गिरीश का जनेऊ।

नागपुर मेल से रवाना।

वर्धा, २६-२-४०

तुलसीराम तेली और शिवबक्स ढोकवाग के लड़कों का देहान्त हुआ, सुनकर दुःख हुआ।

विनोबा से पवनार मे मिलकर आना। मदू, लक्ष्मी, शान्ता भी साथ थीं।

जयपुर की स्थिति व गोडे के दर्द आदि के बारे में बातचीत। जयपुर में अपनी ओर से सत्याग्रह न करते हुए रचनात्मक काम पर जोर देने की उनकी भी राय रही। स्टेट अनुचित तौर से रुकावट डाले तो मुकाबला करना ही चाहिए इत्यादि।
सेगांव (सेवाग्राम)—राजकुमारी अमृतकौर व सुशीला से मिलकर वहां की स्थिति समझी। इनकी राय तो यही थी कि बापू यहां न आकर उधर ही आराम करें।
महिला आश्रम—प्रार्थना में शामिल। जयपुर स्थिति समझाई।
बंगले पर खान-पान, मिलना-जुलना। पांव को पट्टी बांधी। मां, सत्य-प्रभा के भजन आदि।

वर्धा-कलकत्ता, २७-२-४०

नागपुर मेल से थर्ड में कलकत्ता रवाना। साथ में मदन कोठारी, विट्ठल। नागपुर तक गिरधारी, द्रौपदी, पूनमचन्द बांठिया से बातचीत।
बाद में जमनादास गांधी थे, वह भी इसी गाड़ी से कलकत्ता जा रहे थे। इनके आग्रह से बिलासपुर से हावड़ा (कलकत्ता) तक थर्ड से सेकण्ड क्लास में १६) रु० ज्यादा देकर जाना। रात को सोने का आराम रहा।
जमनादास भाई से हरजीवन कोटक व इनके व्यापार आदि की चर्चा ठीक हुई।
राजनारायण (सुशील) आगरा वाले को वर्धा ही छोड़ा। एक दो-रोज रहकर चला जावेगा।
उमा का विवाह असाढ़ में करने का विचार रहा।

कलकत्ता, २८-२-४०

नागपुर मेल से आठ बजे पहुंचना। लक्ष्मणप्रसादजी स्टेशन पर आये थे। उनके घर २५, राजा सतीष रोड, अलीपुर में ठहरना। सीताराम जी, भगवानदेवी से बातचीत।

पू० बा, किशोरीलाल भाई, गोमती बहन, सुरेन्द्रजी, प्यारेलाल से लोयसका हाउस में मिलना।

बा० को आज ज्वर नहीं। किशोरलालभाई को टी० बी० का संशय सुना। थोड़ी चिन्ता। गांधी सेवा संघ तथा अन्य बातें।

घनश्यामदासजी बिड़ला आये। देर तक जयपुर स्थिति पर ठीक विचार-विनिमय। इनका तो आग्रह रहा, मैं जयपुर जाकर बैठ जाऊं। वहीं स्थायी तौर से रहने लग जाऊं तो ठीक काम, परिणाम, हो सकेगा। इनकी राय यह भी हुई कि सर बरनेट गलेन्सी व मि० लोथियन से मिलना ठीक रहेगा। बड़ौदा दीवान के जरिये।

वनस्थली, प्रजामण्डल की बातें। उनकी राय ज्यादा मदद करने की नहीं मालूम दी।

भाई जुगुलकिशोरजी से मिलना। उन्होंने पहिले तो अपना उपदेश देना शुरू किया—हिन्दू नहीं रहेंगे इत्यादि। वनस्थली में और सहायता करने से इनकार। प्रजामण्डल को तो बिलकुल नहीं। उन्हें नये या जूने मन्दिर व कुए खुलवाना, पसन्द है।

दस हजार का चेक जबरदस्ती मे दिया।

पंजाब मेल से पटना रवाना, सेकण्ड क्लास में।

पटना, २६-२-४०

छः बजे निवृत्त होकर सदाव्रत आश्रम पहुंचे।

बापू से जाते ही मिलकर जयपुर स्थिति पर बातचीत कर ली। उनकी राय से भी मेरा शीघ्र जयपुर चला जाना ही ठीक रहेगा। वहाँ की स्थिति देखकर वहां रहना जरूरी मालूम दे तो वहां रह जाना, कहा। रामगढ़ न जाऊं तो भी हर्ज नहीं। अपनी तरफ से तो लड़ाई शुरू करना नहीं है। स्टेट वाले लड़ना ही चाहेंगे तो उपाय नहीं, इत्यादि।

वर्किंग कमेटी ८॥ से ११॥, २ से ६,७ से ८॥ ठीक होती रही। सबसे मिलना। मुख्य ठराव (प्रस्ताव) बापूजी व जवाहरलालजी के प्रस्तावों

पर ठीक तौर से विचार-विनिमय होकर समझना। कल की चर्चा के अनुसार जवाहरलालजी आज दूसरा प्रस्ताव बनाकर लाये।
भूलाभाई से हमीदा-प्रबोध के विवाह के बारे मे पूछना।

१-३-४०

हीरालालजी शास्त्री जयपुर से सुबह पहुंचे। रात को मच्छर व विचारों के कारण नींद कम आई। हीरालालजी से जयपुर की हालत पूरी तौर से समझी। उनके स्वभाव के बारे में बातचीत।
बापूजी से मिलकर थोडी बातें कर लीं।
वर्किंग कमेटी की बैठक ८॥ से ११ तक हुई। मुख्य ठराव (प्रस्ताव) एकमत से स्वीकार हुआ।
पू० बापू को भी सन्तोष पूरा रहा। शाम को भी थोड़ी देर वर्किंग कमेटी की मीटिंग हुई।
हीरालालजी शास्त्री, सीतारामजी सेकसरिया से स्वभाव, विचार-पद्धति के बारे में विचार-विनिमय।
राजगोपालाचारी वगैरा से बातचीत।
रा० ब० राधाकृष्णजी जालान मिलने आये, बातें।
बापूजी, सीतारामजी, हीरालालजी कलकत्ता गये।
रात की गाडी से सेकण्ड से दिल्ली रवाना। जवाहरलालजी के साथ।
महामाया व मृत्युंजय से बातचीत।*

मुगलसराय-दिल्ली, २-३-४०

काशी से बनारस कैन्टोनमेंट बनारसीलाल बजाज साथ आये। हरिभाऊ जी उपाध्याय भी साथ हुए।
जवाहरलालजी, वल्लभभाई, कृपलानी, प्रयाग में उतर गये। बातचीत होती रही। कानपुर में डा० जवाहरलालजी रोहतगी, चन्द्रकान्ता, राजेन्द्र,

*बिहार के कांग्रेसी नेता, म० प्रसाद सिंह व मृ० प्रसाद सिंह (अंग्रेजी-करण—'सिंह' का 'सिनहा' भी प्रचलित है)।

[illegible], [illegible] व मेडिकल परिवार आदि। कानपुर में तीन [illegible] डा॰ [illegible] गोस्वामी याद आईं। उनें कमला [illegible] में काम करना है। विवाह-सम्बन्धी बातें, मेरे स्वभाव की [illegible] उसने पढ़कर देखी। विचार कर जवाब देगी।

हरिभाऊजी से ठीक बातचीत।

दिल्ली में गाडोदियाजी के यहां ठहरना। सरस्वतीबाई, गोपाल से विवाह, स्वभाव आदि पर बातें।

दिल्ली, ३-३-४०

गर शादीलालजी के यहां जाना। सबसे मिलना। वहीं भोजन करना। गप-शप, जयपुर, जनरल, राजनैतिक वगैरा।

सर कृष्णमाचार्य बड़ौदा दीवान से दस से पौने बारह तक जयपुर-स्थिति पर मागकर विचार-विनिमय। वह आज महाराज को खासगी पत्र लिखेंगे। हमारा पत्र-व्यवहार देख लिया है।

श्री गोविन्दलाल पित्ती से मिलना।

डेरे पर रामगोपाल केजड़ीवाल, शान्ता, मार्तण्ड, महमी बाबू, रामेश्वरजी अग्रवाल, गोविन्दवल्लभ पन्त, अन्नपूर्णा (पूर्णी), रघुनन्दनशरण, जयन्ती दलाल (भोगीलाल दलाल, अहमदाबाद वाला) से मिलना।

आज कई महीनों के बाद एक रोटी, साग व कढ़ी खाई। रोटी गेहूं-जौ-चने की मिली हुई सरस्वती बाई ने बनाई थी।

दिल्ली-जयपुर ४-३-४०

गाड़ी लेट थी। सुबह ६ बजे करीब जयपुर पहुंचना। मित्र लोग ठीक संख्या में स्टेशन आये थे। न्यू होटल में ठहरना।

जयपुर की वर्तमान स्थिति का रात के ६॥ बजे तक ठीक अंदाज किया। प्रथम प्राइम मिनिस्टर व महाराज के सेक्रेटरी को कई बार फोन किये। आखिर, प्राइम मिनिस्टर के सेक्रेटरी [illegible] से बात हुई। उनका पत्र आया, जवाब भेजा (अधिकारियों का [illegible] ठीक नहीं मालूम हो रहा था। धीरज व शांति से काम लेने का निश्चय।

हीरालालजी शास्त्री की वनस्थली के बारे में, श्री घनश्यामदासजी से सन्तोषकारक बातचीत हुई। पूरा हाल सुनाया। मुझे भी सुख मिला। श्री देशपाण्डे से देर तक हीरालालजी व उनका जो पत्र-व्यवहार हुआ, उसपर बातचीत। उन्हें समझा दिया। चर्खा।
दामोदर शाम को वर्धा से आया।

जयपुर, ५-३-४०

चन्द्रभान शर्मा मिले। उन्हें साफ-साफ अपने विचार समझाये।
प्राइम मिनिस्टर से बातें करने के नोट्स तैयार। विचार-विनिमय देर तक मित्रों से होता रहा।
प्राइम मिनिस्टर राजा ज्ञाननाथजी से १ से १॥। तक साफ-साफ पर थोड़ी गरम बातें हुईं। एक बार तो उठने की भी तैयारी हो गई थी। राजा ज्ञाननाथ 'ऍरिस्ट्रोक्रेट' तो हैं ही। साथ में 'रिएक्शनरी' भी हैं। इतना होते हुए इनसे अगर परिचय बढ़ सके और इन्हें अच्छी तरह से जान लें तो काम भी निकल सकता है क्योंकि ये हिम्मतवर व अपनी बात पर कायम रहने वाले हो सकते हैं। पोलिटिकल डिपार्टमेंट का इन्हें पूरा सपोर्ट होने के कारण यह 'गुड्स डिलीवर' कर सकेंगे, ऐसा लगता है।
जो बातें हुईं वह डेरे पर आकर मित्र लोगों से कहीं। देर तक विचार-विनिमय। कल राजा ज्ञाननाथ जी से १२ बजे फिर मिलना है। उन्हें नोट्स लिखकर रखने को कहा।
डा० कर्नल विलियमसन ने शाम को करीब एक घण्टा भली प्रकार तपासा* व अपनी राय लिख दी।
थोड़ा घूमना, हीरालालजी, रतन बहन आदि से बातें।

६-३-४०

प्राइम मिनिस्टर से मिलने जाने के लिए तैयारी।
जयपुर स्थिति पर मुझे ठीक जानकारी देने के लिए देर तक विचार-

*सेहत की जांच, स्वास्थ्य-निरीक्षण

विनिमय, मित्रो के साथ। इनमे मिश्राजी, हरिश्चन्द्रजी पाटणी, हीरालालजी, हमराय, दामोदर, मदन वगैरा थे। प्राइम मिनिस्टर राजा ज्ञाननाथजी से पौने तीन घण्टे करीब बातचीत हुई। कर्पूरचन्द्रजी पाटणी व रोशनलाल उनके सेक्रेटरी भी वहा मौजूद थे। उन्होने अपनी ओर से बनाया हुआ बयान सुधार कर विचार करने के लिए दिया। वहा से आकर कार्यकर्ता मित्रो से बातचीत। आराम करने की कोशिश परन्तु मस्तक गरम हो जाने से आराम नही मिला। शाम को घूमकर आये। चर्चा, भजन, विनोद।

जयपुर, ७-३-४०

हीरालालजी कर्पूरचन्द्रजी, हरिश्चन्द्रजी, मिश्राजी आदि से मिलकर प्राइम मिनिस्टर को जो पत्र लिखना था, उसका मसौदा तैयार किया। प्रेस स्टेटमेंट, प्रजामडल के रजिस्ट्रेशन की दरखास्त भी।

हीरालालजी व कर्पूरचन्द्रजी पाटणी दोनो ही उपरोक्त तीनो पत्र लेकर प्राइम मिनिस्टर राजा ज्ञाननाथजी से मिले। उन्होने जो सूचनाएं व सलाहें दीं वह लेकर मेरे पास आये। उसका खयाल कर फिर कुछ फेर-फार कर प्रेस स्टेटमेंट व पत्र भेजा। रजिस्ट्रेशन कराने का पत्र तो उन्हें दे ही दिया था।

चर्चा। हरिभाऊजी, भागीरथी बहन, शकु० अग्रवाल, विद्याधर वैद्य, नन्दकिशोरजी, देङराजजी, प्रह्लाद वैद वगैरा मित्रों से बातें।

आजाद मैदान मे जाहिर सभा हुई। सत्तर मिनिट ठीक सन्तोषकारक भाषण हुआ। वर्तमान स्थिति की विकट समस्या साफ हुई।

८-३-४०

हीरालालजी, रतनदेवी आये। स्टेशन-धर्मशाला तक पैदल घूमने जाना। बातचीत। पैदल ही स्टेशन के रास्ते आना। हीरालालजी के स्वभाव के बारे मे ठीक विचार-विनिमय होता रहा। कपूरचन्द्रजी पाटणी से बातें देर तक।

गुलाबचन्द वकील के घर जयपुर बार के सदस्यों से खादी के बारे में खूब देर तक विचार-विनिमय हुआ। आशा तो है, परिणाम ठीक होगा। खादी के लिए लोगों की बेपरवाही देखकर और कुछ भी कहने से दु:ख-सा मालूम देता है। देशपाण्डे बीमार थे, उन्हें देखा।

हरिभाऊजी, भागीरथी बहन से बातें।

रात १२ बजे मेल से सेकण्ड में दिल्ली रवाना।

दिल्ली, ९-३-४०

दिल्ली में गाड़ोदियाजी के साथ उनके घर पैदल ही जाना।

सर कृष्णमाचारी बड़ौदा दीवान से ९। बजे मिलना। उन्होंने जयपुर के बारे में श्री महाराज को पत्र लिखा, वाइसराय व सर गलेन्सी से भी बातें कीं।

अब दिल्ली में राजा ज्ञाननाथ व जयपुर महाराज से भी बात करेंगे। उनकी तो राय साफ है कि स्टेट की भलाई की दृष्टि से भी सोसायटी एक्ट नहीं होना चाहिए। वाइसराय ने कहा पहिले मैं जयपुर में मिल लूं।

सर कृष्णमाचारी ने कश्मीर दीवान गोपालस्वामी, कोटा दीवान सक्सेना व दीवान बहादुर गोविन्दराव से मिलाया।

देवदास गांधी के साथ हिन्दुस्तान टाइम्स का कार्यालय देखा। उन्हें जयपुर-स्थिति समझाई। शंकर ने कार्टून के लिए फोटो लिया।

मिस राय की केमिकल प्रयोगशाला देखी। वहां सरदार पणिक्कर मिल गये। आजकल बीकानेर में हैं, बातें कीं।

गाड़ोदिया हाउस में भोजन, आराम। वियोगी हरिजी से बातें।

ग्रान्ड ट्रंक से वर्धा रवाना।

भोपाल-इटारसी, १०-३-४०

भोपाल में—अलवर के ए० डी० सी० अमरसिंहजी त्रिकेटियर के छोटे भाई से बातें।

आबिद अली व दामोदर से इटारसी से बेतूल तक बातचीत होती रही।
हाउसिंग, दामोदर के खासगी भावी प्रोग्राम आदि के बारे में।

वर्धा, ११-३-४०

पू० मा के पास भजन सुने—लक्ष्मी शारदा की कहानी सुनी।
रामेश्वरप्रसाद नेवटिया व कमल को हिन्दुस्थान शुगर मिल की व्यवस्था बिड़लों की ओर देने के लिए मेरे को स्थिति व कारण समझाकर कहे। उन्हें जच गये।
पू० बापू से जयपुर की पूरी स्थिति कही। सेवाग्राम तीन घण्टे रहना।
स्वामी सत्यदेवजी परिव्राजक चारी, गोवर्धनदासजी हरकिसनदास अस्पताल वाले मिले। वे बम्बई गये।
चर्खा, जाजूजी, दादा धर्माधिकारी, धोत्रे और महिलाश्रम की बहनों से बातचीत।

१२-३-४०

जाजूजी, कमल, चिरंजीलाल के साथ देर तक बातचीत। अलग-अलग, व्यवहार के सम्बन्ध में। इनकम टैक्स प्रैक्टिस करने का विचार न रखते हुए तो उनके सीधे मार्ग अलग-अलग हैं, यही निश्चय हुआ।
जवाहरमल जी से महिला आश्रम की बातचीत थोड़े में।
शारदा (लक्ष्मी) दाण्डेकर से काम करने व नागपुर से दूर रहने की उनकी इच्छा समझी। स्थिति समाधान-कारक नहीं रही।

वर्धा-रामगढ़, १३-३-४०

जाजूजी ने कमलनयन की मन स्थिति का, जो उनके मन पर असर हुआ, वह कहा। मुझे भी लगता था। विचार करना होगा। उसे सतोष तो करना ही है।
नागपुर मेल से रामगढ़ कांग्रेस के लिए रवाना हुए। नागपुर तक केशवदेवजी नेवटिया, कमल, कासूराम, जीवनलाल भाई के साथ। पाढर-कवड़ा, औंध प्रेस, अदिलाबाद कारखाना, आर्वी सा० जं० फैसला आदि की बातें।

जीवनलाल भाई से मुकन्द आयरन की काम की बातें। उनकी इच्छा पहिले से ही है कि कमल उस काम मे देखरेख करे। नासिक में थोरवड़े जमीन की स्थिति व उनका आम-खर्च समझा।
पत्ते खेलना। आराम। टाटानगर रात को पहुंचे। गाड़ी बदली। सेकण्ड में जगह न होने से फर्स्ट को रिजर्व किया गया। बासन्ती की चिन्ता, उसे भी जगह मिल गई।

रामगढ़ कांग्रेस, १४-३-४०

सुबह निवृत्त होकर बापू के पास जाना। बापू से बातें।
अभ्यंकर स्मारक की इमारत (नागपुर) के बारे मे पूनमचन्दजी रांका ने यही समझा था कि बापू ने अभी उसे न बनाने की राय दी है। मैंने सब स्थिति समझाई तो उन्होंने बनाने की इजाजत दे दी।
जयपुर रहना हो सके तो वहां रहना ठीक रहेगा। बापू ने मेरे प्रश्न पर खुलासा किया व देशी रियासतों के बारे में अपनी कल्पना कही।
वाइसराय लार्ड लिनलिथगो से योग्य दीवान के बारे में जो बातें हुई वह सब कहा। मैं जयपुर रहना निश्चित करूं तो उन्हें पसन्द है।
व्यापारी (कामर्स) कालेज के प्रिंसिपल मलकानी को बापू लिखेंगे। बापू को शंकर (सतीश) ज्यादा पसन्द है। बापू समझते हैं, वह ठीक काम कर सकेगा।
महिला-आश्रम—राजकुमारी को समझाने के लिए बापू ने कहा। मनःस्थिति में विशेष सुधार नहीं, मैंने कहा। फिर खुलासा बात करने का निश्चय।
रामगढ़ पहुंचे। भूलाभाई ने बापू के कैम्प में दिल्ली की स्थिति कही।

१५-३-४०

वर्तमान स्थिति पर खान अब्दुल गफ्फार खां से बातचीत।
बापू के साथ घूमते हुए देर तक बातचीत। साथ में सरदार, भूलाभाई भी। भूलाभाई ने दिल्ली का अनुभव, वातावरण बताया।

राधाकिसन स्टेट्समैन वाले से राजा ज्ञाननाथ व वर्तमान स्थिति पर विचार-विनिमय।
गनी* की स्त्री रोशन से खाते समय बातचीत।
जवाहरलाल, खान साहब के साथ राष्ट्रपति मौलाना आजाद का जलूस देखा (मोर का आसन)।
वर्किंग कमेटी २ से ७ तक। ठीक खुलासेवार चर्चा हुई।
प्रेमा कण्टक और बाद में, इन्दु गुणाजी से बातचीत। इन्दु को सावधान किया भली प्रकार से।
ए० जी० तेन्दुलकर के बारे में जानकारी की तो यही मालूम दिया कि ठीक आदमी नहीं हैं—बे-जवाबदार है।
चर्खा।

१६-३-४०

पू० बापू से सुबह एक घण्टे तक घूमते समय बातचीत। उनकी राय जानी।
वर्किंग कमेटी की ८॥ से ११, २ से ६,७॥ से ६ तक और स्टेट्स वर्किंग कमेटी की ६॥ से ११॥ तक बैठकें हुईं।
आज जाहिर सभा में वर्तमान स्थिति पर श्री शंकरराव देव व मैंने भाषण दिये।
चर्खा।

१७-३-४०

बापू के साथ एक घण्टा घूमते-फिरते हुए बातचीत, विचार-विनिमय।
वर्किंग कमेटी ८॥ से १२, शाम को ७॥ से ६ तक बैठी।
आ० भा० क० व सब्जेक्ट कमेटी की बैठकें ३-६ तक हुईं। मुख्य प्रस्ताव रखा गया।
राजेन्द्र बाबू व जवाहरलाल के भाषण अच्छा हुए।

*अब्दुल गनी, खान अ० ग० खां का बड़ा लड़का।

६० स्टेटों की हालत पर पं० जवाहरलाल बोले ।
शिवप्रसादजी गुप्ता से मिलना ।
जवाहरलालजी से कल के पट्टाभि के साथ के बर्ताव व अन्य महत्व की बातचीत ।

१८-३-४०

'स्टेट्समैन' देखा ।
बापू के साथ घूमते हुए कल वर्किंग कमेटी की मीटिंग का मुझ पर जो असर हुआ, वह कहा ।
वर्किंग कमेटी की मीटिंग फिर सुबह हुई । बाद दोपहर को बापू की उपस्थिति में हुई । बापू को जवाबदारी से मुक्त करने के प्रस्ताव को मौलाना, सरदार, जवाहरलाल वगैरा ने नहीं माना—मैं मुक्त करने के पक्ष में था । प्रफुल्ल बाबू, देव, पट्टाभि, राजाजी की राय मेरे साथ थी ।
सब्जेक्ट कमेटी की बैठक हुई । मुख्य व मूल प्रस्ताव पर ठीक वाद-विवाद, चर्चा होने के बाद खूब बहुमत से वह पास हुआ ।
बापू का भाषण 'सब्जेक्ट कमेटी' में हुआ ।

१६-३-४०

झण्डावन्दन ८ बजे हुआ ।
सब्जेक्ट कमेटी की मीटिंग ६ से १०॥ बजे तक हुई । काम खतम हुआ ।
मास्टर कृष्णराव का गायन हुआ ।
हैदराबाद स्टेट कांफ्रेंस के प्रतिनिधियों से मिलना ।
बापू के यहां २ बजे से ३ तक हिन्दी प्रचार कार्यकारिणी का काम हुआ ।
हैदराबाद डेपुटेशन बापू से मिला ।
खैर, रामनाथ पोद्दार को बापू से आनन्दीलाल पोद्दार आर्य वैद्य विद्यालय खोलने की परवानगी मिली ।
खुला जलसा (ओपन सेशन) हुआ । अच्छी, सुन्दर तैयारी थी । पानी रंग हुआ । ठीक जलसे के समय बहुत जोरों से पानी बरसने का

दृश्य देखने लायक था। भोज गया।
पांव में दर्द ज्यादा रहा।
बापू के कहने से रात की गाडी से वर्धा रवाना हुआ।
वर्षा तब भी जोरो की हो रही थी।

टाटानगर रेलवे २०-३ ४०

टाटानगर मे गाडी बदली। सेकण्ड मे जगह नही थी तो फर्स्ट को सेकण्ड मे कनवर्ट कर दिया। टाटानगर के इपीरियल बैंक के अकाउन्टेन्ट (आई०बी०) तक साथ हो गये। वहा की व्यापारिक व बैंको की हालत समझी।
ईटा स्टेशन के नजदीक ही बिडलो की पेपर मिल देखी।
रामकृष्ण से उपदेशप्रद व्यावहारिक बातचीत की। उसे समझाकर कहा।
गाडी में खूब सोने मे समय गया। चश्मा रामगढ मे ही रह गया, इस कारण पढ़ना नही हुआ।
मदन कोठारी ने भूल से सेकण्ड क्लास की जगह थर्ड की टिकिट दे दी। उस कारण एक्सेस व पेनालटी देनी पड़ी। टिकट कलेक्टर दोनों भले आदमी थे। मदन से जवाबदारी का काम नहीं हो सकता।

वर्धा, २१-३-४०

नागपुर में गाडी बदली। वर्धा पहुचे।
सेवाग्राम—रेहाना, सरोज, मदालसा, बा से मिलना।
सरला बहन से बातें। मोहनसिहजी का पत्र देखना। उस सम्बन्ध मे खुलासेवार बातचीत।
मेल से मृदुला साराभाई, गौतम, विभ्रम, फातिमा (मिसेज इस्माइल) रामगढ़ से आये। सबके साथ भोजन, विनोद, बातचीत देर तक होती रही। रेहाना, सरोज से बातें। प्रोग्राम, मानसिक स्थिति, परस्पर खुलासा। मर्यादा वगैरा के सम्बन्ध में उनका यह अंगार से खेलना है।

वर्धा, २२-३-४०

बापू रामगढ़ से आये। उनके साथ पैदल बंगले तक आया। मोटर में थोड़ा हंसी तो था ही। बापू ने मां के कान पकड़े। मां ने बापू के कान पकड़े। हंसाहंसी। वर्किंग कमेटी के सदस्य १४ तो निश्चित हो गये। मौलाना आजाद, राजेन्द्र बाबू, जवाहरलाल, वल्लभभाई, जमनालाल, राजगोपालाचारी, अब्दुल गफ्फार, आसफ अली, डा० सैयद महमूद, कृपालानी, शंकरराव देव, प्रफुल्ल घोष, सरोजिनी नायडू भूलाभाई देसाई। एक जगह अभी खाली है।

रेहाना से ठीक-ठीक दिल खोलकर बातें। मन.स्थिति समझाई-समझी, बिना संकोच।

महिला आश्रम की व्यवस्था के सम्बन्ध में काका साहब से मिलकर शिक्षकों से ठीक-ठीक चर्चा, विचार-विनिमय। बहनों ने म० आ० का काम अपने हाथ लेने के बारे में कहा।

वर्धा, २३-३-४०

किशोरलाल भाई के घर मंगलदास बैरिस्टर से विनोद व बातचीत, ठीक परिचय।

रेहाना बहन से खुलासेवार बातें। उन्होंने कल केशरबाई का, आज उमा का हाथ देखा।

महिला आश्रम-वासन्ती, कमला लेले, तारा मशरूवाला आदि से महिला आश्रम की व्यवस्था के सम्बन्ध में शान्ता के घर पर विचार-विनिमय होता रहा।

वर्धा रेलवे, २४-३-४०

महिला आश्रम में तीन बजे जाना। विचार विनिमय के बाद बहनों ने ही महिला आश्रम की जिम्मेदारी संभालने का निश्चय किया। शान्ता-बाई सभापति, कमलाबाई आचार्य व मंत्री, मदालसा खजानची, तारा -ती व्यवस्थापिका।

उदाहरमनजी व काशिनाथजी मदद करेंगे।
सेवाग्राम बापू से मिलना। बातचीत। फातिमा इस्माइल ने कुरान से पढ़कर सुनाया। रेहाना ने भजन गाये व कुरान पढ़ा, अरबी में।
बजाजवाड़ी में होली उत्सव का सम्मेलन हुआ। रेहाना तैयबजी के भजन हुए। श्रीमती साठे ने भी गाये। महिला आश्रम की बहनों ने नकलें कीं, विनोद। रात को १० बजे एक्सप्रेस से बम्बई रवाना, सेकण्ड से—रामकृष्ण, विट्ठल साथ में।

बम्बई रेलवे, २५-३-४०

मनमाड के बाद फातिमा बहन ने उमर सोबानी व उसमान सोबानी की बहन होने के नाते उमर की मृत्यु व घरेलू परिस्थिति का रोमांचकारी वर्णन सुनाया। बोध लेने लायक कई बातें मालूम हुईं। बॅरिस्टर आजाद व उमर की आखिरी स्त्री का वर्णन कादंबरी (उपन्यास) के माफिक मालूम हुआ।

बम्बई, २६-३-४०

सुबह घूमते समय जानकीजी से बातचीत।
आफिस—इनकम टॅक्स का डिक्लेरेशन फार्म शामिल है, या अलग-अलग, इस बारे में बातें कीं।
जाजूजी, अम्बालाल सॉलीसिटर, माणिकलाल ऑडीटर-केशवदेवजी, चिरंजीलाल, रामकृष्ण के सामने बहुत देर तक विचार-विनिमय। स्थिति का खुलासा। सचाई आदि बातों का विचार कर मसौदा तैयार हुआ। सब ने पसन्द किया। मुझे भी सन्तोष हुआ। कमल होता तो ठीक रहता।
जुहू—रामेश्वर, शान्ति व सतीश से कॉमर्स कालेज, वर्धा की बातचीत।

बम्बई जुहू, २७-३-४०

जानकीदेवी से घूमते समय साफ-साफ बातें।
जाजूजी आये, उन्हें घूमकर सब जगह दिखाई।

गौतम व गीता (अम्बालाल भाई के बालक) रहने आये। उनकी व्यवस्था।
गुजरात बहुत दरगा से मिलना। पांच हजार रु० हिन्दी प्रचार के लिए
कम भेजने की बात नहीं। समझपणी व प्रजामण्डल के बारे में द०-१०
रोज बाद जयपुर, सीकर जाने को कहा।
सर इब्राहीम रहमतुल्ला से मिलना। उन्होंने हिन्दू-मुस्लिम एकता के
बारे में अपने विचार कहे।
आफिस जाना। कमला मनुबाला का वेतन निश्चित किया।
सतीश कालेलकर से बातें। आफिस कार्य।
नागपुर मेल से वर्धा रवाना, सेकण्ड क्लास में।

वर्धा २८-३-४०

सर रेड्डी, वाइस चान्सलर, आन्ध्र यूनिवर्सिटी से पुलगांव से वर्धा तक
बातचीत।
घनश्यामदासजी बिड़ला, राजगोपालाचारी से बातचीत।
मद्रास में याकूब हुसेन की मृत्यु का समाचार जानकर दुःख हुआ।
बापू से सेवाग्राम जाकर मिले। जयपुर, बम्बई की चर्चा। दोपहर को
घनश्यामदासजी व राजाजी बापू के पास गये।
चर्चा, पत्र व्यवहार, रुक्मिणी जाजोदिया।

वर्धा, २९-३-४०

सुबह बृजलालजी बियाणी अकोला से आये।
घनश्यामदासजी बिड़ला दिल्ली रवाना हुए। रामेश्वर अग्रवाल आया।
शान्ताबाई व दूसरी बहनों से महिला आश्रम की बातचीत। उर्मिला,
देवकी, रुक्मिणी, पद्मा आदि से खासकर।
बृजलालजी व नागपुर यूनिवर्सिटी की ओर से कॉमर्स कालेज के निरी-
क्षण के लिए मि० गंगोली, प्रिंसिपल मॉरिस कालेज व प्रो० सेठी
(अमरावती) आये। साथ में भोजन, बातचीत।
राजगोपालाचारी का ग्राम उद्योग संघ में भाषण हुआ।

मारवाड़ी शिक्षा मण्डल की कार्य-कारिणी की आज भी सभा हुई। देर तक विचार-विनिमय, कालेज नागपुर में खुले या वर्धा में, इसके बारे में आखिर वर्धा में ही खोलने का निश्चय हुआ।

वॅक आफ नागपुर के बोर्ड की मीटिंग हुई। पूनमचन्दजी की पगार, काम वगैरा तय हुए।

लक्ष्मीनारायण मंदिर में रेहाना बहन के भजन हुए। ठीक रहा।

वर्धा-सेवाग्राम, ३०-३-४०

जल्दी तैयार होकर सेवाग्राम जाना। वहां खादी यात्रा पर झण्डा वन्दन हुआ। रेहाना ने 'मेरी माता के सिर पर ताज रहे'—यह सुन्दर भावपूर्वक गीत गाया। पू० जाजूजी व काका साहब के सुन्दर व्याख्यान।

सेगांव—बापू से जयपुर के बारे में खुलासेवार बातचीत, विचार-विनिमय।

व्यक्तिगत सत्याग्रह की जरूरत हो, तो करने की इजाजत।

तारा मशुवाला के सम्बन्ध की चर्चा। किशोरलाल भाई, गोमती बहन भी थे। मेरे मन की स्थिति, कमजोरी कही। और लोग घूमने में साथ हो गये। इसी से साफ बात न हो सकी। विचार रहा।

बापू का भाषण 'खादी यात्रा' में हुआ। प्रार्थना के बाद।

कलकत्ता से फोन आया। कमल को बुखार है।

लक्ष्मण की स्त्री को गिर पड़ने से चोट आई, उसे अस्पताल रवाना किया।

वर्धा-दिल्ली, ३१-३-४०

पू० मां, केशर, बाद में काशिनाथजी के मन में महिला आश्रम के परिवर्तन से जो असन्तोष था, उसे दूर करने का प्रयत्न।

शान्ताबाई, गजानन्द व उसकी स्त्री आदि से नगद रुपये से फैसला—अभी दस मास की किश्तें दी।

ग्रान्ट ट्रंक से देहली रवाना। नागपुर तक श्रीमन्नारायण साथ में। व्यापारिक कालेज आदि पर ठीक बातचीत हुई।

माधोपुर स्टेशन पर रा० ब० मोहनलाल शर्मा मिले । ... के बारे में बातचीत । वह डायरेक्टर होने को तैयार है परन्तु वेतन ५० हजार से ज्यादा नहीं ले सकते । 'हरिजन' व 'जयपुर बुलेटिन' वगैरा सेवक में एक पंपैंफ्लेट से बातें । देखना ।

दिल्ली, १-४-४०

आगरा फोर्ट से राजा की मंडी स्टेशन तक श्री प्रताप नारायणजी व महाराजा आये । बातचीत । इनकी राय से ओम का विवाह जुलाई में होना ठीक रहेगा ।

मातादीन बघेरिया न्यू दिल्ली से दिल्ली तक साथ रहे, व बाद में, बिड़ला पैलेस में भी मिले । उनकी स्थिति समझी ।

हरिजन कॉलोनी गये—सरस्वती बाई गाडोदिया, सावित्री गाडोदिया, पार्वती डिडवानिया वगैरा साथ में । वहां वियोगी हरिजी के साथ घूम-फिरकर देखा । वहीं स्नान । ठक्कर बापा वगैरा व विद्यार्थियों के साथ भोजन ।

बिड़ला पैलेस—घनश्यामदासजी व लक्ष्मीनिवास बिड़ला वगैरे के साथ जयपुर, वनस्थली के बारे में बातचीत ।

जयपुर, २-४-४०

मित्रों से बातचीत, विचार-विनिमय देर तक ।

१ बजे से ४। बजे तक राजा ज्ञाननाथजी प्राइम मिनिस्टर से बातचीत होती रही । इनका रवैया व विचार-नीति देखते हुए समझौते की आशा कम दिखाई दी । बहुत ही 'रिएक्शनरी' सज्जन मालूम हुए । इन्होंने वर्तमान स्थिति, प्रजामण्डल के ससपेंशन के समय हीरालालजी का लाया जाना, लादूरामजी से मिलने की इच्छा करना, खादी भण्डार के लोगों व प्रजामण्डल द्वारा मिलकर होली उत्सव में राष्ट्रीय क्रांतिकारी गीता का प्रचार करना, सीकर में पत्रिका बांटना, पूर्णचन्द्र का ताड़केश्वर को पत्र लिखना आदि बातों का जिक्र किया और कहा, आप लोगों ने वचन

भंग किया है। मुझे तो यह बहुत ही बुरा व अपमानकारक लगा। सिर में दर्द शुरू हुआ। थककर आने से वहीं थोड़ा आराम लेकर डेरे आया। डेरे (न्यू होटल) पर गुलाबजल की पट्टी सिर पर रखकर सोया। सिर हल्का हुआ। ज्वर मालूम दिया। शाम को घूमना, करीब डेढ़ मील, चर्खा। डायरी, मित्रों से बातचीत, विचार-विनिमय। लड़ना ही पड़ेगा ऐसा रंग दिखाई दिया जयपुर के बारे में।

३-४-४०

हीरालालजी शास्त्री आये। उन्होंने ड्राफ्ट तैयार किया। प्राइम मिनिस्टर राजा ज्ञाननाथजी को देने के लिए। मुझे पूरी तौर से पसन्द तो नहीं आया तो भी, शायद कोई रास्ता बैठ जाय व आज ही रजिस्टर्ड होकर फैसला हो जाय, इस खयाल से मैंने वह कबूल कर लिया।

राजा ज्ञाननाथजी से हीरालालजी शास्त्री व कपूरचन्दजी पाटणी सुबह ६ से १० बजे तक मिले। जो बातचीत हुई उसका हाल कहा। विशेष आशा नहीं मालूम देती।

कार्यकर्ताओं से बातचीत, विचार-विनिमय।

प्राइम मिनिस्टर राजा ज्ञाननाथ, आज खेतड़ी की ओर गये। कपूरचन्दजी व हीरालालजी उनसे फिर मिल आये। दस मिनिट बाद मी घर आये। उनकी राय मालूम हुई।

हरिभाऊजी, माणिक्यलालजी, भागीरथी बहन, शकुन्तला वगैरा से बात-चीत।

५-४-४०

प्रजामण्डल कार्यालय में कार्यकर्ताओं से व वर्किंग कमेटी के सदस्यों से इन्फोर्मल बातचीत हुई। चर्खा।

आजाद चौक में ८ बजे से ६।। तक सार्वजनिक सभा हुई। मिश्रजी सभापति। ५० मिनट तक भाषण दिया। जवाबदार राज्य-तन्त्र व रचनात्मक कार्य का ठीक खुलासा किया। सभा ठीक हुई। लोग ठीक तादाद में आये थे।

अजमेर रवाना। १-१५ बजे वहा पहुंचना। ४। बजे श्री राजा कल्याण-सिंह जी के पास ठहरना। उनसे बातचीत। रात को प्रो० मदनसिंहजी (मेयो कालेज) से वर्तमान स्थिति व राजपूत कर्तव्य पर बातचीत। पार्टी मे जाना, खादी के बारे मे बातें।
खादी प्रदर्शनी के उद्घाटन मे जनता ठीक जमी थी। उत्साह भी खूब था।
खादी पर बोलना, उद्घाटन करना। प्रदर्शनी देखना।
जोधपुर की स्थिति समझना।

अजमेर-जयपुर, ९-४-४०

राजा साहब से देर तक घूमते हुए बातचीत।
कृष्णगोपाल गर्ग के घर फलाहार, मिलना-जुलना।
अजमेर जेल मे पं० लादूरामजी जोशी से मिलना। थोड़े कमजोर मालूम दिये।
हटूंडी—शोभालालजी का खुलासा समझा। बातचीत। रामनारायणजी वगैरा के सम्बन्ध मे शोभालालजी के खुलासे से सन्तोष हुआ।
कृष्णगोपाल गर्ग, विश्वम्भरनाथजी भार्गव आदि से बातचीत।
अजमेर-काग्रेस कार्यकर्ताओं से कौल के घर पर मिलना, बातचीत। राजा कल्याणसिंहजी से बातचीत। चर्चा, उनकी रानी, श्री माधोसिंह रावराजाजी की लड़की से मिलना। बातचीत। किसनगढ़ मे सभा हुई। जयपुर रात मे ८। बजे पहुचना।

जयपुर, १०-४-४०

हंसराज, श्यामा, रामभजन स्वामी, प्रजामण्डल कार्यकर्ताओं ने अपनी मानसिक कठिनाई बतायी।
राधारमण न्यू एशियाटिक वाले व हीरालालजी, कर्पूरचन्द्रजी, रामप्रताप-जी से बातचीत।
प्राइम मिनिस्टर के सेक्रेटरी रोशनलाल ने श्री कर्पूरचन्द्रजी से कहा कि आज कौंसिल ने प्रजामण्डल को रजिस्टर्ड करने की हमारी लेखी (अर्जी)

शर्तों के मुजब स्वीकार कर ली है। इसकी सुचना ता० १३ के पहले
तक, होम मिनिस्टर के द्वारा पहुच जावेगी। इस बार तो संघर्ष टला
मालूम देता है। बाकी राजा ज्ञाननाथ की व राज्य की नीति में परि-
वर्तन ठीक तौर से हुए बिना असली शांति होना कठिन लगता है।
हीरालालजी, कर्पूरचन्द्रजी, मिश्र, हरिश्चन्द्रजी, हंसराय से प्रजामण्डल
जलसा, सभापति व मेरे अपने प्रोग्राम पर विचार-विनिमय।
जलसा मई के दूसरे सप्ताह में है, सभापति मुझे ही होना होगा। अभी
यहीं रहना पडेगा।

११-४-४०

रामनिवास बाग में हरिश्चन्द्र शर्मा वकील से बातचीत। उनकी सारी
परिस्थिति समझकर उनके सन्तोष मुजब यह निश्चय हुआ कि सिर्फ
एक वर्ष, माने १ मई १९४० से ३१ अप्रैल १९४१ तक, वह पूरा समय
लगाकर जवाबदारी के साथ प्रजामण्डल का कार्य करेंगे। वकालत नहीं
करेंगे। इनके खर्च आदि की व्यवस्था एक वर्ष के लिए तीन हजार तक
करने की जिम्मेदारी ली। कम में काम चल जायगा तो ठीक ही है।
जेल जाना पड़े तो जितना घर में खर्च लगेगा उतना ही लेंगे।
प्राइम मिनिस्टर राजा ज्ञाननाथजी से मिलना। बातचीत। प्रजामण्डल
रजिस्टर्ड हो गया, ऐसा वर्तमान पत्र में जाहिर करना।
श्री महाराज साहब से शायद ता० १३ को मिलना सम्भव होगा, उन्होंने
कहा। ठीक व्यवहार रहा।

जयपुर, बनस्थली, १२-४-४०

अजमेर से रात को १ बजे करीब फोन आया। समाचार मिला—सारी
प्रदर्शनी में आग लगी, वगैरा। देवराज सुबह ११॥ बजे आने वाले हैं।
इसलिए सुबह बनस्थली न जाकर वहां दोपहरी में मोटर से गया।
प्रभात सेठ (अमलनेर वाले) की जगह होते हुए बनस्थली २॥। बजे के
करीब पहुंचा, चर्चा, भोजन, बातचीत।

प्रताप सेठ व उनकी स्त्री आये। लड़कियों का प्रोग्राम, उद्योग, संगीत, खेल-कूद वगैरा देखे। उन्हे भी पसन्द आये। गीता बजाज को गायन मे व अन्य बातों में प्रगति करते हुए देखकर अच्छा लगा। एक लड़की भागते हुए घोड़े पर से गिर पड़ी। थोड़ी देर बहुत चिन्ता हुई। लड़की बच गई। शाम को जयपुर रवाना।

जयपुर, १३-४-४०

सुबह लक्ष्मीनारायणजी गाडोदिया, सरस्वतीबाई, रामगोपाल, शशिकला, दिल्ली मे आये। घूमना-बातचीत।

प्रताप सेठ से मिलना। खादी भण्डार उन्हे दिखाया। वनस्थली संस्था का उन पर ठीक असर हुआ। फिलहाल उन्होंने दो हजार की सहायता देना स्वीकार किया।

राजा ज्ञाननाथ प्राइम मिनिस्टर का फोन, महाराजा सा० से सुबह ११॥ बजे रामबाग में मिलना। राजा ज्ञाननाथ भी करीब १५-५० मिनिट वहां पर थे। बाद मे महाराज से अकेले मे बातचीत होना। राजा ज्ञाननाथ के सामने व महाराज से खूब साफ-साफ दिल खोलकर बातें हुई। महाराज ने खुलासा किया व विश्वास दिलाया।

मित्रों से आज की बातचीत का सारांश कहा।

मि० याम मिले। मेवाड़ से पार्वतीबाई आयी।

चर्चा। अजमेर की स्थिति विश्वम्भरजी भार्गव व देशपाण्डे से पूरी समझी। सार्वजनिक सभा आजाद चौक मे हरिश्चन्द्रजी शर्मा के सभापतित्व मे हुई। समझौते का खुलासा व पब्लिसिटी आफिस से बिना नाम की पत्रिका निकलने का स्पष्टीकरण किया। सभा ठीक हुई। हीरालालजी व हरिश्चन्द्रजी ठीक ही बोले।

१४-४-४०

हीरालालजी शास्त्री ने जो स्टेटमेंट मेरे वक्तव्य के आधार पर बनाया-वह पढ़कर सुनाया, बाद मे विचार-विनिमय हुआ।

१६-४-४०

आज प्रजामण्डल का विधान चालू कर दिया गया। प्रेस में भी सूचना भेज दी। आज 'हिन्दुस्थान टाईम्स' में स्टेटमेंट वगैरा ठीक तौर से आया। महाराज से तो फोन पर बातचीत नहीं हुई।
श्री आई० जी० साहब कोटा के प्राइम मिनिस्टर से सेतडी हाउस में जयपुर स्थिति, महाराज के विवाह पर बहुत देर तक बातचीत होती रही।

१७-४-४०

रेलगाड़ी से सवाई माधोपुर, सूरत होते हुए अमलनेर रवाना होने से पहले प्रताप सेठ से खादी कार्य के लिए रुपयों की आवश्यकता की चर्चा। उन्होंने सहानुभूति दिखाते हुए अपनी स्थिति समझाई।
मातादीन के भाई रामेश्वरजी ने बिसाऊ ठाकुर, अपने कामदार व महादेवलाल शाह और प्राइम मिनिस्टर से पिछली बार हुई बातचीत कही। लोगों की नीच मनोवृत्ति का पता लगा। महादेवलाल शाह ने तो यह व्यवसाय कर रखा मालूम देता है कि बिड़लों की बुराई व अधिकारियों के नाम से पैसे खाना। रामेश्वरजी बघेरिया से कह दिया, अगर मातादीन का पूरा चार्ज हमें सौंपते हो (जेल भी जाना पड़े फिर भी) तो हम पूरी पैरवी के साथ केस लड़ने की व्यवस्था कर सकते हैं।
'हिन्दुस्थान टाईम्स' में जो लेख आया, वह देखा। प्रजामण्डल का कार्य कल से चालू हो गया, यह सूचना पढ़ी।
श्री हंसराज व कर्पूरचन्दजी से मिलकर बीमा करने जैसा मार्किट का काम करने का निश्चय किया।
घनश्यामदासजी को पत्र, उदयपुर दीवान को भी, अन्य पत्र।
मोरीसागर दोपहर बाद मोटर से। देशपाण्डे, भूलजी भाई, विट्ठल के साथ रवाना। दौसा तक गाड़ी ठीक रही, फिर रास्ते में ही बिगड़ गई। बहुत मदद की तो भी कुछ न हुआ। रात को जंगल में ही सोना पड़ा। कल्याण जमादार ने व्यवस्था की।

मोरांसागर, १८-४-४०

लालसोट सुबह १० बजे करीब पहुंचे। रेस्ट हाउस में ठहरे। मोटर की
गड़बड़ी। लालसोट से सभा में लोगों से मिलकर शाम से पहले मोटर
से ही मोरांसागर रवाना। लालसोट की सभा ठीक हो गई। जनता में
खूब उत्साह पैदा हो गया था। देशपाण्डे व मैं थोड़ा बोले। मोटर
ठीक चली। गरम जल्दी हो जाती थी, पानी डालना पड़ता था।
लालसोट से पानी लाना।

आज सागर का कल्याण जमादार व लालसोट, डाबवना का भंडारी
परसराम पटेल मिले। फिर सेहली, दिवराई, बामनवास होते हुए
मोरांसागर ७॥ बजे शाम को पहुंचे। गिरदावर मानानन्द जिलेदार व
राजेन्द्रनाथ, बी० ए०, एल० एल० बी०, से मिले। बुद्धि ने भजन सुनाये।
१२ मास बाद यह स्थान देखकर मन भर आया। जानकी जी, सावित्री
मदालसा वगैरा साथ होती तो ज्यादा सुख मिलता। उन्हें भी यह स्था
देखकर खुशी होती। फिर आने का विचार। यहां खादी सेन्टर खो
और किशोर सिंह राजपूत को ट्रेन्ड करने का विचार।

मोरांसागर, बन्द, १९-४-४०

रात को हवा जोर की चली। अन्दर सोना पड़ा। सुबह चबूतरे प
घूमना।
गाय-भैंसों की हालत शोचनीय मालूम दी। चोखा गूजर मिला। उस
५-७ भैंसें भूख के मारे मर गईं, दुखी था।
देशपाण्डे से खादी सेन्टर के बारे में बातचीत।
जावरा में पन्ना पटेल वगैरे से मिलना। गणेश भक्त की मृत्यु हो
छाजू व किशोर सिंह को खादी के काम सिखाने का निश्चय।
टुण्डीला का नवाज्या पटेल मिलने आया।
चर्चा। थानाराम, प्रजामण्डल कार्यकर्ता, बामनवास, से बातचीत
ति स

मोरीसागर, बन्द,२०-४-४०

दोपहर बाद ४ बजे रवाना। वामनवास में ४॥ बजे जुलूस व सभा। राज के निशान के नीचे प्रजामण्डल के सदस्य, चर्खा खादी-प्रचार, पुलिस का व्यवहार व अपनी नीति के बारे में कहा। शाम को ५। बजे गंगापुर रवाना। गंगापुर ५॥। करीब पहुंचना। भोजन। जयपुर गजट व अखबार देखना। गजट में प्रजामण्डल का समझौता पढ़ा तो थोड़ा बुरा लगा। ८। बजे जाहिर सभा हुई। प्रजामण्डल के समझौते का यह खुलासा किया कि प्रजामंडल को मजबूत बनाना है। चर्खा व खादी का प्रचार करना है।

श्रीरामजीलाल मुख्त्यार से ठीक परिचय। इनका भाई हिण्डोन तक आया।

हिण्डोन रात को पहुंचे। पंडित टीकारामजी वकील के आफिस में ठहरे। मिर्चियों की घास, मच्छर भी थे, नींद साधारण आई।

हिण्डोन-महावीर, २१-४-४०

हिण्डोन में जो करेली खादी सेन्टर का कार्य होता है, वह देखा। चर्खा दंगल भी देखा। यहां की प्राचीन बावड़ी, नरसिंहजी का मंदिर, बारा-सभा वगैरा देखे।

चर्खा। प्रजामण्डल के कार्यकर्ता तथा शहर के खास-खास लोग मिलने आये। उनमें देर तक चर्खा, खादी-प्रचार व प्रजामण्डल के सम्बन्ध में बातचीत।

... एक गांव में आग लग जाने से चमारों के बहुत-से घर जल [illegible]हां जाकर देखा। पचास रु० की सहायता दी।

[illegible]र नाम के जैन तीर्थ में गये। वहां का पूरा इतिहास समझा। भली प्रकार से देखा। मूर्ति जो जमीन में से अढ़ाई सौ वर्ष पहले [illegible] थी, वह तेजस्वी व सुन्दर है। यहां चमारों का ठीक हक्क है। [illegible]लाने में वे मदद करते हैं। इसलिए जहां से मूर्ति निकली थी, [illegible]ते चढ़ावा चढ़ता है, वह इन्हीं को मिलता है। रथ-यात्रा के समय

तीन रोज तक सब दर्शनों को जा सकते हैं। बाद में नहीं।
खादी प्रदर्शनी देखी।
नाजिमजी, हिण्डोन मिले।
हिण्डोन में रात को ६॥ से १०॥ बजे तक जाहिर सभा हुई। प्रजा-मण्डल के समझौते का खुलासा किया। १०॥। बजे मोटर से जयपुर रवाना।

२२-४-४०

रात को जयपुर से ४८ मील ६ फर्लांग दूर थे कि मोटर खराब हो गई। इसलिए रात में २ से ५॥ बजे तक वहीं एक छोटी-सी तिवारी में सोये। सुबह ५॥ बजे रवाना होकर जयपुर सात बजकर ५ मिनिट पर पहुंचे। रात को नींद की तकलीफ रही। चांदनी का आनन्द रहा। अभी तक खासगी पत्र वगैरा भी सब सेन्सर होकर आते हैं। बुरा मालूम दिया। महाराज सा० से मिलने का विचार किया। उन्होंने बुधवार ११ बजे का समय दिया। राजा ज्ञाननाथजी से पटरी बैठना मुश्किल है। मि० टेलर का व्यवहार भी बर्दाश्त करने लायक नहीं है। श्री कर्तारनाथ डी० आई० जी० का रुख पहिले तो बहुत ही नम्रता का रहा। बाद में टेलर से मिलने पर एक दम बदल गया।

जयपुर, २३-४-४०

रामेश्वरजी बधेरिया दिल्ली से आये। जो बातें उन्होंने मुंह-जबानी कही थीं वे ही लिखकर दीं। मातादीन अब कानूनी कार्यवाही हमलोगों की राय मुजब सच्चाई के साथ करने को तैयार हैं, कहा।
झुंझनू से दुर्गाप्रसाद कैया व सन्तलाल वकील आये। हड़ताल वगैरा इस समय न करने की राय दी।

२४-४-४०

रालालजी शास्त्री से देर तक बातचीत। उन्हे समझाया।
ाबनेर के डाक्टर से बातचीत। वर्धा के लिए।

ने दवाब मर्गिन पद पर नियुक्त किया।
श्री महाराज सा० जयपुर से मिलना, सुबह ११ बजे के बाद हुई। एप-
मिनिस्टर के बारे में, पुलिस का व्यवहार, ज्ञाननाथजी के प्रति ठीक नहीं
निकाला, जवाब दिलाई, मातादीन बगैरा पर मुकदमे, स्वामी जोधपुर,
महाराजाओं को जनता से बुलाना आदि विषयों पर खुलके मन के साथ
मैंने स्पष्ट तौर से कहे। महाराज सा० ने नोट कर लिये। मुझे ता० १
को दो बजे मिलने पर जवाब देने का कहा। राजा ज्ञाननाथजी के साथ
पटरी नहीं बैठती दिखाई देती, मैंने यह भी उनसे कह दिया।
चर्चा।
किशनगढ़, सूरजगढ़ ठाकुर रघुवीरसिंहजी, ए० डी० सी० व बंशीसिंहजी
व मौजा ठाकुर से देर तक बातचीत। विचार-विनिमय।
मातादीन का फोन दिल्ली से आया। प्रथम मजिस्ट्रेट को उन्होंने अपने
आने की सूचना दे दी। महाराज से हुई मुलाकात के बारे में व अन्य
बातचीत।

२९-४-४०

सुबह ५॥ बजे करीब हीरालालजी शास्त्री व रतन देवी आये। बातचीत,
प्रजामण्डल के सम्बन्ध में। इनका वर्तमान स्वभाव डेमोक्रेसी (लोकतंत्र)
के अनुकूल नहीं दिखाई देता। श्री मातादीन भगेरिया दिल्ली से आये।
मेरे पास ठहरे। स्नान, आदि थोड़ी बातचीत, भोजन वगैरा करने के
बाद उन्हें कोर्ट में मोटर द्वारा भेज दिया गया। वहां कोर्ट ने जमानत
(बेल) नामंजूर की। जेल में हथकड़ी डालकर भेजा गया। मातादीन
काफी उत्साहित दीख रहे थे।
जोधपुर के लोग आये। स्थिति कही।
उदयपुर से भूरेलाल बया आया। वहां जाने के बारे में विचार-विनिमय।
हरिभाऊजी, त्रिलोकचन्दजी, देशपाण्डे, बालकृष्ण से अजमेर-स्थिति पर
विचार।
हीरालालजी, कपूरचन्दजी, होम मिनिस्टर के पत्र का जवाब तैयार।

तक स्टेशन चौमू जंक्शन आये, मिले ।
काशी से १-१५ की ट्रेन में अ० म० देशपाण्डे के साथ रवाना । धूप थी । करीब चार बजे चौमू स्टेशन पहुंचे । रास्ते में मोरेजा कल्याणसिंहजी ठाकुर का गांव आया । चौमू शहर से स्टेशन तक मोरेजा के साहब व ठाकुरों से रास्ते में बातचीत, स्थिति समझी ।
सीकर नौ बजे करीब पहुंचना । मित्र लोग स्टेशन आये । थोड़ी बरसात मेंह । हँसराजजी, गुलाब से मिलकर खुशी । सीकरवासियों से बातचीत ।

सीकर, २८-४-४०

राजू, रामेश्वरजी, अयोनियाजी, गुलाबबाई से थोड़ी देर बातचीत, नर्मदा के व वर्धा जाने के बारे में ।
जकात प्रश्न (समस्या) को लेकर सीकर लक्ष्मणगढ़ के लोग मिले । उन्हें खादी पहनने व शक्कर की जगह गुड़ का व्यवहार करने की राय दी ।
सीकर की जकात का मैं समर्थन नहीं कर सकता । एक रोज में एक ही जकात होनी चाहिए । लोगों में सच्ची चाह व लगन हो तो जकात कमेटी की रिपोर्ट मंजूर कराने पर जोर दिया जा सकता है । प्रजामंडल ने ठराव (प्रस्ताव) किया है । कोशिश हो रही है । महाराज साहब से बातचीत की है । रावराजा के बारे में यह कि वह निश्चय करें और थोड़ी बहादुरी से जोखम उठाने को तैयार हों तो सीकर आ सकते हैं ।
झुंझुनूं से नरोत्तम, विद्याधर वकील आये । जकात के मामले में उनसे भी देर तक बातचीत । विद्याधर अगर पूरा समय दे तो ७५) मासिक अलाउन्स की व्यवस्था हो सकती है, कहा ।

सीकर, काशी का बास, खुड, २९-४-४०

खुड में ठाकुर मंगलसिंहजी से करीब छ घंटे बातचीत हुई । बहुत ही सज्जन पुरुष हैं । हिम्मत वाले व सिद्धान्त के मालूम दिये । इन की मदद

में रचनात्मक कार्य, खासकर खादी प्रचार में ठीक मदद मिलने की आशा हुई। मित्रता के योग्य हैं, मिलकर अच्छा लगा। इन्हें प्रजामण्डल में शरीक होकर काम करने में अभी थोड़ी हिचक है। रचनात्मक कार्य या ब्रिटिश भारत में काम करने को तैयार हैं। चर्खा कातना।
मूंडवाड़ा कुंआ देखा। काशी का बास में ठहरना। पाठशाला देखी। सीकर रावराजाजी ओर से, भंवरलाल, शिवप्रसाद मिले। स्थिति समझी। जकात के हालात मालूम हुए।

सीकर-जयपुर, ३०-४-४०

श्री सीताराम पोद्दार फतेहपुर वाले, द्वारकादासजी लक्ष्मणगढ़ वाले आये। जकात वगैरा की बातचीत।
सीकर से करीब ६॥। बजे सुबह अड्डे से जयपुर रवाना।
गोविन्दगढ़ स्टेशन पर देशपाण्डे वगैरा आये थे।
जयपुर के न्यू होटल में हंसराज, रामेश्वरजी, भगेरिया, मदन कोठारी से बातचीत।
प्राइम मिनिस्टर का जवाब देखा। मदन कोठारी ने मूल नकल भेज दी, बुरा लगा।
हीरालालजी पाटणी से बातचीत, विचार-विनिमय।
टीकारामजी पालीवाल से बातें। उन्होंने जलसे के बाद पूरा समय देकर मंत्रियों में काम करने का निश्चय कर लिया, जानकर सन्तोष हुआ।
रामनारायण चौधरी व चन्द्रभान शर्मा आये। रामनारायणजी देर तक कहते रहे कि पहली घटनाओं को भूलकर मुझे फिर मौका दें। उदारता दिखायें, आदि। मैंने कहा किशोरलाल भाई व जाजूजी के सामने बातचीत कर देखेंगे। अभी तो मन नहीं हो रहा।
मिश्रजी, शम्भूनाथजी, हरिश्चन्द्रजी आदि से देर तक बातचीत। सरकारी सरक्यूलर की चर्चा।

जयपुर, १-५-४०

हीरालालजी शास्त्री से प्रजामण्डल के बारे में बातचीत। राजा ज्ञाननाथ

की विवेकन्दी व राजनैतिक जीवन को दबाने के रास्ते पर विचार-विनिमय। प्रजामण्डल की भावी वर्किंग कमेटी और संघटना (संगठन) में खेद। महाराज साहब को मेमोरेण्डम नोट्स आदि देना।
कर्पूरचन्दजी या डा० ताराचन्द झुनझुनवाला से बातचीत। डा० ताराचन्दजी ने राजा ज्ञाननाथ के व्यवहार का पूरा वर्णन किया।
श्री देशपाण्डे, रामेश्वरजी, रतन, मूलचन्दजी से देर तक बातचीत। रतन लड़का ठीक निकलता मालूम हुआ।
वैदिक पाठशाला—स्वामी मुनीश्वरानन्दजी हरिजन का निरीक्षण किया। सेन्ट्रल जेल में मातादीन भगेरिया से मिले। उन्हें हिम्मत दिलायी। साथ में हीरालालजी, पाटणीजी थे।

२-५-४०

महाराज साहब से मिले, दोपहर, १२॥ से १॥। बजे तक। नीचे लिखे प्रश्न-उत्तर के नोट्स लिखकर दिये। उन्होंने पढ़ लिये। इन पर ठीक खुलासा किया गया।

प्रश्न : १. पत्र सेन्सर अभी तक होते हैं। उत्तर—आज से नहीं होवेंगे। रेजीडेन्ट करते हैं, ऐसा प्राइम मिनिस्टर ने कहा। वह उनसे बात कर लेंगे।

२. प्राइम मिनिस्टर से विवाद चल रहा है। उत्तर—आप निपट लें।

३. झूठे मुकदमे मातादीन वगैरा पर। उत्तर—वह मालूम करेंगे। प्राइम मिनिस्टर ने कहा है, कानूनी कार्यवाही होनी चाहिए।

४. प्राइम मिनिस्टर की दमननीति के कई उदाहरण देकर कहा। उत्तर—नोट कर लिया उन्हें कहेंगे।

५. जकात रिपोर्ट मंजूर होना जरूरी है—नोट किया, सहानुभूति दिखाई।

६. खादी कार्य में सहायता, खरीदना। उत्तर—प्राइम मिनिस्टर

से पास हो गई है। सब डिपार्टमेंटों में सूचना भेज दी जावेगी। खादी खरीदी जावेगी। जयपुर की बनी हुई महंगी होगी, तो भी।

७. जोधपुर समझौता। उत्तर—अभी जवाब नहीं आया।

८. महाराजाजी को बुलाना है। उत्तर—स्टेट गेस्ट बनाते हैं पोलिटिकल डिपार्टमेंट को आपत्ति है।

९. रावराजाजी को नौकर भेजने के बारे में। उत्तर—नोट कर लिया है। रेजीडेन्ट से बात करके जवाब भेजेंगे।

१०. ठिकानों की ज्यादती

नोट—डेरे पर मित्रों से बातचीत, चर्चा।

३-५-४०

गुलाब गोमा को आज पुत्र हुआ। शिवप्रसादजी सेठान और श्यामा से राजनैतिक स्थिति पर विचार-विनिमय।

मेयो अस्पताल में डा० विलियमसन ने तपासा। कान धोया। ठीक बताया।

राजा ज्ञाननाथजी और रेजीडेन्ट के पत्रों के जवाब भेजे।

चर्चा, पत्र व्यवहार, मित्र लोगों से बातचीत।

श्री मातादीन भगेरिया की जमानत की व्यवस्था। जमानत चीफ कोर्ट ने मंजूर की।

श्री कु० पृथ्वीसिंहजी मिलटरी सेक्रेटरी का फोन आया। उन्होंने कहा, श्री महाराज साहब ने कहलाया है कि अभी तक आपको जवाब देने की बातों का फैसला नहीं हुआ है। इसलिये कल १२ बजे मिलने की तकलीफ न करें। मैंने कहला दिया, पर मैं कल शाम को जाने वाला हूं।

४-५-४०

हीरालालजी शास्त्री, कर्पूरचन्द्रजी, व हंसराय से भाषण के बारे में

विचार-विनिमय, नोट्स तैयार।
रतनजी से वनस्थली व प्रजामण्डल के जलसा और स्वास्थ्य वगैरा के बारे में बातें।
मोहनमल अग्रवाल, शिवबिहारी तिवारी प्राइम मिनिस्टर से कम्पनी एक्ट जल्दी लागू करने के बारे में मिले। दो घण्टे बाद मुलाकात हुई। सुना है, कम्पनी एक्ट जल्दी अमल में आ जावेगा।
रेजीडेन्ट के पत्र का जवाब आया। उसकी नकल महाराज साहब की ओर से भेज दी। पत्र के साथ।
राजा ज्ञाननाथ का पत्र आया। उन्हें भी जवाब भेज दिया।
मातादीन भगेरिया के केस के बारे में बातचीत, व्यवस्था।
शाम की पैसेंजर से दिल्ली रवाना।

दिल्ली, ५-५-४०

दिल्ली—गाडोदियाजी के यहां ठहरना।
श्री सुराणाजी, ज्वालाप्रसादजी कानोडिया मिलने आये।
सुराणाजी ने जोधपुर की पूरी हालत समझाई। वह जयपुर जैसा फैसला करने की कोशिश कर रहे हैं।
देवदास भाई से मिलना। जयपुर की परिस्थिति उन्हें सविस्तार समझाना।
सत्यदेवजी से मिलना। आंख का ऑपरेशन हुआ था, अब ठीक है।
गाडोदियाजी से बातचीत। भोजन, चर्चा।
रात के फन्टियर मेल से लाहौर रवाना।

लाहौर, ६-५-४०

लाहौर पहुंचकर, केशवदेवजी, रामजीभाई, जीवनलाल, कमल, डा० गोपीचन्द वगैरा से मिले। स्नान-नाश्ता करके मुकन्द फैक्टरी घूमकर देखी। मुकन्द आयरन के बोर्ड की सभा हुई। ठीक काम हुआ। वेदप्रकाश ने मैनेजिंग डायरेक्टर, लाहौर ब्राच के पद से त्यागपत्र दिया।

उसे मंजूर किया। उससे बातचीत, उसके सन्तोष मुजब। जनार्दन शर्मा
चन्द्रमुखी व जनार्दन की मां से बातचीत। आखिरी फैसला हुआ कि इन्हें बम्बई या लाहौर ही रहना चाहिए।

शाम को शिवराजजी ने अपने बैंक सेफ हाउस व पर्स का कारखाना वगैरा दिखाया।

डा० गोपीचन्द के साथ खादी भंडार व लाल सेवारामजी के घर होते गये। मुकुन्द आयरन वर्क्स के बारे में विचार-विनिमय।

फ्रन्टिअर मेल से बम्बई रवाना होना।

दिल्ली, रेलवे, ७-५-४०

दिल्ली में देवदास गांधी, वियोगी हरिजी, लक्ष्मीनारायणजी, सरस्वती-बाई, शांति वगैरा स्टेशन पर आये।

पार्वती से उसके घर व मन की स्थिति पूरी तौर से समझी। उसे धीरज बंधाया, उचित सलाह दी। इसके विचार जानकर एक प्रकार से सन्तोष व खुशी हुई।

श्री रूपनारायण सॉलिसिटर भी रेल में साथ थे। खादी-प्रचार, हाथ कागज, रेलवे कनेक्शन टिकट वगैरा के बारे में उनसे बातचीत होती रही। श्री आनन्दीलाल पोद्दार का देहान्त हो गया। रामगढ़ से तार आया था। रतलाम स्टेशन पर वहां की राजनैतिक स्थिति समझी।

दादर-बम्बई, ८-५-४०

रामदेव पोद्दार से मिलना। आनन्दीलालजी की मृत्यु सोमवार को हुई थी।
चिरंजीलाल लोयलका व घनश्यामजी लोयलका से मिलना। रामचन्द्रजी लोयलका का नौ रोज पहिले देहान्त हो गया।
सादुल्ला खां को चोट आई, उसे देखना। सफिया भी थी।
सरदार वल्लभ भाई व प० जवाहरलालजी से मिलना, जयपुर आदि बातें।
रामेश्वरजी बिड़ला व शांतिप्रसाद जैन से व्यापार-सम्बन्धित बातचीत।
अहमद फजल करीम भाई से बातचीत।
बृजलाल बियाणी परिवार सहित आये। कामर्स कालेज, वर्धा के बारे में बातचीत।

जुहू, बम्बई, ६-५-४०

शांतिप्रसाद जैन व मूलराज कृष्णदास से डालमिया सीमेन्ट व ए. सी. सी. के बारे में स्थिति समझी। मूलजी जेठा के कृष्णदास भाई रिटायर्ड होना चाहते हैं। जीन प्रेस, मिल, जलगांव, जुपिटर बीमा कम्पनी वगैरा के बारे में स्थिति जानी।
बच्चों के साथ 'पंचम' (ताशों का एक खेल) खेला।
आप्पा साहेब औंध वाले से बहुत देर तक बातचीत। वहां की स्थिति पोलिटिकल डिपार्टमेन्ट का रुख, वाइसराय से जो बात हुई, वह सब समझी। अक्का आदि से परिचय।
जानकीदेवी के साथ घूमना। बातचीत। स्वास्थ्य ठीक हो गया, जानकर खुशी हुई।
श्री काका साहब कालेलकर व बाल चन्द मिलने आये। महिला आश्रम, हिन्दी सम्मेलन पूना, वर्धा, रेहाना, सरोज आदि बातचीत।

१०-५-४०

सुबह घूमते समय बालचन्द हीराचन्द से बहुत देर तक डालमिया सीमेन्ट व ए. सी. सी. के बारे में बातचीत होती रही। वह सर मोदी से बात

करके मुझसे सोमवार को बात करेंगे।
समुद्र स्नान, रमा जैन व लीलावती मुंशी मिलने आई।
रामेश्वरदासजी बिड़ला, शान्ताबाई, केशर, वगैरा से मिलकर नागपु
मेल से सेकण्ड में वर्धा रवाना।
लड़ाई की खबरें। जर्मनी का जोर बढ़ता हुआ मालूम दे रहा है
लोगों में घबराहट, विचार-विनिमय।

वर्धा, ११-५-४०

घनश्यामदास बिड़ला से मिलना। जयपुर के कागजात, स्थिति सम
झना।
सेवाग्राम—बापू से भोजन करते समय जयपुर की सारी स्थिति समझी
आखिर घनश्यामदासजी की सलाह से डा० कैलाशनाथ काटजू
रामेश्वरी नेहरू को बापू ने तार भेजा। महादेव भाई को भेजने की
बातचीत। वहीं देर तक रहना, आराम, बातचीत। शाम को वर्धा वापस
आये।
गंगाबिसन, राधाकिसन, चिरंजीलाल वगैरा से बातचीत।
श्री मथुरादासजी मोहता से कॉमर्स कालेज के बारे में देर तक बात
चीत। बृजलालजी बियाणी मे दुहरे बर्ताव की आदत देख थोड़ा दुःख
लगा। श्रीमन के बारे में इन पर विश्वास नहीं रखा जा सकता।
जाजूजी, सत्यप्रभा से बातें।

वर्धा रेलवे, १२-५-४०

बापू से सेवाग्राम जाकर मिलकर आना। जयपुर के लिए सन्देश लाना।
डा० काटजू का शाम को जयपुर प्रदर्शनी खोलने का तार आया।
शिवराजजी म्यु० बो० पार्टी झगड़े, पूनमचन्दजी रांका ना० प्रा० कमेटी
की स्थिति। जाजूजी, राधाकिसन, खादी कार्य आगाकर राजपूताना की
स्थिति समझना। नागपुर मेल से बम्बई रवाना। घनश्यामदासजी
बिड़ला साथ होने के कारण फर्स्ट क्लास में बैठना। उनसे देर तक
बातचीत। जयपुर स्थिति। राजनीति, हाल समझौता, मध्य।

दादर-जुहू, १३-५-४०

घनश्यामदास से व्यापारिक नीतिमत्ता आदि बातचीत।

दादर रामेश्वरदासजी, सरदार वल्लभभाई वगैरा स्टेशन आये, घनश्यामदास उनके साथ बम्बई गये। मैं जुहू आया। गाड़ी लेट थी। शाम को ५॥ से ६॥ तक श्री चिमनाबाई सा० गायकवाड़ से बातचीत। जयपुर, बड़ौदा वगैरा के सम्बन्ध में। बाई बहुत होशियार, पहुंची हुई मालूम दी। घनश्यामदास, रामेश्वरदास बिड़ला व पं० जवाहरलाल से मिलना। बम्बई में मृदुला साराभाई, गौतम, रौनकलाल नीमड़ीवाले वगैरा से बातचीत।

जुहू-बम्बई, १४-५-४०

घूमते समय बालचन्द हीराचन्द से डालमिया सीमेन्ट व ए०सी०सी० सीमेन्ट के एकीकरण के बारे में बातचीत। सर मोदी से जो बातें हुई, उन्होंने वे कहीं। सर मोदी से भी बात हुई। शाम को बालचन्द हीराचन्द भोजन करने आये। शान्तिप्रसाद जैन भी थे। बाद में सर मोदी के यहां जाना। उनकी मंशा पूरी तौर से समझ लेना।

शान्तिप्रसाद जैन से बातचीत। उसे साफ कहा कि तुम फोन से रामकिसनजी को पूछ लो कि अगर वह मुझे इस मामले में डालना चाहते हो तो जबतक मैं साफ तौर से न कहूं तबतक इस बारे में, याने, समझौते के बारे में, वह दूसरे किसी से भी बिलकुल बातचीत न करें और मैं जो कुछ करूं, उसे स्वीकार करें। श्री धर्मसीभाई से भी पूछने को कहा। मूलजी जेठा के प्रस्ताव के बारे में भी बातचीत।

१५-५-४०

घूमते समय बालचन्द हीराचन्द व सर होमी मोदी से बातचीत हुई। मोदी से गांधीजी का व मेरा सम्बन्ध कैसे बढ़ा, उस बारे में भी बातें। बालचन्द की राय थी कि डालमिया को अपनी सी० फैक्टरी लागत कीमत से एसोसियेटेड सीमेंट को दे देनी चाहिए, बैलेंसशीट के हिसाब से। पचास लाख रुपये पगड़ी वे अपने इसे दिला सकेंगे। एसोसियेटेड

सीमेंट के शेयर १०० के भाव से दिला सकेंगे। इसके सिवाय दूसरी टर्म होना असम्भव है। मैंने उससे कहा, आपकी राय समझी, पर यह सम्भव नहीं मालूम देता। बालचन्द ने यह भी कहा, यह काम हो जायेगा तो तुम दोनों से दो-दो लाख (कुल चार लाख) कांग्रेस, यानें सार्वजनिक काम, के लिए से लेना, कोई अड़चन नहीं आवेगी, इत्यादि। शान्तिप्रसाद जैन से कहा, उसने डालमिया नगर फोन किया। उसने कहा, यह संभव नहीं मालूम होता है। मैंने सब बातें उसे समझाकर कह दी हैं। सौदा तय करना हो तो इसमें और भी कम-ज्यादा हो सकेगा इसी लाइन पर। आफिस में भी जाना।
सरदार से मिलना, बम्बई खादी भण्डार व मथुरादास त्रिकमजी का आफिस देखना।

१६-५-४०

शान्तिप्रसाद जैन व मूलराज कृष्णदास से देर तक डालमिया सीमेंट व एसोसियेटेड सीमेंट के बारे में बातचीत।
केशवदेवजी नेवटिया व जानकी देवी के साथ डा० लेमली (का इलाज करने वाले) के पास गये। उसने कान साफ किया, घं दवा लगाई। चक्कर आया। वहीं नाड़ी (नब्ज) गिर गई। उ टेबल पर सुलाया। पानी पिलाया। थोड़ी देर बाद ठीक मालूम दि बिड़ला हाउस में घनश्यामदासजी, रामेश्वरदास से जयपुर के बा बातचीत।
घनश्यामदास को भाषण पसन्द आया। उसी मुताबिक छापने को दिय हिन्दुस्थान शुगर मिल्स के रामेश्वरदासजी चेयरमैन बनेंगे। मुझे मु कर देंगे। मिल के देना-लेना आदि का जो भी काम होगा वह सा खुली तौर से कर सकें, छिपाकर या खोटा जमा-खर्च नहीं करना प ऐसा करने का निश्चय हुआ।
... ने वनस्थली संस्था को १ मई १९४० से ३१ अप्रैल १९४ (दो वर्ष) तक सौ रुपया मासिक देने को कहा। रामगढ़ के खादी

कार्य में दस हजार रुपया रोकड़ में लगाने की बात भी कही।
भाग्यवती दानी व उसके गुरु से मिलना।

१७-५-४०

मूलजी कृष्णदास आया। डालमिया व एसोसियेटेड के बारे में बातचीत।
धर्मसी खटाऊ से देर तक टेलीफोन से बातचीत होती रही। वह आज ऊटी जा रहे हैं। आदमी तो सज्जन मालूम देते हैं।
बापू व सरोजिनी नायडू को तार भेजे।
किशोरलाल भाई व नाना भाई मश्रूवाले से मिलना, देर तक बातचीत।
श्रीनिवासजी बजाज (खेमराजजी के लड़के) की मृत्यु हो गई। बुरा मालूम हुआ। दुःख भी हुआ।
रामेश्वरदासजी बिड़ला, घनश्यामदासजी वगैरा आये। अपने यहां के बाजरे के सिट्टे व भोजन किया। बातचीत। जयपुर महाराज व बड़ौदा महारानी से मिले, वह सब कहा।
शान्तिप्रसाद व रमा जैन आये।

१८-५-४०

सर मोदी से सुबह घूमते समय बातचीत।
डा० लेमली ने दोनों कान देखे। बायां कान धोया। दवा लगाई। चक्कर भी मालूम हुआ व दर्द भी। फिर सोमवार को बुलाया।
डा० जस्सावाला नेचर क्योर में ऐनिमा, मसाज, टब बाथ, गोड़े को बिजली का ट्रीटमेंट। ब्लड प्रेशर १३०-८५, वजन १८५।।, भोजन में आज आम, दूध, रस ही लिये, आज एकादशी के कारण।
शान्ताबाई व मित्रों से मिलकर जुहू आये। आराम। चर्चा।
जयपुर महाराज की ओर से रा०कु० पृथ्वीसिंहजी का फोन आया। महाराज कल बंगलोर जायेंगे। समय का अभाव है।
केशवदेवजी व मूलजी से बातचीत।
सुरेश बनर्जी व डा० दास मिलने आये। सुभाष बाबू को फिर से साथ लेने के बारे में उन्हें थोड़ा दुःख व पश्चाताप है, इसी बारे में उन्होंने

देर तक बात की। सर चुनीलाल मेहता व उनकी स्त्री व किशोरलाल-भाई मिलने आये। बातचीत। टेलीफोन से मालूम हुआ, रामेश्वरदास-जी बिड़ला के लड़के माधो की स्त्री कलकत्ता में जलकर मर गई। चोट लगी, दुःख हुआ। विचार रहा।

१६-५-४०

जल्दी तैयार होकर बिड़लों के यहा बैठने जाना। चि० माधो बिड़ला की स्त्री सुमित्रा कलकत्ता में जल मरी थी। यहां श्री निवासजी बजाज चल बसे। इसलिए रंगनाथजी बजाज से मिले। रूंगटों के यहां बृजलाल से मिलना। उनकी दादी चली गई।

सरदार वल्लभ भाई, मणीलाल, डाह्याभाई, बाबला आये। भोजन, विनोद, देर तक।

केशवदेवजी फतेहचन्द से इण्डिया बेंक के प्रस्ताव के बारे में विचार विनिमय।

श्री काशीनाथजी से महिला आश्रम के बारे में देर तक बातचीत की। समझाया।

महिला सेवा मण्डल की कार्यकारिणी की सभा हुई। सुव्रता बाई, काका साहब, शान्ता, मदालसा, काशीनाथजी, पापा, श्रीमन भी थे। बैठक रात को नौ बजे तक चलती रही।

२०-५-४०

घूमते वक्त जहांगीर टाटा की 'झोपड़ी' देखी। वह नहीं मिले। सर व लेडी मोदी मिले। बड़ौदा प्रजामण्डल, मगनभाई पटेल के बारे में बातचीत। डा० लेमली ने दोनों कान साफ किये। तीन बार के ३० रुपये फीस ली। मैंने उन्हें कहा, हिन्दुस्थान के रचनात्मक कार्य में आप लोगों को महात्माजी की सहायता करनी चाहिए।

सरदार पटेल के साथ भोजन, बातचीत। बड़ौदा प्रजामण्डल चुनाव, मगनभाई पटेल को वोट, खादी कार्य के लिए चन्दा, टाटा, मुन्नाभाई वगैरा। बिड़लों के यहां। माटुंगा में पार्वतीबाई डिडवानियां के दुःख

की बातें सुनी। जुहू में जर्मन रेडियो। चर्चा।

२१-५-४०

बच्छराज कम्पनी, बच्छराज फैक्टरी के काम और ब्याज के बारे में विचार-विनिमय देर तक होता रहा।

मूलराज कृष्णदास, लेडी ठाकरसी वगैरा मिलने आये। मूलराज से व्यापारी बातचीत।

बच्छराज फैक्टरी व बच्छराज कपनी के बोर्ड की सभा बम्बई आफिस में हुई। ठीक स्थिति समझी।

वर्धा से टेलीफोन। बिजली का कारखाना लेने के बारे में मथुराबिसन से कमल ने बात की।

मथुरादास त्रिकमजी के विवाह में जाना।

जुहू—सर मोदी, लेडी मोदी, श्री वकील बैरिस्टर मोदी के साढू उनकी स्त्री व लड़की भोजन को आये। बातचीत सीमेन्ट की, मूलराज का पत्र उन्हें दिया।

२२-५-४०

जानकी देवी का मन थोड़ा अशान्त व चिन्तित था, इसलिए मेरे मन में भी थोड़ा विचार रहा।

जमनालाल सन्स—कमलनयन के खर्च आदि के बारे में विचार-विनिमय। जमनालाल सन्स में बीस हजार अन्दाज साल की पैदा बढ़ने, या खर्च कम करने की आवश्यकता। अब फिर से मुझे इस काम को विशेष ख्याल से देखना होगा। जमनालाल सन्स में पचास हजार करीब की नेट आमदनी आज है। जमनालाल सन्स व कमल ने सट्टा बिलकुल नहीं करने का निश्चय किया हुआ है। जो जूनी साढ़े पाच सौ गाठ बाज में पोते हैं, उसे फतेचन्द ठीक समझें, वैसा बराबर कर दें।

बिड़ला ट्रस्ट की सभा-उसमें जयपुर सरकार को भेजने का मुख्य प्रस्ताव स्वीकृत हुआ। मु० घनश्यामदासजी, पाण्डे, रामेश्वरजी थे। मुझे

अभी ट्रस्ट में रहना होगा।
हिन्दुस्थान हाउसिंग बोर्ड की मीटिंग हुई।
जुहू में श्री राजकुमारजी से विमला के सम्बन्ध की बातचीत।
फन्टियर से जयपुर।

दोहद-जयपुर, २३-५-४०

सुबह जल्दी उठकर जहां फन्टियर मेल की दुर्घटना हुई, वह जगह देखी
एअर डब्बा व इन्जिन की हालत बुरी थी।
जयपुर का समाचार-साहित्य पढ़ा।
रतलाम में दूध, फल, घर की पूड़ी आदि का भोजन, आराम।
रूपनारायण ऑडिटर से बातें। खादी के नमूने दिखाये।
सवाई माधोपुर में आराम, नाश्ता, वेटिंग रूम में।
सवाई माधोपुर से जयपुर तक, थर्ड में। जानकी देवी ने अपनी राम
कहानी व अपनी बीमारी का इलाज समझाकर बतलाया, समझ
आया।
जयपुर में स्टेशन पर कई लोग आये थे। स्वागत।

जयपुर, २४-५-४०

डा० काटजू सुबह की गाड़ी से आये। जल्दी तैयार।
आज जुलूस निकला, सुबह ७ से ६॥ बजे तक। डा० काटजू व मैं एक
ही सगड़ में बैठे। जुलूस ठीक था।
काटजू से मातादीन केस व अजमेर केस की बातें।
प्रजामण्डल वर्किंग कमेटी, १२ से ३ बजे तक हुई।
चर्चा।
प्रजामण्डल जनरल कमेटी व सबजेक्ट कमेटी की बैठकें दोपहर बाद
३ से ६ बजे तक हुईं।
खादी व ग्राम उद्योग प्रदर्शनी डा० काटजू ने खोली। ७॥ से १०॥ बजे
रात तक वह खुली रही।
डा० काटजू का भाषण मननीय हुआ।

२५-५-४०

लक्ष्मणप्रसाद पोद्दार व सीतारामजी सेकसरिया कलकत्ता से आये।
हीरालालजी शास्त्री से नई वर्किंग कमेटी के बारे में बातचीत।
डा० काटजू, शान्ता वगैरा जेल देखने गये।
प्रजामण्डल वर्किंग कमेटी की दोपहर १ से ३॥, और विषय निर्वाचिनी की ३॥ से ६ बजे तक बैठकें। चर्चा।
प्रजामण्डल का वार्षिक अधिवेशन ८ से ११ तक हुआ।
गीजगढ़ के ठाकुर साहब भी आये। मेरे भाषण तक बैठे। आज का अधिवेशन ठीक रहा।

२६-५-४०

डा० काटजू व प्रभुदयालजी जयपुर बार रूम के सदस्यों के निमंत्रण से वहाँ गये। वहाँ उन्होंने कहा, प्रजामण्डल की मदद करना, और खादी ग्रामोद्योग की चर्चा की।
प्रजामण्डल वर्किंग कमेटी ६ से ११। तक हुई। बाद में जनरल कमेटी का कार्य दोपहर १॥ बजे से शुरू हुआ। मैं व डा० काटजू ४ बजे के करीब गये। ६ बजे तक विषय निर्वाचिनी का कार्य पूरा हुआ। रात का सेशन ८ बजे से शुरू हुआ।
डा० काटजू का उत्तरदायी राज्य-तन्त्र के बारे में सार-गभीर भाषण हुआ। प्रस्ताव पास हुए। सुन्दर 'डिबेट' हुआ। उत्तरदायी शासन का प्रस्ताव ठीक तौर से पास हुआ। रात को १॥ बजे तक अधिवेशन सन्तोषकारक तौर से पूरा हुआ।

२७-५-४०

हीरालालजी शास्त्री से नई वर्किंग कमेटी की चर्चा।
डा० काटजू ने वर्कर्स सभा में ९। से ११। तक बहुत ही सुन्दर तरह से प्रश्न-उत्तर व समझाने का कार्य किया।
डा० काटजू के साथ मातादीन भगेरिया के मामले में मिश्र व शम्भूप्रसादजी

वकील के सामने देर तक विचार-विनिमय, बातचीत होती रही।
उदयपुर के बलवंतसिंहजी आदि से वहां की स्थिति समझी।
बच्छराज कम्पनी से केवल एक साल के लिए पचास मासिक की सहायता कार्यकर्ताओं के लिए देने का कहा।
हरिभाऊजी, भार्गव, गोकुलदासजी से अजमेर के बारे में बातचीत।
शाम को डा० काटजू से राजनैतिक चर्चा। उनके विचार से मिनिस्ट्री यदि बन सके तो कोलीशन मिनिस्ट्री स्वीकार करना चाहिए।
वर्तमान हालत के लिए डिफेन्स की व्यवस्था।
स्त्रियों की सभा। जानकीदेवी सभानेत्री। वनस्थली बालिकाओं के खेल-कूद।

२८-५-४०

सीतारामजी सेकसरिया, देशपाण्डे, रामेश्वरजी, हरिभाऊजी से देर तक प्रजामण्डल और खादी कार्य के बारे में बातचीत।
हीरालालजी शास्त्री, कपूरचन्द्र, टीकारामजी से नई वर्किंग कमेटी के बारे में। नई वर्किंग कमेटी इस तरह बनाई गई :—
जमनालाल स०, हरिश्चन्द्र शर्मा, उ०स० चिरंजीलाल मिश्रा, हीरालाल शास्त्री मुख्यमंत्री, कपूरचन्द्रजी स०मं० टीकारामजी, हरलालसिंहजी, हंस डी० राय, मुरादअली, देशपाण्डे, लादूराम जोशी (महादेव लोलका), सीतारामजी सेकसरिया, श्रीनिवासजी बगड़का, पार्वती देवी डिडवानिया।
स्वामी मुनीश्वरानन्द हरिजन से बातचीत।
प्रजामण्डल वर्किंग कमेटी का कार्य दोपहर बाद ३ से ६ बजे रात तक होता रहा। आज मन में जो थोड़ा दर्द व दुःख मेरा था वह भी चिरंजीलाल मिश्र के प्रश्न पर कहना पड़ा। एक तरह से तो ठीक हुआ, परन्तु समाधान नहीं मालूम हुआ।
खादी व ग्राम उद्योग प्रदर्शनी देखने गये। १०॥ बजे रात तक देखी।

प्रदर्शनी में घाटा कुल हजार-बारह सौ रु० का रहेगा, मालूम हुआ। जयपुर की जनता ने इसका पूरा उपयोग नहीं किया।

जयपुर, सवाई माधोपुर, रतलाम, ३०-५-४०

मियां अब्दुल गफ्फारखां व अन्य मित्रों से बातचीत।
दोपहर की गाड़ी से फर्स्ट में सवाई माधोपुर होते हुए बम्बई के लिए रवाना।

जुहू, बम्बई, १-६-४०

घूमना। सर होमी मोदी से बातचीत देर तक।
डा० पुरुषोत्तम पटेल मर गये। उनकी स्त्री कुसुम बहन से मिलना।
सरदार पटेल से मिलना। बातचीत। बड़ौदा प्रजामण्डल के बारे में।
बड़ौदा राजमाता चिमनाबाई से बहुत देर तक बड़ौदा स्थिति पर बातचीत, विचार-विनिमय।

२-६-४०

सरदार वल्लभभाई व सर होमी मोदी दोपहर बाद २॥ से ४ बजे तक बातचीत; राजनैतिक स्थिति, बड़ौदा प्रजामण्डल, खादी सहायता, ओरियण्ट क० से भी, सीमेन्ट फैसला आदि। चाय।
सरदार वल्लभभाई के साथ चिमनाबाई सा० गायकवाड़ से ४ से ५ बजे तक बातचीत, खुलासा।
सरदार के साथ कांदीवली व्यायामशाला का उद्घाटन।

३-६-४०

जल्दी तैयार होकर बम्बई जाना।
बिड़ला हाउस में भोजन—रामेश्वरजी, घनश्यामजी से माधो की स्त्री सुमित्रा के स्मारक, ज्ञान मंदिर, खादी आदि के बारे में बातचीत।

४-६-४०

जल्दी तैयार होकर बम्बई जाना।

विट्ठलदास जेराजजी से बातचीत। खादी प्रचार।
काका साहब के साथ वहीं खानपान।
आज फ्रांस मे पेरिस पर जर्मनी के गोले पड़ने के कारण व बालकट कम्पनी की कमजोर पड़ने की खबर बाजार मे 'पैनिक' (सनसनी)।

५-६-४०

दामोदर के साथ किशोरलाल भाई मश्रूवाला से मिलना। बापू के उपवास की बात उन्होंने कही। राधा बहन का पत्र किसी ने फाड़कर फेंक दिया, फाउन्टेनपेन भी। गांधी सेवा संघ वगैरा की चर्चा।

६-६-४०

केशवदेवजी, रामेश्वर, श्रीगोपाल, कमलनयन से शुगर मिल एजेन्सी के बारे में देर तक बातचीत।
हिन्दुस्थान शुगर मिल के बोर्ड की मीटिंग में डायरेक्टरों में से व चेयरमैन पद से मेरा त्यागपत्र आज कई बार की कोशिश के बाद स्वीकार हुआ। रामेश्वरदासजी चेयरमैन हुए।
बम्बई हिन्दी प्रचार सभा ने भी मेरा सभापति पद से त्यागपत्र स्वीकार कर लिया। मन हलका हुआ।
वालचन्द हीराचन्द के यहां भोजन। बाद मे सर मणीलाल नानावटी का 'ज्ञानदेव' (हिन्दी नाटक) देखा। ठीक था।

७-६-४०

रात को जानकी देवी 'ज्ञानदेव' देखने के बाद उदास व रोती रही। उसके पास बैठना। मन मे दुःख तो खूब हुआ। उपाय कोई नहीं सूझा। इस प्रकार की अशान्त स्थिति के कारण जिंदगी बहुत ही निराश, दुःखी व विचारणीय मालूम देने लगी। कई तरह के विचार-तरंग, कल्पना आती रही। सुबह कमल, राम, सावित्री, जानकी के साथ देर तक विचार-विनिमय। कोई रास्ता साफ दिखाई नहीं दिया। आज शाम तक मन चिन्तित व उदासीन परेशान रहा।
औंध के राजा सा० अप्पा व अक्का अपनी दूसरी लड़की के साथ आये।

भोजन साथ ही किया। देर तक उनसे बातचीत हुई।
बाद में आबिदअली, केशवदेवजी के साथ खेलना, मन ठीक हुआ।

८-६-४०

सुबह घूमते समय बालचन्द हीराचन्द व मणीलाल नाणावटी से बातें।
डा० नेमली ने मुझे व मदालसा को देखा।
शिकागो कम्पनी के मोटवाणी के यहां रामगढ व त्रिपुरी के कांग्रेस की फिल्म देखी, ठीक मालूम दिया।
सुन्नाबाई रुइया से लड़ाई की स्थिति पर बातचीत।

९-६-४०

समुद्र स्नान करते समय चार मद्रासी युवक समुद्र में डूबने लगे। उसमें से दो एक एरोप्लेन की मदद से बचाये गए। दो नवयुवक डूब गए। कोशिश तो बहुत हुई, परन्तु नहीं बचा सके। बुरा भी लगा। चोट भी पहुची।
श्रीनिवासजी बगड़का व कृष्ण गोपाल गर्ग मिलने आये। श्रीनिवासजी ने अपने लड़के की सगाई शान्ति, श्रीलालजी की कन्या, से निश्चित की है। रामदेव व रामनाथ पोद्दार मिलने आये। रिजर्व बैंक के डायरेक्टर व सिण्डीकेट के बारे में बातचीत। सर पुरुषोत्तमदास से राय लेने का निश्चय हुआ।

१०-६-४०

सुबह घूमना। एक युवक की लाश मिली, जो कल डूब गया था। दूसरे युवक की लाश भी ११ बजे के करीब बाहर आ गई, सुना।
बृजलालजी, कमला, सरला, श्रीमन, शिवदास वगैरा मिलने आये। बृजलालजी को घनश्यामदासजी की जो राय थी, वह कही। श्रीमन के बारे में मथुरादासजी की राय इस प्रकार क्यों हुई, कहा।

११-६-४०

श्री गोविन्दलालजी पित्ती मिलने आ गये। पद्मा व रूपचन्दजी साथ में, उनके साथ ही बम्बई गये।

आफिस मुकन्द आयरन से त्यागपत्र दिया। जीवनलाल भाई, रामजी भाई, कमल, केशवदेवजी आदि से बातचीत। मुकन्द का डिवीडेंड (भागीदारों को मुनाफा या ब्याज) इस साल नहीं देने का तय हुआ। सुव्रता बहन से मिलना। राधाकिसन के टॉसिल निकालने के बारे में बातें।

१२-६-४०

कमल से मेरी स्थिति व प्रोग्राम के बारे में थोड़ी बातें।
राहुल की जन्मगांठ तो ता० १० जून की थी, परन्तु उसको ज्वर हो जाने के कारण आज मनाई गई। सावित्री व उमा तैयारी कर रही थीं। बच्चों का ठीक उत्सव, जमघट, विनोद रहा।
राजकोट के ठाकुर साहब को शिकार के समय शेर ने मार डाला, खबर आई। सर पुरुषोत्तमदास ठाकुरदास व श्री मणीलाल नाणावटी आये। नाश्ता किया। रिजर्व बैंक के डायरेक्टर रामदेव पोदार के बारे में खुलासा बातचीत देर तक।

१३-६-४०

केशवदेवजी, फतेचन्द, गंगाबिसन, कमल, जीवराज से बच्छराज फैक्टरी के सम्बन्ध में देर तक विचार-विनिमय, खुलासा। रंगून में फैक्टरी नहीं लेने का निश्चय। फिर से बच्छराज फैक्टरी का संगठन करने की योजना तैयार करने को कहा।

१४-६-४०

रामदेव व रामनाथ पोदार आ गये। रिजर्व बैंक के डायरेक्टर होने में सर पुरुषोत्तमदास की बातचीत का खुलासा। नहीं खड़े रहने का निश्चय।
माटुंगा में श्री केशवदेवजी के यहां भोजन, बातचीत।
आफिस कार्य, बिड़ला आफिस। चिमनलाल सुभद्र कुमार वगैरा को मिलाया। बातचीत। रामदेव पोदार व रिजर्व बैंक आदि।

नागपुर मेल से सेकण्ड में वर्धा रवाना।

वर्धा, १५-६-४०

वर्धा में रामविलास पोद्दार के लड़के के लिए दूध नहीं आया। बुरा मालूम हुआ। तार भेजने में मदन कोठारी ने भूल की।

श्री पुरुषोत्तमदासजी टंडन से देर तक पूना सम्मेलन की बातचीत।

कामर्स कालेज, वर्धा के बारे में आज का प्राय: बहुत-सा समय विचार-विनिमय में गया। टण्डनजी, बापूजी, जाजूजी आदि से भी अलग विचार-विनिमय किया।

मारवाड़ी शिक्षा मण्डल की कार्यकारिणी की सभा। श्री मथुरादासजी मोहता व जानकीप्रसाद हाजिर। खूब विचार-विनिमय के बाद, आखिर इनकी इच्छा व वृत्ति देखकर इनकी रकमें वापस देने व कालेज ८ जुलाई को ही खोलने का निश्चय सबके मत से हुआ। एक लाख रु० और जमा करने का नया बोझ आया। जाजूजी के नाम का बाद में निश्चय।

सेवाग्राम—बापू को सर पुरुषोत्तमदास की स्कीम दी। थोड़ी बातें। जाजूजी साथ में, जल्दी वापस।

१६-६-४०

ब्रजलाल बियाणी से कॉमर्स कालेज के बारे में बातचीत।

रामकिसनजी डालमिया का बम्बई से फोन आया। सीमेन्ट आदि की बातचीत। उन्हें एक आध लाख देने की तैयारी के लिए कहा।

शाम को मौलाना, आसफअली आये। दोनों बीमार हैं। नये सिविल सर्जन को महादेव भाई लाये। दवा, इलाज की व्यवस्था हुई।

१७-६-४०

वल्लभभाई, राजाजी से मिलना।

जवाहरलालजी, स्वरूप (विजयलक्ष्मी पंडित), राजेन्द्र बाबू १८ लोग आये।

चर्खा। आराम। पत्र सुव्रता बाई को कॉमर्स कालेज के बारे में।
बापूजी २ बजे आये। वर्किंग कमेटी ३॥ से ८ तक हुई। बापू के साथ पैदल दो मील घूमना। बापू कां. व. क. से अलग होना चाहते हैं।

१८-६-४०

वर्किंग कमेटी की मीटिंग सुबह ७॥ से १०॥ व २। से ७ बजे तक होती रही। बापूजी इसमें दोपहर बाद २। से ७ तक रहे। सुबह कृपालानी से बिना कारण बोलचाल हो गई। शाम को बापू ने अपने विचार कहे।
बापू के साथ डेढ मील पैदल घूमना। रुई सिन्डीकेट के बारे में बातचीत। उन्होंने कहा, इसमें नैतिक दोष नहीं है। स्वरूप (विजयलक्ष्मी पंडित) भी साथ ही।
स्वरूप की चोरी ७२ रुपये करीब की हुई। तपास वगैरा की, पता नहीं लगा, आखिर मामला पुलिस में देना पड़ा।
मि० गुह डायरेक्टर ऑफ इण्डस्ट्री से बात। जवाहरलालजी ने हिटलर का वर्णन सुनाया।

१९-६-४०

वर्किंग कमेटी की मीटिंग सुबह ८ बजे से शुरू हुई। पू० बापूजी की इच्छा मुजब उन्हें मुक्त करने का निश्चय। दोपहर बाद वह २। बजे से शुरू हुई।

वर्धा, २०-६-४०

वर्किंग कमेटी की मीटिंग सुबह ८ से १॥ दोपहर बाद, २। से ७ बजे तक होती रही। मुख्य प्रस्ताव पर महत्व की चर्चा, विचार-विनिमय। काफी गंभीर स्थिति पैदा हो गयी थी। चर्खा नहीं काता।

२१-६-४०

बापू का गांधी सेवा संघ व चर्खा संघ में सुबह ७ से ९ बजे तक व्याख्यान हुआ। वर्किंग कमेटी की मीटिंग ९ से १०॥ बजे तक। मैंने कहा कि इस समय हमलोगों का अलग होना ठीक नहीं। बापू की

योजना जब अमल मे आवे तब जिसकी तैयारी हो, वह उसमे शामिल हो जावे। मैंने प्रस्ताव मे कोई भाग नही लिया। चर्चा।
शाम को बापूजी आये। मुख्य ठराव (प्रस्ताव) पास हुआ।
सुभाष बाबू, मास्टर तारासिंह, सरदार सोहन सिंह भोजन के समय आये। सबसे विनोद आदि।
हिन्दू-मुस्लिम एकता की चर्चा, मौलाना ने जो बातचीत की। वह कही।

२२-६-४०

चर्खा संघ की सभा मे थोड़ी देर।
मौलाना आजाद, आसफअली, डा० महमूद आज गये। प्रफुल्ल बाबू भी। बापू ने चर्खा संघ, गांधी सेवा सघ की सभा मे दो घटे से ज्यादा देर तक अपने विचार कहे। चर्चा होती रही। मैंने भी थोड़ा खुलासा वर्किंग कमेटी की ओर से किया। मेरी समझ से विषय महत्वपूर्ण था।
राष्ट्रभाषा हिन्दी प्रचार की सभा। बापूजी, राजेन्द्र बाबू, काका साहब आदि थे। मैंने कहा, काका साहब न तो अलग संस्था खोलते हैं और न बनी हुई यहां की सोसाइटी से सम्बन्ध रखते हैं। आगे चलकर गलत-फहमी या झगड़े होने का डर है। बापू वगैरा ने कहा, इस इमारत मे कोई झगड़ा नहीं आनेवाला है।

२३-६-४०

आज कैलासनाथ काटजू आये, राजेन्द्र बाबू गये।
श्री देशपाण्डे, जाजूजी, राधाकिसन, नर्मदा प्रसाद, हरिभाऊजी आदि से राजस्थान मे खादी-कार्य के बारे मे विचार-विनिमय। खादी महगी, कमजोर; कार्यकर्ताओं का अलाउन्स ज्यादा; कर्ज़ से या दान; देशपाण्डे व प्रजामण्डल आदि विषयो पर बातचीत।

२४-६-४०

रामनारायणजी चौधरी के व्यवहार के सम्बन्ध मे श्री जाजूजी, किशोरलाल भाई, रामनारायणजी व मैं चारो सुबह ८॥ से १०। बजे तक

जाजूजी के यहां बैठे। मेरे पास का पत्र-व्यवहार पढ़ा गया। विचार-विनिमय हुआ। मेरी ओर से अगर उन्हें अपने बर्ताव पर, जो मेरे साथ हुआ था, पश्चात्ताप है तो ठीक ही है। नहीं हो तो भी मैं उनका व्यक्तिगत रूप से बुरा नहीं चाहूंगा। सार्वजनिक क्षेत्र में विरोध करना पड़े, यह दूसरी बात है।

श्री काटजू, शान्तिकुमार, हरिभाऊजी वगैरा के साथ बातचीत।

वर्धा, नागपुर, २५-६-४०

नागपुर कॉटन मार्किट मे अभ्यंकर स्मारक की जगह देखी। अभ्यंकर स्मारक ट्रस्ट व सलाहकार मण्डल की सभा हुई। स्मारक इसी स्थान याने जो जगह म्युनिसिपैलिटी से मिली वहीं खड़ा करना है। चार हजार रुपये पाए से ज्यादा लगेंगे।

मि० बाटलीवाला (ऐम्प्रेस मिल मैनेजर) से मिलना। वर्धा कॉमर्स कालेज, अभ्यंकर स्मारक, हिन्दुस्थान हाउसिंग के बारे में बातें।

नागपुर प्रान्त की कार्यकारिणी की मीटिंग। बाद में कार्यकर्ताओं की सभा। मेल से वर्धा वापस।

वर्धा, २६-४-४०

बैरिस्टर रशीद, होम मिनिस्टर इन्दौर, व डा० काटजू के साथ सेवाग्राम में बापू से मिलना, बातचीत। वापस आते समय मोटर फंस गई। करीब दो मील पैदल।

बैंक आफ नागपुर के बोर्ड की बैठक में त्यागपत्र मंजूर नहीं हुआ।

२७-६-४०

श्री काटजू आज मेल से पुरी गये। उनसे बातचीत, स्टेशन पर उन्हें पहुचाना।

पू० बापूजी, बैरिस्टर रशीद, महादेव भाई, कनु, प्यारेलाल, सुशीला देहली, शिमला गये। बापू से बातचीत।

घनश्यामदासजी से कॉमर्स कालेज, ज्ञानमंदिर वगैरा के बारे में बातचीत।

मारवाड़ी शिक्षा मण्डल व कॉमर्स कालेज वर्धा की फाइनेंस कमेटी की बैठक हुई। चर्चा। वर्धा म्यु० कमिटी के सदस्यों के साथ विचार-विनिमय।

वर्धा रेलवे, २८-६-४०

पू० बापूजी, किशोरलाल भाई से बातें।
कमल से फैक्टरी, चलाने की व्यवस्था के सम्बन्ध में विचार-विनिमय।
कमल का विट्ठल (नौकर) पर सन्देह। राम का भी सन्देह था। विचार हुआ।
नागपुर मेल से सेकण्ड क्लास में बम्बई रवाना।

बम्बई, २९-६-४०

जुहू में जल्दी भोजन कर बम्बई आये। बच्छराज कम्पनी में फैक्टरियों के ऑफिस के बारे में निर्णय कर जीवराज को पत्र दिया।
मारवाड़ी विद्यालय के बारे में जो डेपुटेशन आया, उसमें कुछ समय गया।
सरदार वल्लभभाई से देर तक बातचीत। वर्धा कॉमर्स कालेज आदि की चर्चा।
इंडियन स्टेट्स पीपल कान्फ्रेंस की कार्यकारिणी की सभा में ९ से २ बजे तक रहा।

जुहू, बम्बई, ३०-६-४०

चार बजे करीब वापस उतरते समय कोई आदमी नीचे की पेढ़ियों के पास खड़ा था। जल्दी भागकर चला गया। मैंने लाईट की। शायद विट्ठल का सन्देह हुआ। उसे पूछा तो उसने इनकार किया। प्रह्लाद, श्रीकृष्ण तो सोये हुए थे। कोई चोर भी नहीं हो सकता। मन में विचार व थोड़ा डर मालूम दिया। कई तरह के विचार, ग्लानि, चिन्ता।
कमला मेमोरियल मीटिंग हुई।

रामेश्वरदासजी बिड़ला के यहां भोजन व बातचीत। ...म० [illegible]
कारण लाखों की हानि। इससे भी चिन्ता हुई। विचार-विनिमय।
गोविन्दरामजी सेकसरिया से सवा लाख रुपये गोविन्दराम सेकसरिया
कॉमर्स कालेज आफ वर्धा के लिए मा० शिक्षा मण्डल को देना स्वी
किया। नागपुर यूनिवर्सिटी से कोई अड़चन आदि न आवे, इसी
की शर्तों पर। रामेश्वरदासजी बिड़ला साथ थे। सरदार वल्
भाई, भूलाभाई के सामने भी सभी बातों का खुलासा हो गया।
चैक भेजने की बात है।
रुइया कालेज की शर्तें देखकर जल्दी से उन्हीं को स्वीकार करने की
भी कही है।

१-७-४०

देशी रियासत प्रजा परिषद की कार्यकारिणी में जाना। छ नये
को लेना। राजकुमारी अमृतकौर, काशीनाथ वैद्य, हरिभाऊ उ
गोपीकृष्ण विजयवर्गीय, रामचंद्रन, पंजाब के कांग्रेस सभापति।
९॥ से ११॥ तक वहां रहना पड़ा।
रामेश्वरदासजी बिड़ला से टेलीफोन पर बातें, गोविन्दरामजी सेक
की सहायता के बारे में।
गोविन्दरामजी सेकसरिया के यहां जाना। केशवदेवजी, दा
श्रीनिवासजी बगड़का, श्रीकृष्ण नेवटिया से अढ़ाई-तीन घंटे तक
नारायण रुइया कालेज माटुंगा की शर्तों को पढ़कर सुनाया। बा
इनकी शर्तों का मसौदा देर तक तैयार हुआ। रामेश्वरदास बिड़ल
बंगले पर गोविन्दरामजी आये। शर्तों पर सही करके सवा लाख
का चैक दे दिया। पच्चीस हजार रु० बाद में, पच्चास हजार
जमा होने पर और देने को कहा। ठीक सन्तोषकारक परिणाम हुआ
अहमद फजल भाई, जयपुर मिनिस्टर, से बातचीत।
फ्रन्टियर मेल से दिल्ली रवाना। जवाहरलालजी भी साथ में।

नई दिल्ली, २-७-४०

पं० जवाहरलाल से देशी राज्य परिषद की रचना, सेक्रेटरी आदि के बारे मे बातचीत। इन्होने प्यारासिंग गिल (पंजाबी सिख) मे मिलवाया। पंडित हरदत्त शास्त्री से भविष्य के बारे मे बातें।

नई दिल्ली स्टेशन पर उतरे। बिड़ला हाउस मे ऊपर के कमरे में ठहरे। बापू को गोविन्दराम सेकसरिया से सवा लाख तो कालेज के लिए मिल गया। पच्चीस हजार रु० और मिल जायगा, कहा। उन्हें खुशी हुई। घनश्यामदासजी को आश्चर्य हुआ व खुशी भी हुई।

३-७-४०

बापू के साथ घूमना। स्टेट वाकिंग मे नये मेंबर लिये, यह कहा। सेक्रेटरी के बारे मे बातचीत। बलवन्तराय को तो भावनगर ही रखना है। बापू ने दामोदर का नाम भी कहा। देर तक चर्चा होती रही। सरदार भी इस चर्चा मे शामिल थे। ओरियन्टल बीमा कम्पनी व खादी सहायता, नया चुनाव आदि। भूलाभाई व खादी सहायता। बापू उनसे बात करेंगे। पू० मालवीयजी महाराज को बहुत समय बाद आज देखा। उनके पास आधा घण्टा बैठा।

वकिंग कमेटी की मीटिंग सुबह इनफार्मल ६-१०॥ दोपहर को २ से ६॥। बजे तक होती रही। वाइसराय से बापू की मुलाकात का हाल व वर्तमान स्थिति पर विचार-विनिमय।

प्रतापनारायणजी अग्रवाल, बी.एम-सी,एल-एल.बी, आगरा मिलने आये। उमा से विवाह इसी १३ ता० को करने को तैयार हैं। बापू से मिलाया। उन्होंने भी कहा, विवाह कर दिया जाय।

जयदयाल डालमिया से एसोसियेटेड सीमेन्ट से समझौते के बारे मे बातचीत।

४-७-४०

वकिंग कमेटी की बैठक सुबह ८॥ से १०॥ व दोपहर बाद २ से ६॥। बजे तक होती रही। मिलने वालो से बातचीत।

पू० मालवीयजी के पास बैठना। उनका वर्किंग कमेटी

५-७-४०

प्रेमनारायण (महाराज) व राजनारायण (सुशील) मिलने आये।
विवाह, खादी कपड़े वगैरा के बारे में बातचीत।
श्री हीरालालजी शास्त्री जयपुर से आये। जयपुर की वर्तमान स्थिति, खासकर जकात आन्दोलन व राजा ज्ञाननाथ की नीति पर विचार-विनिमय। घनश्यामदासजी भी थोड़ी देर शामिल थे। जकात आन्दोलन शुरू हो, राजा ज्ञाननाथ की नीति भी जनता के सामने लायें, यह निश्चय हुआ।
वर्किंग कमेटी की बैठक सुबह ८॥ से १०॥ व दोपहर बाद २ से ७ बजे तक हुई। बापू, राजाजी व जवाहरलाल के विचारों पर बहस होती रही। ठीक फैसला नहीं हो सका।

६-७-४०

सुबह घूमना। वृजकृष्ण चान्दीवाले और बाद में, बापू के साथ।
खुर्शेद नौरोजी के साथ बातें।
वर्किंग कमेटी की मीटिंग सुबह ८॥ से १०॥ व दोपहर बाद २ से ६। बजे तक हुई। राजाजी के ठराव (प्रस्ताव) पर खूब विचार-विनिमय, मेम्बरों तथा निमंत्रित सज्जनों की राय ली गई।
आज वर्धा जाने के लिए मुझे इजाजत मिल गई, परन्तु पू० बापू की इच्छा थोड़ी कम थी, मेरे जाने के बारे में। जवाहरलाल व राजाजी की तो साफ यही राय थी कि अभी मैं न जाऊं। सामान स्टेशन से वापस मंगवाना पड़ा। तार वगैरा भेजे।
घनश्यामदासजी व सरदार से विनोद, वृजलाल बियाणी के यहां सम्बन्ध न करने के बारे में घनश्यामदासजी ने जिस तौर से विचार प्रगट किये व बसन्त कुमार को बुलाकर जिस तरह कहा, बहुत बुरा मालूम दिया। जो कहना था सो थोड़ा कहा। बाद में, अकेले में कहने का विचार किया।

मृदुला बहन से देर तक बातचीत, फ्रन्टियर प्रांत की हालत वगैरा पर।

नई दिल्ली से वर्धा, ७-७-४०

सुबह घूमने में बापू के साथ वर्किंग कमेटी व राजाजी के ठराव के बारे में विचार-विनिमय। बाद में सरदार भी आ गये थे।

व० क० मीटिंग में कल राजाजी के ठराव के पक्ष में ये थे —

राजाजी, जमनालाल, राजेन्द्रबाबू, डा० घोष, डा० महमूद, बेरिस्टर आसफ अली, सरोजिनी नायडू, भूलाभाई देसाई।

विरोध में—सरदार वल्लभभाई, जवाहरलाल, शंकरराव देव, खान साहेब, कृपलानी।

नोट—गोविन्दवल्लभजी पन्त गैरहाजिर थे, पर वह राजाजी के पक्ष में है।

मौलाना खुद राजाजी के ठराव के पक्ष में विचार रखते हैं।

नान-मेंबर डा० पट्टाभि राजाजी के पक्ष में, अच्युत व नरेन्द्रदेवजी विरोध में है।

आज राजाजी के ठराव के पक्ष में रहे—सरदार वल्लभभाई, जमनालाल, राजाजी, भूलाभाई, आसफअली, डा० महमूद।

विरोध में—जवाहरलालजी, खान साहब, मौलाना आजाद।

न्यूट्रल (तटस्थ) राजेन्द्रबाबू, कृपलानी, शंकरराव देव, प्रफुल्ल घोष, सरोजिनी।

बुलाये हुए—पट्टाभि सीतारामय्या राजाजी के पक्ष में—विरोध में—नरेन्द्र देव, अच्युत पटवर्द्धन। पू० मालवीयजी ने भी राजाजी के पक्ष में ही अपनी राय दी।

दोपहर में पंजाब मेल से बापू के डब्बे में रवाना। विट्ठल साथ, सब्‍ज (टिकट) कृपलानी को दे दी। आगरा में प्रतापनारायणजी बगैरा मिले।

भोपाल-इटारसी-वर्धा, ८-७-४०

भोपाल में सैयद कुरेशी, उनकी स्त्री व विट्ठलदास बजाज, छगनलाल वगैरा आये। कुरेशी से थोड़ी गपशप—डिफेंस ऑफ इंडिया के नाम से कइयों के ऊपर मुकदमे व गिरफ्तारी के बारे में।

नागपुर मेल। वर्धा पहुंचना। बापू का मौन, वर्धा में खुलना। बंगले तक स्टेशन से बापू के साथ पैदल। बापू ने मां के कान पकड़े। मां ने बापू के दोनों कान पकड़े। बंगले पर उमा के विवाह के गीत गायन हुए। विवाह के सम्बन्ध में बातचीत, व्यवस्था समझी। तार-पत्र भिजवाने का कहा।

वर्धा, ९-७-४०

सुबह पत्र लिखवाया, तार भिजवाया, खासकर उमा के सम्बन्ध में।
मथुरादासजी मोहता मिलने आये। उनका मुकदमा गोपालदासजी के साथ चल रहा है। वह आपस में तय हो जाय। मैं यह कोशिश कर देखूं, उनका आग्रह रहा। जाजूजी की गवाही के बारे में उनका कहना रहा। कालेज, शिक्षा मण्डल की बातचीत भी।

पत्र व्यवहार—उमा, मदू, जानकीजी, राम से बातचीत, विनोद। मैंने कहा, सबसे ज्यादा चि० शान्ताबाई की गैरहाजिरी व दूसरे नम्बर में गुलाबबाई की खटकी है, सबने स्वीकार किया।

श्री मथुरादास व गोपालदास मोहता के आपस में निकाल होने के बारे में विचार-विनिमय देर तक। कई प्रपोजल (प्रस्ताव) व योजना। वह कल बात करके कहेंगे।

श्री राजगोपालाचारी दिल्ली से आये। मैं भूल गया था। पहले तो याद था। महादेवभाई ने कहा था। वह टांगा किराया कर आ गये। मामूली थोड़ी बातचीत।

१०-७-४०

जाजूजी से मथुरादासजी व गोपालदास मोहता के केस के बारे में स्थिति समझी।

जाजी सेवाग्राम से आये । भोजन करके मद्रास रवाना हुए ।
मन्नारायण, दामोदर से कालेज के बारे में स्थिति समझी । सरदार
ी श्रीमन के यहां ठहरने की व्यवस्था ।
ामड़ के यहां बरात के ठहरने की व्यवस्था । नायडू साहब का बंगला
ादी के लिए मांग लिया ।

११-७-४०

श्री गोपालदासजी मोहता व सूरजकरण जाजू से आपसी निकाल के बारे में डेढ़ घण्टे तक बातचीत । स्थिति समझी । शाम को भी सवा पांच बजे फिर आये । ६॥ बजे तक बातें होती रहीं । वाजिब समझौता हो जायगा, ऐसी उनकी बातों से आशा हुई । निश्चित जवाब कल देंगे । श्री मथुरादासजी भी दोपहर को व रात को आये । उनकी तो पूरी तैयारी समझौते के लिए मालूम दी । उनका बहुत आग्रह रहा कि मैं पूरा प्रयत्न करके रास्ता बैठा दूं ।

ड्रायवर आया । उस पर वारण्ट निकला है, बतलाया ।

१२-७-४०

जल्दी उठना । बरसात का रात भर जोर । पानी और हवा का तूफान । सबको तैयार कर विवाह-मंडप, गांधी चौक में जाना । विवाह-कार्य ७॥ बजे शुरू हुआ । वर्षा हो रही थी, तो भी उपस्थिति ठीक थी । मण्डप ठीक बना था । पूज्य बापूजी, बा का आशीर्वाद, उमा राजनारायण के लिए भाग्य, शुभ की बात थी ।

पू० वल्लभभाई, सरोजिनी देवी तथा पू० जाजूजी तथा अन्य मित्रों की उपस्थिति से शुभ मिला । श्री लक्ष्मणप्रसादजी पोद्दार, उर्मिला देवी, भगवानदेवी सेकसरिया, माखनलालजी सेकसरिया वगैरा भी उपस्थित । विवाह ठीक तौर से हो गया । मन्दिर में बैठना, भजन, बाद में भोजन वगैरा की ठीक व्यवस्था की । कमल की बेपरवाही जरूर खटकी । बरातियों के साथ बस से एकबार जाना । नदी के बाढ़ होने के कारण पू० विनोबा से नहीं मिल सके ।

मा० शिक्षा मण्डल की कार्यकारिणी सभा हुई।
बरातियों के साथ बातचीत, विनोद। सरदार साथ थे। देवदास भी।

१४-७-४०

बरात को आज ग्रान्ड ट्रंक से आगरा विदा किया। चि० उमा को भेजते समय मदू के समय से ज्यादा बुरा मालूम दिया। दुःख भी हुआ। कारण मदू व श्रीमन तो यहीं रहने वाले थे, यह विश्वास था। उमा का यहां अधिक रहना नहीं होगा, यह विचार मन में आया।
गोविन्दराम सेक्सरिया कालेज ऑफ कामर्स का उद्घाटन आज सरदार पटेल के हाथ से, सुबह सन्तोषजनक तौर से हो गया। बहुत से मित्र आज गये।
सेवाग्राम— बापू से बातें, खासकर खुर्शेद के बारे में। पवनार, नालवाड़ी विनोबा से बातें, प्रार्थना।
सरदार बम्बई गये। देवदास दिल्ली।
रिषभदास, वनारसी से बातचीत।

१५-७-४०

खुर्शेद बहन के साथ घूमने जाना। बातचीत। कांग्रेस, फ्रन्टियर, बापू अहिंसा खुद के सम्बन्ध में। काकासाहब व इमारत की बातें।
श्री माखनलालजी सेकसरिया से देर तक बातचीत। वह भी आज रात को एक्सप्रेस से गये। सज्जन व भले आदमी मालूम दिये। महिला आश्रम में प्रार्थना के बाद खुर्शेद बहन ने सीमा प्रांत का अनुभव और वहां सेवा की कितनी जरूरत है, यह बतलाया, ठीक रहा।

वर्धा, १६-७-४०

खुर्शेद पेशावर गई।
लक्ष्मणप्रसादजी, उर्मिला देवी, सावित्री, कमल से बातचीत। स्वतन्त्रता में थोड़ा विचार। बाद में बुरा मालूम हुआ।
जी मोहता, हरिश्चन्द्रजी डागा, सूरजमल जाजू, बद्रद

वकील आये। आपस का समझौता। कोर्ट मे पेश होकर दोनों दावे खारिज हो गये।

चार लाख गोपालदासजी को तारीख के अन्दर देने का निश्चय। ब्याज का फैसला श्री नवलकिशोरजी द्वारा करेंगे। मामला आपस मे सुलट गया, इससे सुख मिला।

किशोरलाल भाई मिलने आये। बाद मे जाजूजी राधाकृष्ण से महिला आश्रम की इमारत व जमीन शिक्षा मण्डल मे मिलाने के बारे मे विचार-विनिमय। यह योजना इन्हे पसन्द मालूम दी।

१७-७-४०

काकासाहब व श्रीमन से महिला आश्रम शिक्षा मण्डल मे मिलाने की योजना पर विचार-विनिमय।

श्रीनिवास राव नायडू मिलने आये। आर्थिक स्थिति समझी।

श्री द्वारिकाप्रसाद मिश्र व रविशंकर शुक्लजी के लडके आये।

सेवाग्राम जाने का विचार किया। वर्षा आने लगी तो रह गये।

वर्धा, सेवाग्राम, १८-७-४०

सेवाग्राम—लक्ष्मणप्रसादजी वगैरा साथ मे। बापू से मिलना। बापू से बातचीत। ओमा, खुर्शेद बहन, प्रोग्राम। मनःस्थिति, वर्किंग कमेटी के ठराव, बाद मे पीछे। खानपान आदि पर देर तक विचार-विनिमय।

बा, आशा बहन, सरला बहन से मिलना।

पत्र-व्यवहार, चर्चा।

सरयू (शान्ता) धोत्रे मिलने आई। देर तक आर्थिक स्थिति पर विचार-विनिमय होता रहा।

१९-७-४०

श्री जानकी देवी को दौरा आया, इसका विचार रहा। बातचीत।

चर्चा, पत्र-व्यवहार, तीन घंटे से ज्यादा।

गिरधारी कृपलानी व नागपुर हिन्दुस्थान हाउसिंग योजना पर विचार-विनिमय। कामटी रोड का खेत लेने की इजाजत दी। उसके खासगी के

बारे में कृपलानी से दिल्ली में बात हुई थी। उस बारे में मुझे जो बुरा लगा, वह कहा। विश्वासराव मेघे व उनकी मां, दिवानजी, मंदिर की रकम का ब्याज कम करने को कहने आये। उन्हें समझाया कि जो ठराव (अनुबंध) हुआ है, उसी मुताबिक होगा।

२०-७-४०

मगनवाडी मे—ग्राम उद्योग संघ व मगन स्मारक की मीटिंग थी। वहां हाजिरी लगाई। कुमारप्पा से बातचीत।

श्री सीतादेवी भारतन, आर्यनायकम् से बातचीत।

आज के अखबार से लड़ाई मे ब्रिटिश हालत बहुत कमजोर हो गई है, मालूम दिया।

अभ्यंकर मेमोरियल मीटिंग व नागपुर प्रान्तीय कांग्रेस कमेटी की मीटिंग हुई, विचार-विनिमय।

सावित्री के पास फलाहार, दुकान पर (बच्छराज भवन मे) राहुल ठीक था।

नागपुर मेल के सेकण्ड से बम्बई रवाना।

बम्बई, २१-७-४०

दादर उतरना। बिड़ला गेस्ट हाउस में ठहरना।

रामेश्वरदासजी बिड़ला, केशवदेवजी व श्री गोपाल भोजन के पहले व बाद में बहुत देर तक शक्कर की स्थिति, खासकर, गोला मिल की स्थिति समझी। आश्चर्य व थोडी चिन्ता। नफा की जो सम्भावना थी वह हो गई ही, करीब आठ लाख का नुकसान होने का ढंग और दिखाई देने लगा। बैंक में रुपये भरने की व्यवस्था पर बहुत देर तक विचार-विनिमय।

अंधेरी में फतेहचन्द झुनझुनवाला बीमार था, उसका स्वास्थ्य देखा।

२२-७-४०

गोविन्दरामजी और माखनलालजी सेकसरिया से गो० से० कामर्स, वर्धा के बारे में देर तक विचार-विनिमय होता रहा।

कादिर अली की स्त्री जोहरा को अस्पताल में देखा। आपरेशन हुआ था, डा० स्वर्णा के यहाँ।

ताजमहल होटल में राजकुमार पृथ्वीसिंह मिले। जयपुर महाराज से मिलना नहीं हुआ। वह मिलने से डरते हैं, मालूम हुआ।

आफिस में मिलना-जुलना, रुपयों की व्यवस्था।

देसाई से दांत ठीक करवाये।

सर इब्राहीम रहमतुल्ला ने बुलाया, अपना हाल सुनाया।

रामेश्वरदासजी ने दस वर्ष सात मास खर्च किया, वह बतलाया। इसमें ६ मास के करीब सहायता में दिये गए।

दिल्ली में जुगलकिशोरजी बिड़ला को धोखा दिया गया, सुना।

बम्बई, २३-७-४०

लार्ड हेलीफैक्स का बयान हिटलर के जवाब में देखा। राजाजी की अपील पढ़ी।

जानकी बाई बजाज के नाम से बनावटी पत्र पर से भी भाई जुगलकिशोरजी बिड़ला ने पांच सौ रुपये सागर भिजवा दिये। सागर पुलिस को लिखवाया। जुगलकिशोरजी को भी।

आफिस में जवाहरलालजी से दो घंटे तक घरेलू बातचीत। वहीं पर बाद में बच्छराज फैक्टरी, बच्छराज कम्पनी व हिन्दुस्थान शुगर के बोर्डों की मीटिंग हुई, विशेषकर शुगर कम्पनी की हालत पर। सिण्डीकेट ने भाव उभार दिये, जिससे स्थिति विशेष शोचनीय हो गई। रुपयों की व्यवस्था का प्रबन्ध किया गया। थोड़ी चिन्ता कम हुई।

रामेश्वरजी बिड़ला से सुबह व शाम को बातचीत। चर्चा।

इंडियन स्टेट्स पी. (कान्फ्रेंस) की फायनान्स (अर्थ-व्यवस्था) मीटिंग में जाना। एक हजार की जवाबदारी। जवाहरलालजी नेहरू आये थे। बाद में मंत्री वगैरा के सम्बन्ध में चर्चा।

बम्बई-पूना, २४-७-४०

पंडित जवाहरलालजी बिड़ला हाउस में भोजन के लिए आए। उनसे

रामेश्वरदासजी व नारायणदासजी को लेकर मिलों की स्थिति व क्रिकेट आदि के बारे में ठीक बातचीत हो गई।

श्री जोहरा (आबिद अली की स्त्री) ज्यादा बीमार थी, खबर आई। अस्पताल डा० गुवर्गा के यहां जाना। जहर सेप्टिक हो गया। बीमारी बढ़ गई।

चिन्ता हुई, पहले तो ठीक होने की थोड़ी आशा थी। बाद में सूचना मिली अचानक बीमारी बढ़ने की।

अस्पताल में आफिस से आना—दो-तीन घंटे तक रहना। उसने पहचाना भी। डा० (वैद्य) कन्हैयालाल की मात्रा देना। नाड़ी गई हुई था। बाद मे शरीर छूट गया। दुःख व बुरा तो बहुत लगा। श्मशान जाना। देर तक वहां नरीमान, ब्रेलवी, बहादुर व अंबालाल शाह मिले। आफिस में बाबा साहेब खेर से देर तक वर्किंग कमेटी के ठराव पर विचार-विनिमय। वह बहुत चिन्तित थे।

शाम की गाड़ी से पूना। मथुरादास त्रिकमजी से बातचीत।

श्री गोविन्दरामजी सेकसरिया के बंगले पर कोरेगांव पार्क मे ठहरना। स्वरूप (विजयालक्ष्मी पंडित को) सर मडगावकर के पास पहुंचा देना। जवाहरलालजी व देशी रियासत के मन्त्री के बारे मे चर्चा।

श्री रेहानाबहन से मिलना। वहां सरोजिनी नायडू भी मिल गई थीं। वर्किंग कमेटी की मीटिंग—३ से ८ बजे तक होती रही।

राजेन्द्रबाबू से बातचीत।

पूना, २६-७-४०

वर्किंग कमेटी सुबह ८ से १०॥, दोपहर बाद २ से ७ बजे तक।

शाम को जवाहरलाल, स्वरूप, सरोजिनी, राजा राव हैदराबाद वाले के यहां गये। उनका एक लड़का था उसकी अचानक देहरादून में मृत्यु हो गई। ११ वर्ष का था। यह चर्खा कातते हैं, सज्जन मालूम दिये। वहीं पर नर्गिस पैरीन से मिला।

बातचीत, देर तक। कन्हैयालाल मुंशी, प० रविशंकरजी, मिश्रा आदि

कई लोग मिले।

२७-७-४०

वकिंग कमेटी, ८ से १०॥ बजे तक।

आल इंडिया कमेटी ३ से ७॥ बजे तक हुई। वर्धा ठराव ही दूसरे रूप में मंजूर हुआ।

वर्धा से तार—अनसूया के बालक हुआ।

२८-७-४०

आल इंडिया कमेटी की बैठकें सुबह ८॥ से ११। तक व दोपहर बाद २ से ८॥ बजे तक हुई। आज का काम समाप्त हुआ।

दिल्ली ठराव पर मत, पक्ष मे ९५, विरोध में ४७। तटस्थ नहीं मालूम हुए। सब मिलकर उपस्थिति १९० के करीब होनी चाहिए। ठराव पास तो हुआ, परन्तु मन मे समाधान नही मिला। भाषण जवाहरलाल का ठीक हुआ। राजाजी का भाषण व जवाब तो ठीक था, परन्तु बापू के बारे में इन्होंने और सरदार ने जो अव्यवहारिक आदि समालोचना की वह थोडी बुरी मालूम दी क्योंकि पिछले बीस वर्षों मे पहली बार इन लोगो के मुह से इस प्रकार सुनने को मिला। वैसे राय तो मेरी भी इनके साथ ही थी परन्तु वह तो कमजोरी आदि कारणों से थी।

श्री गोविन्ददासजी सेकसरिया से वर्धा कॉमर्स कालेज के बारे मे देर तक विचार-विनिमय। उन्होंने पत्र लिखकर दिया। पूरा समाधान नहीं हुआ।

प्रेमा कण्टक, भारती साराभाई मिले।

२९-७-४०

सरदार वल्लभभाई, मूलाभाई बम्बई गये।

वकिंग कमेटी की बैठक ८॥ से १० बजे तक हुई। आगामी वकिंग कमेटी वर्धा मे ता० २६ को रखने का विचार हुआ।

स्टेट्स पीपुल्स कान्फ्रेंस की स्टेंडिंग कमेटी की मीटिंग २ से ४। बजे तक। बाद में रात को कन्वेंशन के सदस्यो से आपसी बातचीत, ४॥ से १० बजे

तक होती रही।

३०-७-४०

ग्राम उद्योग संघ की ओर से कागज बनाने का रिसर्च इन्स्टीट्यूट बना, जिसमे बम्बई सरकार ने अठारह हजार इमारत व सामान के लिए दिये व दस हजार रुपये साल की ग्रान्ट २ वर्ष के लिए देना स्वीकार किया, वह देखा। पं० जवाहरलालजी ने थोड़ा भाषण दिया। व्यंकटभाई व श्री जोशी ने दिखाया। आगे जाकर यह संस्था उपयोगी होगी।

कार्फेंस की स्टैंडिंग कमेटी की मीटिंग ११॥ से १२॥ बजे तक, कर्न्वेशन १२॥ से ५। बजे तक हुआ। बीच मे एक घंटे के करीब जवाहरलाल को सभापति का काम करना पडा। भाष्यम्, रामचन्द्रन, काशीनाथराव, नरेन्द्रदेव, पट्टाभि वगैरा ठीक बोले। एक प्रस्ताव पर मैं भी बोला। जवाहरलालजी की जीवनी एक फोटो मे लिखी, वह पांच सौ में ली।

पूना, बम्बई ३१-७-४०

मोटर से बम्बई रवाना। साथ मे माखनलाल हेकसरिया, रामचन्द्र टिबड़ेवाले।

पूना से कुर्ले के आगे तक उनसे राजनैतिक, सामाजिक, कालेज, हरि मन्दिर वगैरा की बातचीत होती रही।

जुहू—बम्बई, १-८-४०

महादेवभाई का पत्र लेकर उनका भानजा व दूसरा लड़का आया। उनसे बातचीत। इनके पिता का देहान्त हो गया, तीन-चार रोज पहिले।

हीरालाल, अमृतलाल शाह का कारखाना उनके साथ देखा। दिलचस्प मालूम दिया।

मुक्ताबाई, रामनिवास, मदन से मिलना। उनके सम्बन्ध में कमलनयन की छोटी बात। रामनिवास गाफिल से बन जाता है, कमजोर गुण है, इस सम्बन्ध में उसे समझाना।

राजपूताना धर्मार्थ संघ को मदद का वचन पचास हजार का स्वीकार हुआ,

प्रजामण्डल, ज्ञान मंदिर, वनस्थली पर विचार-विनिमय।
ज्ञान मंदिर के पांच हजार रु० वनस्थली को पहले के निश्चय मुजब सौ रु० मासिक।
जवाहरलाल नेहरू से मिलना। घर की सब बातचीत।
सरदार व वल्लभभाई से मिलना।
सर जे० मूलजी भीकाजी की ९२ वर्ष की उम्र मे मृत्यु। ८७ वर्ष तक विवाहित जीवन। पांच वर्ष की उम्र मे विवाह। स्त्री एक वर्ष छोटी थी, वह जीवित है। मूछ के बाल काले थे। आखिर तक काम करते रहे। आदर्श जीवनी।

२-८-४०

गोविन्दरामजी सेकसरिया व माखनलाल से मिलना। सुबह ८॥ से १०॥ बजे तक बातचीत। निर्णय—कालेज जहा तक बने, वर्धा मे ही रहे। अगर शिक्षा मण्डल को वर्धा से नागपुर मे ज्यादा लाभ दिखे तो उनको कोई उज्र नही है।
ज्ञान मंदिर का नाम 'श्रीकृष्णदास जाजू' देने के बारे मे उन्हे ठीक तौर से समझाने पर उनके यह बात ध्यान मे आई। कालेज मु० कमेटी मे माखनलाल सेकसरिया व सीताराम पोद्दार का नाम देना।
राजपूताना के खादी कार्य को वर्तमान मे पाच हजार रु० कर्ज, पाच वर्ष के लिए।
सीताराम पोद्दार के लिए बातचीत।
सर होमी मोदी, जहांगीर टाटा, आर० डी० श्रॉफ सकलातवाला से बातचीत।
खादी कार्य के लिए सहायता, खासकर न्यू इंडिया एश्योरेन्स कंपनी से।
नागपुर एम्प्रेस मिल से कालेज व अभ्यंकर मेमोरियल को मदद।
रामदेव पोद्दार व रामनाथ से खादी, ज्ञान मंदिर व प्रजामण्डल के बारे मे देर तक बातचीत।
जवाहरलालजी नेहरू व किदवई आफिस में आये, नेशनल हेराल्ड के

बारे में विचार-विनिमय।

सरदार वल्लभभाई से मिलकर सब बातें।

अचरोल के ठाकुर हरीसिहजी का ७ वर्ष का लडका मर गया। उनसे

बिड़ला हाउस मे देर तक बातचीत।

३-८-४०

आफिस—रामदेव पोद्दार ने प्रजामण्डल जयपुर के कर्जखाते में पन्द्रह सौ व कालेज खाते मे ग्यारह सौ रुपये दिये।

मुकुन्द आयरन कम्पनी के बम्बई वाले कारखाना का रामजीभाई केशवदेवजी के साथ जल्दी मे निरीक्षण किया।

नाथजी महाराज से मिलना। उनके स्वास्थ्य आदि की बातचीत।

बिड़ला हाउस मे, रामेश्वरजी, बृजमोहन से देर तक अन्तर्राष्ट्रीय स्थिति पर बातचीत।

४-८-४०

जगजीवनभाई ने स्टेट कांफ्रेंस के लिए दो हजार रु० सहायता देना स्वीकार किया।

श्री रामजी को जयपुर प्रजामण्डल व वर्धा कालेज के लिए पच्चीस सौ रुपया देने को कहा। उन्होंने कहा, आपके कहने के बाहर नहीं हूं। मैं रामनारायण से पूछ लेता हूं। बाद में देखूंगा।

सर बद्रीप्रसादजी कलकत्तावाले ने प्रेमपूर्वक जयपुर राज्य प्रजामण्डल व कालेज - प्रत्येक के लिए पच्चीस सौ रुपये दिये। खादी के लिए कलकत्ता में विचार करने की बात रही।

केडिया (फतेपुरवाले) के यहां जाना। उन्होंने एक हजार की रकम बताई। ज्यादा मिलने की आशा।

हेमराजजी खंडेलवाल बिड़ला हाउस में मिलने आये। सहायता करने का वचन दिया।

पामीरामजी खादी के काम के बारे में बाद में निश्चय करके केशर- . . . के मार्फत कहलावेंगे।

७-८-४०

जमनालाल ट्रस्ट बोर्ड की मीटिंग हुई।

शिक्षा मण्डल का महादेवपुरे वाला मकान देखा।

चि० मुन्नी (सुमन) का कल जन्म दिन था। बच्छराज भवन मे बालकों के खेल-कूद। पू० बा वगैरा आये थे।

राजेन्द्र बाबू से मिलना।

बा, दुर्गाबेन को सेवाग्राम छोड़ना।

८-८-४०

घूमते हुए मदालसा के घर, उसके यहां रात को चोरी हुई। करीब तीन सौ रु० का माल व जेवर गया। कपड़े कागजात सब बिखरे हुए मिले। पुलिस में रिपोर्ट की गई।

कमला लेमे ने ग्राम मंदिर व महिला आश्रम के बारे में बातचीत की।
शिवराजजी चूड़ीवाले के सम्बन्धी (ग्वालियर वाले) मिलने आये।
दिल्ली के डा० अग्रवाल से भोजन के समय बातचीत।
पू० बापू के पास सेगांव टांगे में, जानकी देवी, शान्ताबाई साथ में।
बापू से वाइसराय के पत्र व स्टेटमेंट पर विचार-विनिमय।
राजेन्द्रबाबू को जयपुर ले जाने के बारे में।
मीरा बहन व पृथ्वीसिंह के बारे में बापू ने कहा, यह सम्बन्ध कराना हम सबों का धर्म हो गया है। अन्य बातें।
चि० शान्ताबाई के साथ पैदल आश्रम तक सेगाव से बातचीत करते आना।
बाद में श्रीमन व मदालसा मिल गये।
राजेन्द्रबाबू के पास बैठना।

९-८-४०

गंगाबिसन की तबियत देखना।
राजेन्द्रबाबू, दत्तू दास्ताने, किशोरलालभाई, अनसूया को देखना।
कृष्णा, हरीकिसन बजाज का एक वर्ष के लिए फैसला किया। कृष्णा, जानकी देवी के जुम्मे, हरीकिसन राधाकिसन के जुम्मे। पचास मासिक की व्यवस्था एक वर्ष के लिए।
जूने पत्र देकर फाड़ना, चर्खा।
मथुरा बाबू व डा० महोदय के साथ शतरंज।
पटना से—मृत्युंजय व डा० दामोदर आये।

१०-८४-०

नागपुर से वाल्टर दत्त व दुर्गाशंकर मेहता मिलने आये। वाल्टर दत्त एलीम्युनियम के बारे में दिलचस्पी ले रहे हैं। कमल से बातचीत।
चर्खा, जूनी फाइलें साफ करना।
सेवाग्राम—बापू से खादी योजना के बारे में, जो शान्ति कुमार व डाह्याभाई पटेल कर रहे हैं, बातचीत। वह एक अपील तैयार करेंगे

उस पर मेरी सही लेने वाले है। वर्किंग कमेटी, जयपुर, मीरा बहन, वासन्ती वगैरा से बातचीत।
सेवाग्राम से आश्रम तक पैदल आना। साथ मे थोड़ी दूर मृत्युंजय, डा० दामोदर, जानकी देवी साथ रही। बाद मे वासन्ती, मेहरुन्निसा (महिला आश्रम) सुशीला की तबियत थोड़ी खराब।
हैदराबाद वालों की बापू से बातचीत हुई, (सुनी व समझी।

वर्धा-धामणगांव, ११-८-४०

सुबह पैसेन्जर से धामणगांव जाना। सेकण्ड मे। वापसे इण्टर मे एक्सप्रेस से आना। वहा श्री रामचन्द्रजी की स्त्री (श्रीमन्नारायण की गोद की माता) से मिलकर व बात करके सुख व समाधान मिला। इनका रहन-सहन, व्यवहार, मानसिक शान्ति व निर्लोभिता के साथ बहुत ही सादगी से जीवन बिताते देखकर इनमे एक आदर्श स्त्री की कल्पना साकार होती दिखाई दी। करीब दो घटे से ज्यादा इनके पास बैठना। इनकी सेवा मे कुछ भेंट करने की इच्छा। स्वीकार नही की। रामचन्द्रजी व भागचंदजी के घर की वर्तमान हालत का वर्णन सुनकर दुख हुआ।
मीराबेन (मिस स्लेड) बगला (बजाजवाड़ी) आई। अपने विवाह-सम्बन्ध पृथ्वीसिहजी के साथ करने का निश्चय बताया, नही तो मृत्यु का वरण करने की बात कही।
नाना आठवले की पुण्य-तिथि महिला आश्रम मे मनाई गई। मुझे सभापति बनाया गया।
सेवाग्राम बापूजी से बातें। वर्किंग कमेटी की बैठक होने के बाद जयपुर जाने का निश्चय।
पृथ्वीसिंह ने मीराबेन के बारे मे थोड़ा कहा।
वर्धा तालुका शान्तिदल स्थापना की सभा मे मुझे भी बुलाया गया। वहा जो उपस्थित सज्जन थे उसमे प्राण (जीवन) कम मालूम दिया।

गोंदिया वर्धा, १२-८-४०

जल्दी तैयार होकर मेल से दामोदर के साथ थर्ड मे गोंदिया जाना।

दाग को गेत से वापस आना।
कल्याणजी भाई ने अभयंकर मेमोरियल में एक हजार दिये। मूलजी सिक्का के नाम से।
वर्धा स्टेशन पर गोपालदास मोहता, बापूजी अपने मिले। उमा के विवाह की पत्रिका बापूजी को नहीं मिली। आश्चर्य हुआ।

१४-८-४०

मेहरुन्निसा, अमदाबाद की मुस्लिम बहन जो आश्रम में हैं, अपने मामा की मृत्यु के समाचार, व बच्चों की बीमारी की खबर आने से उदासीन थी। खाना नहीं खाया था। उसे समझाया। खाना खिलाया।
कालेज के लिए जगह घूमकर देखी।
पू० बापू सेवाग्राम से आये। दत्तू दास्ताने, किशोरलाल भाई, राजेंद्र-बाबू आदि से मिले। देर तक ठहरे।
राजेन्द्रबाबू को भी शतरंज का शौक है। मथुराबाबू के साथ शतरंज खेली।

१५-८-४०

बाला साहब खेर, उनकी स्त्री, बहू व पूना पार्टी से मिलना।
गो० सेकसरिया कालेज ऑफ कॉमर्स में विद्यार्थियों के साथ बातचीत। प्रश्न-उत्तर, बाला साहब खेर का भाषण हुआ।
पू० बापू सेवाग्राम से वर्धा आये। तीन बजे से पांच बजे तक पूना के मित्रों के प्रश्नों के उत्तर उन्होंने दिये, विशेषतया ये प्रश्न अहिंसा को लेकर थे। मिसेज् सेन (लेडी अर्विन कालेज, देहली) यहां आईं, अपने यहां ठहरी।

१६-८-४०

काकासाहब से घूमते समय असम के दौरा वगैरा की बातें।
लक्ष्मीनारायण मंदिर ट्रस्ट कमेटी की सभा।
स० पृथ्वीसिंह से खासगी मीराबेन की भावना आदि पर बातचीत। आशा नहीं दिखाई दी।

१८-८-४०

जानकी देवी साथ में थी। पृथ्वीसिंह से उनकी, बापू की जो बातचीत हुई, वह उन्होंने सारांश में कही। मैंने उन्हें अभी बापू के पास रहने के बारे में समझाया।

मिसेज सेन दिल्ली गईं।

विद्यारत्नाम भाई से मिलना। पृथ्वीसिंह आदि की बातें।

सरदार भूलाभाई, राजाजी, सरोजिनी, कृपलानी, सुचेता, देव, पट्टाभि वगैरा आये, सुबह की गाड़ी से। जवाहरलाल व महमूद सुबह साढ़े चार बजे की गाड़ी से आये।

वर्किंग कमेटी की मीटिंग दोपहर बाद २ बजे से शुरू हुई। पू० बापू सेवाग्राम से आये।

शाम को साढ़े सात बजे तक बातचीत, विचार-विनिमय होता रहा।

१९-८-४०

वर्किंग कमेटी की बैठक सुबह ८॥ से ११ व दोपहर बाद २ से ७ बजे

तक हुई। वाइसराय को पत्र भेज दिया गया। बापू के पास से मैंने ठीक करवा लिया था।
चर्चा। जवाहरलालजी के साथ थोड़ा घूमना।

२०-८-४०

वर्किंग कमेटी की बैठकें सुबह ८॥ से ११ व २। से ७॥ बजे तक हुई। दोपहर बाद की मीटिंग में बापू आये। ठीक बातचीत, खुलासा। बापू के साथ सेवाग्राम रेलवे फाटक से करीब अढ़ाई मील तक पैदल। बापू से वर्तमान वर्किंग कमेटी व कांग्रेस की स्थिति पर बातचीत, विचार-विनिमय। अहिंसक दल के बारे में मेरे विचार, बिना मिलिटरी की स्टेट के बारे मे भी बातें हुई।
कलकत्ते से विमल, प्रभादेवी का लड़का, सीतारामजी सेकसरिया का पत्र लेकर आया।

२१-८-४०

मेहरुन्निसा से जवाहरलालजी की बातें। अमदाबाद भेजने का निश्चय। बृजमोहन बिड़ला कलकत्ता गये।
वर्किंग कमेटी की मीटिंग सुबह ८॥ से ११ व २ से ६॥ बजे तक हुई। बापू दोपहर बाद २। बजे के करीब आये व शाम को ५ बजे के करीब सेवाग्राम चले गये। बापू का मसौदा पसन्द नहीं हुआ। मुझे उसमें थोड़ा फरक होना सम्भव होता तो ज्यादा ठीक मालूम देता।
नागपुर प्रान्तीय कांग्रेस की साधारण सभा मे आध घंटे करीब गया। सदस्य बढ़ाने, वर्किंग कमेटी की आज्ञा मुजब तैयारी रखने वगैरा पर प्रश्न-उत्तर हुए। महिला आश्रम की सभा मे जाना। रात को ७ से ६॥ बजे तक।

२२-८-४०

मीराबेन आज पंजाब जाने मे पहले मिली, बहुत दु:खी व उदास मालूम दी। मेरा मन भी भर आया। जानकी देवी उसे पहुंचाने स्टेशन गई।

डिप्टी कमिश्नर व श्री मेहता नजूल की जमीन का मौका देखने आये। ज्ञान मंदिर, कालेज वगैरा का मौका देख गये। रुक्मानन्द की जमीन, बगला यो नही मिले तो एक्वायर करके ले लेने की राय उन्होने दी।
वर्किंग कमेटी की बैठक सुबह ८॥ से ११॥ बजे तक हुई। मुख्य ठराव (प्रस्ताव) आखिर मजूर हुआ। वर्तमान स्थिति के ठराव पर ठीक विचार-विनिमय।
शाम को २। से ६। तक पू० बापू भी उसमे शामिल रहे। आज बातचीत के सिलसिले मे उन्होने संकोच व दु खित हृदय से अपनी मनोदशा व भावी विचार, प्रोग्राम कहे। उसे सुनकर सब-के-सब चकित व किंकर्तव्य-विमूढ बन गये। मनन, चिंता, विचार शुरू हुए।
सुशील बहन से मिलकर व सेवाग्राम मे बापू से, विशेषतया महादेव-भाई से, बापू की भयकर योजना समझी। सरदार, राजेन्द्रबाबू से बातचीत। चिन्ता मे सोना।

२३-८-४०

सेवाग्राम—मौलाना, सरदार, जवाहर गये, बापू से बातचीत, थोडा समाधान हुआ।
पवनार—विनोबा से मिलकर स्थिति उन्हे कही। शाम को बगले (बजाजवाडी) आने का निश्चय, उनकी मदद मिलेगी।
स्टेशन पर सर बद्रीदासजी से मिलना। अम्बालाल भाई नही आये। बैरिस्टर आसफ अली दिल्ली गये।
मागरमलजी बुद्धिसेन को देखा। वामन सोनेगाव वाले से बातचीत। मानेराव मिलने आये। सारी स्थिति समझी।
नेशनल प्लानिंग की सभा बगले पर हुई। बापू भी आये।
बापू ने किशोरलाल भाई के घर, विनोबा, किशोरलाल भाई, जाजूजी, काकासाहब से अपनी भावी योजना (उ०) के बारे मे विचार-विनिमय किया। विनोबा की राय ठीक पडी। वर्किंग कमेटी की मजूरी से ही इस समय बापू यह विकट मार्ग स्वीकार कर सकते है, यह तय हुआ।

मौलाना से थोड़ी बातचीत हुई।
आज सुबह प्रफुल्ल बाबू, सतीश बाबू की लड़की कलकत्ता गये।

वर्धा, चालू रेलवे जयपुर के लिए २६-८-४०

ना० मेल में नागपुर तक मैं व राजेन्द्रबाबू मौलाना आजाद के साथ सेकण्ड में बैठे।
नागपुर से जयपुर तक, बाद में, ग्रान्ड ट्रंक एक्सप्रेस के थर्ड में बैठे।
खुर्शेद बहन फन्टिअर जा रही थी। आगरा तक साथ रही। चि० मदालसा मैनपुरी गई, वह भी आगरा तक साथ रही।
बातचीत खुर्शेद से ज्यादा देर तक होती रही। रास्ते में दृश्य ठीक दिखाई दिया। मस्तक को आराम मिला। खाने की व्यवस्था ठीक नहीं हो सकी। रात को जल्दी, आठ बजे करीब, सोना। थर्ड में भी ठीक नींद आ गई।
राजेन्द्रबाबू भी थर्ड में ही रहे। तबीयत ठीक रही। मौलाना आजाद ने राजेन्द्रबाबू को एक माह तक के लिए देवघर रहने की इजाजत दी। मौलाना ने कल जो बापू (महात्माजी) से निर्णय हुआ, उससे सन्तोष जाहिर प्रकट किया।

आगरा, जयपुर, २७-८-४०

आगरा कैन्ट से शाम की गाड़ी से जयपुर रवाना होना। राजेन्द्रबाबू ताज व किला देखकर आये।
महावरा से मे टीकारामजी पालीवाल साथ हो गये। जयपुर स्थिति पर बातचीत। जयपुर में तेज वर्षा होने पर भी लोग स्टेशन पर ठीक आये थे। न्यू होटल में ठहरे, मित्रों से मिले।

जयपुर, २८-८-४०

सुबह घूमे। दो मील करीब। हरिभाऊजी उपाध्याय साथ में थे। बापू व वकिंग कमेटी के भावी प्रोग्राम आदि पर विचार-विनिमय।
अखबार देखा, राजेन्द्रबाबू से बातचीत।
हीरालालजी शास्त्री, रतनजी, टीकारामजी पालीवाल से थोड़ी बात-

से राज्य भर में दौरे का प्रोग्राम निश्चित किया।

जयपुर-सीकर, ९-९-४०

राजेन्द्रबाबू का स्वास्थ्य आज थोड़ा ठीक रहा।
जर्मनी का लन्दन पर परसों बहुत जोर का हमला हुआ।
मि० रामाकृष्ण को राजेन्द्रबाबू के पास जयपुर छोड़ा।
डेढ़ बजे की गाड़ी से यहां से सीकर रवाना।

सीकर, १०-९-४०

मि० शिव भगवान चौकड़ी के आग्रह पर उसका बनवाया कुआ देखा। वहीं बाजरा के सिट्टे, काकड़ी व पतीरा खाये, दूध पिया। शाम को मिलने वालों से मुलाकातें। मुसलमान नाई मसाज करने आया, कमर में दर्द था।

११-९-४०

दोपहर को महावीरप्रसादजी पोद्दार, रामेश्वरजी अग्रवाल व रत्नाकर आये।

शाम को प्रजामण्डल कार्यालय में गये। बद्रीनारायण के साथ वहां का काम देखा, देर तक।

विश्वनाथ बाबूजी, जो ८५ वर्ष के हो गये, उनसे मिले, देर तक बात-चीत करते रहे।

सीकर-जयपुर, १२-९-४०

सुबह करीब ६॥। बजे जयपुर रवाना हुए।
एक कुम्हारनी का फटा हुआ छाता, जो उसने रेल में से फेंका था, उसके सम्बन्धी को नहीं मिला, इसी से वह दुखी व चिन्तित थी। महावीरजी से उसे एक रुपया दिलाया।
जयपुर—आज हिन्दुस्थान टाइम्स में जयपुर से सम्बन्धित कार्टून आया। महाराज साहब, राजा ज्ञाननाथ व मेरे फोटो थे।

जयपुर, १३-९-४०

भगेरिया व पिलानी के साबूजी से बातचीत।

'सारदा स्त्री सस्था' के उत्सव (जैन मन्दिर) मे आध घंटा रहे।
हीरालालजी शास्त्री, रतनजी, महावीरप्रसादजी पोद्दार वनस्थली मे उत्सव का प्रोग्राम निश्चित करने को मिलने आये।

१४-६-४०

श्री महाराज के नाम पत्र लिखा, उसका मसौदा कपूरचन्द्रजी व हंसराय ने मिलकर तैयार किया।
राजेन्द्रबाबू का स्वास्थ्य आज ठीक रहा।
शंभूनाथजी वकील से मातादीन भगेरिया के केस के बारे मे बातचीत।

जयपुर-सीकर, १५-६-४०

जयपुर शहर कमेटी के चुनाव का फैसला दुर्गालाल, बिजलीवाल से बातें कर मिश्रजी व हंसराय पालीवाल की सलाह से चुनाव नहीं करने के बारे मे दिया गया।
मातादीन भगेरिया के केस के बारे मे मिश्रजी, शम्भूनाथजी व मातादीन से विचार-विनिमय कर १६ ता० को लम्बी बहस नही करने का निश्चय किया।
राजेन्द्रबाबू का स्वास्थ्य उत्तम मालूम दिया। बातचीत। ता० २३ को सीकर थाना है। थोड़ी देर शतरंज।
नारायणजी मिस्त्री से पाव, कान, कमर का इलाज।
१॥ बजे दोपहर की गाड़ी से सीकर रवाना।

सीकर, झुनझुनू, १६-६-४०

राधाकिसन, महावीर प्रसादजी, नर्वदाप्रसाद, देशपाण्डे, रामेश्वरजी, सुभाषचन्द्र आडिटर से बातचीत। १ अक्टूबर से खादी का भाव कम करना तय हुआ।
झुनझुनू की मोटर मे अड्डे से रवाना। वहां सागरमलजी मोदी के मकान 'लक्ष्मी निवास' मे ठहरे।
डा० ताराचन्दजी ने मेरा व शास्त्रीजी के कान देखे। झुनझुनू के व्यापारी लोगों व कार्यकर्ताओं से देर तक बातचीत।

शिकारखाने के बारे में पढ़कर सुनाये गए, व उनका खुलासा किया। जनता ने ज्ञाननाथ के बारे में हुए व दूसरे ठरावों का भी ठीक तौर से स्वागत किया।

श्री महाराज साहब के सेक्रेटरी का पत्र आया। महाराज साहब इस समय नहीं मिल सकते, लिखा। उनका मन पर थोड़ा असर हुआ।

४-६-४०

शाम को जयनारायणजी व्यास, आश्रम कार्यकर्ता, जोधपुर की स्थिति, स्टेट पीपल्स कान्फरेंस के बारे में विचार-विनमय। कल रात्रि को प्रजा-मण्डल की ओर से जो जाहिर सभा हुई, उसके बारे में समालोचना। उसका जनता पर ठीक प्रभाव पड़ा, सुना।

श्री महाराज साहब के सेक्रेटरी के पास राजा ज्ञाननाथ के बारे में वर्किंग कमेटी ने जो ठराव पास किया है, वह भेजा। कर्नल उमरावसिंहजी के पास जकात का ठराव भेजा।

महाराजा साहब के सेक्रेटरी का जो पत्र आया था, उसमें फिलहाल महाराजा साहब मिल नहीं सकेंगे, कहा था। आज बनर्जी का फोन आया कि महाराज साहब ने शनिवार, ता० ७ को सुबह ११ बजे मिलने का समय दिया।

चिरंजीलालजी मिश्र के साथ बिहारी तिवारी का लोहा कारखाना देखा। बहुत रुपये फंस गये, चिन्ता-सी हुई।

५-६-४०

श्री चिरंजीलालजी मिश्र व बाजपेईजी को थी चीफ जज से जो बात-चीत हुई, वह कही। कुछ सार नहीं।

६-६-४०

राजेन्द्रबाबू के पास देर तक बैठना। रात में नींद कम आई और थोड़ा ज्वर था।

शिकारखाने के सम्बन्ध का पत्र प्राइम मिनिस्टर व नरेश महाराज साहब के पास भेजा।

'हिन्दुस्तान टाइम्स' से वर्किंग कमेटी के ठराव आज छपकर आये। प्राइम मिनिस्टर द्वारा भी बना था।

कपूरचन्दजी, टीकारामजी ने जो नोट्स तैयार करके लाये, उन पर देर तक विचार-विनिमय होता रहा। शाम को मिश्रजी, हरिश्चन्द्रजी भी शामिल हुए। रात को १ बजे तक विचार-विनिमय करके, कल महाराज साहब को बतायेंगे, कच्चे नोट्स तैयार हुए।

७-६-४०

श्री महाराज साहब से रामबाग पैलेस में मिले। सुबह ११ से दोपहर १२॥ बजे तक ठीक स्पष्टतापूर्वक बातें हुई। राजा ज्ञाननाथ की नीति के बारे में मुझे जो कुछ कहना था, स्पष्ट कह दिया। अभी वह पक्के नहीं हुए हैं। तीन वर्ष के लिए सर मिर्जा का आग्रह है। लिखा-पढ़ी चल रही है। हमलोग नहीं चाहते हैं तो आन्दोलन कर सकते हैं। जकात व शिकारखाने के बारे में भी बातचीत हुई। उन्होंने जकात के प्रश्न पर तो सहानुभूति प्रकट की। उन्हें कुछ पता नहीं था, ऐसा बताया। शिकारखाने के बारे में थोड़ी दलीलें हुईं। बाद मे मुझे फिर से आने के लिए कहा। मेरे नोट्स पढ़े और रख लिये। जवाब दूसरे सप्ताह मे देने को कहा। वह स्वयं ही पत्र भेजेंगे, या फोन करेंगे। थोड़ी देर बाद केसरीसिंहजी व मोरेजा के ठाकुर से बातचीत।

डेरे पर मित्रों से थोड़ा हाल कहा। आगे के प्रोग्राम की व्यवस्था पर विचार-विनिमय किया।

८-६-४०

शाम को पांच बजे बाद मोटर से रामगढ़ गये। विनायक, सुशीला, नर्बदा बालक साथ मे। वहां पहुंचने पर मालूम हुआ : महाराज, उनकी दूसरी व तीसरी स्त्री, छोटी बहन व राजकुमारी स्टीम लाँच से तालाब की सैर कर रहे थे। हमलोग भी थोड़ी दूर तालाब मे घूमे। मि० पाडे व उनकी स्त्री ने खूब ठीक व्यवस्था की थी।

बिरजीलाल मिश्र, हरिश्चन्द्र शर्मा, टीकारामजी, कपूरचन्दजी, हसराज

चीन। वनस्थली की जमीन के बारे में कागजात देखे।
शाम को हरिश्चन्द्रजी, हंसराज, चिरंजीलालजी मिश्र वगैरा से देर तक बातचीत।
प्रजामण्डल के प्रोग्राम के बारे में विचार-विनिमय।

२६-८-४०

भाई महावीरप्रसादजी पोद्दार व नर्मदाप्रसादजी साठ आये।
राजेन्द्रबाबू, मथुरा बाबू, महाबीरप्रसादजी, नर्मदाप्रसादजी के साथ जयपुर शहर होते हुए कर्णावतों के बाग, जैन मन्दिर, हनुमानजी का मन्दिर, रामनिवास बाग वगैरा मोटर से घूमना।
हीरालालजी शास्त्री व रतनजी से वनस्थली की जमीन के बारे में रेवेन्यू मिनिस्टर व कमिश्नर से जो बातचीत हुई, वे सुनीं, चिन्ता कम हुई।

३०-८-४०

जयपुर प्रजामण्डय की कार्यकारिणी की सदस्यों से खासगी तौर से विचार-विनिमय देर तक होता रहा।
जयपुर प्रजामण्डल के कार्यकर्ताओं के मतभेद के कारण थोड़ी चिन्ता।

३१-८-४०

मातादीन भगेरिया से जकात व कोर्ट में उसके केस के बारे मे बातचीत।
श्री सुखदेवजी पाण्डे (पिलानी वाले) मिलने आये।
प्रजामण्डल वकिंग कमेटी ८॥ से १२॥ बजे तक सुबह हुई। शाम को ४ से १० बजे रात तक हुई। हीरालालजी शास्त्री के पत्र पर विचार-विनिमय। एक प्रकार की निराशा दिखाई देने लगी। मित्रों से ठीक तौर से विचार-विनिमय हुआ।
बहुत-सी बातें साफ तो हुई। फिर भी प्रजामण्डल के काम आगे बढ़ने में सेवा-वृत्तियों को ठीक-ठीक रुकावटें दिखाई देने लगीं।

रेवेन्यू मिनिस्टर से तय हुआ। ठीक हो गया।
केशरीमल चटोरिया के पिता गुजर गये थे। वहां बैठने गये।
प्रजामण्डल वर्किंग कमेटी दोपहर बाद ३ से ७ बजे तक हुई। गफ्फार खा को वर्किंग कमेटी का मेंबर बना लिया गया। वह आज की मीटिंग में आये।

३-६-४०

आज माताdीन भगेरिया केस के बारे मे दुर्गा सहाय जज के कोर्ट मे गवाही हुई। करीब डेढ़ घंटे तक। गवाही साधारण तथा ठीक हुई। आज पहली दफा बार रूम व कोर्ट देखा।
राजेन्द्रबाबू का स्वास्थ्य आज भी ठीक नहीं रहा। खासी के साथ-साथ ज्वर भी हो गया। सार्वजनिक सभा मे नहीं आ सके।
सार्वजनिक सभा आजाद चौक में हुई। जनता ठीक थी।
मथुराबाबू, पार्वती डिडवानिया, कपूरचन्द्रजी, हरीश्चन्द्रजी, चिरंजीलाल अग्रवाल और मैं बोले। वर्किंग कमेटी के तीन ठराव, खासकर राजा ज्ञाननाथ के कार्य से असंतोष, उन्हे बदला जावे, और जकात व

राजस्थान शिक्षा मण्डल का कार्यालय देखा। देर तक स्थिति समझी। मोदियों की धर्मशाला मे सार्वजनिक सभा हुई, जकात व राजा शासन के सम्बन्ध मे। मैंने मारवाड़ी में भाषण दिया। सभा, भाषण, ठराव वगैरा सब ठीक रहा।

झुंझुनू, चिड़ावा, १७-६-४०

जाट छात्रालय (बोर्डिंग) का निरीक्षण किया। ४२ जाट लड़कों में ४१ शेखावाटी के थे जिनमें एक देशराज नेतारामसिंहजी का छोटा लड़का बहुत होशियार मालूम दिया। कन्या पाठशाला देखी। लड़कियों की प्रार्थना, खेल-कूद वगैरा सन्तोषकारक जान पड़े। जुगलाल मोदी के यहां फलाहार। सागरमलजी, दुर्गादत्त केया के यहां बाजरे की रोटी, राबड़ी, हरे केले का साग का ठीक भोजन हुआ। मातादीन की बड़ी बहन, जो यहां टिबड़ीवालों के बिवाही है, मिली।
डा० ताराचन्द के यहां मतीरा लिया, आराम किया।
मित्र-मण्डल के साथ बोराजी की लारी में दोपहर बाद ३ बजे चिड़ावा रवाना हुए। रास्ते मे बख्तावरपुरा ठहरे। जाटों का ग्राम है। चिड़ावा-उत्साह व जोश ठीक था। जलूस निकला। जाहिर सभा हुई। यहां कार्यकर्ताओं मे उत्साह मालूम दिया। मातादीन के कारण सभा में ठीक बोलना हुआ। शास्त्रीजी व महाबीरजी भी बोले।
कन्हैयालालजी वैद्य के (सभापति) यहा ठहरना।

चिड़ावा-सूरजगढ़, १८-६-४०

चिड़ावा की संस्थाएं देखी, रामकिसन डालमिया का विद्यालय (कन्या पाठशाला) बाद में पुस्तकालय, हरिजन स्कूल, कन्हैयालाल वैद्य का दवाखाना आदि घूमकर देखे। बाद में स्त्रियों का अस्पताल, जो सेकसरियों ने खोल रखा है, वह भी देखा।
चिड़ावा के कार्यकर्ताओं व सेकसरिया, मंगलचन्दजी डालमिया, अर्जुन आदि से मिलना।

हरिश्चन्द्र मास्टर लाडो के आना । धर्मशाला मे जलपान, जलूस, सभा कम्प्लीट हुई । उत्साह व जोश ठीक मालूम दिये । सभा के समय जयपुर पुलिस के इन्स्पेक्टर (थानेदार) प्रभातनारायण कायस्थ ने सन्तकुमार शर्मा वकील को बहुत ही अश्लील गाली देकर सम्बोधन किया और श्री सरयूदीन पीर (ठिकाने के आदमी) ने उनमें मदद की । उन्हें अपने शब्द वापस मांगने को कहा । वे तैयार नहीं हुए ।

सूरजगढ़, १९-९-४०

कमोदर मेतरामजी के लड़के से हीरालालजी शास्त्री व हरलाल सिंहजी के सामने बातचीत । मेतराम सिंहजी जेल मे रहे तबतक उसे पैतालीस रुपये मासिक की आवश्यकता रहेगी । जितना वह कमावे उसमें जो कम रहे उसकी व्यवस्था करनी होगी ।

पालीरामजी का शिवमंदिर, हरिजन पाठशाला, कन्या पाठशाला, बिरदीचन्दजी बोरा का घर, पुस्तकालय आदि देखे ।

पिलानी-चन्द्र भवन में ठहरे । ठीक व्यवस्था, भोजन, आराम ।

तीन बजे गेस्ट हाउस आये । पिलानी के लोगों से बातचीत ।

जुलूस निकला । बाद मे सभा हुई । उत्साह ठीक मालूम दिया । उदयराम काजीपुर वाले सभापति हुए । सभा का कार्य सन्तोषजनक रहा । दो भाइयों ने काली झण्डी भी दिखाई । इनमें से एक की स्त्री कुए मे गिर-कर मर गई थी, रामदयाल छैला के अत्याचारों के कारण ।

पिलानी, २०-९-४०

सुबह ७ बजे से प्रिंसपल पाण्डेजी के साथ बिड़ला छात्रालय, डेरी, नहर, पाताल गंगा, हिन्दी मिडिल स्कूल आदि संस्था व कन्या हाई स्कूल की इमारतें देखीं ।

कालेज में विद्यार्थियों के साथ बातचीत । उनके प्रश्नों के उत्तर दिये । ठीक कार्यक्रम रहा । हरिजन छात्रावास मे विद्यार्थियों के खेलकूद, व्यायाम देखे ।

भाई जुगलकिशोरजी बिड़ला से देर तक बातचीत, विनोद ।

३०-९-४०

सुबह घूमना। यहा पांच मील दूर से मजदूरी करने स्त्री-पुरुष आते हैं। उन्हे आठ घंटे काम करना पड़ता है। पुरुषों को मजदूरी ७ आने, स्त्रियों को ५ आना रोज मिलती है।

हिन्दुस्थान टाइम्स आफिस में जाना। देवदासभाई, शकरन्, सत्यदेवजी से बातचीत। विशेषतया जयपुर परिस्थिति के बारे मे। लक्ष्मी व बच्चों से मिलना।

सस्ता साहित्य कार्यालय देखना। मार्तण्ड, बाबू, लक्ष्मी, हरिभाऊजी व उनके पिताजी से मिलना।

डेवरी, घनश्यामदासजी, रामेश्वरदासजी, महाबीरप्रसादजी के साथ देखना। लक्ष्मीनारायणजी, सरस्वतीबाई, शशि, रामगोपाल भी थे। उनके साथ रामजस कालेज का निरीक्षण करना।

शिमला से फोन पर मालूम हुआ वाइसराय से फैसला नहीं हुआ। लड़ाई होगी। बापू मोटर से दिल्ली आ रहे हैं। वर्षा।

भूलाभाई व आसफअली से बातें। आसफअली ने जयपुर जाना स्वीकार किया।

१-१०-४०

सुबह जल्दी ही, पांच बजे करीब, पू० बापूजी मोटर द्वारा शिमला से यहां पहुंचे। साथ में राजकुमारी अमृतकौर, महादेव भाई।

बापूजी ने शिमला हुई बातचीत का सारांश कहा। बापूजी के साथ घूमना। नीचे लिखे प्रश्नों का खुलासा व बापूजी ने वाइसराय से जयपुर के बारे में जो बातें कीं, वे सुनीं। वाइसराय व आजादी के प्रश्न का खुलासा सुना। मुझे जयपुर स्थिति सुलझाने मे ही विशेष समय लगाने की सलाह दी।

राजा ज्ञाननाथजी छिड़कर जेल आदि भेजें तो ठीक ही है।

राजेन्द्रबाबू को सीकर मे ही आराम करने देना है। वर्किंग कमेटी की मीटिंगों मे न आने से चलेगा, कहा। खादी की रकम, जो बम्बई में जमा

हुई है, उसमें से राजस्थान की रकम एक लाख तक राजपूताना के लिए 'ईअर मार्क' करने को मैंने कहा। उन्होंने मान लिया। [illegible] नहीं किया।

भावी प्रोग्राम की थोड़ी रूप-रेखा समझी। आसाम में दौरा कायम रखने को कहा। वर्धा में राष्ट्रभाषा स० पर न आने में [illegible] कहा।

श्री रामेश्वरदासजी बिड़ला ने स्वयं ही घनश्यामदासजी [illegible] सामने बच्छराज कम्पनी व बच्छराज फैक्टरी का काम सम्भालने व चेयरमैन बनने की इच्छा प्रगट की। मैंने खुशी से स्वीकार किया।

बम्बई में श्री केशवदेवजी को पत्र लिख भेजा। उन्होंने भी [illegible] जवाबदारी स्वीकार कर ली।

पू० बापू के साथ हरिजन आश्रम जाना।

श्री लक्ष्मीनारायणजी की ओर से अठारह सौ रुपया ऊपर के [illegible] के लिए देना है। उनकी इच्छा कम ही रही तो दूसरी व्यवस्था करनी है।

जयपुर सीकर, २-१०-४०

सुबह जल्दी ५ बजे करीब जयपुर स्टेशन पहुंचना। वहां [illegible] मिला। उससे व हरिभाऊजी से गाड़ी जहां ठहरी वहां तक बातचीत। राजरूपजी के साथ जयपुर शहर में न्यू होटल तक पैदल [illegible] लाइन से। वहां निवृत्त होकर पैदल घूमकर आना। [illegible] रामकुमारी से मिलना। स्नान वगैरा पत्र पढ़े। [illegible] मातादीन की स्त्री-बच्चों से मिले। वगैरह दिल्ली [illegible]

सुबह ९-१२ बजे की गाड़ी से थर्ड में सीकर रवाना होना।

'बापू हैं' (घनश्यामदासजी बिड़ला की लिखी हुई, पढ़ी [illegible] भाई की लिखी हुई, व ५३ पत्रे।

सीकर पहुंचना। टांगा भाड़े कर कमरे पहुंचना। [illegible]

पू० राजेन्द्रबाबू से बातें, प्रोग्राम, आज वर्धा [illegible]

बापू का जन्म-दिवस मनाया गया। राजेन्द्रबाबू [illegible]

ऐसा मालूम हुआ। राजा कल्याणसिंहजी के बारे उन्होंने शंका का समाधान किया।

सीकर-जयपुर, २७-९-४०

सीकर मे शाम तक राजेन्द्रबाबू वगैरा के साथ। अर्दे मोटर से ६-३० बजे रवाना होकर जयपुर १०-११ बजे पहुंचे।

जयपुर—न्यू होटल में कपूरचन्द्रजी, पाटणी, हुंसडी राय आदि से बातचीत।

परिस्थिति का सिंहावलोकन। पालीवालजी भी आ गये।

राजा ज्ञाननाथजी से मिलने का विचार हुआ। मित्रों को भी पसन्द आया। टेलीफोन किया। आज उन्हें समय का अभाव था। मिलने की इच्छा तो प्रकट की।

महाराज साहब के पत्र का मसौदा तैयार हुआ।

चर्खा-पत्र। मातादीन से मिलने की कोशिश। आखिर परवानगी मिली। शिक्षण मंत्री, आई० जी० पी० जेल सुपरिन्टेन्डेन्ट आदि को फोन करना पड़ा। मातादीन का स्वास्थ्य साधारण था। उसे मामूली कैदियों के साथ रखा गया है। मातादीन की स्त्री-बच्चे भी साथ थे।

मिश्रजी, हरिश्चन्द्रजी वगैरा मिले। हरिश्चन्द्रजी ने भी लक्ष्मण प्रसादजी के सिर में हलका-सा लकवे का दौरा हुआ, कहा। पूरी हालत सुनी। चिन्ता हुई। मुझे मालूम नहीं था।

७-४० की गाड़ी से सैकण्ड से दिल्ली रवाना।

नई दिल्ली, २८-९-४०

नई दिल्ली-बिड़ला हाउस पहुंचे। घनश्यामदासजी, रामेश्वरदासजी मिले।

जयपुर व राजा ज्ञाननाथ की बातचीत देर तक होती रही।

घनश्यामदासजी ने शिमला, बम्बई, देवदास को फोन किये। मेरे बारे मे भी।

रात को शिमला का हाल महादेव भाई ने कहा।

भोजन के समय महावीरजी भी आ गये। खुशी हुई। वियोगी हरि व श्यामलाल से घनश्यामदासजी के समक्ष राजस्थान हरिजन संघ के बारे मे देर तक बात होती रही।

मोटर से घनश्यामदासजी, महावीरजी, वियोगी हरिजी, श्यामलाल करीब २८ मील नहर की सड़क से रोकड़ा गये। वहां पिलाणी मे पढ़े हुए श्री कालचन्द शर्मा, बी० ए० ने एक स्कूल चला रखा है एंग्लो संस्कृत हाई स्कूल, बहुत कम खर्च से। इनकी भावना व महत्वाकांक्षा देखकर खुशी हुई। अभिमान व जड़ता बढ़ने का डर भी मालूम दिया। लड़कों से जो बातचीत हुई, सन्तोषकारक मालूम दी।

पिलाणी मे खादी प्रचार का वातावरण पैदा हो उस पर नरम व गरम ठीक चर्चा, विचार-विनिमय होते रहे।

हरिभाऊजी, देवदास गांधी, मार्तण्ड वगैरा आये। जयपुर वगैरा की बातचीत।

रामेश्वरजी बिड़ला से रामनिवासजी की स्थिति, फत्तेचन्द, दावकर आदि बातें की।

बापू का तार आया। शिमला मे ठंड बहुत ज्यादा पड़ती है, लिखा। दिल्ली ठहरने की इच्छा लिखी।

२६-६-४०

घनश्यामदासजी, रामेश्वरदासजी से बातचीत। देवीप्रसाद खेतान भी आ गये थे।

महावीरजी व मार्तण्ड से बातें सस्ता साहित्य मंडल के बारे में। सस्ता साहित्य मण्डल की सभा हुई, उसमे हाजिरी।

बिड़ला हाउस में बापू व अन्य जीवन-व्यवहार-सम्बन्धी घनश्यामदासजी के विचार सुने, ठीक मालूम दिए।

घनश्यामदासजी ने वसन्त कुमार का सम्बन्ध बृजलालजी की छोटी लड़की से करने की बात भी बृजलालजी से की, और उन्होंने स्वीकार किया, कहा।

सोनीराम जोशी के घर मास्टर मिले।
कन्या विद्यालय में आयोजित स्त्रियों की सभा में थोड़ी देर बोले।
पिलाणी के विद्यार्थियों ने गायन, वादन सुनाये।

पिलाणी, झुनझुनू, नवलगढ़, २१-९-४०

जल्दी तैयार होकर मोटर से चिड़ावा रवाना। वहां से झुनझुनू।
यहां की जेल में ता० १९ की शाम को दुर्घटना से तीन डकैतों की मृत्यु हुई। गोलीबारी देर तक होती रही। उसमें नेतरामसिंहजी और प्रजामण्डल वालों का व्यवहार बहुत ही सुन्दर रहा, सुना।
नवलगढ़ स्वागत, वाला बक्साजी बिड़ला के कमरे में ठहरना।
रामदेव पोदार वगैरा मिले। सीतारामजी सेकसरिया मिले।
चर्खा, पत्र, जुलूस, जाहिर सभा। इस प्रकार की सभा व जुलूस यहाँ प्रथम बार ही हुए। जनता में जोश, उत्साह ठीक मालूम दिया। लाउड स्पीकर की व्यवस्था थी।
यहां केदारनाथ शर्मा गोहाटीवाले के सभापतित्व में खादी भण्डार खुला है। बाद मे, सीतारामजी सेकसरिया के सभापतित्व में प्रजामण्डल का कार्य, जकात, राजा ज्ञाननाथजी व मातादीन केस आदि पर विचार-विनिमय।
जकात कमेटी की मीटिंग हुई।

नवलगढ़-सीकर, २२-९-४०

सुबह महावीरजी, हीरालालजी, सीतारामजी से जकात, प्रजामण्डल, शेखावाटी कमेटी के सम्बन्ध मे बातचीत। नरोत्तम, दुर्गादत्त, शिवदत्त आदि से बजट वगैरा की बातें। इन सबने मिलकर दिसम्बर आखिर तक के लिए एक हजार रु० की आवश्यकता बतलाई, जो स्वीकार करनी पड़ी। जकात आन्दोलन के लिए तीन-चार हजार का खर्च होगा, लगता है। नवलगढ़ की हरिजन पाठशाला, पोद्दार गेट पाठशाला, पुस्तकालय व औषधालय, गोविन्दरामजी सेकसरिया की कन्या पाठशाला, आनन्दरामजी पोद्दार हाई स्कूल आदि का निरीक्षण। पोद्दार हाई स्कूल में

स्वदेशी व हरिजन प्रचार पर जोर दिया। समर्थन कराया।

रामदेव पोद्दार के घर भोजन। बाद में गोविन्दरामजी के भाई से मिलते हुए स्टेशन। सीकर में स्वागत। रास्ते में झुनझुनू वालों के बागजान देखे, पसन्द हुई।

सीकर में जाहिर सभा शोकपूर्वक हुई। मैंने भी स्थिति स्पष्ट कही। हीरालाल शास्त्री, हरलालसिंहजी और महावीरजी भी बोले।

सीकर, २३-६-४०

राजेन्द्रबाबू, मथुराबाबू, महामायाबाबू वगैरा शाम की गाड़ी से आये। उनका ठीक स्वागत हुआ। जलूस निकाला गया।

२४-६-४०

मोतीलालजी (चिमनराम मोतीलाल वाले) झुनझुनू से दुर्गादत्त केया के साथ आये, बातचीत। झुनझुनू में हाई स्कूल खोलने व जाट बोर्डिंग (छात्रालय) को सहायता देने के बारे में बातचीत। पिलाणी में जुगलकिशोरजी बिड़ला को मोतीलालजी की सलाह से पत्र लिखकर दुर्गादत्त केया द्वारा भेजा।

महावीरप्रसादजी पोद्दार 'काशी का वास' ऊट पर जाकर आये।

राजेन्द्रबाबू को सीकर का म्यूजियम दिखाया। मैंने भी वह आज ही देखा।

२६-६-४०

घूमने राजेन्द्रबाबू के साथ पुरोहितजी की ढाणी।

राजेन्द्रबाबू को थोड़ी दूर ऊट पर बिठाया। वापस लौटते समय सीकर के सीनियर दीवान बहादुर सन्तोखसिंह रास्ते में मिल गये। देर तक बातचीत होती रही। बाजरे के एक दाने (बीज) में दो सौ से तीन सौ तक सिट्टे लगने की बात उन्होंने कही।

सीनियर दी० ब० सन्तोखसिंहजी सीकर से करीब दो घंटे तक बातचीत। जयपुर, जकात, राजा ज्ञाननाथजी आदि विषयों पर मैंने अपने विचार दिल खोलकर कहे। जकात के बारे में कुछ फेरफार सोचा जा रहा है,

सीकर, ३-१०-४०

सुबह राजेन्द्रबाबू के साथ पैदल घूमना।

करीब ११। बजे श्री जयसिंहजी सुपरिन्टेन्डेन्ट सीकर, श्री निसार मह
सिटी कोतवाल व जयपुर से सारा तलाशी लेने आये थी वीरेन्द्र सि
न तो कोई वारन्ट दिखाया और न कोई लिखा हुकम। इन्हें भली प्र
समझाकर कहने पर भी तलाशी करीब पौने दो घंटे तक ली।
खानगी डायरी प्रोटेस्ट (विरोध) करने पर भी पढ़ी। खासगी काग
(महाराज साहब वगैरा के भी) प्रोटेस्ट के बाद में भी देखे। इन्हें
दिल्ली के स्टेटमेंट की कापी की जरूरत थी। मैंने उन्हें हिन्दुस्
टाइम्स से कतरन की हुई दिखाई। परन्तु उससे उनका सन्तोष न
हुआ। करीब शाम को ४।।। बजे के ये लोग गये। खासगी डायरी व
कटिंग उठा ले गये।

पू० राजेन्द्रबाबू वगैरा की राय हुई कि शायद मुझ पर केस चलावें।
शाम को घूमना व बातचीत।

(ता० ३ से ता० १४ तक अक्टूबर की डायरी ता० १४ को डाय
वापस मिलने पर जो नोट्स कर रखे थे उनके आधार पर लिखी।)

४-१०-४०

जयपुर मे मेरी गिरफ्तारी की तैयारी हो रही है।
सीकर में जाहिर सभा हुई। गोविन्दराम जालान सभापति चुने गये
मैंने वह स्टेटमेंट, जिसके बारे में तलाशी ली गयी थी, उसका खुलास
किया और कहा स्टेटमेंट मैंने दिया है। सीतारामजी सेखसरिया, मथुरा
बाबू खादी व रचनात्मक कार्य पर बोले। पू० राजेन्द्रबाबू भी जनता
के आग्रह के कारण रचनात्मक कार्य के बारे मे बोले।
जयपुर जाने की तैयारी। कल जो तलाशी जयपुर पुलिस ने ली थी
उसका स्टेटमेंट राजेन्द्रबाबू का बनाया हुआ प्रेस को भेजा गया।

सीकर, जयपुर, अजमेर ५-१०-४०

सुबह जल्दी तैयार होकर ६-५० बजे मोटर अड्डे से जयपुर रवाना हुए।

उदयपुर, ६-१०-४०

चित्तौड़गढ़ में गाड़ी बदली । यहां से सब साथ थे । चित्तौड़गढ़ से उदयपुर तक स्वागत होता रहा । ठीक उत्साह मालूम दिया ।

उदयपुर में स्टेशन पर जनता ठीक आई थी । श्री महाराजा साहब के प्राइवेट सेक्रेटरी भी मोटर लेकर आये थे । स्टेट गेस्ट हाउस में ठहरना होगा, कहा । नक्सी मोतीलाल तेजावत को देखा । खादी प्रदर्शनी देखते हुए जलूस निकाला गया । जनता में ठीक उत्साह व जोश था । उदयपुर होटल में ठहरना ।

डा० मोहनसिंहजी से देर तक बातचीत ।

सर टी० विजय राघवाचारी दीवान उदयपुर से मिलने सम्मेलन की मीटिंग में जाना ।

सम्मेलन प्रदर्शनी के समय उनसे बातचीत । उनका व्याख्यान सुना । उनके साथ ही उनके घर जाना । सबसे परिचय । बिजोलिया, हरिभाऊ-जी, मोतीलाल तेजावत, खादी प्रजामण्डल के बारे में ठीक बातचीत । जाहिर सभा अच्छी व्यवस्था से उत्साह-जनक हुई ।

माणिकलालजी वर्मा सभापति । मेरा भाषण ठीक हुआ । जोश था ।

७-१०-४०

अग्रवाल नवयुवकों से बातचीत। नकली मोतीलाल तेजावत को पुलिस के हवाले किया।

जय समुद्र—मोटर में जाना-माना। रास्ते का दृश्य सुन्दर था। वहां बोट में थोड़ा घूमना।

वापस १ बजे बाद होटल में पहुंचना। श्री महाराणा साहब ने १ बजे बुलवाया था। बाद मे शाम को पांच बजे का समय निश्चित हुआ। श्री गोपालजी मोहता के घर भोजन, परिचय। डा० मोहनसिंहजी वगैरा से बातचीत।

श्री महाराणा साहब से मुलाकात, देर तक खानगी बातचीत। प्रजामण्डल के रजिस्टर्ड होने, बिजोलिया, हरिभाऊजी, खादी, मोतीलाल तेजावत के बारे में उन्होने ठीक तौर से सुना। सेक्रेटरी भी हाजिर थे। उन्होंने नोट्स लिये।

अग्रवाल सभा मे कई नवयुवकों ने खादी पहनने की प्रतिज्ञा की। प्रो० बोस व उनकी स्त्री चंचल देवी से मिले। भैरोलालजी के घर पार्टी दी गई थी।

सर टी० विजय राघवाचारी के यहां फलाहार, बातचीत समाधान-कारक। रात को होटल में कार्यकर्ताओं से बातचीत।

उदयपुर, चित्तौड़, ८-१०-४०

सुबह कार्यकर्ताओं से बात। बाद में विद्या भवन का निरीक्षण किया। बालिका विद्यालय की अध्यापिकाओं से परिचय, इमारत देखी। सम्मेलन की सभा मे जाना। जैनेन्द्र सभापति थे। सर टी० विजय राघवाचारी से मिलना। आफिस मे डा० मोहनसिंहजी व सरला बहन से भी मिलना। चित्तौड़गढ़ के डाक बंगले में ठहरना।

चित्तौड़गढ़-नीमच, ९-१०-४०

स्टेट मोटर से चित्तौडगढ़ किले पर गये। सीतारामजी सेकसरिया,

प्रह्लाद, विट्ठल साथ मे।

सरकारी गाइड ने भली प्रकार से किला दिखाया। किले पर रहने की इच्छा हुई। यह एक राष्ट्रीय तीर्थ-स्थान है। आकर्षण होता है। चित्तौड ग्राम मे जाहिर सभा हुई। स्वामी ब्रह्मानन्दजी सभापति हुए। सीतारामजी सेकसरिया और मैंने, विशेषतया खादी रचनात्मक कार्य व प्रजामण्डल के सम्बन्ध मे अपने-अपने विचार प्रगट किये। स्टेट अधिकारी (प्राय: सब ही) व जनता ठीक आई। चित्तौड मे इस प्रकार की शायद यह पहली ही सभा हुई। बाद में, गुरुकुल देखा।

खण्डवा-भुसावल-वर्धा, १०-१०-४०

खण्डवा मे गाडी बदलनी पडी। माखनलाल चतुर्वेदी व ब्रजभूषण से बातचीत। बकुल भी थे।

वर्धा—शाम को सात बजे के करीब पहुचना, जानकीदेवी से मिलकर बगले जाना। वहां मौलाना आजाद, आसफअली, कृपलानी वगैरा थे। बातचीत, विनोद। लोग दशहरा का सोना देने आये। आ० जाजूजी को सोना दिया।

वर्धा, ११-१०-४०

वर्किंग कमेटी दोपहर बाद २ बजे से शुरू हुई। पू० बापू आये। तेरह मेम्बर हाजिर थे। केवल राजेन्द्रबाबू व डा० महमूद गैरहाजिर थे। बापू ने वाइसराय से जो बातचीत हुई वह कही व अपने वर्तमान व्यक्तिगत सत्याग्रह की योजना वगैरा कही। विनोबा को प्रथम सत्याग्रही बनाने की बात तय हुई।

बापू के साथ सेवाग्राम जाना, जयपुर की स्थिति मोटर में बापू से कहना।

१२-१०-४०

वर्किंग कमेटी की मीटिंग सुबह ८ से १०॥। तक और शाम को २ से ७ बजे तक हुई।

दोपहर को बापू आये। व्यक्तिगत सत्याग्रह का खुलासा किया। चर्चा मे

ही अधिक समय गया।

बापू को पहुंचाने सेवाग्राम जाना। रास्ते में बातचीत। पानी बहुत जोर का आया। मोटर गीली हो गई। वापस आने पर कपड़े बदलने पड़े। प० जवाहरलाल से देर तक खानगी व सार्वजनिक बातें बन्द कमरे में होती रहीं।

मारवाड़ी शिक्षा मण्डल की कार्यकारिणी मीटिंग जाजूजी के घर हुई उसमें भाग लिया। रात के ११ बज गये। कोई जवाबदार व्यक्ति, जो हाईस्कूल विभाग की जवाबदारी ले सके, ढूंढने का निश्चय।

१३-१०-४०

विचार-विनिमय।

नागपुर मेल से बम्बई रवाना। कमल, दामोदर, साथ में। रास्ते में वृद्धिचन्द्रजी पोद्दार से बातें। दादाभाई से मिलना, थर्ड में सोना।

आज जयपुर में डायरी पुलिस ने वापस भेजी, वह मिली।

बम्बई, १५-१०-४०

दादर में लक्ष्मीनिवास बिड़ला, केशवदेवजी वगैरा आये।

बिड़ला हाउस में नेपियनसी रोड पर ठहरना।

डा० नेमली को कान दिखाना।

शान्ताबाई, लक्ष्मीनिवास के यहां थोड़ा आराम, फल वगैरा। बच्छराज कम्पनी के आफिस में जाना। बच्छराज फैक्टरी के बोर्ड की सभा हुई। डायरेक्टर व चेअरमेन पद का मेरा त्यागपत्र आग्रह-पूर्वक समझाने के बाद स्वीकार हुआ।

मुकुन्द आयरन से मेरा त्यागपत्र आगामी मीटिंग में स्वीकार हो जायगा।

१६-१०-४०

बच्छराज कम्पनी के आफिस में गोविन्दरामजी (फर्मः ताराचंद घनश्यामदास) पालीरामजी से पच्चीस सौ रु० लिये। शिक्षा मण्डल के हजार, प्रजामण्डल के पन्द्रह सौ रु०।

मथुरादासजी जमनादास अड्कीया तथा अन्य लोगों से बातचीत।

मुकुन्द आयरन से अपना त्यागपत्र मंजूर करवाया।

दादर से नागपुर मेल से वर्धा रवाना।

वर्धा, १७-१०-४०

पू० बापूजी से परवानगी लेकर मोटर से पवनार जाना।

पवनार में विनोबा के सत्याग्रह का प्रथम भाषण चल रहा था। बरसात चालू थी। करीब १०-१५ मिनट भाषण सुना। बाद में विनोबा के साथ जमना कुटीर में देर तक बातचीत विचार-विनिमय।

वर्धा—जानकीदेवी के पास भोजन। साथ में कृपलानी, पृथ्वीसिंह,

सुचेता, शारदा दाण्डेकर। बाद में वहीं पर आराम।
सेगांव—कृपलानी, सुचेता, किशोरलालभाई, गोपालराव के साथ जाना।
बापू से विनोबा के प्रोग्राम वगैरा की ठीक चर्चा की। विनोबा का
भाषण, जो महादेव भाई ने लिखा था, वह पूरा पढ़ा।
वर्धा—कृपलानी, सुचेता को भोजन कमला ने कराया। मैंने भी खिचड़ी
व साग आग्रह से खा लिया। बाद में चावल न खाने की बात याद
आई। थोड़ा बुरा लगा।
पवनार—विनोबा से बापू के साथ हुई बातें सब कहीं। विचार-विनि
होता रहा।

पवनार, १८-१०-४०

कुंदन (मनोहरजी के भाई) के साथ पैदल सुरगांव जाना। वर्षा
के कारण रास्ता खराब हो गया था। जाते-आते ६॥ मील पैदल च
हुआ। कुंदन से ठीक परिचय हुआ। सुरगांव में विनोबा का ठीक
बजे भाषण मंदिर में शुरू हुआ। सत्तर मिनिट (१ घंटा १० मिनिट)
करीब बोले। भाषण अच्छा हुआ। ठीक साफ सुनाई दिया। सुरग
ठहरना।
सीतारामजी माली, करीब सौ बरस के बूढ़े, से मिलना।
करीब ४ बजे वापस।
विनोबा से महिला आश्रम तथा व्याख्यान वगैरा पर चर्चा हुई।

१९-१०-४०

विनोबा के साथ बातचीत।
सेलू—विनोबा का भाषण ९ से १०-१० बजे तक ठीक हुआ। रचनात्म
कार्य व सफाई पर भी बोले। मैला भी भगवान का रूप है—खुलासा किया।
सेलू से वर्धा। महिला आश्रम की मीटिंग में जाना पड़ा। देर तक
विचार-विनिमय।
महिला आश्रम का सत्याग्रह में न पड़ने का निश्चय।

विनोबा मे पवनार मे प्रार्थना के समय तक विचार-विनिमय। उनके भाषण की समालोचना करना।

पवनार, सेवाग्राम, वर्धा, २०-१०-४०

सुबह विनोबा के साथ प्रार्थना। राधाकिसन से बातें।

पवनार से वर्धा—मंदिर मे विनोबा व जानकीदेवी से बातचीत करते रहे।

वर्धा से देवली। विनोबा का भाषण सुबह ९-१० से १०-२० बजे तक ठीक हुआ। दोपहर बाद डेढ बजे के एक्सप्रेस से वर्धा आना। महादेवभाई व कमला वगैरा से मिले।

सेवाग्राम—बापू से बातचीत, किशोरलालभाई व गोपालराव साथ मे। डा० हसन, डि० कां० चुनाव, सेगांव की जमीन ग्राम्य सघ के नाम पर चढवाना। जयपुर जाना, सत्याग्रह आदि बातें।

वर्धा, बम्बई रेलवे, २१-१०-४०

सुबह ५॥ बजे के करीब गोपालराव काले ने बताया कि विनोबा को रात्रि के ३॥ बजे डिफेन्स ऑफ इंडिया ऐक्ट मे गिरफ्तार करके मोटर से वर्धा लाये हैं।

सेवाग्राम, नागपुर वगैरा फोन किया।

विनोबा वर्धा जेल मे पहुंच गये, सुना।

वर्धा मे हड़ताल रखने की योजना, व्यवस्था, अन्य खबरें।

विनोबा से जेल में मिलकर सेवाग्राम आकर बापू से हकीकत कही।

बापू ने स्टेटमेंट का ड्राफ्ट बनाया।

अन्य बातें, बापू का मौन था, लिखकर दी।

महादेवभाई, राजकुमारी के साथ जेल मे विनोबा से मिलना। उन्होने स्टेटमेंट तैयार किया उसमे सुधार कर सुनना। विनोबा का ट्रायल हुआ। श्री कुन्टे मजिस्ट्रेट ने तीन अपराधो पर तीन-तीन महीने की सादी सजा दी। तीनों सजाए साथ-साथ चलेंगी।

बच्छराज भवन—काका साहब व डा० हसन आदि से मिलना।

नागपुर मेल से घर्ड में बिड़ला के साथ बम्बई रवाना।

बम्बई, २२-१०-४०

दादर उतरकर लक्ष्मीनिवास बिड़ला व केशवदेवजी के साथ बि

हाउस।

सरदार वल्लभभाई के यहाँ भोजन व बातचीत।

बच्छराज कम्पनी आफिस—चि० शान्ताबाई, श्रीनिवास, बड़ीदास

मेघराज, गंगाबिसन की उपस्थिति में चि० रमा व श्रीनिवास का वि

ता० ३० नवम्बर शनिवार को वर्धा में होना निश्चित हुआ।

रोज पहले घर के लोग आ जावेंगे। शाम को बिड़ला हाउस—लक्ष्मी

निवास, सुशीला, अनसूया के साथ घूमने जाना। मनुष्य—कर्तव्य

विचार-विनिमय देर तक होता रहा।

बम्बई, पूना, २३-१०-४०

चि० मदन रइया व कांता से मिलना। इनके सार्वजनिक क्षेत्र में का

पर विचार-विनिमय।

आफिस में इंडियन स्टेट पीपल्स कांफ्रेंस वाले बलवंतराय वगैरा

भवानजी दुलीरामजी से मिले। बातचीत, जिम्मेवारी।

श्रीनिवासजी बगड़का से मिलना। कल जयपुर की स्थिति पर बात

व जाहिर सभा होने का निश्चय।

सरदार से मिलना। उन्होंने बड़ौदा राजमाता के कागजों का खुलासा

किया।

पूना, बम्बई रेलवे, २४-१०-४०

पूना—महारानी चिमणबाई साहब के सेक्रेटरी डा० नवल से मिले। उनसे

बातचीत। बाद में राजमाता से बातचीत। उनके प्रश्नों का खुलासा।

न्हें मिलने से लाभ वगैरा समझ में आये।

ेर साहब, आबिद अली से मिलना।

रदार से मिलकर बड़ौदा राजमाता के विचार कहे।

रवाड़ी चेम्बर में जयपुर के मुख्य व्यापारियों से मिले। वहाँ की स्थिति

से देर लगी। खेतवालो की थोडी नुकसानी भी हुई। बुरा लगा।
दंडा नाई काशी का वास वाले को दो रुपये, दोनो जीवे वहां तक, एक
जीवे तो एक की मासिक सहायता के लिए कहा। एक अंधा बनाई का
लडका उसे एक रु० मासिक देने को कहा।

सीकर, २८-१०-४०

सुलतानसिंह से बातचीत। उसे काशी का वास की पाठशाला शिक्षा
मण्डल के अधीन होने वाली है, कह दिया। वह प्रजामण्डल में काम
करने को तैयार है, कहा। हीरालालजी शास्त्री से उसकी बात करा दी।
राजेन्द्रबाबू से वकिंग कमेटी की चर्चा विस्तार से कही।
हीरालालजी शास्त्री से जयपुर राज्य प्रजामण्डल की वर्तमान स्थिति
दया-जनक (असंतोषकारक) है, उस पर मैंने अपने विचार कहे। वह
आज तो रामगढ सुव्रता देवी के पास गये हैं। वापस आने पर अधिक
बातचीत होगी।

२९-१०-४०

लुहारगल सीकर से बीस मील की दूरी पर है। वहां मोटर-लारी से
पू० राजेन्द्रबाबू, मथुराबाबू, विद्याभूषण शुक्ल, मा, केशर वगैरा साथ
गये।
करीब चार मील पैदल चलना पड़ा।
लुहारगल कुण्ड मे स्नान किया। मा व राजेन्द्रबाबू को स्नान करवाया।
यहां का दृश्य अच्छा लगा। शाम को सब सीकर वापस आये।

३०-१०-४०

महामन्दिर का म्यूजियम देखा। राजेन्द्रबाबू, मथुराबाबू, विद्याभूषण
शुक्ल साथ थे।
सागरमल बियाणी से बातचीत। कमरे के पीछे की जमीन मोरा छो-
कर साढे सात-आठ हजार रुपये आ सके तो लेने को कहा।
वर्धा से दामोदर का तार आया। कृष्णराव (नाना) कुलकर्णी
कोल्हापुर में मृत्यु हो गई। दुःख हुआ, बुरा मालूम देता रहा।

स्वामी (दादूपंथी), व्यायाम शिक्षक, शतरंज ठीक खेलते हैं। एक-दो बाजी खेली। एक बार मात हुई।
राजेन्द्रबाबू के साथ दीपावली की रोशनी सीकर शहर में घूमकर देखी।

सीकर-जयपुर, ३१-१०-४०

जयपुर जाने की तैयारी ६-५० के अर्द्ध से।
राजेन्द्रबाबू, मथुराबाबू, विद्याभूषण शुक्ल साथ में।
गोविन्दगढ़ में देशपाण्डे वगैरा मिले।
जयपुर में न्यू होटल आये।
राजेन्द्रबाबू वगैरा तो म्यूजियम आदि देखने चले गये।
जयपुर प्रजामण्डल के मुख्य कार्यकर्ताओं के साथ बहुत देर तक ज० प्र० की स्थिति पर बातें। मिश्रजी, हरिश्चन्द्रजी वगैरा के त्यागपत्र। कोई भी जिम्मेवारी से काम करने के लिए तैयार नहीं, यह स्थिति बरदाश्त नहीं हो सकती वगैरा साफतौर से चर्चा होते समय मैंने कही, और यह कि मैं सभापति नहीं रहना चाहता। खूब गम्भीर चर्चा होती रही। मेरा मन अब ज्यादा हट गया है, कहा।
आजाद चौक में जाहिर सभा राजेन्द्रबाबू के स्वागत में हुई। राजेन्द्रबाबू ठीक बोले।

जयपुर-वनस्थली, १-११-४०

रात्रि को प्रजामण्डल के बारे में जो बातचीत हुई थी, उसका मन में सोच-विचार। मुख्य कार्यकर्ताओं में जिम्मेवारी की बहुत कमी देखकर दुःख व विचार होता रहा।
प्रजामण्डल वर्किंग कमेटी के मुख्य-मुख्य सदस्य, जैसे हीरालालजी शास्त्री, टीकारामजी, कर्पूरचन्द्रजी, हरिश्चन्द्रजी, मिश्रजी, हंसराज के सामने मैंने कल रात को जो कुछ कहा था उस पर उन्होंने जो अपनी राय थी वह बतायी, याने, इनकी राय यही रही कि मेरा इस समय त्यागपत्र प्रजामण्डल से देना ठीक नहीं रहेगा। मिश्रजी की राय थोड़ी

से देर लगी। खेतवालों की थोड़ी नुकसानी भी हुई। बुरा लगा।
रुंडा नाई काशी का बास वाले को दो रुपये, दोनों जीवे वहां तक, एक जीवे तो एक को मासिक सहायता के लिए कहा। एक अंधा बलाई का लड़का उसे एक रु० मासिक देने को कहा।।

सीकर, २८-१०-४०

सुलतानसिंह से बातचीत। उसे काशी का बास की पाठशाला शिक्षा मण्डल के अधीन होने वाली है, कह दिया। वह प्रजामण्डल में काम करने को तैयार है, कहा। हीरालालजी शास्त्री से उसकी बात करा दी।
राजेन्द्रबाबू से वर्किंग कमेटी की चर्चा विस्तार से कही।
हीरालालजी शास्त्री से जयपुर राज्य प्रजामण्डल की वर्तमान स्थिति दया-जनक (असंतोषकारक) है, उस पर मैंने अपने विचार कहे। वह आज तो रामगढ सुव्रता देवी के पास गये हैं। वापस आने पर अधिक बातचीत होगी।

२९-१०-४०

लुहारगल सीकर से बीस मील की दूरी पर है। वहां मोटर-लारी से पू० राजेन्द्रबाबू, मथुराबाबू, विद्याभूषण शुक्ल, मा, केशर वगैरा साथ गये।
करीब चार मील पैदल चलना पड़ा।
लुहारगल कुण्ड में स्नान किया। मा व राजेन्द्रबाबू को स्नान करवाया। यहां का दृश्य अच्छा लगा। शाम को सब सीकर वापस आये।

३०-१०-४०

म्यूजियम देखा। राजेन्द्रबाबू, मथुराबाबू, विद्याभूषण

।। से बातचीत। कमरे के पीछे की जमीन नोरा होर-
... रुपये आ सके तो लेने को कहा।
आया। कृष्णराव (नाना) कुलकर्णी को
ल हुआ, बुरा मालूम देता रहा।

स्वामी (दादूपंथी), व्यायाम शिक्षक, शतरंज ठीक खेलते हैं। एक-दो बाजी खेली। एक बार मात हुई।
राजेन्द्रबाबू के साथ दीपावली की रोशनी सीकर शहर में घूमकर देखी।

सीकर-जयपुर, ३१-१०-४०

जयपुर जाने की तैयारी ६-५० के अर्से से।
राजेन्द्रबाबू, मथुराबाबू, विद्याभूषण शुक्ल साथ में।
गोविन्दगढ़ में देशपांडे वगैरा मिले।
जयपुर में न्यू होटल आये।
राजेन्द्रबाबू वगैरा तो म्यूजियम आदि देखने चले गये।
जयपुर प्रजामण्डल के मुख्य कार्यकर्ताओं के साथ बहुत देर तक ज० प्र० की स्थिति पर बातें। मिश्रजी, हरिश्चन्द्रजी वगैरा के त्यागपत्र। कोई भी जिम्मेवारी से काम करने के लिए तैयार नहीं, यह स्थिति बरदाश्त नहीं हो सकती वगैरा साफतौर से चर्चा होते समय मैंने कही, और यह कि मैं सभापति नहीं रहना चाहता। खूब गम्भीर चर्चा होती रही। मेरा मन अब ज्यादा हट गया है, कहा।
बाजार चौक में जाहिर सभा राजेन्द्रबाबू के स्वागत में हुई। राजेन्द्रबाबू ठीक बोले।

जयपुर-वनस्थली, १-११-४०

रात्रि को प्रजामण्डल के बारे में जो बातचीत हुई थी, उसका मन में सोच-विचार। मुख्य कार्यकर्ताओं में जिम्मेवारी की बहुत कमी देखकर दुःख व विचार होता रहा।
प्रजामण्डल वकिंग कमेटी के मुख्य-मुख्य सदस्य, जैसे हीरालालजी शास्त्री, टीकारामजी, कर्पूरचन्द्रजी, हरिश्चन्द्रजी, मिश्रजी, हुसराव के सामने मैंने कल रात को जो कुछ कहा था उस पर उन्होंने भी अपनी राय दी वह बतायी, याने, इनकी राय यही रही कि मेरा इस समय त्यागपत्र प्रजामण्डल से देना ठीक नहीं रहेगा। मिश्रजी की राय थोड़ी

मदालसा, तारा वगैरा से मिलना। काका साहब, श्रीमन, दामोदर से बातचीत।

वर्किंग कमेटी की बैठक सुबह। आपस में खानगी चर्चा। राजेन्द्रबाबू, कृपलानी, ११ बजे आये। मीटिंग ठीक समय, २ बजे शुरू हुई। बापू भी आये। ठीक तौर से चर्चा, विचार-विनिमय हुआ। आसफअली व सरदार पटेल की झड़प हो गई। बुरा मालूम दिया। असेम्बली में बजट का विरोध करते रहने का निश्चय हुआ। बापू ने अपना प्रोग्राम तय करने को कहा।

आपस में देर तक बातचीत, विचार।

६-११-४०

आज बापू ने फिलहाल तो उपवास करने की बात छोड़ दी। यह सूचना किशोरलालभाई ने दी। मौलाना व पन्तजी से बातचीत। कांग्रेस वर्किंग कमेटी की बैठक सुबह व शाम को हुई।

बापू ने वर्किंग कमेटी के सदस्य व आल इंडिया असेम्बली मेंबरों को कुछ शर्तों के साथ परवानगी देने का विचार प्रगट किया।

मास (सामूहिक) सत्याग्रह की जो गलत बातें फैल गईं, उसके लिए दामोदर, महोदय, सेर व आबिदअली, राधाकिसन की पेशी हुई। कृपलानी का व्यवहार ठीक नहीं था। बुरा तो लगा, परन्तु सहन करने के सिवाय उपाय नहीं था।

पूनमचन्द रांका नागपुर में गिरफ्तार हुए, यह खबर आई है।

भाऊराव खरे की रात्रि को मृत्यु हो गयी, सुनकर दु:ख हुआ।

सेवाग्राम, वर्धा ७-११-४०

सेवाग्राम—डा० सुन्दरम् (ब्राह्मण कन्या) का श्री रामचन्द्रन नायर (त्रावणकोर वाले) के साथ विवाह हुआ। सुन्दरम् के माता-पिता की आज्ञा नहीं थी। उनका आशीर्वाद भी नहीं मिला था उसे।

पू० बापूजी व बा ने कन्यादान किया। श्री परचुरे शास्त्री ने विवाह

करवाया। राजगोपालाचारी, मौलाना वगैरह मौजूद थे। माता-पिता का आशीर्वाद नहीं मिला, देखकर मन मे बुरा लगता रहा।
वर्किंग कमेटी की मीटिंग सुबह व शाम को हुई व आज समाप्त हुई।
ब्रह्मदत्त पंजाब वाले का सत्याग्रह चौकी के पास देखा। नया तरीका दिखा। सरकारी अफसर हैरान थे।
बापू ने प्रेस रिपोर्टरों को सन्देश दिया।
सरदार, भूलाभाई, राजेन्द्रबाबू, शंकरराव वगैरा गये।
गांधी चौक में सार्वजनिक सभा हुई। गोपालराव काले सभापति थे। मैंने भी भाषण दिया। सभा ठीक थी। देखें, क्या परिणाम होता है। पंतजी वगैरा थे। भाषण सभी साधारणतया ठीक हुए।

८-११-४०

सेवाग्राम—बापू से चर्खा संघ की थोड़ी बातें।
शरद पारनेरकर का विवाह प्रभाकर माधवे उज्जैन वाले के साथ हुआ। बापूजी की उपस्थिति मे।
चर्खा संघ की सभा मे जाना—सुबह व दोपहर को। आज चर्खा संघ की सभा मे कोशिश करने पर मेरा त्यागपत्र ट्रस्टी व खजांची और राजस्थान मे एजेन्ट के नाते बहुत चर्चा के बाद बापूजी की मदद से स्वीकार हुआ।
गंगाधर रावजी देशपाण्डे का भी स्वीकार हुआ।
श्री गोविंदवल्लभ पन्त शाम को गये। राजाजी, पट्टाभि सरोजिनी भी गईं।
बापूजी से मिलना। गांधी सेवा संघ की बातचीत।

९-११-४०

मौलाना आजाद आज ग्रान्ड ट्रंक एक्सप्रेस से दिल्ली गये, कराची जाने के लिए उन्हें स्टेशन पहुंचाना।
चर्खा संघ की सभा मे पू० बापूजी आये। मैं भी कुछ समय के लिए गया।

बापूजी के साथ रेलवे फाटक पर पैदल जाना। उन्होंने सतीशबाबू व अण्णा पटवर्धन से जो बातें की थीं, समझीं।
डूंगरी० राय—आगरा-जयपुर वाली मोटर लेकर आज यहां ११ बजे करीब पहुंच गये। मोटर ५८० मील करीब २३-२४ मील प्रति गैलन से चली।
सेवाग्राम—बृजलाल बियाणी, रविशंकरजी शुक्ल, गोपालराव काले आदि से बापू की बातों व मंत्रणाओं का खुलासा।
जयपुर महाराज के लिए पत्र का मसविदा तैयार हुआ।

११-११-४०

नागपुर कांग्रेस कार्यकर्ताओं से ठीक-ठीक बातचीत।
आज जयपुर महाराज व उदयपुर प्राइम मिनिस्टर सर विजय राघवाचारी को पत्र भेजे। जयपुर महाराज को सेक्रेटरी के मार्फत।

बम्बई, १२-११-४०

दादर उतरकर डा० जसावाले की नेचर क्योर क्लीनिक में केशवदेवजी के साथ आये। श्री जानकीदेवी से बातचीत। मेरा भी वहीं रहने का निश्चय हुआ।
आफिस में २॥ से ५ बजे तक बैठना। हिन्दुस्तान हाउसिंग कम्पनी व नागपुर बैंक से त्यागपत्र दिये।

१३-११-४०

सुबह आबिद अली के घर 'वर्तमान' पत्र देखा। असेम्बली में कांग्रेस पार्टी का डिबेट ठीक रहा। कयूम फ्रन्टियर वालों ने कहा : 'काउ कम्स इकी गोज—' उनकी यह दलील जर्मनी-इटली के सम्बन्ध में थी।
पैदल घूमना। बिड़ला हाउस तक आबिद अली, बृजमोहन, लोयलका, वासुदेव वगैरा, और वापस आते समय लक्ष्मीनिवास व सुशीला बिड़ला साथ में थे। बातचीत वर्तमान स्थिति पर।
गोपालदासजी मोहता मिलने आये। नागपुर बैंक व गोविंदराम सेकसरिया कालेज के बारे में। वर्धा में उनकी जो टेकड़ी है, वह जमीन देते

के लिए बातचीत हुई। मोहताजी जल्दी ही देखकर निश्चय करेंगे।
श्री रामदत्तजी गनेडीवाल की मृत्यु मोटर एक्सीडेन्ट से, पूना के आगे हो गयी, सुनकर दुःख हुआ।

१६-११-४०

आफिस—स्टेट पीपुल्स कान्फ्रेंस की स्टैंडिंग कमेटी की बैठक हुई।

१७-११-४०

महादेवभाई से दादर स्टेशन पर मिलना। थोड़ी बातचीत। अहमदाबाद जाने का निश्चय।
श्री गोविन्दरामजी से, माखनलाल सेकसरिया से शिक्षा मण्डल, वनस्थली व उनके और पृथ्वीराज जवाहरमल के झगड़े के सम्बन्ध में देर तक बातचीत। दोपहर को आफिस में भी गोविंदरामजी, जवाहरमलजी, बृजमाल, रामदेव वगैरा आये। बहुत देर तक, दो घंटों से ज्यादा, आपस की सब बातें समझी।
स्टेट पीपुल्स कान्फ्रेंस की कमेटी का काम पूरा हुआ।
गुजरात मेल से अहमदाबाद रवाना।

अहमदाबाद, १८-११-४०

नडियाद में मानाभाई पटेल ने खबर दी कि सरदार को अहमदाबाद मे ...ज को ११ बजे गिरफ्तार कर ले गये।
अहमदाबाद—स्टेशन पर जो आये थे, उन्हीं की मोटर से रास्ते मे महादेवभाई से मिलते हुए साबरमती आश्रम आये। वहां मिलना-भेंटना, सरदार से मिलने का पत्र भेजा। जेल सुपरिन्टेन्डेन्ट ने कलेक्टर का नाम लिया कि उन्होंने मुझे राजनैतिक आदमी होने से इजाजत नहीं दी। आश्रम के लोगों से परिचय, बातचीत हृदय-कुंज मे हुई।
आश्रम मे मोरारजीभाई देसाई, मणीबेन, रविशंकर शुक्ल, निर्मलाबेन वगैरा मिले। प्रोग्राम की बातचीत—आज की सभा मे मेरी इच्छा बोलने की थी। आखिर, फैसला हुआ हुआ, मोरारजीभाई ही बोलेंगे।
गुजरात विद्यापीठ मे मिलना।

सार्वजनिक सभा में जाना। सभा बहुत बड़ी थी। आज शहर में हड़ताल थी। मिलें भी सब बंद थी। सभा में खूब शान्ति थी। मोरारजी भाई ठीक बोले। अम्बालाल भाई के घर भोजन। सरला बहन, डा० अरुंडेल, रुक्मिणी देवी आदि से परिचय। रात को बम्बई वापस आये।

बम्बई, १९-११-४०

श्री वल्लभजी खेमका चूरूवालों का शरीर आज चूरू में बरत गया। डा० लतीफ रजबअली के दवाखाना (डूंगरी) पर खुलासा करना। सभापति की हैसियत से डा० रजबअली के जूने मित्र व ग्राहक ही आते हैं। आफिस—जगजीवन, उत्तमसी, मूलजी से स्टेट पीपुल्स के बारे में बातचीत। वह एक हजार की जिम्मेवारी तो लेने को तैयार ही थे, पर केशवदेवजी से मिलकर तीन हजार की जिम्मेवारी ली गई।

२०-११-४०

श्री मणीबाई, चंदूलाल नाणावटी से मिलना। उन्हें हिम्मत से सेवाकार्य करते रहने को कहना।

बिड़ला हाउस, वहीं भोजन, रामेश्वरजी व घनश्यामदासजी से प्रजा-मण्डल तथा कांग्रेस आदि की देर तक बातचीत।

२१-११-४०

विले पारले में आयोजित श्री शेर साहब की मीटिंग में जाने की तैयारी। इतने में शेर साहब का फोन आया कि उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया है। बाद जाकर शेर साहब से मिलना। उन्हें विदा। बाद में श्री बाले-कर से मिलना। वह भी गिरफ्तार हुए थे। उनके पिता ने संस्कृत के श्लोक बोलकर गदगद हृदय से आशीर्वाद प्रदान किया।

विले पारले की छावनी में शेर साहब की गिरफ्तारी के कारण सभा में सभापति व मुख्य कार्यकर्ता के नाते मैं ठीक बोला। किशोरलालभाई वगैरा बहुत-से मित्र लोग थे। उत्साह खूब था। भाषण में शेर साहब के हाथ, प्लेग के उदाहरण भी दिये।

बापू का तार मिला। बहुत जल्दी में रात को एक्सप्रेस से रवाना,

विठ्ठल के साथ यहां से वर्धा रवाना।

२२-११-४०

मुसावल में दीपचंदजी उतरे। अकोला मे बृजलालजी की स्त्री, लड़का वगैरा मिलने आये। लड़को को साथ ले लिया। मोतिजापुर—तेल का साग व फुलके का भोजन किये। मोतीलाल गाडोदिया व दुलीचन्द धामणगांव वाले के साथ बातचीत। मगनलाल गोविंदप्रसाद गनेडीवाल के बारे में स्थिति कही।

सेवाग्राम—बापू से मिलना, बातचीत। उन्होने दिवाकर कर्नाटक वालो से जो बातें कीं, वे समझी। चीन के जो बड़े लोग आने वाले थे, उनकी व्यवस्था की।

चीन के डेपुटेशन मे H. H. Tai Chi Tao वगैरा सात चीनी ग्रान्ड ट्रंक से आये। उनका स्वागत किया। घर पर इन्हें उतारा। भोजन वगैरा साथ में नीचे बैठाकर किया। बाद मे बातचीत।

चीन की स्थिति। जापान का बर्ताव व ताइ चौ ताओ का परिचय वगैरा।

चीन के नीचे लिखे सज्जन पू० बापू से मिलने आये :

J K. Tseng

Administrative Vice Minister of Foreign Affairs.

Prof. Ango Tai (son of Tai Chi Tao)

Chief Engineer (Mechanical), Department Govt. Arse

Tsung-Lien Sheu (Secy. to H.E.)

Counsellor Supreme Council of National Defence

S. H. Sheon

Vice Counsel Chungking

Tsating T. Shau

Vice Counsel of the Republic of China

Prof. Tan Yun Shan

Santiniketan.

२६-११-४०

स्टेशन। भूलाभाई देसाई, लक्ष्मीनिवास बिड़ला, सुशीला वगैरा आये। भूलाभाई का स्वागत। किशोरलालभाई, गोमती बहन भी आई।

लक्ष्मीनिवास ने महादेवभाई के फोन से घनश्यामदासजी को जो गलतफहमी हुई, वह बतायी। मैंने जो बात कही नहीं, वह समझ में भूल के कारण हुई, देखकर बुरा लगा। लक्ष्मीनिवास स्थिति समझ गया। खुलासा किया।

राजमलजी, सुगनचद से नागपुर बेंक के लिए वर्धा मे प्लाट वगैरा के बारे मे बातचीत।

श्री मथुरादासजी मोहता, रा० ब० छोटेलालजी वर्मा, पुखराजजी कोचर, राजमलजी, सुगनचन्द आदि से नागपुर बेंक से सम्बन्ध मे बातचीत, चेअरमैन व डायरेक्टर पद से अपना त्यागपत्र स्वीकार करने का मेरा आग्रह रहा।

गांधी चौक मे मेरे सभापतित्व मे श्री भूलाभाई देसाई का जाहिर व्याख्यान [illegible] कांग्रेस पार्टी और वर्तमान नैतिक स्थिति पर ठीक

खुलासा हुआ।
भूलाभाई गये, सत्यमूर्ति आये।

२७-११-४०

गोपबन्धु चौधरी से अन्नपूर्णा के बारे में बातें।
डाह्याभाई व पाशाभाई पटेल बम्बई से आये। पाशाभाई अमेरिका जा रहे हैं।
डा० गिल्डर व जीवराज मेहता बम्बई से पू० बापू को देखने आये। सेवाग्राम गये। मेल से वापस बम्बई गये।
लक्ष्मीनिवास, सुशीला वगैरा मगनवाड़ी देखकर आये।
चर्खा। सुशीला बिड़ला से सगाई, सम्बन्ध वगैरा के बारे में बातचीत।
सेवाग्राम। पूज्य बापूजी की हृदय की स्थिति व ब्लड प्रेशर ठीक था। कमजोरी भी। कुछ समय तक आराम से रहना जरूरी बताया। मैंने प्रोग्राम के बारे में बापू से बातचीत की। उन्होंने कहा, तुम्हें प्रान्त में घूमना, मीटिंग करना जरूरी मालूम होता हो तो तुम खुशी से वैसा कर सकते हो। सत्याग्रह करना हो तो सेवाग्राम से या तुम्हारी इच्छा हो वहां से कर सकते हो।
श्री सत्यमूर्ति मद्रास वाले का गांधी चौक में भाषण हुआ। सभापति बने दादा धर्माधिकारी ने उसका सुन्दर तर्जुमा किया।

२८-११-४०

प्रभुदयालजी, रामकुमारजी के साथ नालवाड़ी, काका साहब, महिला आश्रम वगैरा घूमकर आना।

२९-११-४०

स्टेशन। बम्बई से चि० रमा के विवाह की बारात मेल से आई। श्री सुव्रता देवी, मदन, कान्ता, सुशील, माधो, केशव, भीमराज वगैरा सेकण्ड क्लास टिकिट।
गेस्ट हाउस (बंगले) पर बारात की व्यवस्था।

महिला सेवा मण्डल की कार्यकारिणी की बैठक हुई।
गोपालदासजी मोहता के मुनीम हिंगणघाट वाले व अकोला वाले मिले।
टेकड़ी की जमीन व महिला आश्रम के खेत के बारे में बातचीत।

३०-११-४०

शान्ताबाई के साथ जानकीदेवी से मिलकर आना। जानकीदेवी के स्वास्थ्य व मानसिक चिन्ता का मन पर थोड़ा असर हुआ।
लक्ष्मीनारायणजी गाडोदिया, सुव्रताबाई रुइया से बातचीत।
मौलाना आजाद, कृपलानी वगैरा से विनोद।
नागपुर से डा० जवाहरलाल रोहतगी कानपुर वालों के लड़के राजेन्द्र का विवाह करके २५-३० आदमी यहां आये।
रमा का विवाह सानन्द संतोषकारक तौर से हुआ।

१-१२-४०

सुव्रता बहन को पवनार, मगनवाड़ी, सेवाग्राम दिखाया व माधो की माता को भी।
मौलाना आजाद का आज मेरे सभापतित्व में गांधी चौक में जाहिर भाषण हुआ।
मारवाड़ी शिक्षा मंडल की देर तक मीटिंग हुई—रात के ११ बज गये।

२-१२-४०

मौलाना आजाद से मिलना। बातचीत। सुव्रता बहन का परिचय।
स्टेशन पहुंचना।
हिंदी कम्पनी लिमिटेड व जमनालाल सन्स लिमिटेड के बोर्ड की मीटिंग बंगले पर हुई।
आज पवनार, सेवाग्राम, सुव्रताबहन के साथ जाना। प्रार्थना में शामिल होना। बापू का मौन था।
मारवाड़ी शिक्षा मंडल की स्थगित सभा का कार्य रात को १०॥ बजे तक होता रहा। श्री भिडे, दामले, तामहने, घोरपडे जिम्मेवारी लेने को तैयार मालूम हुए, देर तक विचार-विनिमय होता रहा।

३-१२-४०

सेवाग्राम में बापू से मिलना।

रमा-श्रीनिवास के विवाह में १०१ रु० भेंट। गुप्ता बहन वगैरा मिले। बापू से सत्याग्रह व्याख्यान के विषय व पृथ्वीसिंह के बारे में बातचीत। मारवाड़ी शिक्षा मण्डल की बैठक आज देर तक होती रही। दादा धर्माधिकारी ने संस्थाओं के उद्देश्य का जो मसविदा मेरे कहने पर बनाया था, उस पर ठीक चर्चा हुई। उसे अध्यापकों को भेजने का निश्चय हुआ।

वर्धा-नागपुर, ४-१२-४०

नागपुर जाने की तैयारी। भोजन-विनोद। कई मित्रों को लगता था कि सरकार मुझे पूरा दौरा नहीं करने देगी, इसलिए जानकीदेवी वगैरा ने बिदा दी।

नागपुर—स्टेशन से धम्पकर मेमोरियल की जगह के सामने के होल में कार्यकर्ताओं की सभा में जाना। ठीक कार्यकर्ता जमे थे। बातचीत, प्रश्न-उत्तर भी ठीक हुए। ३॥ से ५ बजे तक।

नागपुर टाउन हाल की जाहिर सभा में ६॥ बजे पहुंचना। गोपालराव काले के सभापतित्व में व्याख्यान हुआ। सभा साधारणतः ठीक थी। लोगों में शिस्त (अनुशासन) भी ठीक थी। व्याख्यान साधारणतया ठीक हुआ।

वर्धा, नागपुर, रामटेक, कामठी, ५-१२-४०

नलिनी के विचार आदि जाने। वह साफ बोलने वाली बहादुर, होनहार महिला मालूम हुई।

लक्ष्मीनारायण मंदिर कई जगहों में फट गया, कमानें कमजोर होने के कारण। श्री वझे इंजीनियर नागपुर, चोपड़ा, पी० डब्ल्यू इंजीनियर, वर्धा व गुलेटीजी इंजीनियर के साथ ठीक तौर से देखभाल की। वझे इंजीनियर व गुलेटीजी की सूचना (मतव्य) विचार करने योग्य लगी। आठ-दस हजार रुपये खर्च होंगे।

मोटर से डेढ़ बजे चि० उमा, विट्ठल के साथ व्याख्यान के दौरे पर निक-

वर्धा-नागपुर-केलोद-सावनेर ७-१२-४०

प्रातः—बापू से बातें हुईं बातचीत, जमीन, आर्यनायकम्, प्रान्त दौरा आदि।

[illegible] गार्डी वगैरा मिले।

नागपुर से पहले केलोद जाना। वहां जाहिर भाषण, भिकूलालजी चांडक को सत्याग्रह करने के लिए बिदा दी।

सावनेर—जाहिर भाषण हुआ। नागपुर से वर्धा

वर्धा, ८-१२-४०

दादा धर्माधिकारी के साथ मध्यभारत विद्यालय संचालन सर्वोदय सत्याग्रह, प्रताप व्यायामशाला आदि पर विचार-विनिमय।

बापू ने सेवाग्राम बुलवाया। जलियांवाला बाग ट्रस्ट के बारे में विचार-विनिमय। श्री मुखर्जी को चैक सही करके दिया। मैंने ट्रस्ट में नाम बदलने को कहा।

सेवाग्राम जमीन की बिक्री बापू की इच्छा मुजब करने को आर्यनायकम् से कहा।

मसाला—गनपतिराव तापस वाडेवाला का साथ चालीस हजार के कर्ज

मे पाया। मेनी कम्पनी का पच्चीस हजार में दिया। यह नया ... बगाला है। जगह रमणीक व ठीक मालूम दी। कुओं में पानी ठीक है। मुकरजी ने जमियोवामा बाग ट्रस्ट के कागजों पर सही किया। ... का पत्र देना। महिला आश्रम व शिक्षा मण्डल का कालेज के बारे में ... तक विचार-विनिमय।

सेवाग्राम, नागपुर, मरोल उमरेड, ९-१२-४०

सेवाग्राम—पैदल। आनन्दनायकम् (आर्यनायकम् का पुत्र) की समाधि का स्थान टेकड़ी पर देखा। श्री आशा बहन व आर्यनायकम् की भावना, प्रेम देखकर थोड़ा आश्चर्य भी हुआ। उनसे मिलना, बातचीत। अपने ... के भाव कहे। आर्यनायकम् की भूल बताई। मेरी समझ में ठीक हुआ ... हो गया। मेरा भी दिल भर आया था। मुझे भी अपने विचारों में परिवर्तन करना पड़ा। इन दोनों को वहां समाधि-स्थल पर शांति ... शांति मिलती है।

रजिस्ट्रार के यहां कलकत्ते में मूलेश्वर की जमीन टी० पी० के लि... दान दी। उसका मुख्तयारपत्र रजिस्टर कर दिया।

उमरेड में कांग्रेस की हालत बहुत खराब दिखाई दी। वहां से बाद आकर नागपुर में धमतोली के गोता मैदान में भाषण हुआ।

नागपुर-तुमसर, भण्डारा, १०-१२-४०

हार्वेसिंग कम्पनी का मकान ठीक तौर से सबको दिखाया। सावित्री ने चालीस हजार कीमत लगाई। जमीन छोड़कर कमला ने पच्चीस-तीस हजार का अंदाज किया। रामकृष्ण ने कीमत पच्चीस हजार जमीन छोड़कर लगाई। जब उन्हें अठारह-बीस हजार की बात कही तो आश्चर्य हुआ।

नागपुर से मेल ...
करना

विद्यालय का निरीक्षण ... में ठीक प्रगति ... थे।

एक घंटे पाच मिनिट

बोला। श्री पूनमचन्दजी रांका पर जो चार्ज लगाया, उन्ही सातो कलमो का खुलासा किया। भाषण ठीक हुआ।
भंडारा—जाहिर सभा ठीक थी। ८॥ से १० बजे तक हुई। भाषण ठीक हुआ।

भंडारा, साकोली, गोंदिया, ११-१२-४०

श्री जगातदार एम० एल० ए० मिलने आये। उन्होने अपनी इच्छा से इस सत्याग्रह मे भाग लेने की इच्छा अन्तःकरणपूर्वक बतलाई। कहा, मैंने दिल्ली में व नागपुर मे शपथ-प्रतिज्ञा की थी। एम०एल०ए० के नाते मुझे इजाजत मिलनी चाहिए। मिश्र के बारे मे कहा, अगर हमे कोर्ट के सामने काम पड़े तो जो बातें उनके खिलाफ लिखी हैं, उन्हें सिद्ध कर सकते हैं। इसलिए नैतिक दृष्टि से मैं उनसे माफी कैसे माग सकता था, वगैरा। मैंने उनकी गलती समझाई। अनुशासन का महत्व वगैरा भी बताया। वह उन्होंने कबूल किया।
सामगी हाईस्कूल सोसायटी, गोंदिया की ओर से चलती है उसे देखना। खादी भण्डार भी। बाद मे कार्यकर्ताओ की सभा मे प्रश्न-उत्तर, शंका-समाधान।
गोंदिया की म्युनिसिपैलिटी ने मान-पत्र दिया। सभारंभ ठीक रहा। जाहिर भाषण ठीक एक घंटा पच्चीस मिनिट हुआ।

गोंदिया, पोनी, आरमोरी, ब्रह्मपुरी, १२-१२-४०

गोंदिया से भण्डारा ६२, भण्डारा से पोनी ३८ मील।
पोनी मे जाहिर सभा २॥ बजे से ३॥ बजे तक हुई। लोग ठीक जमे थे। मैं आध घंटा बोला।
पोनी से आरमोरी, ब्रह्मपुरी होकर गये। चालीस मील।
आरमोरी—वहा के वातावरण मे जनता का खूब उत्साह था। जलूस आदि। चर्खा संघ का कार्यालय देखा। कार्य ठीक मालूम दिया। जाहिर सभा ठीक हुई। बाद मे ब्रह्मपुरी मे जाहिर सभा ८ बजे शुरू हुई। करीब एक घंटा बोलना हुआ। हिन्दू सभा, वगैरा नये विषयो पर भी।

चांदा, १३-१२-४०

ब्रह्मपुरी का हरिजन बोर्डिंग (छात्रावास) देखा।

नागभीड में स्वागत हुआ। गोपालरावजी वगैरा द्वारा तलोधी मे हुए स्वागत मे भी थोड़ा बोला।

सीन्देवाई मे स्वागत, झण्डावन्दन, थोड़ा व्याख्यान।

राजोरी मे स्वागत।

मूल मे स्वागत। जाहिर सभा ठीक हुई। उत्साह मे ७० मिनिट बोला।

चांदा की मीटिंग व जाहिर सभा मे एक घटा भाषण दिया।

दत्तजयंती, १४-१२-४०

चान्दा मे सिरेमिक्स (पॉटरी) का निरीक्षण किया।

चान्दा से २ बजे के करीब मोटर से रवाना। डिप्टी कमिशनर की इजाजत लेकर फारेस्ट रोड होते हुए ताडोबा तालाब देखा। दृश्य सुन्दर था। रास्ता थोडा खराब था।

चिमूर जाना। उत्साह से ठीक सभा हुई। वहा से वरोरा। वरोरा में ८॥ बजे जाहिर सभा हुई। सभा साधारणतया ठीक थी।

वरोरा-वर्धा, १५-१२-४०

वरोरा से ग्रान्ड ट्रंक से वर्धा के लिए रवाना।

बंगले पर जल्दी तैयार होकर नवभारत विद्यालय मे महादेवभाई का भाषण सुना।

सेवाग्राम —श्री सरोजिनी नायडू, महादेवभाई, काका साहब, गोपालराव काले के साथ जाना। वहीं भोजन किया। बापू को दौरे का सार कहना। सेवाग्राम के चौक से ता० २१ को सुबह ६ बजे सत्याग्रह करने का निश्चय हुआ। श्री परचुरे शास्त्री से, जो अन्न व जल के बिना उपवास कर रहे हैं, मिलना।

वर्धा तालुका के कार्यकर्ताओं से देर तक बातचीत। खादी प्रचार के बारे में।

श्री सरोजिनी नायडू, लाला दुलीचंद गये।

नागवारी मे—ठाकुरों बाबा साहब, बालूजकर [illegible] से बात-चीत। सब समस्याओं का एक ही [illegible] था, इस विषय पर मैंने अपने विचार कहे। बाद में श्यामदास शाह से बातचीत।

ज़ायदार वकील (भण्डारा वाले) आये, मोटर से। उन्हें बापू से मिलाया, प्रार्थना में बैठना। बापू ने जो मसविदा बना दिया था, उसके मुताबिक उन्होंने सही करके दिया। भण्डारे से तार भेजने को कह गये।

दोपहर को नवभारत विद्यालय में 'माक पार्लियामेंट' देखा। बढ़कम वकील वगैरा मिलने आये।

हिंगणघाट के कार्यकर्ताओं में उत्साह न होने के कारण वहां का प्रोग्राम नहीं रखा।

वर्धा, आर्वी, १८-१२-४०

घनश्यामदासजी बिड़ला मेल से आये। उनके साथ बातचीत।

खरांगणा में जाहिर सभा, झण्डा स्थापन करना व एक कुआ हरिजनों के लिए बना देने का कार्य ठीक हुआ।

आर्वी—जाहिर सभा में ठीक भाषण, उत्साह भी ठीक था। ६ बजे रात

को वहां से रवाना होकर १०॥ बजे रात को वर्धा पहुंचना।

वर्धा, १९-१२-४०

घूमते समय दमयतीबाई धर्माधिकारी के दादा ने गत वर्ष नवम्बर में श्री किशोरलालभाई को जो पत्र लिखा था, वह मुझे पढ़ाया व उसका जवाब पू० बापू ने जो दिया था, वह भी पढ़ा। थोड़ी और भी बातें की। बाद में पजाब के सुदर्शनदास, जगन्नाथ सरदार ने पंजाब की हालत सुनाई।

सेवाग्राम—परचुरे शास्त्री को देखा। बापू से पंजाब वालो के बारे में उनका कहना सुना। महिला सत्याग्रही भेजने, मेरे व्याख्यान, स्टेटमेंट आदि के बारे मे बातें।

जाहिर सभा—गांधी चौक मे जाहिर स्वागत, जाहिर व्याख्यान ठीक हुआ। सरदार गुरुमुखसिंह मुसाफिर अहिंसा पर ठीक बोले। सरदार सम्पूर्णसिंह वगैरा से बातचीत।

२०-१२-४०

श्री घनश्यामदासजी बिड़ला से घूमते समय बातचीत—शिक्षा मण्डल, महिला मण्डल, नागपुर बैंक, सगाई-विवाह, कमल, रामकृष्ण, पर्दा, व्यायाम आदि।

घनश्यामदासजी, देवदास गाधी, सरदार सम्पूर्णसिंह कलकत्ता गये।

केशवदेवजी बम्बई मे श्रीराम धूलिया से आये।

हरिभाऊजी उपाध्याय तथा अन्य लोग भी आये।

सेवाग्राम—शाम की प्रार्थना। बाद मे पू० बापूजी से पहले सीतारामजी सेकसरिया के प्रोग्राम की चर्चा। बाद मे स्लोगन पर विचार-विनिमय। नीचे मुजब खुलासा.

It is wrong to help the British war effort with men or money. The only worthy effort is to resist all war with non-violent resistance.

(इस लड़ाई मे आदमी या पैसे से अंग्रेजों की मदद करना गलत है।

लड़ाइयों का सही विरोध अहिंसा से ही हो सकता है।)

कविता में :

> ब्रिटिश युद्ध प्रयत्न में जन-धन देना भूल है।
>
> सकल युद्ध अवरोध कर यत्न अहिंसा-मूल है।

बाद में, अपने लिए जो घर लेना था, वहां गये।

जयप्रकाश, प्रभावती से ब्रजकिशोर बाबू के स्वास्थ्य की चर्चा।

सेवाग्राम-वर्धा-जेल, २१-१२-४०

सुबह प्रार्थना में शामिल होना। पू० बापू से बातचीत। रात को जो विचार मन में चलते थे, इस बारे में व आज की सभा के स्टेटमेंट वगैरा की चर्चा। अचानक खबर आई कि पुलिस गिरफ्तार करने मोटर लेकर आई है। बापू ने महादेवभाई को भेजा। गिरफ्तारी का सेक्शन पूछा। 'डिफेन्स आफ इंडिया ऐक्ट' में देखा। ठीक पता नहीं लगा। यहां पुलिस अधिकारियों की बात से मालूम हुआ कि मुझे 'डिटेन्शन' करेंगे। पूज्य बापू, बा और प्रह्लाद हरिजन ने अपने हाथ से कते सूत का हार पहनाया। खूब प्रेम-पूर्वक आशीर्वाद दिया। प्रायः सब लोग मोटर तक आये। पू० बा ने वन्देमातरम् गीत गाया, खिलाया। आश्रम की बहनें वर्धा में चलकर आईं, वे सब मिलीं। वहां से अपनी मोटर में वर्धा, बंगले पर मुंह-हाथ धोया। बाद में मजिस्ट्रेट श्री कुळटेजी के घर ले गये। उन्होंने सेक्शन १२१ वगैरा समझाया। जेल में पैदल गया। वहां पहले तो शरीर की डाक्टरी जांच हुई। वजन १८२ पौंड, ऊंचाई ५'-११" ब्लड प्रेशर १५५-१००।

कोर्ट का काम १२ बजे तक चला। मेरा स्टेटमेंट वगैरा रिकार्ड हुआ था। ०॥ बजे जज ने ६ महीने की सादी कैद, पांच सौ रु० का दंड, दण्ड वसूल न हुआ तो भी सजा ज्यादा नहीं। 'ए' क्लास की सिफारिश। मैंने धन्यवाद देते हुए कहा—सजा कम दी गई। बाद में सब लोग विदा। मुझे तीन बजे करीब मोटर से नागपुर श्री भरूचा के साथ भेजा गया। नागपुर ५॥ बजे करीब पहुंचना। बियाणीजी व प्यारेलाल

मिले। पटेल क्वार्टर में व्यवस्था।

नागपुर जेल, २२-१२-४०

गुयट मित्र-मण्डल से मिलना। पहले विनोबा से, बाद में प्रायः सब ही राजनैतिक कैदियों से, विनोद, व्यवस्था। श्री शुक्लजी के पास दूध लिया।

श्री शुक्लजी व पाठक जेलर के साथ व्यवस्था-सम्बन्धी विचार-विनिमय।

आज इतवार होने के कारण सफाई आदि की व्यवस्था होने में विलम्ब हुआ। बाद में व्यवस्था ठीक हो गई।

सु० जे० (सुपरिटेंडेंट जेल) श्री गढ़ेवाल दो बार आ गये। मैं सोया था। श्री गढ़ेवाल बहुत समय के बाद जल्दी ही आई० जी० पी० (इंस्पेक्टर जनरल आफ् प्रिजिन्स) हो रहे हैं। मुझे पहले बम्बई में मिले थे, स्वास्थ्य-व्यवस्था के सम्बन्ध में।

श्री शुक्लजी के लड़के का मस्तक थोड़ा खराब हो जाने के कारण उन्हें रांची के बंसीधर नागरमल मोदी के लिए पत्र लिखकर दिया।

जेल में डेरा जमाने की व्यवस्था, जानकीदेवी को पत्र लिखा।

चार घर(कोयला कोठरी)को नहाने और तेल मालिश आदि का स्थान बनाने का अधिकारियों ने निश्चय किया।

विनोबा से घूमते समय ठीक बातचीत हुई।

२३-१२-४०

विनोबा आये।

मि० राव कमिश्नर जेल व सु० जे० मिस्टर गढ़ेवाल आये। थोड़ी देर बातचीत।

प्यारेलाल ने आज मसाज (मालिश) ठीक तरह दी।

श्री शुक्लजी व मिश्रजी से जो पत्र-व्यवहार हुआ उस पर विचार-विनिमय होता रहा। आखिर यह निश्चय हुआ कि सब पत्र पू० राजेन्द्रबाबू, शुक्लजी देखकर जो निर्णय करें वह स्वीकार करना।

श्री गुप्तजी से उनकी कन्याओं के सम्बन्ध में बातचीत।
बृजलालजी से कमला और सरला के सम्बन्ध के बारे में भाई घनश्यामदासजी से मिलकर बम्बई-वर्धा में जो बातें हुई थीं, उसका सार कह दिया। मुलाकात में कोई खास अड़चन नहीं हो तो शनिवार को शाम के ४ बजे रखना तय हुआ।

२४-१२-४०

विनोबा के साथ प्रायः एक घंटा घूमना, धूप में।
दास्तेकर से बातें। महाराष्ट्र में जो टीका की है, वह प्रायः ठीक है। उन्होंने की तो है पर कुत्सित वृत्ति से। जेलर श्री पाठक से दूध जल्दी मिलने, लाउन बंद बन्द करने व खोलने का समय (१० व ३॥ बजे) आदि की बातें।
श्री रविशंकरजी शुक्ल मिलने आये। श्री ब्रह्मदत्त के बारे में पूछताछ की। बाद में अपने लड़के भगवती के बारे में उसके विवाह-सम्बन्ध आदि पर विचार कहे।
मु० जे० श्री गड़ेवाल ने मेरी बीमारी की फाइल देखी। बैरक में गरमी वगैरा की चर्चा की। मैंने उनसे कह दिया, मेरे लिए जेल-कानून भंग करने की बिल्कुल जरूरत नहीं।
विनोबा के साथ बातचीत। बृजलालजी बियाणी के जरिये अन्य लोगों से परिचय हुए।

२५-१२-४०

आज की मसाज (मालिश) देखने विनोबा आये। आज प्यारेलाल के साथ बहुगुण ने भी मसाज दी।
आज से तकली सीखना भी शुरू किया। 'सर्वोदय' पढ़ा।
विनोबा के साथ घूमना। सुबह 'गीताई वर्ग' में जाना।
अखबार देखना। मेरा कोर्ट में दिया हुआ स्टेटमेंट 'नागपुर टाइम्स' व 'नवभारत' में तो ठीक आ गया। दूसरे अखबारों में थोड़ा कम आया। जेल में समय बहुत ही जल्दी बीतता जा रहा है। इतना आराम बाहर

मिलना असम्भव था।

२६-१२-४०

सुबह घूमना विनोबा के साथ। बाद में थोड़ी देर 'गोताई वर्ग' में बैठना। दोपहर को 'तकली वर्ग' मे बैठना। अंगूठे को चोट लग गई। इससे बराबर (ठीक) कातते नही बना। शाम को वॉलीबाल का खेल देखना। थोड़ी देर खेलना।

२७-१२-४०

आज से जेल शिस्त (अनुशासन) मे थोड़ा फरक हुआ। अपने स्थान में ९ से १० बजे तक रहना।

आई० जी० पी० मि० जठार, सुपरिटेंडेंट व जेलर आये। मि० जठार ने कहा छः महीने की छुट्टी पर जा रहा हूं। दो वर्ष बाद रिटायर होकर पूना रहना है।

श्री रविशंकरजी शुक्ल मिलने आये और कहने लगे यह तथा श्री द्वारिकाप्रसाद मिश्र कल सुबह सिवनी ट्रांसफर होने वाले हैं। देर तक बातचीत। उनका लड़का भगवती व कु० दुर्गा भी वर्धा पहुंच गये हैं। बापू को तार भेज दिया। विवाह करा देने की सलाह दी। मुझे भी मुलाकात मे यही कहने को कहा।

२८-१२-४०

श्री शुक्लजी व मिश्रजी से फाटक के इधर मिलना।

सु० जे०* श्री गर्देवाल आये। मुझे एकान्त मे ले जाकर पूछने लगे, आपके पेशाब मे शक्कर जाती है, डायबिटीज है क्या? मैंने कहा, नहीं। मुझे पेशाब में शक्कर जाने की शिकायत कभी भी नहीं रही। शायद जमनालाल चोपड़ा रायपुरवाले की शिकायत भूल से मुझे लगा दी गयी है। तपास (जांच-पड़ताल) करने से यही बात ठीक निकली।

चि० उमा, दामोदर, रिषभदास मिलने आये। करीब ३५-४० मिनट बातचीत, प्रसन्नता के समाचार।

* सुपरिंटेंडेंट जेल

श्री लक्खूजी पटेल बरारवालों ने गोड़े की मालिश की। उससे ठीक मालूम दिया।
विनोबा के साथ घूमना।

२६-१२-४०

आज आखिरी इतवार होने के कारण झण्डावन्दन हुआ।
व्रत, व्यायाम, कालीचरण शर्मा व रामकृष्ण को बता दिया।
मौलवी प्यारेलाल को कुरान के उच्चारण बताने आये।
विनोबा भी हाजिर थे। शाम को श्री छोटेलाल व शिवप्रसादजी पाण्डे वगैरा के आग्रह से कल से विनोबा का प्रवचन दोपहर बाद २॥ से ३। बजे तक रखने का निश्चय विनोबा के साथ किया।

३०-१२-४०

नींद में ऐतिहासिक घटनाओं के विचित्र स्वप्न आये।
विनोबा के 'तकली वर्ग' (कनाम) में चर्खा काता।
सु० जे० आये। विनोबा वगैरा से बातचीत।
आज से विनोबा का प्रवचन शुरू हुआ। विनोबा ने बापू की ट्रस्टीशिप कल्पना की सुन्दर व्याख्या की। कबीर का एक दोहा कहा।

३१-१२-४०

विनोबा का प्रवचन—कंजूस चोर का बाप, कल के विषय को आगे बढ़ाते हुए हृदय-परिवर्तन के सिद्धान्त को भी ठीक तरह समझाया।
तकली काती। बहुत ही धीमी गति से।
सु० जे० व जेलर सुबह आये। जेलर शाम को भी आया।
रात को 'नागपुर टाइम्स' पढ़ा। मेरे बारे में थोड़ा परिचय, आज के अंक में। पता नहीं लगा, किसने लिखा है।
आज यह डायरी पूरी हुई—'वन्दे मातरम्।

१९४१

नागपुर जेल, १-१-४१

रात को नींद कम आई, विचार शुरू हुए, स्वप्न में।
पू० बापू, किशोरलालभाई वगैरे ने मेरी कमजोरियों की छान-बीन की।
गवाह थे श्री जानकीदेवी, मंजू केला इत्यादि, विट्ठल नौकर भी।
पुरावा (अभियोग) तो विरुद्ध साबित नहीं हुआ, परन्तु मैंने स्वीकार किया।

इस प्रकार के स्वप्न व विचारधारा में ही, मेरी समझ से, रात का बहुत-सा हिस्सा चला गया।

आज से नई डायरी शुरू हुई। विचार-विनिमय मन के साथ होता रहा।
Vice-Col. N.S. Jatar छुट्टी पर जा रहे हैं। इनकी जगह
Lieut. Col. A.S. Garhewal आई. जी. पी. होंगे।

घूमना—(आज) जेल में छुट्टी थी। ग्रेन व्यायाम का खेल खेला गया, लखलूजी पटेल ने दोनों समय मालिश की। चर्खा काता। मसाज ब्रह्मदत्त ने की, वजन १६० पौ० हुआ।
विनोबा का प्रवचन—हृदय पलटने का दृष्टान्त। खुद में अपना हृदय पलटने का प्रयत्न करने की आवश्यकता।
सुबह—महेशदत्त से व शाम को अग्निभोज से बातचीत, परिचय।
नाग-विदर्भ-महाकोशल वॉलीबाल मैच में महाकोशल की जीत रही।
शाम को प्यारेलाल ने दांत में दर्द के कारण व मुझे भी ठीक नहीं लगने के कारण हम दोनों ने भोजन नहीं किया।

रात को देर तक सोना, नींद बराबर आने के कारण लिखना। चर्खा कातना, सुबह नाश्ता वगैरा करके मैदान घूमने जाना। लक्खूजी पटेल ने दोनों समय गोडे मे तेल लगाया। प्रह्लादत्त ने मालिश की।
सु जं. आये, पेशाब की जांच करने का निश्चय।
चर्खा—पौन घंटे (४५ मिनट) मे २२० तार, सवा घंटे (७५ मिनिट) मे ३४५ तार।
विनोबा का प्रवचन, सात लाख गावों मे एक लाख कार्यकर्ताओं की आवश्यकता। रचनात्मक कामें का महत्त्व।
प्यारेलाल से मिलने को महादेवभाई, डा० सुशीला, गिरधारी, महमूद काजी आये। मुलाकात संतोषकारक तौर से नहीं हो सकी। प्यारेलाल को विचार रहा।
शाम को प्रार्थना मे विनोबा ने रामायण की चौपाई का अर्थ किया।
श्री धम्यकर की मृत्यु को आज छ. वर्ष हो गये, पुण्य-तिथि मनाई गई।

३-१-४१

नींद ठीक आई—करीब साढे सात घंटे। आज पेशाब में यूरिक एसिड पॉइन्ट जीरो पाच परसेन्ट की रिपोर्ट आई।
पूनमचन्दजी रावा आये, उनके साथ घूमना।
विनोबा का प्रवचन—रचनात्मक तेरह कार्यों और सत्याग्रह * की व्याख्या। तकली वर्ग मे परसो १२ तार, कल भी १२। घूमना, मित्रों से बातचीत।
शाम को प्रार्थना मे विनोबा ने तुलसी रामायण (रामचरितमानस) में लक्ष्मण की भक्ति की प्रशंसा की। भण्डे के डण्डे की उपमा भी सुन्दर दी। प्यारेलाल के दांत के मसूडे को टच किया गया।

---

*सत्याग्रह-रचनात्मक तेरह कार्यों का चक्र देखिए परिशिष्ट में। सं०)

सु० जे० व जेलर आये। दाण्डेकर व मदनलाल बागड़ी से देर तक विचार-विनिमय।
मौलाना आजाद प्रयाग स्टेशन पर गिरफ्तार हुए, यह खबर 'नागपुर टाइम्स' में पढ़ी।

४-१-४१

४॥ बजे उठना, सात घंटे सोना।
सुबह प्रार्थना के बाद चर्खा काता। घूमकर आना, फिर चर्खा कातना आज से बारीक सूत कातना शुरू किया।
सु० जे० ने प्यारेलाल की मुलाकात का खुलासा समझा व किया। बातचीत, पिंजने के वातावरण की चर्चा, योजना, सहानुभूति बतलाई। गोडे के दर्द के बारे में थोड़ी बात। सिलाई की मशीन चलाने आदि और 'सी' वर्ग व मुलाकात के बारे में ठीक व्यवस्था करने को कहा। उन्होंने कहा 'सी' वर्ग वालों का सन्तोष कर दिया है।
मुलाकात में पूछने के प्रश्न नोट किये। मुलाकात के लिए चि० शान्ता, मदालसा, श्रीमन्नारायण आये। दामोदर व चिरंजीलाल भी मिल गये। चालीस मिनट तक राजी-खुशी के समाचार जाने। विनोबा का तेरह रचनात्मक कार्यों का नकशा भिजवा दिया।
बापू का सन्देश प्यारेलाल की मुलाकात का मिला।
जानकीदेवी सेवाग्राम में हैं। उपवास पर रक्खा है।
Dr. I.C.Das, L.M.S. (Cal.), L.R.C. P. & S., (Edin.), L.R.F. P. & S. (Glas.) L.M. (Dub.), Former Chief Medical Officer, Nepal. मुझे तपास (डाक्टरी जांच) कर खुराक की व्यवस्था करना चाहते हैं। नागपुर टा० पढ़ा, Sir Francis Wylie ने Political Adviser to the Crown representative का चार्ज ता० २४-१२ को दिया।
पंडित कृष्णकान्त मालवीय की देहली में ता० ३ की रात को मृत्यु हुई। पढ़कर दुःख हुआ। श्री सुन्दरलाल शर्मा (रामपुर) की ता० २२-१२ को मृत्यु हो गई। (हरिजन)

रात को ठीक नहीं मालूम दिया। देर तक कातना, अखबार पढ़ना।

नागपुर जेल, ५-१-४१

सुबह पांच बजे उठना, सात घंटे सोना, जनवरी का 'सर्वोदय' शुरू किया। पूनमचन्दजी के साथ घूमने जाना, सवाईमल वगैरा से बातचीत। दाण्डेकर आदि से जापानी खेल (हाथ का) व आज प्रथम बार दो बाजी शतरंज खेले। दाण्डेकर, मगनलाल बागड़ी, कानिटकर शास्त्री, बृजलाल जी आदि थे।

विनोबा से 'ए' और 'बी०' वर्गों के खानपान के सम्बन्ध में व यहाँ सादी वातावरण बनाने के सम्बन्ध में बातचीत, विचार-विनिमय हुआ। जेल अधिकारी अगर खुले तौर पर बाहर का सामान या 'ए' वर्ग वालो के लेने की इजाजत देते हैं तो नैतिक दृष्टि से लेने-खाने में हर्ज नहीं। बने वहां तक स्वास्थ्य की जरूरत न हो तो 'ए' वर्ग को भी खानपान का सामान बाहर से ज्यादा न लेने का ख्याल रखना ठीक रहेगा।

विनोबा का प्रवचन—उत्पादक कार्य (मजूरी) का महत्व व आवश्यकता। तकली वर्ग मे आध घटा। पेट में दर्द के कारण जल्दी आ गये—दूध, फल लिया—चर्खा थोड़े समय तक काता। बाद मे सेक किया तो नींद आई।

६-१-४१

रात को पहले से कुछ ज्यादा सोना। सुबह ठीक मालूम दिया।

विनोबा आश्रम की ओर घूमकर आना। कातने-पीजने का वर्ग चालू करने के बारे में मित्रों से विचार-विनिमय। सबसे बात करके उसे चि० दाण्डेकर के जिम्मे करने का निश्चय किया गया।

सु० जे० आये। उनकी मजूरी से कृष्णकान्त मालवीय की मृत्यु के बारे में पद्मकान्त मालवीय को समवेदना का तार भेजा।

डा० दास के बारे मे पूछा तो उन्होंने कहा—उन्हें आप नहीं बुला सकते, उनसे तपास (जांच) नहीं करा सकते। वह मुझसे मिलकर बात करना चाहें तो कर सकते हैं। बाद मे उन्होंने थोड़ी विचित्र-सी बातें कीं, याने

आप तो 'इनवेलिड' (अपंग) हैं। महात्माजी ने 'परमीशन' (इजाजत) कैसे दी ? यह कोई 'रेस्ट क्योर' (आराम, चिकित्सा) स्थान नहीं है। मगर आपको बाहरी ट्रीटमेन्ट चाहिए, या मेयो अस्पताल बार-बार भेजना पड़ा तो सरकार आपको 'रिलीज' (रिहा) कर देगी। मैंने उनसे कहा—डा० दास तपास कर खानपान बतलाने वाले थे, वह आप मंजूर करते तो उस पर अमल होता। महात्मा गांधी ने कैसे इजाजत दी वगैरा प्रश्न तो सरकार की ओर से आपको पूछने का कारण नहीं। उन्हें पूछना होगा तो पूछेंगे। मैं तो जेल के फाटक के बाहर मेयो अस्पताल वगैरा जाना ही नहीं चाहता। पहले भी कह दिया था। आखिर में उन्होंने कहा, आपके स्वास्थ्य की जिम्मेवारी सरकार की है, तब मैंने कह दिया, ठीक है। मैं अपने खर्च से जो खाने का सामान मंगाता हूं, वह बन्द कर देता हूं। आप पर जिम्मेवारी रही। आप जैसा ठीक समझें, करें। उन्होंने कहा, ठीक है। बाद में डा० दास को न भेजने के बारे में इनकी इजाजत से पत्र लिखकर भेज दिया। प्यारेलाल से भी देर तक बातचीत हुई।

विनोबा का प्रवचन बहुत ही भावनापूर्ण, अन्तर तक प्रवेश करने वाला हुआ।

तकली वर्ग, शाम की प्रार्थना, रामायण वर्ग।

७-१-४१

रात को ६ घण्टे सोना १०॥ से ४॥। स्वप्न में हिन्दू सभा के डा० मुंजे से वादविवाद हुआ।

बृजलाल बियाणी ने, कल उन्हें बुलाकर सु० जे० ने जो बातें की थीं, वे कहीं। मैंने उन्हें बताया कि मि० गढ़वाल सु० जे० की कैसी भूल है। सु० जे० मिल गया है। कल की बात का थोड़ा खुलासा हो गया, परन्तु ... ान नहीं हुआ। सु० जे० ने पत्र वर्धा भिजवा दिया है।

... घंटा, शाम को आधा घंटा।

वर्ग २॥ से ३॥ बजे तक। युद्ध व्यापार-नीति का खुलासा

किया, शाम को रामायण, प्रार्थना। बाद में रामनाम के जप का महत्व समझाया। तकली वर्ग में आज बैठना नहीं हुआ, अंगूठे में खून आने की वजह से।
पुखराज कोचर हिंगणघाट वाले छः महीने व पांच सौ दण्ड की सजा लेकर आये, बातचीत।
आज प्रथम बार जेल में ऐनिमा लिया। शाम को भोजन नहीं किया, दूध वगैरा आज बंद नहीं हुआ। कम हो जावेगा। 'जन्मभूमि', 'महाराष्ट्र', 'नागपुर टाइम्स' देखा।

८-१-४१

रात को थोड़ी बेचैनी रही। सुबह गोड़े में दर्द मालूम दिया। देर तक लेटा रहा, सेक किया।
आज से दूध जो लेता था, बंद हुआ, फल आना भी।
विनोबा के पास धीरे-धीरे पूनमचन्दजी के साथ जाना, राष्ट्रीय सेवक संघ (दल) आदि के बारे में उनसे विचार-विनिमय। नवयुवकों के प्रति हमलोगों की उदासीनता रहना ठीक नहीं। हमें उनके स्वभाव, प्रकृति के अनुकूल प्रोग्राम देना चाहिए। उन्होंने कहा, बात तो ठीक है।
आज बादलवाई बहुत जोरों की थी। हवा भी खराब थी। गोड़े में दर्द बढ़ता हुआ मालूम दिया। वापस अकेला आया। दर्द मालूम दिया। सेक वगैरा करना शुरू किया।
सु० जे० आये। उन्होंने कहा, इस प्रकार की हवा में दर्द बढ़ना *स्वाभाविक है।*
दोपहर को ज्वर (बुखार) हो गया, तीन बजे करीब १०-१-१॥ शाम को १०२ के ऊपर था। आज सुबह दूध पानी का काढ़ा, शाम को डा० के आग्रह से एक मोसंबी व थोड़ा ग्लूकोज लिया।
आज विनोबा के प्रवचन में जाने को नहीं मिला। थोड़ा बुरा मालूम दिया। शरीर टूटता था। विचार चलते थे, क्योंकि बहुत देर तक अकेला ही रहना पड़ा।

शाम को विनोबा आये। विनोद के तौर से कह दिया—प्यारेलाल जी से, कि अगर मृत्यु आवे तो बाद में स्वाभाविक तौर से जहां मृत्यु होगी वहीं जला देना अच्छा है। परन्तु मेरे मन में नागपुर के बदले पवनार या सेवाग्राम टेकड़ी पर जलाने की बात आई, इत्यादि।
जेलर, बृजलाल वगैरा भी आये।

नागपुर जेल, ९-१-४१

रात को ज्वर कम (९९) हो गया, नींद भी साधारण आई। प्यारेलाल ने सिर में खूब मालिश कर दी थी। पर कमजोरी मालूम देती थी। दर्द आज कम मालूम दिया, सेक शुरू था। आज भी बादलवाई कल के मुताबिक ही थी।
मित्र लोग आये। लाला अर्जुनलाल ने कविता वगैरा सुनाकर विनोद किया, हंसाया।
आज भी चर्खा नहीं कात सका। मन में विचार रहा, परन्तु प्यारेलाल ने इजाजत नहीं दी।
विनोबा तथा अन्य मित्र शाम को भी आये।

१०-१-४१

रामनरेश त्रिपाठी की लिखी हुई 'जीवनी' पढ़ना शुरू की। आंखों में से पानी देर तक बहता रहा। खुद की कमजोरियों का ख्याल कर, विशेषतया बापू की स्वीकृति पढ़ कर।
आज धूप निकली। बाहर पलंग डालकर बैठा।
सु० जेल० आये, छाती वगैरा तपासी। ब्लड प्रेशर १५०-११० बताया, ज्वर ९८। उन्होंने खुराक के बारे में डाक्टर से कुछ कहा। थोड़ी इधर-उधर की बातचीत की।
चर्खा पौन घण्टे काता, 'सर्वोदय', हिन्दुस्थानी पढ़ना, 'जन्मभूमि' व 'टाइम्स' पढ़ना।
श्री गोपालराव काले को तुमसर (भण्डारा) के भाषण पर वर्धा में गिरफ्तार कर भण्डारा ले गये।

दादा साहब गोले अकोलावाले तथा पांढरी पाटील वगैरा मित्र आज इस जेल में मिलने आये।

११-१-४१

सुबह करीब एक घंटा चर्खा काता। लाला अर्जुनलाल ने किस्से, काव्य सुनाये; खासकर कपास का त्याग व महिमा सुन्दर थी।

धूप में करीब दो घंटे बैठना, जीवनी, 'सर्वोदय' पढ़ा।

सु० जे० आये, कहा, मुलाकात यहां हो जावेगी। मच्छरदानी लगा सकते हैं। आप अपने अनुभव लिखेंगे तो जो कागजात आवेंगे, सेन्सर होंगे।

विनोबा का समय उन्हें दे दिया। तेल-मसाज अभी एक दो रोज नहीं कराना है।

सर वायली को पत्र सेन्सर होकर ही जा सकेगा। आई० जी० पी० आ गये, इससे वह जल्दी चले गये।

मुलाकात—कमलनयन-सावित्री, रामकृष्ण व सुशील नेवटिया चार बजे के बाद, मेरे स्थान पर ही, उन्हें लेकर एक आफिसर आये। बाद में पाठक जेलर आ गये। जानकीदेवी को आज उपवास का दसवां रोज है।

बापू ने घाव देखा। पृथ्वीसिंह मालिश देते हैं। उमा खूब सेवा करती है। सब बातें समझकर समाधान मिला। खोटा पैसा, खोटा बालक समय पर काम आते हैं, यह सन्देश जानकी का मिला। सुख हुआ।

घनश्यामदासजी बिड़ला को सर वायली से जयपुर के बारे में मिलने के लिए कहा। राजी-खुशी आदि बातें। चालीस मिनट बाद उन्हें जाने को मैंने कहा। थोड़ी दूर पहुंचाया। मित्र लोग आये, गप-शप।

'नागपुर टाइम्स', 'जन्मभूमि' आदि पढ़ना। प्यारेलाल से बातें, विनोद। उर्दू सीखना शुरू किया।

१२-१-४१

सुबह बालजी आये। उनके साथ धीरे-धीरे विनोबा के पास जाना। वह कुरान का अभ्यास कर रहे थे, बातचीत नहीं हो पाई।

चर्खा काता सबने मिलकर। पौन घण्टे बाद सु० जे० ने कातने की मनाई कर दी। आराम लेने को कहा।
श्री मेहता डिप्टी कमिश्नर नागपुर भी आये थे। इधर-उधर की बातें। आज छुट्टी होने के कारण शतरंज खेली। तिवारीजी ठीक खेलते हैं तो भी हार गये।
रा० न० त्रिपाठी की जीवनी व 'सर्वोदय' खतम कर दिये। जनवरी की 'जन्मभूमि' पढ़ी।
आज दोपहर को या शाम को विनोबा की तरफ जाने को मिलता तो अच्छा लगता। मनाई थी इसलिए नहीं जा सका।

नागपुर जेल, १३-१-४१

स्वास्थ्य ठीक मालूम दिया। आज से खुराक शुरू हुई—दाल-रोटी, 'बी' वर्ग की।
चर्खा, विनोवा के प्रवचन में जाना।
सु० जे० पहले राउण्ड पर आ गये। स्वास्थ्य आदि समाचार पूछ गये। बाद मे फिर दुबारा आये। उनकी माताजी की मृत्यु हो गई, समवेदना प्रकट की। बापू ने मेरे बारे में महादेवभाई के जरिये जो पत्र लिखवाया कमलनयन के मिलने पर, याने मुझे कहा जाय कि मैं जो ज्यादा दूध, फल ले रहा था वह चालू रक्खूं, यह जिस पत्र मे लिखा था, वह सु० जे० ने मुझे पढ़ाया। मेरे साथ देर तक चर्चा की। मुझे मेरे खर्च से दूध लेना चाहिए आदि कहने लगे। मैंने पहले उनसे जो बात हुई थी, वह दोहराई। बृजलाल, प्यारेलाल मौजूद थे। शाम को विनोबा से भी इस सम्बन्ध मे विचार-विनिमय हुआ और उन्होने भी कहा कि दूध लेना शुरू कर देना ठीक रहेगा। आदि।
आज प्यारेलाल को अस्पताल में ले गये दांत के इलाज के लिए। मैं अकेला रह गया। रात को पढना ठीक हुआ।

१४-१-४१

सरदार अमरसिंह से जो बात मैंने प्यारेलाल व ब्रह्मदत्त से सुनी, उसके

बारे में पूछताछ करना। जितनी चौकसी (जांच-पड़ताल) की उससे यह जाहिर होता था कि ये लोग बृजलालजी के सम्बन्ध में गैर-समझ पैदा करने में भाग लेते रहते हैं। शाम को जेलर का इससे जितना सम्बन्ध था वह भी खुलासा हो गया। जो चर्चा फैलाई गई उसमें बियाणी भी दोषी थे। और बातों का भी खुलासा हो जावेगा।

आज जेल में छुट्टी है संक्रांति की। सोशलिस्ट मित्र लोग आ गये। गप-शप हुई। तिवारीजी के साथ दो बाजी शतरंज खेली, एक वह जीते, एक मैं।

आज से 'बी' वर्ग का ही खाना जेल से मिलना शुरू हुआ। दूध-फल बंद। सुबह दो फुलके, शाम को एक खाया। छ. छटांक दूध में कॉफी ली। दो मोसम्बी वापस कीं।

विनोबा आये। १॥ से २॥ बजे तक रहे। बातचीत।

बापू को शारीरिक, मानसिक स्थिति का संदेश भेज दिया।

विनोबा कल जाने वाले हैं, इसलिए कई मित्रों ने चर्खा संघ के सूत-सदस्य होने का निश्चय किया। 'ए०' व 'बी०' वार्ड में कितने ही नम्बर हाजिर थे, जिनमें से कुछ ने कबूल किया।

बृजलालजी, कमेरा, देशमुख, एकबोटे, कोचर वगैरा से खुलासा।

१५-१-४१

विनोबा आज छूटने वाले थे, इसलिए जल्दी ही उनके पास जाना। करीब पौने नौ बजे वह अन्दर के फाटक से बाहर आये। उनके साथ थोड़ा घूमना, मामूली बातचीत। ब्रह्मदत्त, बृजलाल, जानकीदेवी आदि की। उन्हें दो अनार बाहर खाने के लिए दिये।

विनोबा के वियोग से, जो कि थोड़े समय के लिए ही मालूम देता है, बुरा मालूम दिया। विनोबा के प्रति दिन-दिन श्रद्धा बढ़ती जाती है। परमात्मा अगर मुझे इस देह से उनकी श्रद्धा के योग्य बना सकेगा तो वह दिन (समय) मेरे लिये धन्य होगा। मुझे दुनिया में बापू पिता व विनोबा गुरु का प्रेम दे सकते हैं, अगर मैं अपने को योग्य बना सकूं तो।

सु० जे० सक्सेना सुबह तो आये ही थे, शाम को श्री रंगे, रजिस्ट्रार कोआपरेटिव सोसायटी, के साथ भी आये।
प्यारेलाल को अभी एक-दो रोज और अस्पताल में रखेंगे, मालूम हुआ।
आज मालिश भागो सेनी ने की।
श्री दादा साने अकोलावाले से देर तक बातचीत। मथुरादास गोपालदास के मामले के बारे में पू० बापू से भेंट का परिणाम इन पर समाधानकारक हुआ।

१६-१-४१

'जन्मभूमि' व 'टाइम्स' पढ़े। विनोबा कल (१७) को सेवाग्राम में सत्याग्रह करने वाले हैं।
गोपालराव काले छः महीने की सजा लेकर भंडारा से आये। खंडेराव जादव नागपुर वाले की मृत्यु के समाचार से दुःख हुआ।
बृजलाल बियाणी, मूलचन्दजी बागड़ी से बातें।

१७-१-४१

बातचीत। बृजलालजी भी आये थे। जानकीदेवी के (१६) उपवास हुए। कल से उपवास छोड़े। स्वास्थ्य ठीक है, कहा। वर्धा (४२०) तार, पूनी १६ (२६१), समय ११५ मिनिट।
'नवभारत' में विनोबा ता० १६ को सत्याग्रह करने की बात छपी है, यह गलत मालूम देती है। गोपालराव की मुलाकात 'नागपुर टाइम्स' से मालूम हुआ। विनोबा को सेवाग्राम के भाषण (युद्ध-विरोधी) पर गिरफ्तार नहीं किया। शाम को गांधी चौक में (वर्धा में) भाषण ६॥ बजे होगा। नागपुर से लाउड स्पीकर भेजे गये हैं।
आज मन में निरुत्साह-सा रहा। विचार-विनिमय के कारण भी थोड़ी चिन्ता-सी रही। रात को विनोबा व उनके विचार पढ़ता रहा, हिन्दुस्तानी भी।
केसरी, नशाशु, रशशु, आदि कठिन पहेलियों का अर्थ विचारा।

नागपुर जेल, १८-१-४१

मुलाकात—चि० उमा, द्रौपदी कृपलानी, डा० दास आये।

जानकीदेवी के १६ उपवास ठीक तौर से पार पड़े। तीन संतरे शुरू किये हैं।

प्रकृति ठीक है। विनोबा का आज नागझरी में व्याख्यान है। कल वर्धा में ठीक हुआ।

प्रभुदयालजी हिम्मतसिंहका का तार व श्री रामकुमारजी भुवालका का पत्र था, चि० श्रीराम से रामकुमारजी की लड़की* की सगाई करने के बारे में। मैंने तो कह दिया कि रामकुमारजी को पूर्ण सन्तोष हो व इधर भी सबको हो तो सम्बन्ध कर लिया जाय।

डा० दास मेरा खान-पान पू० बापू से सलाह कर लिख भेजेंगे। ब्लड प्रेशर १०२+१४८, और सब ठीक है।

गोपालराव वाले, बाद में पाठक जेलर, बृजलालजी से गप-शप।

अखबार—नागपुर टाइम्स, लोकमान्य, मातृभूमि।

१९-१-४१

आज जेल की छुट्टी के कारण शतरंज छ बाजी खेली, मगन बागड़ी, दाण्डेकर, कन्हैयालालजी बालाघाट वाले व वालीम के वकील अम्बुजम्—इन्हें एक-एक बाजी मात दी। श्री तिवारी व अम्बुजम् ने एक-एक बाजी मुझे हरायी।

'जन्मभूमि' पढ़ी। विनोबा की आज खास कोई खबर नहीं मिली।

प्यारेलाल आज अस्पताल से आ गये। रात को साथ बैठकर चर्चा करता।

२०-१-४१

प्यारेलाल के कारण थोड़ा कम सोना हुआ। घूमना—सवा घण्टे से ज्यादा, चर्खा (१६०) तार दो बार में। मालिश, प्यारेलाल व नागो ने दी।

सु० जे० १२ बजे आये। डेरा मोड़ा देखा। मेरी कापन भी देखी। कहा— [illegible] किसी-किस्म [illegible] नहीं करेंगे। [illegible] रहें [illegible] [illegible] ज्यादा पड़े।
घनश्यामदासजी बिड़ला का लिखा हुआ 'बापू' पढ़ना शुरू किया— बड़ा ही अच्छा लगा।
ता० १६ को जयपुर के उत्साही स्वतंत्र विद्यार्थी प्रजामण्डल बुलेटिन नं० ७ के लिए डिफेंस आफ इण्डिया ३८ (१) में गिरफ्तार हुए।

२१-१-४१

आज प्रथम बार जेल के खाने में पापड़ आये।
विनोबा वर्धा तहसील में युद्ध-विरोधी भाषण जोर-शोर से दे रहे हैं।
सेवाग्राम, वर्धा, नालवाड़ी, पुलगांव, देवली, सोनेगांव वगैरा में।
आज शाम से [illegible] खेलना शुरू किया।
घनश्यामदासजी का 'बापू' आज पूरा किया।

२२-१-४१

सु० जे० सेनगुप्ता व जे० क० गोपाल राई० जी० पी० आये। वे गये, घूप में बैंठने की ठीक व्यवस्था कर दी जावेगी— आपकी इच्छा के मुताबिक।
नवभारत, जन्मभूमि, नागपुर टाइम्स देखा।
विनोबा— सोनी (वर्धा तालुका में वर्धा से १० मील) से गिरफ्तार कर वर्धा लाये गए। कल मुकदमा चलेगा।
आबिद अली ने बम्बई में विवाह किया, आज खबर मिली।
विनोबा को पढ़ता रहा।

२३-१-४१

रात को प्रायः नींद नहीं आई। अच्छे-बुरे विचार उठना शुरू हो गया, बन्द हो ही नहीं सके। कुल करीब दो घण्टे नींद आई होगी। विनोबा की गिरफ्तारी, आबिद अली का विवाह आदि प्रश्न, विचार चलते रहे।

आज श्री कन्हैयालालजी खाराघाट वाले के साथ कैरम की एक बाजी. दो घंटे से ज्यादा चली। वे ही जीते, ठीक खेलते हैं। इतवार को स्वतन्त्रता-दिन होने के कारण आज खेलना हुआ। शाम को भी एक बाजी खेली, वह हार गये।

'नवभारत', 'जन्मभूमि', 'नागपुर टाइम्स' पढ़े विनोबा का फैसला कल ११ बजे होवेगा।

पूज्य राजेन्द्रबाबू, कृपलानी ने वर्धा में भाषण दिये।

दादा गोरे अकोला वाले आज जबलपुर ट्रांसफर हुए, सज्जन पुरुष हैं।

विनोबा को मेरे पास रखने को पहले व आज भी, जेल अधिकारियों से कहा। उन्होंने मंजूर नहीं किया।

नागपुर जेल, २४-१-४१

छः घंटे करीब सोना। सुबह सवा घंटे से ज्यादा, शाम को करीब एक घंटा घूमना।

सूत तार ४०४ पूनी १४, समय डेढ़ घंटे से थोड़ा ज्यादा। एक पूनी में तीस तार अन्दाज।

आज इधर की तरफ घूमने आने वालों को मनाई की बात सुनी।

सु० जे० आये। बोले—विनोबा को उनके पहले स्थान में ही रखना होगा। उनका नैतिक असर ठीक रहता है, इत्यादि।

आज तीन रोटी व दाल-साग भी कुछ ज्यादा लिये। भूख भी थी, भोजन स्वादिष्ट लगा। गरम था। साग ज्यादा थे।

विनोबा के विचार पढ़े।

श्री बृजलाल बियाणी, दुर्गाशंकर मेहता मिलने आये। ता० २६ के बारे में विचार-विनिमय।

'ना० टाइम्स' देखा। विनोबा को ६ महीने सादी कैद हुई। विनोबा ७ बजे करीब नागपुर जेल में आ गये, सुना।

उर्दू का कायदा शुरू किया।

२५-१-४१

विनोबा से बापू, जानकी आदि के समाचार जाने।

चर्खा—सवा चार सौ तार अन्दाज। आज इस जेल में छत्तीस रोज हो गये, १८ गुडी (११,५२०) तार काते। रोज ३२० तार हुए। कल से अलग हिसाब रहेगा।

सु० जे० सेनगुप्ता ने आज फाइल वगैरा फिर देखी—पूछताछ भी की।

विनोबा मिलने आये, दोपहर व शाम को।

मुलाकातें—बाबू राजेन्द्रप्रसादजी, डा० दास, दामोदर। बाद में थोड़े समय के लिए, लक्ष्मी व श्रीराम से भी, श्रीराम कलकत्ते से बम्बई जा रहा है, इसकी सगाई कलकत्ते में रामकुमारजी भुवालका की लड़की से हो गई। आशीर्वाद लेने आया था।

राजेन्द्रबाबू तीन-चार रोज में बिहार जायेंगे व कुछ रोज बाद वर्धा रहने आ जायेंगे। तबियत साधारण ठीक है। डा० दास, सु० जे० से मिले। उनसे क्या बात हुई, पूरी कर नहीं सके, समय हो गया था।

दामोदर ने पत्र-व्यवहार व राजी-खुशी के समाचार कहे—जयपुर प्रजा-मण्डल की हालत का थोड़ा विचार तो हुआ।

२६-१-४१

चार बजे उठना, प्रार्थना, विनोबा का स्वतंत्रता दिन का भाषण आज दुबारा पढ़ डाला। स्वतंत्रता की प्रतिज्ञा का अर्थ भी।

चर्खा सबने मिलकर आठ घंटे काता। २,०२२ तार काते गये। कल से बन सका तो कमरे में ही रहना होगा। यदि स्वास्थ्य ठीक रहा तो महीने में २५ गुडी कातने का विचार है।

शाम को प्रार्थना, विनोबा से तुलसी रामायण पढ़ना शुरू किया। तुलसीदासजी का जीवन जैसा उन्होंने कहा, पापमय होना सम्भव था। परन्तु सचाई स्वीकार कर लेने व भक्ति के कारण उन्होंने अपना मार्ग ठीक कर लिया।

विनोबा यहां आये थे। जन्मभूमि में स्वतंत्रता दिवस की घोषणा सुन्दर

हग मे रही है।

२७-१-४१

शतरंज एक बाजी, कन्हैयालालजी बालाघाट वाले थे, वह हारे।

विनोबा ने भी थोड़ा रस लिया।

शाम की प्रार्थना—विनोबा ने तुलसी रामायण के भाग, खण्ड, जो अपने हिसाब से किये, वह समझाया।

शिवदासजी द्वारा, महन्तजी ने रायपुर डिप्टी कमिश्नर के बारे में मुझसे विचार-विनिमय किया।

सुभाषबाबू एकाएक गुम हो गये। 'नागपुर टाइम्स' में पढ़कर थोड़ा विचार रहा।

उर्दू पढ़ना।

नागपुर जेल, २८-१-४१

करीब सात घंटे सोना, घर्रा डेढ़ घंटे के करीब। एक गुड़ी (६४०)।

सवाईमल ओसवाल जबलपुर वाले से अधिक परिचय। होनहार युवक मालूम दिया।

वृजलाल को अभी तक पूरी तौर से समझ नहीं पाया। इनसे सच्ची तौर से प्रेम-सम्बन्ध बढ़ाने की इच्छा, प्रयत्न होते हुए भी पूरा पता नहीं लग पाया। रुकावटें क्यों आया करती हैं ? अगर व्यवहार साफ-सचाई का होने लगे तो इनसे समाज व देश की ठीक सेवा हो सकती है। प्रयत्न कर देखना है।

'जन्मभूमि' पढ़ा, स्वतंत्रता दिन बम्बई में ठीक मनाया गया।

मालिश की किताब (डा० सवाटा) पढ़ना शुरू किया। आज मालिश प्यारेलाल व नागो ने दी।

विनोबा, प्रार्थना, रामायण, उर्दू।

२९-१-४१

प्यारेलाल आज हवालात में जहां सब लोग भोजन करते हैं, वहां कानड़ शास्त्री के कहने पर गया। आज नया सफाई वाला आया। काशीना की बदली हुई।

आज से पानी गरम करके पीना शुरू किया।
वर्धा के जेलर ललित मोहन दास (बंगाली) ने आज सुबह गोली खा
आत्म-हत्या कर ली। यहां से दूसरा आदमी (बृजलाल) बाद में
गया सुना। बुरा मालूम दिया।
विनोबा, गोपालराव से बातचीत। बाद में थोड़ा घूमना। छोटेलालजी
का स्मारक बनाने पर विचार करने को उन्हें कहा।
श्री पाठक जेलर, बृजलालजी वगैरा आये। आज शाम को घोंटों में दर्द
बढ़ा हुआ मालूम देने के कारण शाम की प्रार्थना में जा नहीं सका।

३०-१-४१

७ घण्टे सोना। घोटे में दर्द शाम-सुबह वैसा ही रहा। थोड़ा घूमना।
घर्मा—एक गुंडी ६४० तार।
जन्मभूमि, नागपुर टाइम्स पढ़ा। साम्यवाद की किताबें पढ़ीं, उर्दू पढ़ना।
विनोबा, गोपालराव आये, बातचीत, घूमना।

३१-१-४१

जयप्रकाश नारायण यू०पी० के वारन्ट से बम्बई में पकड़े गये।
श्री कल्लापा, नौ महीने पचास रुपये दण्ड की सजा आज हुई, मिले।
दइकर जमानत पर छूटकर गये।
विनोबा, गोपालराव, बृजलालजी, पूनमचन्द आये।
उर्दू पढना, जेल समाचार भी।

१-२-४१

श्री कल्लापा लेबर लीडर से बातचीत। उमर ३७ साल। छः बच्चे,
स्त्री गये वर्ष मर गई। छोटी लड़की १३ महीने की, बड़ी लड़की ११
वर्ष की। सब बच्चे नौकरानी के सुपुर्द कर जेल आया। रेलवे में आठ
आना रोज मजूरी से पांच सौ रु० तक तनखा मिली थी। बिजली इंजी-
नियरिंग जानता है। योरप (आक्सफोर्ड) में भी पढ़ाई की है।
चतुर्भुजभाई जसानी की आज जन्मगाठ है ४१ वर्ष पूरे हुए।
श्री नारायण पटेल से पाटरकवडे वाले के बारे में बातचीत। स्थिति

समझी, नारायण पटेल मालखेड ग्राम के हैं।
कमलनयन, सावित्री, रामेश्वरजी धूलिया वाले मिलने आये।
रा० ब० बलबीरसिंह की मृत्यु ता० १८-१ को रामपुरा (रेवाडी) में हो गई, रामनारायणजी अब ठीक हैं, मन्नू भी ठीक हो जावेगी।
जरीन बान्द्रा के डा० कासम अली नाथानी की पुत्री है। २७ वर्ष की उमर है, आबिद अली से शादी की है।
गुलाबबाई, हेडराजजी ने हरगोविन्द को गोद लेने का निश्चय कर लिया। लिखा-पढ़ी का मसविदा देखा, ठीक था, भूधरमल को लड़का हुआ है।
उर्दू वगैरा पढ़ना।

२-२-४१

शतरंज—सुबह बल्लापा के साथ एक बाजी। वह हार गये। शाम को तिवारीजी के साथ, वह भी हारे। बाद में वे और विनोबा मिलकर खेले—मैं हारा। 'नवभारत', 'जन्मभूमि', साम्यवाद के सिद्धान्त पढ़े। श्री सत्यभक्तजी की पुस्तक पूरी की।
'न्याय का संघर्ष' श्री यशपाल व प्रकाश पाल कृत पढ़ना शुरू किया।
शाम को प्रार्थना के समय एक तरह की पूछ-सी दिखाई दी। मैं व प्यारेलाल देर तक देखते रहे।

३-२-४१

सु० जे० १२। बजे आये। लक्ष्मीनारायण मन्दिर की ओर से छोटे सिन्दीवालों पर दावा करने के कागज पर चार जगह सही की।
सु० जे० के सामने, लोकल गवर्नमेंट को जो पत्र भेजना है वह दिखाया, ठीक है, कहा।
आज से तीन पाव गाय का दूध मेरे खर्च से आना शुरू हुआ।
आज प्रथम बार चार छटांक दूध का दही विनोबा के पास से जामन लाकर जमाया है। आज शाम को दाल नहीं ली।
उर्दू पढ़ना। नागपुर टाइम्स देखना, 'हरिजन' शुरू होने की थोड़ी आशा

मालूम दी।
जबलपुर वाले श्री श्यामसुन्दर भार्गव की मृत्यु की खबर सुनी, बुरा मालूम दिया।

४-२-४१

'जन्मभूमि', 'नागपुर टाइम्स' पढ़े। 'न्याय का संघर्ष' आज पूरा किया। पुस्तक ठीक लिखी गई है। विचार भिन्न होते हुए भी शैली सुन्दर व तेजस्वी है। लेखक के प्रति प्रेम व आदर पैदा हुआ। मिलने का पता. विप्लव कार्यालय, लखनऊ। 'पिंजरे की उड़ान' मंगाकर पढ़ना है।
आज प्रथम बार दही दलिया के साथ खाया।
सेक्रेटरी लोकल गवर्नमेंट (जेल डिपार्टमेंट) को पत्र मु० जे० के मार्फत भेजा, डा० दास के ट्रीटमेंट की मंजूरी के लिए।
श्री नीलकंठ घटवाई हिंगणघाट वाले भाषण के कारण छः महीने की सजा लेकर आज यहां आये, मिले।
उर्दू का कायदा पढ़ा।
चि० सावित्री ने चूर्ण, भूसी के बिस्किट, फल वगैरा गोपालराव काले की मुलाकात में भेजे। बहुत सामान भेज दिया।

नागपुर जेल, ५-२-४१

पांच घंटे सोना, पेशाब के लिए तीन बजे उठना, बाद में नींद नहीं आई। रेलगाड़ी की शंटिंग के कारण तथा सिपाहियों के बोल-चाल के कारण भी नींद आने में रुकावटें हुईं। चर्खा एक गुंडी (६४०)।
खास मुलाकात—चि० राधाकृष्ण व मेहता चीफ इंजीनियर ई० ट्रस्ट श्री लक्ष्मीनारायण मंदिर के नक्शे वगैरा लेकर आये थे। मैंने उन्हें कहा है कि श्री बुद्ध भगवान् व भरत की मूर्तियां दोनों कोठरियों या बाजू में रखी जा सकती हों तो जरूर विचार करें। रुपये दस-पन्द्रह हजार खर्च हो जाते दीखते हैं। विनोबा से भी राधाकृष्ण व बालुजकर मिले। विनोबा को बुद्ध भगवान् व भरत की मूर्ति की कल्पना ठीक मालूम हुई।
जानकीजी का घाव अभी तक भरा नहीं, बहुत समय लग रहा है।

बृजलालजी व पाठक जेलर से 'सी' वर्ग के राजनैतिक कैदियों के नैतिक वातावरण, शिक्षण के बारे में विचार-विनिमय देर तक होता रहा।
डा० गिल्डर को अस्वस्थता के कारण बम्बई सरकार ने छोड़ दिया।
इंगलैंड में लार्ड लाइड की मृत्यु हो गई।

६-२-४१

आज मोहर्रम के कारण जेल में छुट्टी थी।
दत्तात्रय कृष्ण धबुजम् वासीम वाले के साथ दो बाजी शतरंज खेली। दोनों वह हारे। श्री देवदत्त भट्ट मुंगेली जिला बिलासपुर तीन बाजी खेले। तीनों वह हारे।
विनोबा से घूमते समय वर्तमान युद्ध-वार्ताओं से हम सबके मन पर जो असर होता है, उसकी चर्चा, विचार।
डा० महोदय ६ महीने की सजा लेकर यहां पहुंच गये।
बृजलाल बियाणी से उनके बचपन का हाल सुनना शुरु किया।
उर्दू पढ़ना, 'नवभारत', 'जन्मभूमि', 'नागपुर टाइम्स' पढ़े।
मद्रास प्रान्त में एक भेड़ पैदा हुई है, जिसके २४ पैर हैं।

७-२-४१

कवि सम्मेलन हुआ। भवानी, अग्निभोज, तिवारी की कविता ठीक रही। आनन्द-विनोद रहा।
चर्खा—दो लटी (३२०) तार।
आज भी मोहर्रम के कारण जेल में छुट्टी थी। शतरज—रामगोपालजी तिवारी, कानडे शास्त्री महोदय, विनोबा से खेली। ये तीनो साधारण रहे।
शाम की प्रार्थना में विनोबा के आश्रम गये। प्रार्थना के बाद 'तुलसीकृत रामायण' पर विनोबा का सुन्दर प्रवचन हुआ।
'जन्मभूमि', जेल समाचार पढ़ना।

८-२-४१

रोज के मुताबिक प्रार्थना, गीताई, एकनाथ, विनोबा के विचार पढ़ने के

बाद घर्खा एक गुंडी (६४०)। आज एकादशी थी। भोजन में फल, दूध लिया।

आई० जी० पी० ले० क० गढ़वाल व श्री मेहता, डि० सी० नागपुर आये। 'मेहता ता० १५ को चले जावेंगे,' आई० जी० पी० ने कहा, "आपकी दरखास्त आप चाहते हो हैं तो लोकल गवर्नमेंट को भेज दूंगा।" आदि।

आज ब्लड प्रेशर लिया गया। १२८-१०५ दोनों हाथों में आया।

राजकुमारी अमृतकौर, श्री आर्यनायकम्, चि० मदालसा आये थे। सामान समझाने दामोदर भी आ गया था।

बापू का स्वास्थ्य ठीक है। बापू का ब्लड प्रेशर सुबह १४३-९६ था। दोपहर को कम हो जाता है, वजन १०८ है।

जानकीदेवी संतरे, अंगूर लेती है। ठीक घूम लेती हैं। साग का रस शुरू होगा।

श्री रामनारायणजी चौधरी ने जूनी (पुरानी) घटनाओं के बारे में पश्चाताप भरा पत्र लिखा है। मैं भी अब पूरी कोशिश करूंगा, उनकी पहले की बातें भूलने के बारे में।

सरलाबेन को बीस-पच्चीस मासिक की आवश्यकता होगी। मौलाना को रुपयों के लिए जेल में पत्र न लिखने को कह दिया है। चि० तारा की बीमारी के निमित्त अभी तक ३८०) रु० खर्च हुआ, स्वास्थ्य सुधर रहा है।

बापू का 'हरिजन' शुरू करने का विचार नहीं है। समझौते की कोई आशा नहीं है। मैंने पुछवाया भी नहीं था। आज के 'टाइम्स आफ इंडिया' में अग्रलेख है। बापू पर कड़ी टीका की है। मेरे नाम का भी गलत तौर से उपयोग किया है।

सेवाग्राम का पानी ठीक निकला। तपास कराने पर, मीरा बहन अमृतपुर से वापस सेवाग्राम आ गयी हैं। पू० मां ने चने भेजे हैं।

विनोबा से घूमते समय बातचीत।

शाम की प्रार्थना के बाद विनोबा ने बापू का सन्देश सुनाया।

श्री रामनारायणजी चौधरी ने नीचे मुजब संदेश भेजा :

"बीमारी में बहुत हृदय-मथन हुआ। मेरे पिछले घृणास्पद कार्य के लिए क्षमा करें। मैंने प्रायश्चित्त-स्वरूप निश्चय किया है कि बापू की स्वीकृति हो तो पांच वर्ष अपनी सार्वजनिक सेवाएं पूरी तरह आपके हवाले कर दूं। (२) इसी काल में कम-से-कम एक वर्ष आपकी निजी सेवा करनी है, जिसमें आप मुझसे अपनी जूतियां साफ कराने से लगाकर कोई भी काम ले सकते हैं। (३) भविष्य में अपने निजी स्वार्थ के लिए आपसे कोई सहायता नहीं मांगूंगा, कितना ही कष्ट मुझे हो। आशा है, यह मेरी सूचनाएं आप मंजूर करेंगे। मैंने आपकी सूचना अनुसार हरिभाऊजी को बड़ा भाई माना है व शास्त्रीजी, देशपांडे आदि को भी पत्र लिखे हैं।"

१-२-४१

उर्दू पढ़ना शुरू हुआ। लाला अर्जुनलालजी ने कविता सुनाई।

घूमना—दाण्डेकर की बातचीत अपमानजनक व अनुचित लगी। उसे पी जाना ही ठीक मालूम दिया। विनोद में टाल दिया। शक्कर मिल के बारे में जो उसने टीका की थी, वही।

शतरंज—सुबह कन्हैयालालजी बालाघाट वाले, शाम को दुर्गाप्रसाद मेहता सिवनी वाले के साथ। दोनों ठीक खेलते हैं। मेरे सरीखे, या थोड़े कम।

कल विनोबा ने बापू के विचार, जेल में जो राजनैतिक सत्याग्रही हैं, उन्हें सुनाये। उस पर आज विचार-विनिमय, टीका-टिप्पणी, मजाक ठीक होता रहा, सुना।

विनोबा को 'सी' वर्ग के राजनैतिक लोगों से मिलने देने व उपदेश आदि का वातावरण निर्माण करने के बारे में जेलर व सुपरिन्टेन्डेन्ट से बातचीत हुई थी। उससे सन्तोषजनक परिणाम की आशा भी हो गई थी। परन्तु आई० जी० पी० गढ़वाल ने वह स्वीकार नहीं की।

श्री अदालतदार को पहले दो बार पांच-पांच सौ दण्ड (जुर्माना) हुआ

था। अबकी तीसरी बार एक हजार दण्ड करके छोड़ दिया।
वजन १६२ रतल हुआ।

१०-२-४१

श्री प्रेमिलाबाई ओक व दूसरी बहन के लिए मदालसा ने कुछ बातें को भेजा था। वह श्री बृजलालजी के मार्फत जेलर द्वारा भिजवाने को कहा।
श्री गढ़वाल, आई० जी० पी० जेलर के साथ आये। श्री सेनगुप्ता सु० जे० एकाएक हाई ब्लड प्रेशर के कारण बीमार पड़ गये। श्री गढ़वाल ने कहा मेरी दर्खास्त ऊपर भेज दी है। डा० दास के इलाज के बारे में देर तक बातचीत होती रही।
श्री दाण्डेकर, शारदा दाण्डेकर का पत्र लेकर आया। पत्र भावुकता से भरा हुआ था।
विनोबा, गोपालराव आये। विनोबा के साथ घूमते-फिरते हुए बातचीत—जेल के सम्बन्ध मे व भावी कार्यक्रम की।
श्री दुर्गाशंकर मेहता से शाम को घूमते समय, हमारे प्रान्त मे प्रतिभाशाली व्यक्तियो का निर्माण क्यो न हुआ, इस पर विचार-विनिमय होता रहा।
'सुबह-वतन', श्री बृजनारायण 'चकबस्त का पढा।

११-२-४१

'विनोबा और उनके विचार' यह पुस्तक आज पूरी हुई। एक बार आखिर मे इस प्रार्थना से—हे प्रभो! तू मुझे असत्य मे से सत्य मे ले जा। अधकार मे से प्रकाश मे ले जा। मृत्यु मे से अमृत मे ले जा।
उर्दू पढना, 'जन्मभूमि', 'जेल समाचार', 'नवभारत।'
विनोबा, गोपालराव से शाम को घूमते हुए बातें। महेश्वरी वगैरे से भी।

१२-२-४१

एकनाथ का भजन। 'विनोबा के विचार' दूसरी बार, 'आजादी की बातें

की विधायक तैयारी' पढ़े।
वर्धा तहसील कांग्रेस सदस्यों में कताई का संगठन करने का विचार ठीक मालूम दिया।
विनोबा के तकली वर्ग में जाने की इच्छा होते हुए भी समय आदि की स्थिति के कारण जाने का निश्चय नहीं कर सका। मन में विचार तो बना ही है।
बृजलालजी बियाणी से ठीक-ठीक बातचीत शुरू हुई। उर्दू का अभ्यास किया।

१३-२-४१

एकनाथ का भजन। 'करितां कीर्तन, श्रवण। संतमंळाचें होत क्षालन।'
मूढ़ा तर्क उठा मन में—जो आज तक नहीं हुई, ऐसी बहुत-सी बातें आगे होने वाली हैं। अबतक मैं मरा नहीं, इसीलिए आगे मरना है। मेरे मनीराम, आज तक मैं मरा नहीं, इससे आगे नहीं मरना है, ऐसे मूढ़े तर्क का आसरा मत लो, नहीं तो फंसोगे।
सुबह आखिर श्री छेदीलालजी न आ सके।
अस्थायी सु० जे०, डाक्टर, सेन्सर आफिसर आ गये। बाद में आई० जी० पी० श्री गढ़वाल आये। मामूली बातचीत कर गये।
'राज ऋषि' मराठी पुस्तक, प्यारेलाल पढ़ते थे, दादा पंडित के पास मैं सुनता था।
आज से ३॥ बजे के तकली वर्ग में जाना शुरू किया। उर्दू पढ़ी।

नागपुर जेल १४-२-४१

एकनाथ का भजन। सगुण चरित्रें परम पवित्रें सादर वर्णावीं। सज्जन-वृंदें मनोभावें आधी वंदावी। सत-पर्णे अन्तरंगे नाम बोलावें। कीर्तन-रंगीं देवासनिध सुखें डोलावें।
विनोबा का प्रवचन—सर्व धर्म समभाव जिस चीज को हम अपने श्रद्धेय पुरुषों के मुंह से सुनते हैं, उसका अधिक असर होता है।
तकली वर्ग में जाने में डेढ़ घंटा लग जाता है। सवा तीन बजे जाना,

साढ़े चार बजे आना।
प्यारेलाल से मिलने सेवाग्राम से कनु गांधी, शंकरन आये। सब ठीक है।
चि० तारा का देहली में वजन नौ रत्तल बढ़ा, सुनकर सुख मिला।
विनोबा से बातचीत, एकनाथ के अभंग, विनोबा के विचार, उर्दू वगैरा
विनोबा का जन्म सन् १८९५, तारीख ११ सितम्बर का है, तिथी भाद्रपद
शुक्ल (६)।
उर्दू पढ़ना।

१५-२-४१

एकनाथ के दो भजन १६-(१३०) "संता संगीं देव ससे। सेवा संगी सउ वसे।" (२) "संत आंधी देवमला। हावि उमग आणा मना। देव निर्गुण सत सगुण। म्हणोनि महिमान देवासी।"
विनोबा का प्रवचन—स्वाध्याय की आवश्यकता: ज्ञान और उत्साह का स्थान बाहर नहीं है। आत्मा का पोषण-रक्षण आजकल बाहरों में नहीं होता। अपने को और अपने कार्य को बिलकुल भूल जाना और तटस्थ होकर देखना चाहिए। फिर उसी में उत्साह मिलता है, मार्ग-दर्शन होता है, बुद्धि की शुद्धि होती है।
मुलाकात—आचार्य कृपलानी, श्रीमन्नारायण, दामोदर आये। कृपलानीजी ने कहा, श्री जवाहरलाल को पूरा समाधान व सन्तोष है। राजाजी के विचारों में विशेष फर्क नहीं। समाधान वालों को सरकार की ओर के व्यवहार से सन्तोष नहीं है।
जानकीदेवी अभी तक संतरे, अंगूर, साग के रस पर हैं।
तीन साढ़े तीन मील घूम लेती है। बापू खूब आनन्द में हैं, मदालसा सेवाग्राम में रहती है।
आज तकली वर्ग में नहीं जाना हुआ, शाम की प्रार्थना में गया।
विनोबा ने श्रद्धा-अश्रद्धा का ठीक-ठीक खुलासा किया।
बापूजी ने टाइम्स ऑफ इण्डिया में जो टीका की थी, उसका खुलासा आज छपा है—

Civil Disobedience will certainly be withdrwan if free speech is genuinely recognised and status quo restored.
सागर के जालिमसिंह धोबी (हरिजन) एम० एल० ए० के बुद्धिमान लड़के (१४ वर्ष) की मृत्यु का समाचार आया। उन्हें सान्त्वना देना।

१६-२-४१

एकनाथ के चार भजनः मेघा परिस उदार मत। मनोरथ पुरविती।
आलिया शरण मनें वाचा। चालविती त्याचा भार सर्व।
(२) जया जैसा हेत। तैसा संत पुरविती।
(३) संताचे ठायीं नाही द्वैत-भाव। रंक आणि राव सरिखा चि।
संतांचे देणें अरि-मित्रा सम। कैवल्याचें धाम उघडे तें।
(४) संत माय-बाप म्हणतां। लाज वाटे बहु चित्ता।
माय बाप जन्म देती। संत चुकविती जन्म-पंक्ति।

विनोबा—दरिद्रों से तन्मयता, जैसे नदियां समुद्र की ओर बहती हैं, उसी प्रकार हमारी वृत्ति और शक्ति गरीबों की ओर बहती रहे, इसी में कल्याण है।

जेल-छुट्टी होने के कारण श्री कन्हैयालालजी बालाघाट वाले, बृजलालजी बियाणी, रामगोपालजी तिवारी के साथ शतरंज खेलना।

तिवारीजी ने फलाहार किया। शाम को डा० महादेव वगैरा से खेलना। विनोबा, बृजलालजी, छगनलाल, गोपालराव भी थे।

तकली वर्ग में जाना, विनोबा की शाम की प्रार्थना में व राष्ट्रीय प्रार्थना में जाना।

शाम को सागर वाले जालिमसिंह (हरिजन) के साथ भोजन किया। उन्हें फिर सान्त्वना दी। वह आज तकली वर्ग में व प्रार्थना में भी आये थे।

श्री छेदालालजी बिलासपुर वालों से बातचीत—उन्होंने बातचीत के सिलसिले में कहा कि मैंने तो भावी जीवन के लिए विनोबाजी को गुरु मान लिया है, आपको अब कोई शिकायत नहीं रहेगी—इत्यादि।

१७-२-४१

एकनाथ के दो भजन (१) जे जें बोले तैसा चालें। तोचि वहिलें निवाद। मागीं असोनि जाणपण। सदा सर्वदा तो लीन। (२) याती असो भलते परी। एक सरी जायसी। (यह संतांची लक्षणें—१४६वें भजन की तीसरी पंक्ति भी है।—सं०) विनोबा—भिक्षा : चोरी, अर्थात् समाज को कम-से-कम सेवा करके या सेवा करने का नाटक करके या बिलकुल सेवा किये बिना और कभी-कभी तो प्रत्यक्ष नुकसान करके भी समाज से ज्यादा-से-ज्यादा भोग लेना।

आज से डा० महोदय मालिश के समय आने लगे व यहीं पर स्नान-भोजन भी शुरू किया। सु० जे०, जेलर से कह दिया था।

श्री घनश्यामसिंहजी गुप्त आये। एकान्त मे बात की। दुर्ग मे उनके अपने घर से पत्र आया, घबराये हुए व दुखी थे। देर तक उनसे बात। दिलासा, विचार-विनिमय। शाम को उन्हें फल वगैरा खिलाये। विनोबा से भी बातचीत की। गृहस्थ मनुष्य की कसौटी का मौका है। मैंने काफी बातचीत कर हिम्मत दी। गुप्ताजी के छ. लड़कियां व एक लड़का है, व स्त्री है।

राष्ट्रीय प्रार्थना, विनोबा की प्रार्थना व तकली वर्ग मे जाना।

१८-२-४१

एकनाथ के दो भजन—ओजी सुदिन आम्हांसी। संत-संग, कैवल्य-राशी॥
हेचि आमुचें साधन। आणिक नको आम्हां पठण।
संतासी भावडे तो देवाचा हि देव। कळिकाळाचें
भेव पाया-तळीं।

विनोबा—तरणोपाय कौन-सा? जिन हाथों से पिछले महायुद्ध में फ्रांस को विजय प्राप्त करा दी, शरण की चिट्ठी लिख देने के लिए भी उसे उनके सिवा दूसरे उपलब्ध नहीं हुए।

असंगठित हिंसा और सुसंगठित हिंसा—नहीं, नहीं, अति-सुसंगठित हिंसा सब बेकार सिद्ध हो चुकी हैं।

श्री घनश्यामसिंहजी गुप्त की स्त्री वगैरा मिलने न आये। उन्होंने आज फिर एक्सप्रेस तार भेजा। शाम तक जवाब भी नहीं आया व मिलने भी न आये। आश्चर्य है। गुप्तजी काफी परेशान हैं।

आज राजनैतिक व क्रिमिनल (आपराधिक) कैदियों के बीच वॉलीबाल का खेल ठीक हुआ।

क्रिमिनल (आपराधिक) कैदी अच्छा खेलते हैं।

तकली वर्ग, शाम को विनोबा के प्रार्थना मे जाना।

१६-२-४१

एकनाथ—मत भलते याती असो। परी विठ्ठल मनीं वसो। तया घालिन लोटणी। घेईन मी पायवणी। भलते जाती घा। विट्ठल उच्चारी वाचा। तेचि पावन देह धारी। एका जनार्दनी निर्धारी।

विनोबा—गांवों का काम. इतने वर्षों के लम्बे अनुभव के बाद हमें सूझा कि 'तेरा साईं तेरे पास, तू क्यों भटके मझार मे ?' लेकिन लोगों से खूब जान-पहचान होनी चाहिए, हमारे शरीर मे कोई ऐसा पारस पत्थर नहीं चिपका हुआ है कि किसी का किसी तरह भी हमसे ताल्लुक जुड़ा कि वह सोना हुआ।

लाला अर्जुनलाल ने सुन्दर भजन (पुकार) बनाया था, वही सुनाया।

श्री घनश्यामसिंहजी गुप्ता का आखिर घर से पोस्टकार्ड आया। पढ़कर आश्चर्य हुआ व कंजूसी की हद मालूम दी।

तकली वर्ग में जाना। आज वर्षा आई। शाम को प्रार्थना मे नहीं गया, विनोबा से देर तक बातचीत—वर्धा की सारी संस्थाएं एक ट्रस्ट के नीचे रहें, इस बारे में।

ठीक विचार-विनिमय हुआ, इन्हें तो मेरे विचार ठीक मालूम दिये। प्यारेलाल रात को बहुत देर कर सोते हैं। कल रात को अढ़ाई बजे बाद सोये। मैंने भी उन्हें कहा, विनोबा से भी कहलाया। इन पर असर बहुत कम होता है। अगर यह अपनी दिनचर्या पर नियमित समय मे काबू कर लें तो बहुत अच्छा रहे। दूसरों को भी आराम मिले।

आज शाम से श्री पाटील एक महीने तक सु० जे० का काम करेंगे। महा-

रोगी सेवा मंडल, वर्धा (पांचवें वर्ष की रिपोर्ट) 'ग्राम सेवा वृत' फरवरी का पढ़ा।

नागपुर जेल, २०-२-४१

एकनाथ। धन्य दिवस झाला। संत-समुदाय मेटला। कोटें फिटलें जन्मार्थे। सार्थक झालें पे सार्थे।

विनोबा—व्यवहार में जीवन—वेतन : औसत आयु हिन्दुस्तान की इक्कीस साल, इंगलैंड की बयालिस साल। लड़कपन के पहले चौदह साल छोड़ देने से हिन्दुस्तानी सात वर्ष व इंगलैंड वाले अठाईस साल, याने चौगुने जीते हैं।

समाजवाद का मंत्र—जो धनिक अपने आसपास के लोगों की परवाह न करता हुआ धन इकट्ठा करता है, वह धन प्राप्त करने के बदले अपना वध प्राप्त करता है।

सायणाचार्य ने इस मंत्र का भाष्य करते हुए 'वध' और 'मृत्यु' के भेद की तरफ ध्यान दिलाया है।

श्री टैगोर का 'राजऋषि' मराठी अनुवाद में पूरा किया। ठीक है।

२१-२-४१

एकनाथ—साधावया परमार्था। साह्य नव्हती माता पिता।
साह्य न होत व्याही जांवई। आपणा आपण साह्य पाहीं।

विनोबा—'त्याग और दान' : मन-ही-मन वह सोचने लगा, 'मेरी तिजोरी में भी ऐसा ही एक टीला है। उस अनुपात से किसी और जगह कोई गड्ढा तो न पड़ गया होगा? मां, मेरा पाप धो डाल, कहकर उसने वह सारी कमाई गंगा माता के अंचल में डाल दी।

त्याग तो बिल्कुल 'मूले कुठार:' करने वाला है। दान ऊपर-ही-ऊपर से कोंपलें नोचने के जैसा है। त्याग पीने की दवा है, दान सिर पर लगाने की सोंठ है। त्याग में अन्याय के प्रति चिढ़ है, दान में नामवरी का लालच है। त्याग से पाप का मूलधन चुकता है, और दान से पाप का ब्याज। त्याग का स्वभाव दयापूर्ण है, दान का ममतापूर्ण। धर्म दोनों ही हैं। त्याग का निवास धर्म के शिखर पर है, दान का उसकी तलहटी में।

विनोबा से विनोद, दिमागी व्यायाम बातचीत।
हरी नारायण आपटे की 'उषःकाल' नाम की ऐतिहासिक कादंबरी (उपन्यास) पढ़ना शुरू किया।

२२-२-४१

एकनाथ—गुरु कृपांजन पायो मेरे भाई। राम बिना कछु जानत नाहीं।
अंदर राम, बाहिर राम। जहां देखो तहां राम हि राम।
जागत राम, सोवत राम। सपने में देखौं राजाराम।
एका जनार्दनी भावही नीका। जो देखौं सो राम सरीखा।

विनोबा का प्रवचन—श्रम-जीविका (ब्रेड लेबर)। "दुनिया में सबसे अधिक श्रीमान कौन है? जिसकी पचनेंद्रिय अच्छी है, वह। भूख, भगवान का संदेश है—जिसको दिन भर में तीन दफा अच्छी भूख लगती है, उसे अधिक धार्मिक समझना चाहिए। भूख लगना जिन्दा मनुष्य का धर्म है।

एकादशी—फलाहार किया—ब्लड प्रेशर १३८-१०० वजन १८६।
मुलाकात—कमलनयन, उमा, राधाकृष्ण, दामोदर, सागरमल। सामान वगैरा लाये थे। कमल-ओम आज ही बम्बई से आये। जानकीदेवी अभी तक अंगूर, मतरे, साग के रस पर हैं।
और भी दो महीने इसी तरह चलने की संभावना है। उत्साह ठीक मालूम होता बतलाया। तीन मील करीब घूमती है। वजन १२२ से १०२ (२० रतल कम) हुआ है। मदालसा का भी इलाज चालू हो गया है। राधाकिसन ने मन्दिर के नक्शे वगैरा दिखाये। चालीस-पैंतालीस हजार करीब लगने की सम्भावना बतलाई। उमा पन्द्रह-बीस रोज में जावेगी, कमल भी दो-चार रोज में जाने वाला है।
श्री घनश्यामसिंहजी गुप्त की स्त्री को ठीक तौर से समझाना। हिम्मत देना। चिन्ता न करने का उन्होंने आश्वासन दिया। एक प्रकार से चिंता कम हुई—शकुन्तला की जिम्मेवारी लेने को कहा। सुशीला का बाद में सोचा जा सकेगा।

उदयपुर (मेवाड़) प्रजामण्डल पर लगी रुकावट हटा ली गई, तार रा
को बारह बजे करीब सिपाही आकर दे गया, खुशी हुई।

२३-२-४१

एकनाथ—विश्व पाळिताहे हरि। दामा कँवी तो अव्हेरी। नव मा
गर्भवास। नाहीं मागला आम्हांस। बाळपणीं वांचविलें। स्तनीं दुग्ध
निर्मिलें। कीटक पाषाणांत वसे। त्याचे मुखीं चारा असे। धरा धरा
विश्वास। एका जनार्दनी त्याचा दास।

विनोबा—ब्रह्मचर्य की कल्पना: 'जनता की सेवा' यह उसका 'ब्रह्म' है
गया। उसके लिए जो आचार यह करेगा, वही ब्रह्मचर्य है। विशाल
ध्येयवाद। और उसके लिए संयमी जीवन का आचरण, इसको मैं ब्रह्म-
चर्य कहता हूं।

आज रविवार की छुट्टी होने के कारण तीन सौ बीस तार ही काते।
शतरंज—कानड़े शास्त्री, छगनलाल, बृजलाल, पुखराज महोदय वगैरा
के साथ। थोड़ी देर विनोबा भी देखते रहे।

आज सुबह का भोजन दादा पंडित अकोला वालों के साथ किया। उनसे
निजी परिचय हुआ।

आज वर्धा से आये कमीशन को साक्ष्य बिना इच्छा व उत्साह के देना पड़ा।
१२। से ३। बजे तक, करीब तीन घंटे। बिसेसरलाल, घीराम, शिवप्रसाद
वादी, हरदत्तराय, गोविंदराम जाजोदिया।
प्रतिवादी, मनोहर पन्त देशपाण्डे व मान्डे वकील आये थे।
विनोबा की शाम की प्रार्थना में जाना हुआ।

२४-२-४१

एकनाथ के दो भजन (१) तें मन निष्ठुर को केलें। जें पूर्ण दयेनें भरलें।
गजेंद्राचे हाके सरिसे। धांवुनिया आलें। प्रल्हादाच्या भावार्थासी। स्तंभीं
गुरगुरलें। पांचाळीच्या करुणावचनें कळवळुनी आलें।
(२) एका जनार्दनी पूर्ण-कृपेनें। निशिदिनीं पदीं रमलें।
विनोबा—स्वतंत्रता की प्रतिज्ञा का अर्थ: 'व्यचिष्ठे बहुपाय्ये यतेमहि

स्वराज्यें—इस वेद-वचन* से स्वातंत्र्य की प्रतिज्ञा व्यक्त की गई है।
डा० दास को बुलाने व श्री [illegible] की सलाह से इलाज कराने की सरकारी इजाजत मिली।
आज ही वर्धा से दामोदर को पत्र भेज दिया, डा० दास को यहां भेजने के लिए।
'महिला सेवा मण्डल' के स्नात्र आदि के कागजों पर सही कर रजिस्टर्ड डाक द्वारा दामोदर के नाम से वापस भिजवाये।
डा० महोदय समझ व मानसिक प्रेम से व दिलचस्पी लेकर बताते व करते है।
शाम को विनोबा की प्रार्थना में जाना।

१५-२-४१

एकनाथ। चरणाचा सेवा आवडी करीन। माया बाधा मन धन्नी जीवीं।
या परतें साधन न करीं तुमी आण। हा हि परिपूर्ण नेम माझा।
एका जनार्दनी एकत्वें पाहीन। हृदयी ध्याईन जनार्दन।

विनोबा—'सिर्फ शिक्षण'। मनुष्य को पवित्र जीवन बिताने की फिक्र करनी चाहिए। शिक्षण की फिक्र करने को वह जीवन ही समर्थ है, उसके लिए सिर्फ शिक्षण की हविस रखने की जरूरत नहीं।

आज श्री पुरुषराजजी, जिल्लेदार वगैरा की ओर से कल के शिवरात्रि के निमित्त मिठी-भोज था। मेरे नियम वगैरा होने के कारण मूली का साग, रोटी, दही मेरे लिए आया। औरों के लिए साग, पूड़ी, रायता, पापड़ वगैरा थे।

तकली वर्ग में जाना, विनोबा आये। प्यारेलाल दांत का एक्स-रे लेने मेयो अस्पताल गये थे। विनोबा से विनोद, मराठी पुस्तक में से उम्र बताना आदि।

आपटे का 'उष:काल' देर तक पढ़ते रहे। गोपालराव व प्यारेलाल के

* उक्त वेद-वचन का भाव यह है कि हम अपने 'स्वराज्य' में 'बहु' से 'स्वल्प' की रक्षा का प्रयत्न करेंगे।—स०

साथ उर्दू पढ़ना।

होशंगाबाद से सत्रह सत्याग्रही गिरफ्तार होकर यहां की जेल में लाये गए। इन्दौर, नागपुर वगैरा को, सरस्वती दाण्डेकर (शर्मा) भी है।

२६-२-४१

दरवाजे देर से खुले—दूध, नागो (कसरत, मालिश मे सहायक) भी देर से आया, क्योंकि आज सुबह छः बजे यहां एक महार (हरिजन) को फांसी हुई। परमात्मा से उसके लिए प्रार्थना की।

एकनाथ का भजन—जगाचें जीवन मनाचें मोहन। योगियांचे ध्यान विट्ठल माझा।

विनोबा का प्रवचन—अस्पृश्यता निवारण यज्ञ : दुनियवी कामो मे कोशिश करनी चाहिए और धार्मिक को भाग्य के भरोसे छोड देना, इसका क्या मतलब है ? यह धर्म को धोखा ही देना तो हुआ। 'धर्म के मामले में हो ही रहा है, हो ही जायगा', यह भाग्यवादिता बुरी है।

विनोबा के तकली वर्ग में जाना।

आज से ब्रह्मदत्त से उर्दू पढ़ना शुरू किया, शाम को ४॥ से पांच बजे तक। रात को आठ बजे करीब वर्षा व ओले पड़े। बहुत वर्षों के बाद ओले खाये। रहने के कमरे में ओले ठीक आते थे।

नागपुर जेल, २७-२-४१

एकनाथ—काया ही पंढरी आत्मा हा विट्ठल। नांदतो केवल पांडुरंग।
भाव-भक्ति भीमा उदक तें वाहे। बरवा शोभताहे पांडुरंग।
दया, क्षमा, शान्ति हे चि वा कुवंट। मिलाला से थाट वैष्ण-
वांचा। देखिली पंढरी जनी वनी। एका जनार्दनी वारी करी।

विनोबा—खादी और गादी की लड़ाई है। लंगोटिये ही सबसे भाग्यशाली हैं। 'कौपीनवन्त खलु भाग्यवन्तः।'

आज चर्खे की गति घंटे में तीन सौ तार, आध घंटे मे १६० तार। सवा दो घंटे मे ६०० तार हुए। मन को समाधान रहा। पूनी का प्रताप भी था। आज तकली में भी सुधार हुआ। आध घंटे मे ११

तार—हाथ में दर्द सो हो जाता है। दोपहर को धूप निकली।

'उष काल' आज भी तीन घंटे करीब पड़ा।

परसों होशंगाबाद से जिन पन्द्रह सत्याग्रहियों को पकड़कर फिर यहां लाये थे, उन्हें छोड़ दिया गया। उन्हीं में दोनों स्त्रियों को भी।

ब्रह्मदत्त से उर्दू पढ़ी, विनोबा से विचार-विनिमय।

२८-२-४१

एकनाथ—खुर्पू लागे सांवत्यासी। न पाहे यातीसी कारण। घडी मडकें कुंभाराचें। चोख्यामेळ्याचीं ढोरें ओढी। सजन कसायाचे विकी मांस। दामाजीचा दास स्वयें होय। एका जनार्दनी जनी संगें। दळूं कांडूं लागे आपण।

विनोबा—निर्दोष दान, और श्रेष्ठ कला का प्रतीक है खादी।
दुनिया में आलस्य को पोसने जैसा दूसरा भयंकर पाप नहीं।
दान में विभाग "दरिद्रान् भर कौन्तेय, मा प्रयच्छेश्वरे धनम्" श्रीमानों के भरण की जरूरत नहीं है। जो दरिद्री है, उनके पेट के गढ़े को पाटना है।

पूज्य गांधी को इस प्रकार प्रयाग से तार किया :

Pray, hospital prove worthy Kamala's memory. Nariyalwala's proposals regarding accounts agreeable. Suggest another treasurer's appointment preferably from Allahabad. —Jamnalal

कमला नेहरू की मृत्यु को आज पांच वर्ष हो गये।

शाम की प्रार्थना, दोनों में जाना।

वर्धा में दामोदर की पुनी के लिए बृजलालजी ने टेलीफोन करवाया।

डा० दास के लिए भी कह दिया।

१-३-४१

एकनाथ—मजसी अंगें विविध शरीर। जाणें मी निर्धार अंकित त्याचा।
त्याचें घरें काम करीन मी धर्में। पडो नेदी व्यंगें सहसा कोठें।
एका जनार्दनी त्याचा मी अंकित। राहे पै तिष्ठत त्याचे दारीं।

विनोबा का प्रवचन—'श्रमदेव की उपासना' : 'हिमालय से निकलने वा
गंगा गंगोत्री के पास छोटी और शुद्ध है। प्रयाग की गंगा में नदि
नाले और गटर मिलकर वह वैभवशाली बन गई है।
द्वारिकाधीश होने के बाद श्रीकृष्ण ग्वालों के साथ रहने आया कर
थे। गायें चराते, गोबर उठाते थे।
"कराग्रे वसते लक्ष्मी" अंगुलियों के अग्रभाग में लक्ष्मी है। तीन सा
पहले मेरे प्राण पखेरू उड़ गये थे, शोकाकुलता के भाव बढ़ते ही फि
इस शरीर में लौट आये।
मुलाकात—सावित्री, शान्ता, श्रीनिवास, दामोदर। जानकीजी की
स्थिति वैसी ही चल रही है। श्री जगातदार ने दामोदर को मंडारा से
सुन्दर पत्र लिखा है। पढ़-सुनकर सुख व समाधान मिला। डा० दास
नहीं आये, कारण मेरा ता० २४ को भेजा हुआ पत्र वर्धा मे ता० २८ को
दोपहर को मिला। दूसरे, डा० दास सरकारी आज्ञा साफ तौर से उनके
लेना चाहते थे, क्योंकि पहले उनका यहां अपमान हुआ, वह ऐसा सम-
झते थे।
श्री गढेवाल, आई० पी० जी० आये थे। उन्होने कहा 'बी' व 'ए' वर्ग
एक हो जावें। 'सी' वर्ग को भी सोने आदि की सुविधा दे दी गई है।
त्रिवेदी के बारे मे भी कहा।

२-३-४१

एकनाथ का भजन—एका देहा माजी दोघे पै वसती। एकासी
बंधन एका मुक्त गति। पहा हो समर्थ करी तैसें होय। कोण त्यासी
पाहे वक्र-दृष्टि। पाप-पुण्य दोन्ही भोगवी यका हातीं। ऐसी आहे पवि
अतर्क्य ते।
विनोबा—"राष्ट्रीय अर्थ-शास्त्र : 'घायल की गति घायल जाने।' मैं
श्रद्धापूर्वक, ध्यानपूर्वक कातता रहा। आठ घंटे इस तरह काम करने पर
भी मेरी मजदूरी सदा दो आने पड़ती थी। रीढ़ मे दर्द होने लगता था।
लगातार आठ घंटे काम करता था। मौनपूर्वक कातता था, एक बार

पालथी जमाई तो चार घंटे उसी आसन मे कातता था, तो भी सवा दो आने ही कमा सका। सच्ची अर्थव्यवस्था में प्रामाणिक मनुष्यों के लिए पूरी सुविधा होनी चाहिए। आलसी यानें अप्रामाणिक लोगों के पोषण का भार राष्ट्र के ऊपर नहीं हो सकता।"

बापूजी आज इलाहाबाद से वर्धा पहुच गये। जवाहरलालजी लखनऊ जेल में ले जाये गए।

शतरंज—दुर्गाशंकरजी मेहता, जमनालाल चोपड़ा आदि, थोड़ी देर श्री मेहता भी आ गये थे। उन्होंने पुस्तक मे से शतरज की चालें बतलाईं।

शाम को गोपालराव, विनोबा के साथ।

सुबह श्री कानड़े शास्त्री के साथ भोजन व उनका परिचय शुरू किया। बालकपन से आज की स्थिति तक का सुनकर आनन्द हुआ।

शाम को श्री कलाप्पा के साथ भोजन किया। इन्हें जल्दी ही मेडिकल ग्राउन्ड पर छोड़ने वाले हैं।

जेल से खबर मिली कि वर्धा से फोन आया है। डा० दास कल उधर आवेंगे। रात को ११ बजे करीब सोना।

३-३-४१

एकनाथ—जागा परीं निजला दिसे। कर्म करी स्फुरण नसे। सकळ शरीराचा मोळा। होय आत्मयाचा मोदळा। संकल्प-विकल्पाची ख्याति। उपजे चिंता कदा चित्तीं। या परी जनीं असोनि वेगळा। एका जनार्दनी पाहे डोळां।

विनोबा—वृक्ष-शाखा-न्याय, कांग्रेस और किसान-सभाएं—

"जिमि बालक करि तोतरि बाता। सुनहि मुदित मन पितु अरु माता।"

आज सेवाग्राम से डा० दास आये। साथ मे दामोदर भी थे। डा० दास ने जेल के ‍ ए० डी० बाम, दूसरे डाक्टरों के व प्यारेलाल की उपस्थि ‍ ी प्रकार तपासा। मेरा वजन १८४, ब्लड प्रेशर १४० ‍ ‍ ‍ ‍ ें में ही आई० जी० पी० ले० क० भड़ेवाल व

दूसरे बड़े अधिकारी भी आ गये। गढ़ेवालजी व डा० दास का परिच
हुआ, बातचीत। इन्होने कहा मैं तो फास्ट (उपवास) से ट्रीटमें
(इलाज) के हक मे नही हूं। परन्तु अगर मैं चाहता हूं तो बिला-शक
ले सकता हू, आदि। कल से डा० दास का ट्रीटमेंट शुरू हो जावेगा
(४८) अंश मंतरे का रस लेना व कम-से-कम पचास अंश पानी
लिए कहा। और मालिश एक बार तो जरूर ही लेना है। कसरत नहीं
ज्यादा थकावट लगे, ऐसा परिश्रम नहीं। बुधवार को फिर आवेंगे।
आज 'उष:काल' अथवा, 'अंडीचशें वर्षा पूर्वीचे महाराष्ट्र'—ए
ऐतिहासिक कादम्बरी (उपन्यास) पूरी की। इसमें ८० प्रकरण है-
४६६ पानी (पन्ने)। बारीक अक्षर मे हरिनारायण आप्टे ने लिखी है।
श्री कलाप्पा आज मेडिकल ग्राउण्ड पर छोड़ दिये गए।
आज शाम को प्रथम बार श्रीमती प्रमिला ओक के यहां से आया हुआ
पूरणपोली (बिना घी व तेल से बनाया हुआ चूरा) मित्रों के साथ
थोड़ा खाया।

४-३-४१

एकनाथ—जनार्दनें मज केला उपकार। पाडिला विसर प्रपंचाचा।
प्रपंच पारखा झाला दुराचारी। केली से बोहरी काम-क्रोधां। मद
तृष्णा ह्याचें तोडियेलें जाळें। कामनेचें काळें केले तोंड। एका जनार्दनें
तोडिलें लिगाड। परमार्थ गोड दाखविला।
विनोबा—राजनीति या स्वराज्य नीति (एक भिखारी का स्वप्न)
हिन्दुस्तान की जनता अहिंसक, अहिंसक और अहिंसक ही है। "अ
कामये राज्यम्।" स्वराज्य-साधना और राज्य-कामना, याने (स्व.
राज्य-साधक हैं, हमें राज्य-कामना का स्पर्श न हो।
डा० दास ने कहा—आज से आप अस्पताल मे रहने वाले रोगी बन
जावेंगे। फल वगैरा अस्पताल के मार्फत आवेंगे—खर्च का हिसाब
पत्र के मुताबिक हो जावेगा।
बाहर मे घाई चक्कर मालूम हुए। मस्तक भारी-सा रहा। बाद

खाये, शाम को उतना रस कम लिया।

नागपुर जेल, ५-३-४१

एकनाथ—मन रामीं रगले अवघें मन चि राम झालें। सबाह्य अभ्यंतरीं अवघें रामरूप कोंदलें।

विनोबा—"सेवा व्यक्ति की, भक्ति समाज की" व्यक्ति की भक्ति में आसक्ति बढ़ती है। इसलिए भक्ति समाज की करें। सेवा समाज की करना चाहें तो कुछ भी नहीं कर सकते। समाज तो एक कल्पनामात्र है। कल्पना की हम सेवा नहीं कर सकते। माता की सेवा करने वाला लड़का दुनिया भर की सेवा करता है, यह मेरी कल्पना है।

श्री भाण्डेकर भागरवाने से बातचीत हुई। प्यारेलाल की कल छूटने की तैयारी है। रात को वह देर तक कातते रहे। रोशनी तेज थी। आवाज भी चर्खे की ज्यादा थी। नींद देर तक नहीं आई।

आज थोड़ी कमजोरी मालूम हुई, दर्द कम रहा, संतरे का रस तीन रतल (४८ औंस) व पानी करीब चार रतल (६४ औंस) से ज्यादा लिया। डा० महोदय आज से यहां रहने (सोने) आ गये।

६-३-४१

एकनाथ—मागें पुढें विट्ठल भरला। रिता ठाव नाहीं उरला। जिक
रहावें तिकडे आहे। दिशा-द्रुम भरला पाहे। एका जनार्दन
गर्व देवी। विट्ठल व्यापक निश्चयेंसीं।

विनोबा—ग्राम-सेवा और ग्राम-धर्म : मेरी सलाह तो यह है कि ह देहात में जाकर व्यक्तियों की सेवा करने की तरफ अपना ख्याल रख चाहिए, न कि सारे समाज की तरफ।

बापूजी के लेख मुझे कम ही याद आते हैं। लेकिन उनके हाथ का परो हुआ भोजन मुझे हमेशा याद आता है, और मैं मानता हूं कि उससे जीवन में बहुत परिवर्तन हुआ है।

मैं इसे एक लाख का चर्खा कहता हूं। लेकिन मेरे पास तो एक लाख का चर्खा है, और वह है तकली।

प्यारेलाल के कारण, साढ़े तीन बजे, जब उन्होंने रोशनी की, आंख खुल गई। रात को सोने को कम मिला। प्यारेलाल आज छूट गये।
शाम के बाद थोड़ी देर बाहर हवा मे घूमे, डा० महोदय के साथ शतरंज खेली।
'नागपुर टाइम्स' सुना।

७-३-४१

एकनाथ—मीचि देवो मी चि भक्त। पूजा उपचार मी समस्त। ही चि उपासना भक्ति। धर्म अर्थ सर्व पुरती। मी चि गंध मी चि प्रसता। मी चि यांहे मी चि पुरता। मी चि धूप मी चि दीप। मी माझें देव स्वरूप। मी चि माझी करीं पूजा। एक जनार्दनी नाही दुजा।
विनोबा—साहित्य की दिशा-मूल-"विरोधी" विवाद का बल, दूसरों का जी जलाना, जली-कटी या पैनी बातें कहना, मखौल (उपहास), छल, व्यंग्य, मर्म-भेद (मर्मस्पर्शी) आड़ी-टेढ़ी सुनाना (वक्रोक्ति) कठोरता, पेचीदगी, सदिग्धता, प्रतारणा (कपट)—ये ज्ञानदेव ने वाणी के अवगुण बतलाये हैं।
"हे प्रभो! अभी तक मुझे पूर्ण अनुभव नहीं होता है, तो क्या मेरे देव, मैं केवल कवि ही बनकर रहूं ?" तुकाराम ने कहा है।
सुबह विनोबा की ओर जाकर आना, सुगनचन्द्र धामनगांव वाले के पेट मे दर्द था, उससे बातचीत। डा० महोदय की सलाह ली।
विनोबा, डा० महोदय को कहना पड़ा, पूरा आराम लेना जरूरी है।
हिन्दुस्तान पत्र (दिल्ली) मे लड़ाई का नक्शा देखा। रात को एक बाजी शतरज, अखबार देखा।

८-३-४१

एकनाथ के दो भजन —(१) घर सोडोनि जावें परदेशा। मज सर्व देश सरिसां। कडे कपाटें सीवरी। जिकडे पांहे तिकडे हरी। आतां कोणीकडे जावें। जिकडे पाहे तिकडे देव। एका बैसला निरजनीं। न आइजे जनीं वनी।

(२) देह जाईने तरी जावो राहील तरी राहो। दोराविया सर्पा जिणें मरणें ना यावो। आम्ही जिता चि मेलों जिताचि मिलें। मरोनियां भालों जिवें विण।

विनोबा—"लोकमान्य के चरणों में": साधु-सन्तो का नाम लेते ही मेरी जो स्थिति होती है (गदगद हो उठता हू), वही तिलक के नाम से भी होती है—जैसे "सबरी गीध सुसेवकनि सुगति दीन्ह रघुनाथ। नाम उधारे अमित खल वेद विदित गुननाथ।"

हमें महापुरुषो के चारित्र्य का अनुसरण करना चाहिए, न कि उनके चरित्र का। चरित्र उपयोगी नही। चारित्र्य उपयोगी है। गहराई से देखें तो आज भी 'राम का अवतार' हो चुका है। यह जो रामलीला हो रही है, इसमे कौन-सा हिस्सा लू, किस पात्र का अभिनय करूं, यह मैं सोचने लगता हू।

मुलाकात—चि० उमा, राजनारायण (सुशील), दामोदर आये। उमा व राजनारायण यहा से हल्द्वानी (नैनीताल) जायेंगे।

सुबह-शाम आश्रम चौपाटी तक घूमने जाना, श्री जगतदार आज आखिर आ गये। मिलने आये। मैंने उन्हें कहा, आप मेरे पास रह सकते हैं, खुशी से। श्री गढ़वालजी आई० जी० पी० भी आये, मिल गये। त्रिवेदी से अभी नहीं मिले।

६-३-४१

'एकनाथ के भजन' (संग्रह) कल पूरा हुआ।

विनोबा—निर्भयता के प्रकार:—(१) विज्ञ निर्भयता, यह निर्भयता है, जिसमे हम खतरो से परिचय प्राप्त करके उनके इलाज जान लेते हैं। (२) ईश्वरनिष्ठ निर्भयता, मनुष्य को पूर्ण निर्भय बनाती है। (३) विवेकी निर्भयता, मनुष्य को अनावश्यक और ऊटपटांग साहस नहीं करने देती।

बापू का कहना है कि निर्भय सेवक का कर्त्तव्य यह है कि हमे सुकरात की तरह जीना और मरना सीखना चाहिए।

सुबह—विनोबा के स्थान तक घूमना, बाद मे वियाणीजी के कमरे में शतरंज एक बाजी खेली। कानडे शास्त्री, किरोलीकर, छगनलाल, बृजलालजी से ठीक बाजी जमी; शाम को थोड़ी देर गोपालराव, विनोबा, महोदय से, पर वह बीच में छोड़ दी गई।
श्री लक्ष्मणप्रसादजी पोद्दार व चि० सावित्री ने, खास मुलाकात की। इजाजत लेकर मेरे स्थान पर ही उन्हें बृजलालजी ले आये।
घनश्यामदास बिड़ला की डायरी के कुछ पन्ने पढ़ना शुरू किया।

नागपुर जेल, १०-३-४१

विनोबा—'तुलसी-रामायण' में भरत तुलसीदास की ध्यानमूर्ति है। भरत का मांगना : "धरम न अरथ न काम रुचि, गति न चहुं निरवान। जनम-जनम रति राम-पद यह वरदान न आन।"
"सिय राम-प्रेम-पियूष पूरन होत जनम न भरत को।
मुनि-मन-अगम-जम-नियम-शम-दम-विषय-व्रत आचरत को।
दुख-दाह-दारिद-दंभ-दूषन सुजस-मिस अपहरत को।
कलिकाल तुलसी-से सठहिं हठि राम-सनमुख करत को।"
विनोबा का स्वास्थ्य भी कल से ठीक नहीं है, थोड़ा ज्वर हो गया है। आज इन्हें कोशिश कर संतरे का रस पिलाया। मन को समाधान मिला।
शाम को चौपाटी-आश्रम की ओर दादा पंडित अकोला वाले के साथ बातें करते हुए जाना। दादा पंडित भी श्रेष्ठ सज्जन पुरुष हैं।
दोपहर को शतरंज महोदय के साथ—महोदय ने तो निश्चय कर लिया, जेल में शतरंज नहीं खेलना। मैं भी विचार कर रहा हूं।
'डायरी के पन्ने' पढ़े, मित्र लोग आये।

११-३-४१

विनोबा—कवि के गुण, ईशोपनिषद से—
कविर्मनीषी परिभूः स्वयम्भूः यथातथ्यतोऽर्थान् व्यदधात् शाश्वतीभ्यः समाभ्यः।
अर्थ—कवि (१) एक मन का स्वामी, (२) विश्व-प्रेम से भरा हुआ, (३) आत्मनिष्ठ, (४) यथार्थ भाषी और (५) शाश्वत काम कर हुआ

रखने वाला होता है।
मनन करने के लिए नीचे दिये अर्थ सूचित करता हूं :
(१) मन का स्वामित्व—ब्रह्मचर्य, (२) विश्वप्रेम—अहिंसा (३) आत्मनिष्ठता—अस्तेय (४) यथार्थ-भाषित्व—सत्य, (५) शाश्वत काल पर दृष्टि—अपरिग्रह।
स्वास्थ्य ठीक रहा। गोड़े मे दर्द कम मालूम होता जा रहा है। पांव पीछे मे भी दर्द कम होता है। कमजोरी भी कम मालूम होती है।
श्री सेनगुप्त आज भी काम पर नहीं आये। सुना कि उन्हें छ महीने स्वास्थ्य सुधारने के लिए छुट्टी दी गई है। कोई नया सुपरिन्टेन्डेन्ट (जेल) आयेगा।

१२-३-४१

आज दादा अकोला वाले व कचरू गणपत नागपुर वाला हरिजन, जो यहां सफाई का काम करता था, छूटे।
विनोबा का प्रवचन— फायदा क्या है? फायदा ढूंढने की लत— सूत कातने से क्या फायदा, स्वराज्य हासिल करने मे क्या फायदा, आदि। समूची सृष्टि मनुष्य के फायदे के लिए ही है। इस बेकार की गलत-फहमी में हम न रह जायँ, यही इसका फायदा है।
डा० एस० सी० दास सेवाग्राम से मोटर से आए, दामोदर साथ थे। बाहर सोने के लिए लिखकर जेल डाक्टर को दिया गया। छाती वगैरा की जांच की, सब ठीक चल रहा है, कहा। उन्हें सन्तोष हुआ। जानकीदेवी को दूध तो पहले ही शुरू कर दिया था, अब अन्न भी शुरू कर दिया। कहता था स्वास्थ्य ठीक है।
घनश्यामदास बिड़ला की डायरी के कुछ पन्ने और पढ़े, किताब पूरी की। २६ प्रकरण १३४ पाना (पन्ने), डायरी लिखी तो बहुत ही अच्छे ढंग से है, परन्तु मुझे सन्देह है, जो कई लोग जीवित हैं उनकी बहुत-सी बातें खानगी (निजी) किस्म की है। उन्हें जीवनकाल मे ही प्रकाशित करना कहां तक उचित है? मुझे तो सन्देह है ही, विनोबा की यही कहते है।

११-१-४१

रात को नींद बराबर नहीं आई। दो बजे उठकर 'फ्रूट सास्ट' लिया। बाद में विचार-विनिमय होता रहा। आज तक मित्रों में, कुटुम्बियों व जिनकी मेरे देखते-देखते मृत्यु हो गई, उनका स्मरण व गिनती लगाता रहा। मेरे बराबरी के व मुझसे छोटे कइयों की मृत्यु का हिसाब लगाया। जयपुर की स्थिति पर भी देर तक विचार-विनिमय किया। वहां मित्रों का (कार्यकर्ताओं का) पूरा सहकार न मिलते देखने के अभाव में उत्साह व योजना स्थगित करने के सिवाय कोई चारा नहीं दीखता। परमात्मा की लीला अपरंपार है। जहां सचाई से काम करने की इच्छा थी, वहां सेवा लेने वालों का अभाव है, जहां सेवा लेना चाहते हैं, वहां काम करने का उत्साह नहीं होता। आखिर मैंने अपनी कमजोरियों के ख्याल से सन्तोष कर लिया।

विनोबा का प्रवचन—आत्मशक्ति का भाव : "गांधीजी का कथन है। आइये, हम ईश्वर से प्रार्थना करें कि हमारे देश में सत्पुरुषों का ऐसा ही अखंड प्रवाह चलता रहे। निश्चय छोटा-सा ही क्यों न हो, मगर उसका पालन पूरा-पूरा होना चाहिए।"

आज छारंडी(धुली वंदन) के निमित्त जेल में जो 'अ' 'ब' वर्ग के राजनैतिक कैदी थे, इन सबने मिलकर उत्सव मनाया। मेरे डेरे पर सुबह ८ से ८॥ बजे तक सबको उपाधि प्रदान की गई व कइयों की कविता में 'गुणगान (समालोचना) सुन्दर रूप से की गई। श्री भवानी तिवारी की सूक्ष्म बुद्धिमत्तापूर्ण थी। काशीनाथ तिवारी की भी ठीक थी। मुझे 'अगडबम' की पदवी मिली, व शाम को "Count Bogus" घुटने में दर्द रहा।

व्यवहारजी ने प्रीति-भोज दिया। शाम को भी उपाधि, विनोदी नकलें हुईं। श्री महेश गारोडी का काम, अग्निभोज-मंडलोई की नकल, गणेश पटेल तिवारी की, काशीनाथ तिवारी—दादा पंडित की।

भवानी वगैरा ने सुन्दर, प्रभावशाली ग्राम्य भजन (लोकगीत) दल के

याद गाया।
विनोबा की प्रार्थना मे शामिल। विनोबा ने सुन्दर भजन गाया।
लाला अर्जुनलाल ने चि० सावित्री की पोशाक के बारे में चर्चा है, कहा।

नागपुर जेल, १४-३-४१

शुरू मे बाहर पूर्णिमा की रात में अकेले बहुत देर तक आकाश देखता रहा।
विनोबा—'कौटुम्बिक शाला' इस लेख मे जीवन क्रम के सम्बन्ध में जो चौदह(१४) बातें कही हैं, वे सब मनन करने योग्य है।
आज सु० जे० श्री पाठक ने बाहर सोने की इजाजत दी, तट्टे व टाट की छत लगाने की भी। अग्निभोज को यहां भेजने की इजाजत भी मिली।
वर्धा मे डा० दास को पत्र भिजवाया। जीभ वगैरा की हालत लिखी।
रामेश्वर अग्निभोज यहां रहने आ गये।
रात्रि को प्रथम बार बाहर सोना हुआ।
विनोबा, गोपालराव के साथ थोड़ा घूमना। श्री घनश्यामसिंहजी गुप्त दुर्गवाले आये, देर तक उनके घर की परिस्थिति, आर्थिक तथा अन्य विषयों पर विचार-विनिमय होता रहा।

१५-३-४१

विनोबा—'पुराना रोग'—हमारे जो अच्छे काम हैं, उनका अनुकरण करो, बुरे कामों का नहीं।
मुलाकात—सावित्री, सुशील नेवटिया, केदार आज ही बम्बई से आयी थीं। वासन्ती, दामोदर, सावित्री ने कुछ प्रश्नों के उत्तर लिखकर दिये, समाधान तो नहीं हुआ, परन्तु उपाय क्या? केदार, नर्मदा को बालक होने वाला है इसलिए, अकेले ही कलकत्ते जा रही है। सामाजिक दृष्टि से व व्यावहारिक दृष्टि से तो इसका इस तरह जाना उचित नहीं मालूम देता, परन्तु माता का हृदय है वह नर्मदा के पीछे पूरी पागल भी है, इसलिए जायेगी ही।

श्री चतुर्भुजजी डिडयानिया की बीमारी के समाचार केशर ने कहे, चिंता हो रही है। दामोदर को लिखने को कहा है।

श्री लक्ष्मणप्रसादजी मोटर-दुर्घटना से बाल-बाल बच गये, आनन्द ईश्वर का धन्यवाद किया।

श्री घनश्यामसिंहजी गुप्त की तीनों लड़कियां शकुंतला, सुशीला व ... आज मुलाकात के लिए आयी थी, मुझे भी उन्होंने बुला भेजा था। मैंने शकुन्तला व सुशीला से बातें की। उनकी स्थिति समझी व उन्हें हिम्मत भी दी व समझाया भी। मुझे तो दोनों लड़कियों के विचार-व्यवहार से संतोष मालूम हुआ। मैंने श्री गुप्तजी को ठीक तौर से समझाने का प्रयत्न किया।

आज थकावट ज्यादा मालूम देने लगी। पलंग पर लेट गया।

१६-३-४१

विनोबा—'सेवा का आधार धर्म'—'देहाती लोग आलसी हो गये।' दर-असल, आलसी तो हम हैं। स्त्रियों की सेवा करो—मां की साड़ी धोने में हमें शर्म आती है तो पत्नी की साड़ी धोने की तो बात ही कौन कर सकता है।

श्री गुप्तजी, पूनमचन्दजी, लालाजी के जाने के बाद, श्री वृजलालजी, डागाजी, छगनलाल, पुखराजजी, सवाईमल को मगनलाल बागड़ी लेकर आया और उसने अपना उद्देश्य कहकर सुनाया। सामाजिक, राजनैतिक, देशी रियासतों में काम करने की बाबत विचार-विनिमय देर तक होता रहा। मगनलाल बागड़ी में काम करने की लगन व इच्छा तो ठीक दिखाई देती है, अगर ठीक साथी मिलते रहें तो कुछ काम कर सकेगा।

'हृदयाची हांक'—वि० स० खांडेकर लिखित कादंबरी (उपन्यास) आज पूरी की। ठीक वर्तमान स्थिति के लायक लिखी है। मन पर असर हुआ। बहुत देर तक विचार चलते रहे।

शतरंज—गोपालराव, विनोबा, कन्हैयालालजी, बालाघाट वाले से। विनोबा की शाम की प्रार्थना में शामिल होना। श्री शंकर भगवान का

निश्चय सती पार्वती के कपट पर जो हुआ वह मननीय था।
श्री गाडोदियाजी का भेजा हुआ ता० २६ जनवरी ४१ के 'हिन्दुस्तान' में छपा लेख 'प्रकृति बनाम दवा' डा० महोदय से सुना—ठीक विनोद रहा।

१७-३-४१

विनोबा—'साक्षर या सार्थक'—बातों की कढ़ी और बातों का ही भात खाकर पेट भरा है किसी का ? यह सवाल मार्मिक है। कवि के कथनानुसार पोथी का कुआं डूबता भी नहीं है और पोथी की नैया तैरती भी नहीं है।
सुबह—पूनमचन्दजी, लालाजी, बृजलालजी, छगनलाल से बातचीत, शाम को विनोबा, गोपालराव, बाद में गुप्तजी दुर्ग वालों से। इनसे जैसे-जैसे परिचय बढ़ता जा रहा है, सुख मिल रहा है।

१८-३-४१

विनोबा—दो बातें : 'हमें उनसे इतना ही कहना चाहिए'...जग का ज्ञान कि जगने का ज्ञान, यह हमारे सामने पहला सवाल है।
श्री गुप्तजी से दुर्ग में महिला आश्रम जल्दी शुरू कर देने के बारे में ठीक विचार-विनिमय हुआ।
प्यारेलाल गिरफ्तार हो गये, कल मुकदमा चलेगा। उम्मीद है, इस बार ६ महीने की सजा लेकर वह यहां परसों तक आ जावेंगे। अग्निभोज के भजन अच्छे मालूम देते हैं।

१६-३-४१

विनोबा—इष्ट भक्ति का रोग · निंदा-स्तुति जन की, वार्ता वधू-धन की। भगवान ईसा ने कहा, "जिसका मन बिल्कुल साफ हो, वह पहला ढेला मारे।"
'बुरा जो देखन मैं चला, बुरा न दीखा कोय।
जो घट खोजा आपना, मुझसे बुरा न कोय।'
डा० एस० सी० दास व दामोदर आये। डाक्टर ने तपासा, रिपोर्ट देखी।

विनोबा से बातें—मन.स्थिति के बारे में।
प्यारेलाल को आज छः महीने की सादी कैद हो गई। 'वो' वर्गं में बन आ जावेंगे। उनके यहां आने पर उनकी ठीक व्यवस्था के लिए बात की जायेगी।

२०-३-४१

विनोबा—गीता जयन्ती : गीता मइया के यहां छोटे-बड़े का भेद नहीं है, बल्कि खरे-खोटे का भेद है। गीता का प्रचार माने भक्ति का प्रचार, त्याग का प्रचार। मन भर चर्चा की अपेक्षा कन-भर आचरण श्रेष्ठ है। 'कुरुक्षेत्र' माने कर्म की भूमि।
आज सुबह दो सगे भाइयों को इस जेल में एक साथ फांसी दी गई। परमात्मा इनको सद्‌गति प्रदान करे। यह सजा तो जल्द-से-जल्द बन्द हो जानी चाहिए। सुना है कि ये दोनों तेली जात के थे। शायद नागपुर जिले के हो। छोटा भाई कबूल करता था कि उसने खून किया है, बड़ा भाई निर्दोष है, बड़ा भाई भी कहता था कि मैं निर्दोष हूं। छोटा तो राम का नाम भी जोरों से लेता था। बड़ा कहता था कि राम है ही कहां। अगर राम होता तो मुझ निरपराध को क्यों फांसी दी जाती। यह सब सुनकर ऐसा ही मालूम देता था कि सचमुच बड़ा भाई निर्दोष था।
श्री प्यारेलाल आज यहां आ गये, चिड़ियाखाने में ठहरे हैं। मुझसे मिले, दिल्ली, सेवाग्राम की हकीकत कह गये।
विनोबा, गोपालराव, गुप्तजी से आज जो फांसी लगी, उस पर देर तक विचार-विनिमय होता रहा।

२१-३-४१

आज दो बाजी शतरंज खेली, मन बहलाने के लिए कन्हैयालालजी से।
विनोबा—'श्रवण और कीर्तन'—वही भक्त-वत्सल प्रभु, वही पतित-पावन नाम।

बृजलाल बियाणी से आज पेट भरकर साफ-साफ बातें हुईं। मेरे मन में जो इनके स्वभाव-वृत्ति वगैरे के बारे में कहना था, वह कह दिया। आशा है वह अवश्य विचार भी करेंगे। सुधार व अमल करने की कोशिश करना भी सम्भव है। उन्हें एक-दो घटनाओं के उल्लेख से अपनी भूल भी साफ मालूम दी।

श्री त्रिवेदी, चीफ सेक्रेटरी, गवर्नर की परवानगी लेकर मुझसे मिलने करीब १० बजे आये। एक घंटे से ज्यादा बैठे। जयपुर के सम्बन्ध में खुलासा बातचीत हुई। आखिर यह निश्चय हुआ कि वह कल सर फ्रान्सिस वायली को पत्र लिखेंगे। उसका जो जवाब आयेगा, वह मुझे लिखकर बिना सेन्सर भिजवा देंगे, क्योंकि ये तो अगले सप्ताह पचमढ़ी चले जावेंगे। मेरी इनसे प्रत्यक्ष आज प्रथम बार ही मुलाकात हुई। इन्हें सूचना इतवार को ही मिली, नहीं तो पहले मिल जाते। आदमी सज्जन व होशियार दिखाई दिये। इनका मामला सर वायली के हाथ में रहेगा। सर वायली को जरूरत हुई तो बाद में पत्र लिखने का विचार किया जायगा।

नागपुर जेल, २४-३-४१

पूनमचन्दजी, लालाजी, हमेशा की तरह आये। आज सर्वोदय में प्रकाशित जेल के सम्बन्ध में किशोरीलालभाई का लेख पढ़ गये।
बृजलालजी, महेश भी हमेशा के मूजब आये व आज हिन्दुस्तान नक्शा पूरा किया।

२५-३-४१

स्नान करते समय चक्कर-सा आ गया था, कमजोरी थोड़ी बढ़ रही है।
उर्दू की दूसरी किताब आज पूरी हुई। 'उल्का' खांडेकर की लिखी मराठी कादंबरी (उपन्यास) भी आज पूरी हुई। ठीक लिखी गई है
श्री खांडेकर से परिचय करने की इच्छा बढ़ती ही जा रही है।
खांडेकर—"घरी एकच पणती मिण मिण ती।
म्हणनूं को उचल चल लग बग ती।" ॥धृ०॥*

* मेरे घर में एक छोटी-सी माटी की दीवली टिमटिमा रही है। उ[illegible] उठाकर ले जाने को मुझे [illegible] ।—सं०

विनोबा ने इसे भली प्रकार गाकर बतलाया। अर्थ भी समझाया।
आज की चर्चा का विषय—अगर मेरे सरीखा मनुष्य गरीब होकर मरना चाहे तो किस प्रकार व्यवहार में यह आ सकता है ? चर्चा पूरी नहीं हो पाई।
मेरी इच्छा गरीब व पवित्र होकर मृत्यु मिले तो समाधान से शरीर छूटेगा, अन्यथा भी मृत्यु का स्वागत करने की तो हमेशा ही तैयारी है, परन्तु उसमें कमजोरी का कारण विशेष है।
आज प्यारेलाल ने मालिश की। महोदय को बताई।
श्री रविशंकर शुक्ल सिवनी से यहां इलाज के लिए लाये गए। उनसे मिलना।
शाम को प्रार्थना में विनोबा ने जेल में मेजबानियां वगैरा का विरोध किया और क वर्ग की स्थिति समझाई।

२६-३-४१

आज चि० मदन दइया व कान्ता के बारे में विचार चलने लगे, खासकर दो विषयों पर—(१) यह दोनों तन-मन से देश-सेवा में सच्चाई के साथ लग जावें तो इनका कल्याण तो होगा ही, देश को लाभ पहुंचेगा, (२) इनका हिस्सा इन्हें वापस मिलना चाहिए, मुझे कोशिश करनी चाहिए वह वापस दिलाने की। परन्तु मेरा उत्साह तब ही बढ़ सकेगा जब इनकी वृत्ति, व्यवहार, जीवन, सेवा की ओर लगे। कान्ता में तो शक्ति है, परमात्मा इन्हें सद्बुद्धि प्रदान करे। शुक्ला बाई के लिए भी ऐसे ही विचार आते रहे।
आज से—'मी' नाम की हरिनारायण आप्टे की कादंबरी (उपन्यास) पढ़नी शुरू की।

२७-३-४१

पूनमचंदजी से उदयराम पहलवान वगैरा के बारे में इनकी स्थिति सुनी।

आज सभी से— श्री रुक्मणी बाई, नारू घोंदे, मोहन छाजेड़ वगैरह
लाये गए। दोनों बहनों को छ. मास की सादी कैद हुई है। इनके
की खातिर सरकार को भी इज्जत करनी ही पड़ी। इन्हें 'बी'
दिया है। मोहन को तीन महीने व 'क' वर्ग।

२८-३-४१

पूनमचन्दजी से बातचीत। नागपुर में केशरबाई जैन (विधवा, उमर ४५-४६) ने पांच वर्ष पहले आमरण उपवास (संथारा) कर अपना शरीर पैंतालीस दिन में छोड़ दिया था। केवल गरम पानी लेती थीं। उनके सन्तान वगैरा कोई नहीं थी।

ले० क० गहेदास आई० जी० पी० आये, स्वास्थ्य के समाचार पूछे। कमजोर बहुत हो गये। कहा, इनको इस इलाज पर श्रद्धा नहीं।

विनोबा से उपवास के जरिये शरीर छोड़ने की प्रथा के बारे में ठीक विचार-विनिमय होता रहा। इन्हें यह प्रथा के रूप में पसन्द नहीं है। वह यह अवश्य मानते हैं कि शरीर छोड़ने की इच्छा ही हो तो यह तरीका सबसे अच्छा समझा जा सकता है। त्याग, तपश्चर्या के बारे में इनको कहना पड़ा। हम लोग, (मैं) अभी जो जीवन बिता रहे हैं, वह तपश्चर्या का जीवन (गीता के १७वें अध्याय के मुजब) समझा जा सकता है।

शाम से ही बादल घिरे थे—बिजली तड़की, बूंदें आईं। पलंग पर बाहर से बरामदे में, बाद में, ११ बजे के करीब, अन्दर लिया। नींद गड़बड़ी रही।

आज नया वर्ष शुरू हुआ।*

२९-३-४१

'जयपुर' की परिस्थिति, खासकर राजा ज्ञाननाथ को वहां से हटाने के बारे में रात को देर तक विचार चलते रहे। सर बायली को व महाराज को पत्र लिखने का विचार भी आया।

* पंचांग की तिथि चैत्र सुदी पड़वा होने के कारण। —सम्पा०

बनदेदी नाई ने बाल काटे। शरीर में मालिश ठीक की।
नागो तेली हिंगणघाट वाले को अपीम में एक वर्ष की सजा कम हुई, तीन के दो ही वर्ष रह गये। अगले बारह महीने मे छूट जावेगा। आज खुश मालूम देता था।
मुलाकात—शान्ताबाई, रामकृष्ण, चिरंजीलाल, दामोदर आये। राम ने कहा, बापूजी ने उसे इजाजत दे दी है। राम के विचार, निर्णय-शक्ति आदि देखकर सुख व समाधान मिला। पढ़ाई के बारे में वर्धा में ही कॉमर्स कालेज मे पढ़ने की मैंने राय दी। उसने भी पसन्द कर ली।
शान्ताबाई ने सुशील के बारे में कहा। उसका स्वास्थ्य ठीक रहता है। नहाती-धोती हो गई है—मैंने कह दिया सगाई की चिन्ता मत करो।
चि० पार्वती (गंगाबिसन की लड़की) के लड़का हुआ है, चतुर्भुजजी डिडवानिया का स्वास्थ्य अब सुधर रहा है।
आज शतरंज—पुखराजजी, बृजलालजी, आदि से खेली। शाम को गोपालराव, विनोबा से।
'जन्मभूमि' मे केदारनाथजी की मृत्यु के समाचार पढ़कर चिन्ता होने लगी। यह कहीं दिल्ली वाले केदारनाथजी गोयनका न हों। ज्यादा संभावना उनकी ही दिखाई दी।
आज से प० जवाहरलाल की 'मेरी कहानी' शुरू हुई।

३१-३-४१

'मेरी कहानी'—प्यारेलाल व चर्खा कातते समय अग्निभोज ने पढ़कर सुनायी, ९ से १० बजे तक। बाद मे 'मी' कादंबरी भी पढ़ता रहा।
आज से बृजलालजी बियाणी ने बापू से मेरा परिचय किस प्रकार हुआ, व मुझ पर किन-किन बातों का प्रभाव पड़ा, नोट करना शुरू किया।
आज इस महीने का आखिरी दिन था, इसलिए चर्खा ज्यादा काता। बीच मे कुछ कम रह गया हो तो उसकी पूर्ति हो जायगी।
विनोबाजी, गुप्तजी, गोपालराव से धार्मिक विचार-विनिमय। उमा (पार्वती) के पास सप्त ऋषियों का आना व परीक्षा लेना कहां तक

वाजिब था ? यह प्रश्न मैंने किया।

नागपुर मैल, १-४-४१

पूनमचन्दजी ने घूमते समय पुसाराम के भाई की स्त्री का विधवा-विवाह कैसे करवाया, वह हकीकत कही। गोपीजी व उनकी स्त्री का हाथ यह विवाह कराने में था।

'मेरी कहानी' से श्री बृजलालजी ने नोट्स लिये, बापू के सम्बन्ध में।
विनोबा से पुनर्जन्म, कर्म, पाप, पुण्य आदि पर विचार-विनिमय हुआ।

२-४-४१

डा० दास, जानकीदेवी, राम, दामोदर आये।

रामकृष्ण राष्ट्रीय सप्ताह में खादी बेचेगा, ता० १४ को सत्याग्रह करने का विचार है।

ता० ३१ मार्च तक यहां काता हुआ सूत जानकीदेवी के साथ भेज दिया। बृजलाल से बापू के बारे में लिये हुए नोट्स पर विचार-विनिमय हुआ।

शाम को विनोबा के साथ उनकी जीवनी लिखने के बारे में काफी चर्चा होती रही।

३-४-४१

'मेरी कहानी' बृजलालजी से सुनी।

आज 'मी' नाम की एक सामाजिक कादंबरी हरिनारायण आप्टे लिखित पूरी की। ठीक लिखी गई है यह, खासकर प्रकरण ६७ (महत्वाचीं दोन पत्रें) से लगाकर आगे का सब पढने व विचार, मनन करने योग्य है। भावानन्द (मी) की ओर से प्रगट हुए हैं। इस पर आप्टेजी की उस समय की वृत्ति है, याने यह प्रथम बार जुलाई १८९६ में छपी है। सामाजिक, राजनैतिक, स्थिति निःस्वार्थतापूर्वक लगन से काम करने वालों का अभाव आदि इसके द्वारा भली प्रकार प्रगट होते हैं। इस कादंबरी की प्रसिद्धि सन् १८९६ के करीब 'करमणूक' पत्र से हुई थी। से पैंतालीस वर्ष पहले की स्थिति का दिग्दर्शन इससे मालूम

४-४-४१

आज से नये सु० जे० श्री इन्द्रदत्त गुप्त ने चार्ज लिया। आज वे इधर नही आये।

बृजलालजी से बापू के जीवन-सम्बन्ध मे विचार-विनिमय।

विनोबा, गोपालराव से बातचीत—मैंने विनोबा से कहा, अगर आप मेरी पूरी जवाबदारी लेने को तैयार है तो आपकी देखरेख मे मैं काम करने को तैयार हू। मेरी कमजोरियां, योग्यता, अयोग्यता देख मुझे काम सौंप दिया जाय। उन्होंने कहा, मुझे भी तो बापू ने खूटे से बांध रखा है। मैं भी उड़ना चाहता हू, याने, बन्धन से मुक्त होना चाहता हू, आदि।

५-४-४१

मुलाकात—श्रीमन्नारायण, राधाकिसन, दामोदर आये। श्रीमन ने यूनिवर्सिटी की नीति से असन्तोष प्रगट किया। सुरेन्द्र नासिक मे है, वह भी जायेगा। राधाकिसन से लक्ष्मीनारायण मंदिर के प्लान पर विचार-विनिमय किया। मैंने कह दिया, बापू, श्री मेहता, गुलेटी व तुम्हें जैसा ठीक लगे करना।

आज नये सु० जे०, श्री इन्द्रदत्त गुप्त आये। स्वास्थ्य वगैरे के सम्बन्ध मे सारी स्थिति समझी। बातचीत मे मालूम दिया, यह मेरा जो उपचार चल रहा है, उसमे अड़गा नही डालेंगे। सहायता देना सम्भव है, जयपुर तार के बारे मे कहा, आई० जी० पी० परवानगी देंगे तो भेजूगा नही तो आप मुलाकात मे सन्देश देंगे, इत्यादि।

बृजलालजी बियाणी के यहा से जो हमेशा मिठाई वगैरा बहुत आती है, उस पर विचार-विनिमय। मैंने उन्हें साफ तौर से कहा, इसकी जिम्मेवारी तुम पर है। उन्होंने कहा, मैं अब कल से मिठाई नही मगाऊगा, और भी खानपान के बारे मे सोचूगा।

रामेश्वर(अग्निभोज-बन्धु) हरदा वाले का थोड़ा खासभी परिचय हुआ। सज्जन पुरुष मालूम दे रहा है।

नागपुर जेल, ६-४-४१

रात को नींद की कमी रही। शंटिंग की आवाज तथा विचार चालू ही गये थे।

आज राष्ट्रीय दिन याने राष्ट्रीय सप्ताह का प्रथम दिन, होने के कारण कमजोरी मालूम होते हुए भी २४ घंटे रस न लेकर केवल निबू पानी लेने का नियम रखा, चर्खा ज्यादा काता, आज रामनवमी भी है।

गोपालराव से पू० जाजूजी ने अखिल भारतवर्षीय चर्खा संघ की ओर से नालवाड़ी या सेवाग्राम में संस्था विद्यालय वगैरे के बारे में मेरी व विनोबा की राय पुछवाई थी। हम दोनों के विचार-विनिमय के बाद यही राय निश्चित हुई कि यह सवाल जाजूजी की इच्छा पर ही छोड़ दिया जाय। वे ही वर्धा तालुका, महाराष्ट्र चर्खा संघ व अ० भा० चर्खा संघ का भी विचार कर लेंगे।

'जन्मभूमि' में चर्खा (रेंटिया) के नाम से लिखी हुई 'आत्म-कहानी' पढ़ी गई।

७-४-४१

'मेरी कहानी' चर्खा कातते हुए सुनते रहे।

विनोबा से विचार-विनिमय।

८-४-४१

सुबह साढ़े चार बजे डा० महोदय को कोई कैदी भागता दिखाई दिया। डाक्टर म० तथा अग्निभोज ने जाकर जमादार से कहा। थोड़ी देर विचार, डर-सा मालूम दिया। बाद में मुझे लगा कि अपने लोगों में से ही कोई घूमने आया होगा। तपास करने से मालूम हुआ कि शंकरलालजी चौधरी नरसिंहपुरवाले आये थे, खूब मजाक होता रहा।

आज डा० महोदय ने भूल से सोडा बायकार्ब के बदले फेनासिटीन की पुड़िया दे दी। उससे थोड़ी देर बाद चक्कर आया, जी मचलाया, कमजोरी मालूम होती रही। आज चर्खा कम काता गया, एक बाजी शतरंज खेली।

सुहृद् पूनमचन्द रांका को समझाने की कोशिश की—उपवास न करने के बारे में। मतरे का रस भी उनके पास भेजा। उन्होंने नहीं लिया। उपवास मुझे व विनोबा से कहे बिना ही शुरू कर दिया।

९-४-४१

डा० दास व जानकीदेवी आये। डाक्टर ने तपासा। सब ठीक। मुझे पूछने लगे तो मैंने तो उन्हें कह दिया, इलाज शुरू हुआ है, तब से तीन महीने तक आप अपनी इच्छा मूजब कर सकते हैं। बाद में मेरा पूरा समाधान जैसे हो, वैसा करें।

आज उत्साह मालूम देता था। शाम को थोड़ी देर शतरंज भी खेली। विनोबा, वृजलाल, गोपालराव, महोदय आदि ने भी भाग लिया।

सु० जे० आये। उन्होंने लू वगैरा के बचाव के लिए तट्टे पर मट्टी लगा कर बनाने को कहा।

१०-४-४१

वृजलाल से उनके जीवन के आदर्श पर विचार-विनिमय होता रहा। विनोबा से मित्र-धर्म, मित्र-परिचय व इनकी आवश्यकता पर विचार-विनिमय। मित्र वही सच्चा मित्र हो सकता है जो आध्यात्मिक उन्नति में व कमजोरियां निकालने में मदद करता रहे।

शाम को विनोबा की प्रार्थना में जाना। विनोबा ने श्री महावीर स्वामी जैन तीर्थंकर (उनकी आज जन्मतिथि थी) पर सुन्दर प्रवचन किया।

११-४-४१

वृजलालजी के साथ बातचीत, शतरंज।

विनोबा के साथ जेल से पत्र न भेजकर लेख के रूप में पुस्तक में लिख-कर भेजने की चर्चा। उन्हें वह पसन्द तो आई।

१२-४-४१

मुलाकात—केदारदेवजी नेवटिया, कमलनयन, रुक्मिणी (नीमच वाली) मिलने आये, जल्दी ही चले गये। रामकिसन डालमिया के विवाह की विनोदी चर्चा, गोविंदराम सेकसरिया के इनकम टैक्स के झगड़े का वर्णन।

राम के गरयाग्रह की तारीख १५ बताई; यह ठीक है; श्री महावीर-प्रसाद पोद्दार गोरखपुर वाले बनारस सेंट्रल जेल में हैं; श्री पी० एम० पाठक, उनकी स्त्री और स्त्री का भाई लंदन में युद्ध-कार्य में व्यस्त हैं। इनके छोटे लड़कों को स्कूल जोन में रखा गया है।

आज 'मेरी कहानी' पूरी हुई। शुरू से आखिर तक, वक्ता मनिमोत, श्रोता मैं। प्रस्तावना ११ पान, कहानी (७५४) पान। इसे सुनते समय जिन बहुत-सी घटनाओं के साथ मेरा सम्बन्ध रहा, वे सब मुझे याद आईं। जैसे, भवाली में कमला को समाधान देते रहना, उसकी मानसिक हालत का दृश्य, दुखी वृत्तान्त, महाराज सर कुबेरसिंह से जवाहरलाल-कमला के बारे में मैंने जो बातें कीं, जवाहरलाल का बजट बनाया, जेवर आदि बेचे, खर्च कम करने पर जोर देता रहा। हवाई जहाज में प्रयाग से कानपुर तक साथ आना। कांग्रेस-सभापति पद स्वीकार करने का निश्चय करवाया। इंदु की घटना, अलीपुर, अल्मोड़ा जेल में मिलना, अखबार में मेरी मुलाकात का भ्रम-कारक वृत्तान्त छपना, देहली सम-झौते के समय तथा अन्य कई बार जब जवाहरलाल चिंतित व दुखी हो जाते थे, तब उन्हें अपने साथ मैं बाहर दूर-दूर तक घूमने ले जाया करता व उन्हें शांत बने रहने के बारे में समझाना, दिल खोलकर बातें करना, कमला को यूरोप के लिए विदा भवाली से करना, जवाहरलाल को यूरोप बिदा करना आदि।

कमला की भस्मी लेकर जवाहरलाल आये तब मैं प्रयाग पहुंचा। अपने हाथों जवाहरलाल के साथ सब कार्य करना, उनकी मदद करना; मोती-लालजी से मसूरी में (भोपाल बंगले में) मिले। जवाहरलाल, कृष्णा के बारे में उनका दर्द, वेदना की यादें आना। जवाहरलाल के प्रति मेरा प्रेम किस प्रकार बढ़ता गया था। जवाहरलाल की जल्दबाजी के स्व-भाव आदि कई घटनाओं की याद आयी।

१३-४-४१

'नागपुर टाइम्स' में, कल रेलवे स्टेशन पर सावरकर का स्वागत करते,

समय श्री आर० पी० मानकर 'सावधान वाले,' की दुर्घटना में मृत्यु हुई, पढ़कर दुःख हुआ। ईश्वर से प्रार्थना की उनकी आत्मा को शान्ति देने के बारे में।
विनोबा से हृदयकर्म की रुई आदि पर विचार-विनिमय, धूप में। उघाड़े बदन सिर पर कपड़ा रखकर दो बजे बाद घूमना ज्यादा हितकर है, ऐसी इनकी राय थी।

१४-४-४१

रात को दो बजे तक नींद नहीं आई, तब लिखना व पढ़ना शुरू किया। आज के विचार—लक्ष्मीनारायण मंदिर में एस्टेट में लेना। ट्रस्टी बढ़ाना, खासकर हरिजन व स्त्री व कोई भक्त पुरुष जो मंदिर के काम में प्रेमपूर्वक रस लेने वाला हो। कई नाम सोचता रहा। समाधानकारक निश्चय नहीं कर पाया। स्त्रियों में तो फिलहाल चि० शांताबाई, मदालसा या सरयू धोत्रे के नाम ही सामने आये। हरिजन में देवली वाले पुंडरीकजी का नाम ही याद आया। और विचार करना होगा, भक्त पुरुष का जो, प्रामाणिक हो, कोई नाम नहीं मालूम दिया।
मैं व्यावहारिक नीति से खाने-पीने की मेरे हयाती में कोई तकलीफ न पावे, इस बारे में अपनी जवाबदारी समझता हूं, इस प्रकार (१) श्री रामचंद्रजी धामणगांव वालों की स्त्री (श्री नारायण की गोद की माता), (२) श्री केशवदेव नेवटीवाल (पू० रामगोपाल का लड़का), (३) पू० रामगोपालजी की लड़की बासन्तीबाई, (४) कृष्णा हरिकिसन (५) पू० जाजूजी के बालक, (६) पू० वृद्धिचन्द्रजी पोद्दार व उनकी स्त्री, (७) गोपीजी व उनकी स्त्री, (८) गोपीहरि राठी (६) बन सके तो दुलीचन्द धामणगांव वाले को व श्री नारायणजी अमरावती वाले के बालकों को भी काम पर लगवाना, बन्सीधर पुलगांव वाला जिये तब तक। यहां पू० बच्छराजजी के समय से जिनका सम्बन्ध रहा है, उनके नाम ही खासकर लिखे हैं—नौकरों में—छोटू, नानू, जीवन, अडकोबा ये लोग जीवें वहा तक ख्याल रखना है, दडमल चौमवाल का भी।

मेरे सम्बन्ध में आये हुए लोग—चि० राधाकिसन, गंगाबिसन, चिरंजी
लाल बड़जाते, गजानन्द चौबे, रामगोपाल बजाज, भरोसा हमाल (और
हो तो), वर्तमान साथी—दामोदर मूंदड़ा, महोदय, उमराव मभी
दादी, जो अपने यहां काम करती थी, इनका भी तो ख्याल रखना
होगा।

विनोबा से बापू के गीता से सम्बन्धित विचारों पर बातचीत।

१५-४-४१

बृजलालजी, विनोबा से जेल अधिकारी व सत्याग्रही वगैरा पर बातें।
मुझे तो अभी तक के व्यवहार से कोई खास शिकायत नहीं मालूम दी।
विनोबा की राय भी मेरी राय से मिलती हुई है।

'नागपुर टाइम्स' में रामकृष्ण को सेवाग्राम से सुबह ६ बजे करीब गिर-
फ्तार करने की खबर पढ़ी।

आज मेरा मन किस प्रकार सम्बन्ध मानना चाहता है (नीचे मुजब):
पिता—बापूजी (गांधीजी); गुरु—विनोबा; माता—मा व बा; भाई—
जाजूजी, किशोरलालभाई; बहन—गुलाब, गोमती बहन; लड़
राधाकिसन, श्रीमन्नारायण, राम; लड़कियां—चि० शान्ता (र
वाला), मदालसा; मित्र—श्री केशवदेवजी नेवटिया, हरिभाऊजी
ध्याय; लड़के माफिक—चिरंजीलाल बड़जाते, दामोदर मूंदड़ा, उम
महोदय।

मुझे आशा तो कमल, उमा, ओम, सावित्री से काफी है। मित्रों से
कई और भी हैं—चाबिद अली वगैरा। मैंने ऊपर तो सार्वजनिक
बाकी जिनसे ज्यादा आशा है उनके नाम लिखे हैं। मेरी कमजोरियों
विचार करने पर तो मुझे इतने प्रेम का कोई अधिकार नहीं होता
ईश्वर मेरी कमजोरियां दूर कर सद्बुद्धि प्रदान करेगा तब ही और
में असली रस पैदा हो सकेगा।

१६-४-४१

चि० मदालसा के दो-अढ़ाई महीने चढ गये हैं, स्वास्थ्य साधारण है।
जानकीदेवी का स्वास्थ्य भी थोड़ा नरम हो गया, कहा। इसलिए, और

रामकृष्ण का मुकदमा आज सुबह साढे सात बजे होने वाला है, इससे वह नहीं आई। डा० महोदय को मैंने जरा ठीक नहीं कहा। मुझे बुरा मालूम देता रहा (जल्दबाजी की आदत के कारण मेरे से ऐसी गलतियां हो ही जाती हैं)।

१७-४-४१

सुबह प्रार्थना से उठते समय चक्कर आया, आराम किया। घूमना नहीं हुआ। सुगमचद लुणावत से बातचीत।

आज ब्रह्मदत्त छूटकर गये। विनोबा, गोपालराव आये।

रामकृष्ण को पहली बार १०० रुपया जुर्माना कर छोड दिया। दूसरी बार फिर मालवाड़ी में सत्याग्रह किया तो गिरफ्तार कर लिया गया। (गोपालराव ने कहा)।

आज से नागो, बलजोर बैरक मे बन्द होने जल्दी जाने लगे, इसीलिए शतरंज पूरी बाजी न हो सकी।

१८-४-४१

विनोबा से गो-सेवा-संघ के बारे में सुगमचन्द लुणावत की हाजिरी में विचार-विनिमय होता रहा।

बृजविहारीलाल श्रीवास्तव, वकील जबलपुरवाले मिलने आये। परिचय, बातचीत, पैम्फलेट 'Whither European Civilisation' दिया; सेवाग्राम मे सात दिन रहकर आये है।

नागपुर जेल, १६-४-४१

मुलाकात —श्री महादेवभाई देसाई, श्री मथुरादासजी मोहता हिंगणघाटवाले, गुलाबबाई, चि० रमा, हरगोविन्द (गुलाबबाई), गौतम आये। महादेवभाई ने 'हरिजन' के बारे में सरकार की नीति का वर्णन सुनाया। श्री जयकर से जो बातचीत हुई, वह कही। 'न्यू क्रॉनिकल' लदन के तार मे आये हुए प्रश्नो का बापू ने जो जवाब भेजा, वह कहा। अगाथा हरिजन के तार का जवाब आदि बातें। मथुरादासजी मोहता ने नागपुर बैंक, दोनों भाइयों के बीच के फैसले का निपटारा मेरे ऊपर छोड़ा

वर्धा में घूमते हुए

बाएं से प्यारेलाल, लुई फिशर, बापू, राजकुमारी अमृतकौर जमनालालजी।

विशाल बजाज परिवार

जमनालालजी के पौत्र राहुल की बधाई के अवसर पर [illegible]

जेल में भोजन की व्यवस्था उत्तम रखी थी। मुझ पर इनकी ठीक छाप पड़ी। यद्यपि यह 'गांधियन फिलासफी' पूरी नहीं मानते तो भी त्यागी, देश प्रेम से लबालब भरे हुए, स्वराज्य के सिपाही, कांग्रेस के सच्चे सेवक हैं, शतरंज ठीक खेलते हैं। विरोधी वातावरण में रहते हुए भी कांग्रेस के साथ ईमानदार रहते आये हैं। इनकी इच्छा स्थायी तौर से कुनकुरी में ही रहने की है।

आज शाम को भी विनोबा की प्रार्थना में गये। आज भी सु० जे० श्री गुप्त मिल गये।

२६-४-४१

बिलासपुर के वकील राजकिशोर छूटे।

श्री अनन्तरामजी (रायपुर वालों) ने आपबीती सुनाई। यह बहुत ही सज्जन और बहादुर व्यक्ति हैं।

सु० जे० आये। देर तक ठहरे, दो नहीं का और हुक्म दिया। जेल के खानपान की व्यवस्था कैसे होगी, उस पर भी विचार हुआ। एक्सरे के लिए बाहर जाना पड़ेगा।

मुलाकात—श्री लक्ष्मीनारायणजी गाड़ोदिया देहलीवाले, चि० राधाकिसन, दामोदर, चि० सावित्री, कमल भी आये थे, सुना, परन्तु वह और सावित्री, राम से मिलकर चले गये।

बापू के तीन दिन के उपवास के बारे मे व अहमदाबाद, बम्बई के दंगों के बारे में बापू की मनोव्यथा आदि जानकर चिन्ता होना स्वाभाविक था। ईश्वर सहायक है। प्रो० त्रिवेदी के स्वास्थ्य की भी चिन्ता हो रही है। रामकिसन डालमिया ने जो प्रभुदयाल की बहन चि० कमला के लिए विवाह का आग्रहपूर्वक प्रस्ताव किया, उसकी सच्चाई मालूम होने पर आश्चर्य व विचार हुआ। कमला व प्रभुदयाल आखिर तक यह प्रस्ताव स्वीकार नहीं करेंगे तो उनसे लिए मेरे मन में इज्जत ज्यादा बढ़ेगी। महिला आश्रम की व्यवस्था श्री कमला लेले की राय से करने को कहा। जवाहरमलजी रह सकें तो अच्छी बात है। चि० नर्मदा के लड़की हुई

अनन्तरामा। शाम को विनोबा की प्रार्थना में जाना।

२७-४-४१

विनोबा के साथ बात बापू ने अमरीकी जवाब में जो वक्तव्य दिया वह सुना, थोड़ी चर्चा। हम सबको वह बहुत पसन्द आया।

उनके कारण बापू के हृदय की जलन, दुःख प्रगट होता था, बहुत ही स्पष्ट था।

श्री अनन्तरामजी का काशी का किस्सा आज और सुना। बहुत ही बहादुरी से भरा हुआ था।

कन्हैयालालजी के साथ शतरंज, रात को राम के साथ।

डा० महोदय गवाही देने वर्धा गये, मेटल से।

वि० राम से भावी प्रोग्राम (कार्यक्रम) पर ठीक विचार-विनिमय देर तक होता रहा। इसकी इच्छा सेवा-कार्य की ओर दिखाई दी। मैंने भी उसी तरफ इसका उत्साह बढ़ाया है।

विनोबा की प्रार्थना में श्री कुलकर्णी (कोल्हटकर) कम्युनिस्ट से इन तीन दिनों में ठीक बातचीत व परिचय हुआ।

नागपुर जेल, २८-४-४१

पूर्णचन्द्र कटनी वाले आज छूटकर गये।

आज एक क्रिश्चियन मोटर ड्राइवर को, जिसने अपने मालिक का (प्रभागी सुबोध मिश्र प्रेस का मालिक, खण्डवा में निवास) नागपुर यूनिवर्सिटी मैदान में खून किया था, फांसी लगाई गई।

दोपहर को श्री गड़ेवाल आई० जी० पी० व सु० जे० गुप्त आये। श्री गड़ेवाल ने कहा, मैं चौकसी करने आया हूं, आपको कुछ कहना है ? मैंने कहा—मुझे कुछ नहीं कहना है।

डा० महोदय रात को वर्धा से वापस आये। प्रो० त्रिवेदी के स्वास्थ्य के समाचार खराब सुनकर चिंता ज्यादा हुई।

२९-४-४१

श्री गड़ेवाल आई० जी० पी० व सु० जे० गुप्त आज मिलने आये। दामोदर की मुलाकात के बारे में अखबार में छपा है, मुझे कुछ कहना है क्या ?

मैंने कहा, इनकी मर्जी की बात थी। इसके बाद 'सी' वर्ग में मुलाकात सप्लीमेंट के बारे में पूछा। मैंने कहा, आपने सप्लीमेंट के बारे में कहा था, गवर्नर ने मंजूर कर लिया है फिर अमल क्यों नहीं हुआ। जेल में 'पोलिटिकल प्रिजनर' को सूत कातने का काम तीनों वर्गों में देने की चर्चा। उन्होंने कहा, दिया जा सकता है। विनोबा को 'सी' राजनैतिक बन्दी की तरह रखने के सम्बन्ध में प्रस्ताव पर मैंने 'सी' वर्ग के कैदियों से मुलाकात के लिए झोपड़ी (हाल) बनाने को कहा। मेरे को सिवनी जाना हो तो २४ घंटे में जा सकता हूं। यरवडा, पूना जाना हो तो दर्खास्त देनी होगी। शायद सरकार आपको छोड़ देगी, वहां नहीं भेजेगी। तब मैंने कहा, दर्खास्त तो नहीं दूंगा, मुझे छूटना नहीं है, इत्यादि।

३०-४-४१

आज रामेश्वर अग्निभोज हरदवाला छूटे। यह मेरे पास रहते थे। इनके जाने से बुरा मालूम दिया, जल्दी ही वापस आ जायेंगे। श्री रामधर दुबे और वृजबिहारी पाण्डे सिहौरेवाले, कस्तुरे वाशिम वाले भी छूटे। बिसन वगैरा भी 'क' वर्ग में से छूटे।

डा० दास व जानकीदेवी आये। डा० दास ने सेहत जांची।

वामन मल्हार जोशी कृत—'इंदु काले व सरला भोले' कादंबरी पूरी की, साधारणतया ठीक है। विनायकराव भोले और सरला भोले का चित्र ठीक खींचा है। खाडेकर के माफिक प्राण-तेजस्विता नहीं मालूम हुई।

१-५-४१

रात को २॥ बजे करीब डा० महोदय को कोई काला सांप दिखाई दिया। 'सूत' उद्योग वगैरा के बारे में सु० जे० से देर तक बातचीत। बाद में दादाभाई नायक से भी बातचीत होती रही।

२-५-४१

आज कोई खास बात नहीं। थोड़ी बेचैनी मालूम होती थी।

३-५-४१

दादाभाई नायक आज छूटकर गये, सज्जन पुरुष हैं।

मुलाकात—पू० राजेन्द्रबाबू, गुलाबबाई, दिलीप। प्रो० हरगोविन्द त्रिवेदी का आखिर शुक्रवार को प्रातः दो बजे शरीर छूट ही गया। बापूजी, जानकी ने रात को ही उनकी स्त्री, मन्नूभाई से मिलकर उन्हें सान्त्वना दी। जानकीदेवी दूसरी बार भी मिल आई। मेरी इच्छा थी इनकी दाह-क्रिया (शरीर-दाह) अपने खेत मे करते तो ठीक रहता। इनका छोटा-सा स्मारक वर्धा मे बनाने की इच्छा है। रामेश्वरजी बजाज लदन जनवरी के प्रथम सप्ताह मे भारत के लिए रवाना हुए। जहाज को टारपीडो द्वारा डुबा दिया गया, परन्तु वह मछुए द्वारा बचाये गए और आइसलैंड पहुचे। बाद मे वह शायद अफ्रीका चले गये थे। अफ्रीका से बम्बई मे एक जहाज रवाना हुआ था, उसमें इनका होना सभव माना जाता है। उस जहाज मे कुछ भारतीय बच्चे भी बताते हैं।

० घनश्यामसिह सिंधवाले वर्धा मे ज्यादा बीमार हो गये थे। बम्बई ले गये हैं, ठीक हैं। मदन कोठारी को पुत्र हुआ है, बगले पर रेडियो लगाने के लिए कह दिया।

४-५-४१

कन्हैयालालजी बालाघाटवालो के साथ शतरज सुबह, शाम को गद्दे, गोपालराव, विनोबा, रात को राम, महोदय।

ईराक की जो खबरें आ रही हैं, वे विचारणीय हैं।

डा० राय व नारायणदास मिलने आये; बातचीत-परिचय।

५-५-४१

श्री तारे छूटकर गये।

श्री चतुर्भुजभाई, पुखराजजी, देवतले, वानखेड़े मिलने आये।

डि० कमिश्नर के बारे मे विचार-विनिमय हुआ, पुखराजजी के साथ एक बाजी शतरज हुई।

६-५-४१

श्री रामगोपालजी तिवारी—शतरंज।

जाते हैं, ध्यान में बैठती हैं तो महीनों समाधि लगाती हैं। रुपये आकाश, जमीन और पानी में से निकल आते हैं ! मूर्ति, दिवाल, वगैरे को भी भोजन कराती देखी गयी हैं जब वे ध्यान में बैठ जाती हैं। इन्हें पीपल में बसे एक काले जहरीले सांप ने काटा तो इनका जहर तो उतर गया, सांप मर गया, उसकी समाधि पीपल में है।

और भी कई आश्चर्यकारक बातें कही जाती हैं। ऊपर की कुछ बातें तो श्री गणेशरावजी ने खुद भी कई बार देखी हैं।

८-५-४१

आज पेशाब में जलन रही। टेम्परेचर भी १०० तक गया। आज पहली बार दो छटांक दूध संतरे के रस में मिलाकर पिया और दोपहर को साग का सूप। शाम को सिर्फ संतरे-मोसम्बी का रस लिया। लू तो उतरी, चर्चा भी चलता, लेकिन कमजोरी और बेचैनी बराबर मालूम होती रही। डा० ने जांच के लिए खून लिया।

९-५-४१

श्री मगनलाल बागड़ी ने कहा कि बागड़ियों की लड़की कृष्णाबाई के बारे में श्री गणेश पटेल ने जो कहा है, वह ठीक है। नागपुर में व्यापारियों को गुंडे लोग सता रहे है। डि० कमिश्नर का रवैया ठीक नहीं है।

श्री राउ कमिश्नर आये। स्वास्थ्य वगैरा की पूछताछ। बाद में मैंने नागपुर के डि० क० ने, जो व्यापारी मंडल को अनुचित जवाब दिया, उसके बारे में, और जो गुंडों का जोर बढ़ता जा रहा है, व्यापारियों को तंग किया जा रहा है, आदि कहा। और यह भी कि ठीक व्यवस्था नहीं रही तो हिन्दू-मुस्लिम दंगे की भी सम्भावना हो सकती है। आप हिन्दुस्तानी बड़े अधिकारी हैं। अतः ठीक व्यवस्था रहनी चाहिए। अगर दंगा हो गया तो महात्माजी का यहां आकर दंगे के बीच में जाना संभव है।

उन्होंने कहा कि डि० क० ने खुलासा किया है कि उसने ऐसा कुछ नहीं

कहा है, एक पारसी सज्जन ने भी इसी की ताईद की है। फिर भी स्थिति का यह पूरा ख्याल रखेंगे।

१०-५-४१

मुलाकात—आचार्य कृपालानी, रामेश्वर बजाज, दामोदर आये, विनोद होता रहा।

रामेश्वर को देहली का सम्बन्ध नहीं जंचा। सवानचन्द सिंधवाले व ओम दत्तजी की स्त्री इंदिरा की मृत्यु से दुःख हुआ।

११-५-४१

रात को नींद ठीक नहीं आई। पेशाब में जलन व रुकावट। दूध लेने से बुखार १०४ तक बढ़ा, और भी अधिक जलन व रुकावट हुई। बेचैनी बहुत बढ़ गयी। इतनी ज्यादा तकलीफ हुई का स्मरण नहीं।

१२-५-४१

सारी तकलीफें पहले जैसी ही। सिर्फ बुखार कम रहा। डा० रंगीलाल व डा० दास ने जांच की और यह सलाह दी, मुझे दूध फाड़कर पानी में संतरे का रस दिया जाय। दर्द की जगह गर्म मिट्टी का सेंक भी हो।

१३-५-४१

रात में तीन चार दस्त। कमजोरी। महेश के साथ बातचीत व विनोद।

नागपुर जेल १४-५-४१

रात को सारी रात प्रायः नींद नहीं आई। पहले हवा का जोर रहा, बाद में शंटिंग की आवाज चलती रही।

विचार चालू हो गये। प्रयत्न करने पर भी नींद नहीं आई। वर्धा जेल में भेज दें तो मुझे थोड़ी तकलीफ रहेगी, परन्तु डा० दास, बापूजी, जानकी आदि की तकलीफ, चिन्ता कम हो जावेंगी। पहले तो श्री गढ़-वाल ने मुझे वर्धा जाना चाहोगे तो जा सकोगे कहा था, अब कहा, देखेंगे। वर्धा जेल जाना सम्भव न हो तो फिर मेयो अस्पताल नागपुर जाना थोड़े समय के लिए मुझे स्वीकार लेना चाहिए, नहीं तो शायद तबि-यत ज्यादा बिगड़ जावे।...आज दिन में स्वास्थ्य ठीक रहा। पर मन [illegible] ही विचार आते रहे।

बापूजी मुझे इतना प्रेम क्यों करते हैं, विनोबा भी। बापूजी को मेरी इस बीमारी के कारण दो-तीन रोज बहुत बेचैनी रही। डा० दास कहते थे, वह यहां मुझे देखने आने भी तैयार थे, परन्तु मेरे मना कराने पर व डा० दास ने भी कहा जरूरत नहीं, तब नहीं आये।
रात को भी बहुत समय तक मेरे मन में यही चलता रहा कि मैं पापी हूं, मैं व्यभिचारी हूं, मैं विश्वासघाती हूं। क्यो मैंने अपना असली रूप बापू व विनोबा को अभी तक नहीं बताया। एक मन तो कहता था, बता तो कई बार दिया है। दूसरा फिर कहता था, नहीं, बिलकुल साफ तौर से नग्न स्वरूप मे सामने नहीं रखा। रखने के विचार से बापू के पास कई बार जाना हुआ, परन्तु वहां मौका पूरा न मिलने से अधूरा ही रह गया। पत्र जो, बापू को पवनार से तीन वर्ष पहले भेजा था, वह भी फ्रन्टियर मे उन्हें नहीं मिला। वह कहते थे, बाद मे पत्र की नकल तो वर्धा जाने पर दे दी थी, इत्यादि। अब जब मौका लगेगा, एक बार आत्महत्या के विचार की व असली स्थिति खूब स्पष्ट रूप से कहूंगा तो ही भले ही शांति (मानसिक) मिले, अन्यथा हृदय व मन (बुद्धि) का युद्ध चलता रहेगा। मैंने यह उपचार (ट्रीटमेंट) भी मानसिक शांति की दृष्टि रख-कर ही मुख्यता स्वीकार किया है, अन्यथा ज्यादा उत्साह इस समय नहीं था, क्योंकि पूना मे एक प्रयोग हो चुका था। परमात्मा से प्रार्थना तो की है, देखें क्या परिणाम होता है। इस जन्म मे सद्बुद्धि प्रदान हो जावेगी व स्वच्छ पवित्र सेवामय जीवन बिताते हुए देह छूट सकेगी तो ही, अन्यथा जैसे कर्म किये हैं, वैसा फल भोगना भाग मे ही है। ईश्वर की माया अपरम्पार है। विनोबा से तो जल्दी ही यहां बात कर लूंगा। देखें, कोई राजमार्ग निकलता है क्या? कोई शुद्ध अन्त करण का भाई या बहन हो, मुझसे बड़ी उमर के कोई इस दुनिया मे मिल सकें, जो मुझे अपने आश्रम मे लेकर बालक की तरह प्रेम-भाव से मेरा इस समय जो व्यथित हृदय हो रहा है, उसमें कुछ जीवन पैदा कर सकें। ईश्वर की इच्छा होगी तो यह भी संभव हो जावेगा।

रात को प्रायः इसी प्रकार के विचार कई घंटों चलते रहे। बीच-बीच में नेत्र-जल भी बहता रहा, तथास्तु ! बालपन का, तरुण अवस्था का मेरा सकोची, शरमाऊ, डरपोकपने का स्वभाव पूरी तौर से आज तक कायम रहता तो कितना अच्छा होता। बुरी संगत का अच्छा परिणाम व अच्छी संगत का बुरा परिणाम क्या ईश्वरी माया है ?
मेरे तो—'मातृवत् परदारेषु, परद्रव्येषु लोष्ठवत् ।' 'न त्वहं कामये राज्यं न स्वर्गं ना पुनर्भवम् ।' आदर्श वाक्य हैं।
चि० राम मैट्रिक की परीक्षा में सेकण्ड डिवीजन में पास हुआ।

१५-५-४१

रामेश्वर अग्निभोज दो महीने की सजा लेकर आ गया।
विनोदी वातावरण, वामनराव जोशी अमरावतीवाले भी ४ महीने की सजा लेकर आ गये।

१६-५-४१

श्री बद्रीनारायणजी बालाघाटवाले मिल गये, कल छूटेंगे।
सत्याग्रह की लड़ाई पूरी होने के बाद वर्धा आकर रहेंगे।
श्री वीर वामनराव जोशी भी मिल गये,

१७-५-४१

डा० दास वर्धा से आये, स्वास्थ्य देखा और यह भी कहा कि बापू की इच्छा है कि मैं वर्धा जेल में आ जाऊं तो ठीक रहेगा।
मुलाकात—महादेवभाई देसाई, गुलजारीलाल नन्दा, दामोदर आये। महादेवभाई ने बम्बई-गुजरात की स्थिति कही। बापू की इच्छा जाने की है, परन्तु सरदार वगैरा बापू का जाना ठीक नहीं समझते, यह कहलाया है। बम्बई गवर्नर से लिखा-पढ़ी इत्यादि भी बताया। गुलजारीलाल ने कहा, चर्खा संघ के आदमी.........ने रुपयों की गड़बड़ी कर दी है।
े शंकरलाल का स्वास्थ्य आदि मालूम हुआ।

१८-५-४१

ेलालजी (सत्यभक्त) की आत्म-कथा पढ़ी, शतरंज वगैरा।

श्री फूलचन्द बजाजवाले पोद्दारों ने जेल में कई लोगों से कहा कि शिवप्रसाद गोयल (उमरावतीवाले) ने नागपुर बैंक से, व बिड़ला कम्पनी से, हजारों रुपयों की गड़बड़ कर ली है, उसकी गड़बड़ साबित हो गई है। जामनेर में एक मकान खरीद लिया, स्त्री के नाम से पोटर-जौरी से ली। उसके भाई ने भी कुछ गड़बड़ की है। यह सुनकर आश्चर्य हुआ, बुरा मालूम दिया। विश्वास नहीं बैठता। फूलचन्द तो बहुत जोर के साथ कहता दिखता है। अगर यह बात सच निकली तो फिर विश्वास करने की गुंजाइश बहुत कम रह जाती है। बृजलाल, पूनमचन्द, फूलचन्द महोदय ने भी मुझे कहा। लगता है कि इस प्रकार से पूनमचन्द बांठिया का भी हाथ शायद हो।

२१-५-४१

डा० दास, जानकीदेवी आये। डा० दास का सेवाग्राम से फोन भी आया था। बापू ने यहाँ (नागपुर) रहकर मेरा इलाज चालू रखने को कहा है। डा० महोदय ने आज की रिपोर्ट दे दी।

सु० जे० श्री गुप्त से अग्निभोज को मेरे साथ भेज सकें तो वर्धा भेजने

को कहा। उन्होंने कहा—आई० जी० पी० को लिख भेजता हूं।

२२-५-४१

मु० जे० गुप्तजी आये। स्वास्थ्य के बारे में कहने लगे, आप बहुत कम-जोर हो गये हैं। बम्बई के श्री मरूंचा जीवराज को दिखाना चाहिए। डा० दास का कहना था कि थोड़ा वजन घटे वहां तक ठीक था, ज्यादा घट रहा है। मैंने महादेवभाई का नोट उन्हें दे दिया।
चि० सावित्री इन्टरमीडिएट की परीक्षा में प्रथम श्रेणी में पास हुई। हिन्दी मे डिस्टिंक्शन मिला। यूनिवर्सिटी में सत्तरवां नम्बर आया। यह खबर सुनकर सुख मिला। सावित्री बुद्धिमत्ती है। अगर इसकी बुद्धि देश-सेवा (सेवा-कार्य) मे लग जावे तो बुद्धि का यथार्थ लाभ इसे भी मिले और दोनों कुटुम्बों को भी। उसकी इच्छा होगी तो इसे और भी पढने के लिए उत्साहित करने की इच्छा हो रही है। (अगर उसका स्वास्थ्य उत्तम रहा तो)। दादाभाई नायक हरदावाले फिर आज आ गये। श्री मण्डलोई खंडवावाले मिलने आये। कल छूटेंगे।

२३-५-४१

मेरे स्वास्थ्य के बारे मे खुलासा लिखकर मु० जे० के पास भेजा। प्रेस में (सिर्फ छपने की खातिर) इन दिनों कई उल्टी-सुलटी खबरें छपी हैं।

नागपुर जेल, २४-५-४१

श्री ताम्हसकर व जालिमसिंह (धोबी) सतारावाले मिलकर गये। आज छूटेंगे।
मुलाकात—मा, केसरबाई, गुलाबबाई, दामोदर, हरगोविन्द आये। मां पहले तो देखकर एकदम रोने लग गई, बाद में धीरज हुआ। भजन सुनाया। आम, दूध लेने की खबर से उसे संतोष मिला, चि० मदू ठीक है।

२५-५-४१

शतरंज—सुबह कन्हैयालालजी बांसापाटवाले, शाम को विनोबा, गोपालराव, महोदय, तीनों मिलकर।

२६-५-४१

सोहागपुर के श्री सैयद अहमद आज प्रायः दिन भर यहां रहे। ब्रिज खेले।

२८-५-४१

आज छूटे—लाला अर्जुनलाल, सवाईमल जैन, नर्मदा प्रसादजी (विशेष परिचय नहीं हुआ था) मिश्र, रामप्रसाद दुबेजी (चान्दावाले), अनन्तरामजी रायपुरवाले।

डा० दास व जानकीदेवी आये। दूध, आम बढ़ाया। रस कम किया।

लाला अर्जुनलालजी कायस्थ होशंगाबाद के रहने वाले है। खूब उद्योगी हैं, देहाती जनता के लिए प्रभावशाली प्रचारक हैं। कविता भी ठीक कर लेते हैं। 'उपजत बुद्धि है, उमर साठ के करीब।'

सवाईमल जैन, बी० काम, एल-एल० बी०, अमरचन्दजी पुगलिया का जमाई (लक्ष्मी का पति) है। होनहार व जवाबदारी से काम कर सके, ऐसा मालूम देता है। पहले भी दो बार जेल मे आ चुका है।

सेठ अनन्तरामजी बहुत ही ऊंचे दर्जे के त्यागी व देश के लिए जरूरत पड़े तो बिना गाजे-बाजे के पूरी कुर्बानी कर सकने वालो मे से एक हैं।

२६-५-४१

आज विनोबाजी के स्थान तक सुबह जाकर आना। वापस आने के बाद थकावट मालूम दी। बाद मे चक्कर भी आया।

आज छूटे—ब्रह्मणपुर के मजुमदार व नरसिंगपुर के मुदारान।

मु० जे० से आज कह तो दिया कि अब वर्धा जेल मे बदली करने की जरूरत नहीं दीखती। उन्होने कहा, यहा बरसात मे तकलीफ ज्यादा रहेगी, वगैरा।

३०-५-४१

श्री नारायण पटेल (यवतमाल वाले) छूटे—उन्होंने जेल जीवन का खूब फायदा उठाया। स्वास्थ्य ठीक किया याने वजन ४५ रत्तल कम किया।

इस तारीख २७) एम० ए० में पहले नम्बर पाकर इलाहाबाद यूनिवर्सिटी
में पास हुआ। डॉक्टरेट की तैयारी है, महाभारत पर। एम० आई० सी०
सी० का मेंबर है। यह होनहार नवयुवक है। अगर इसका स्वास्थ्य
ठीक रहे तो इससे देश-सेवा की ठीक आशा रखी जा सकती है। यह
सन् १० व १२ में भी जेल में आया था व 'सी' वर्ग में भी रह चुका
है। मेरा इसके प्रति स्वाभाविक प्रेम (अपनापन का सम्बन्ध) हुआ है।
अगर यह पसन्द करेगा तो इसे साथ में रखने की मेरी इच्छा है।
श्री चतुर्भुजभाई से भी स्वभाव बड़ा व आशा भी होती है कि रचना-
त्मक कार्य में प्रान्त में इनकी ठीक मदद हो सकेगी। इन्होंने यहां अपनी
दिनचर्या सुन्दर रखी थी। एक साल साथ में ज्यादा सूत काता, बंगाली,
उर्दू, अंग्रेजी का अभ्यास भी बढ़ाया, वजन व पेट भी कम किया।
भंवरीलाल हरिजन विलासपुर जिला का है। सज्जन व धार्मिक वृत्ति है।
श्री माहेश्वर (सागरवाले) साधु पुरुष हैं।

१-६-४१

श्री अग्निभोज महोदय से समझाकर कह दिया कि भूख हड़ताल वगैरा
के बारे में विनोबा का कहना है कि निर्णय के मुताबिक ही चलना
उचित है। विनोबा की आंखों से से पानी बहना शुरू हो गया है।
सु० जे० से तो कहा ही है, उनकी आंखों के इलाज के लिए थोड़ी चिंता
है।

२-६-४१

सु० जे० श्री गुप्त साढ़े बारह बजे के करीब आये व पचमढ़ी का चीफ
सेक्रेटरी का तार बताया। उसमें मुझे मेडिकल ग्राउण्ड पर रिहा करने
की सूचना थी। पत्र भेज रहे हैं, लिखाया। बाद में सु० जे० कहने लगे,
हमलोगों को मेडिकल जानकारी की हैसियत से आपकी इच्छा न होते
हुए भी अपनी जवाबदारी के ख्याल से ऐसी सिफारिश करनी पड़ी,
वगैरा। देर तक बातचीत। शाम को भी देर तक बैठे रहे। आखिर में
कल सवेरे साढ़े पांच बजे जाने का निश्चय रहा।

सु० जे० ने शाम को जेलर पाठक के साथ श्री सरयू धोत्रे, दमयन्तीगाँ, प्रेमलाबाई ओक आदि भी मुझसे मिलने आये, बातचीत हुई, विनोद वगैरा। और भी मित्र लोग आते रहे।
श्री घनश्यामसिंहजी गुप्त, पूनमचन्दजी रांका, बृजलालजी बियाणी से खासगी बातें, प्रेम वगैरा की। राम, महोदय, अग्निभोज सामान बाँध की तैयारी करते रहे।

नागपुर जेल से छूटकर, वर्धा-सेवाग्राम, ३-६-४१

पू० विनोबा, मित्र लोग मिलने आये। ५॥ के करीब जेल फाटक मित्रों से मिलकर रजिस्टर में सही करके भारी हृदय से जेल के फा के बाहर आया। वर्धा से जानकीदेवी, दामोदर, रामकिसन आये थे सु० जे० श्री गुप्त के घर, इनकी माता, लड़कियों से मिलना। उन्हें हार वगैरा पहनाये। उन्हे बहनों, विनोबा की आंख, गुप्तजी, बृजला जी, नागो आदि के बारे में कहकर मोटर से वर्धा रवाना।
वर्धा में नालवाड़ी, मा, गुलाब, केशर, अनू, पू० जाजूजी वगैरा मिले आम-दूध लिया। म्युनिसिपल हद पर शिवराजजी वगैरा मिले। बंगले पर किशोरलालभाई, नायडू, सा० दुकान, घर के लोग मिले निपट कर सेवाग्राम मे बापू से प्रणाम, विनोद, थोड़ी हकीकत। नये अतिथि-घर में मुकाम, आराम

सेवाग्राम, ४-६-४१

आज तीन महीने बाद प्रथम बार दो खाखरा सागपानी सहित २ और दूध व दो आम मिले। साग, खाखरा बहुत ही स्वादिष्ट लगा। (गांधी बाबा की जय)। शाम को दूध-रस।
तार-पत्रों के जवाब।

५-६-४१

दामोदर से महिला आश्रम, शिक्षा मण्डल के बारे में बातचीत। तार-पत्रों के जवाब।
चि० गगाबिसन बीमार था, चिन्ता हो रही थी। उसे देखकर व डिर्स

समझकर चिन्ता कम हुई।
बापू दो बार आये। डा० दास से बातचीत।

६-६-४१

चि० श्रीमन्नारायण व शान्ताबाई आये, मिले। बातचीत। डेअरी के विद्यार्थी मिले, श्री काशीनाथ राव वैद्य व चीमनलालशाह (मातृभूमि, बम्बईवाले) भी मिले। अप्पा सा० पटवर्द्धन से बम्बई के झगड़े के बारे में बातचीत।

सेवाग्राम, ७-६-४१

मिलने वाले—श्री लालजी मेहरोत्रा, गिरधारी कृपालानी, वामन-पद्मनाथ दहे, बडनेरा रोड, अमरावती वाले मिले। जयपुर के कावरा श्री नारायण अग्रवाल के साथ मिले। शिवदास बग भी मिला। श्री शान्तिप्रसाद जैन व रमा जैन डालमियानगर से आये। उन्होंने भाई रामकृष्ण (डालमिया) की दयाजनक स्थिति का वर्णन किया। ध्यान देकर समझा, देर तक। चि० रमा (गणाबिसन की लड़की) भी आई, उसकी स्थिति समझी, उसे ठीक तौर से समझाया। चि० शान्ताबाई को पूरा सन्तोष देने व आम बातें भी करने के लिए। शाम को चि० शान्ता, वासंती, लक्ष्मण बजाज, गुलाबचन्द की स्त्रियां भी आई।

८-६-४१

चि० रमा, शान्तिप्रसाद जैन को मैंने अपनी राय साफ कह दी कि रामकृष्ण को कुछ समय तक बिलकुल इस विषय में मौन रहकर विचार ही नहीं करना चाहिए। अगर जन्म-पत्रिका की बात मिलती है तो यह भी आपसे ही मिल जावेगी, अन्यथा प्रयत्न करते रहने पर सब तरह से हानि, बदनामी, क्लेश बढ़ते ही जायगें। मैं तो चि० कमला (भगतजी) की इच्छा जिस प्रकार होगी, उसमें उसे सब तरह से सहायता, उत्साह देने वाला हूं, इत्यादि। ये लोग आज बम्बई गये। लालजी मेहरोत्रा भी बम्बई गया।
डा० दास, बापूजी, डा० सुशीला वगैरा से बातचीत।

नागपुर से शारदा दाण्डेकर आई, श्रीमन्नारायण रात को यहां सोया।

९-६-४१

रामकिशनजी धूत हैदराबाद वालों से वहां की स्थिति समझी और बातचीत की। श्रीमन, दामोदर से कालेज के स्टाफ वगैरा पर विचार-विनिमय।

शाम को राजकुमारीजी से सतीश कालेलकर के बर्ताव आदि से सम्बन्धित विचार-विनिमय। इस पर तो उसके व्यवहार का बहुत खराब असर पड़ा है।

आज चर्खा शुरू किया। बापू का स्वास्थ्य आज खराब हो गया। ज्वर भी आ गया। डायरिया भी हुआ, जो प्रयोगों का प्रताप बताया जाता है।

१०-६-४१

बापू का स्वास्थ्य आज ठीक नहीं। शाम को थोड़ा विनोद।

डा० सुशीला ने नागपुर जाते समय एकदम गड़बड़ कर, सरस्वती दांकर को बैठने भी नहीं दिया, वगैरा के कारण थोड़ा विचार। सरस्वती से थोड़ी बातें। उसके विचार जाने। उसे अभी यहां रहने की व्यवस्था करने में कठिनाई आवेगी, यह समझाकर कहा।

सेवाग्राम, ११-६-४१

डा० सुशीला से कल नागपुर जाते समय के व्यवहार के कारण बोलचाल। उसे बाद में समझाया। उसका पत्र आया। रात को उसका समाधान व गलती समझाई।

चि० शान्ता, कमला-नर्मदा विद्यार्थी, रमा, भागीरथी सार्वजनिक से बातें, विनोद, उपदेश। ये अकोला गये।

बापू का स्वास्थ्य आज भी ठीक नहीं हुआ।

पुनमचन्द बांठिया से नागपुर बैंक के बारे में पूछताछ कर सब हाल समझा, नोट बनाया। मदनमोहन बजाज चौधरी की बातें। [illegible]

[illegible] भी आये। श्री कृपलानी, डा० गोपीचन्द [illegible]

मे बातचीत, विनोद। दादा धर्माधिकारी, वालुंगे बजाजवाड़ी मे आये। चि० उषा के बारे मे तथा अन्य बातचीत।

१२-६-४१

केशव जापानी को, जो आश्रम मे रहते है, एक पागल ने बहुत बुरी तरह से मारा। केशव ने अजब शान्ति व अहिंसा का परिचय दिया।
डिप्टी कमिश्नर मिलने आये। श्री कन्हैयालाल मुंशी व महेशदत्त मिश्र भी। महेश मेरे पास ठहरा, बातचीत। पू० राजेन्द्रबाबू, मथुराबाबू, डा० गोपीचंद, कमलनयन आये। बातचीत।

१३-६-४१

स्वास्थ्य ठीक रहा, सुबह ४॥ बजे घूमने जाना। हवा सामने की जोर की थी। डा० दास, जानकीदेवी, वासन्ती साथ मे। शान्ता, जाते समय मेरे मन स्थिति, व्यवहार आदि के बारे मे जानकीदेवी की उपस्थिति मे भी पूछताछ करती रही। घूमना चार मील एक फर्लांग हुआ। सुबह का नाश्ता, दूध, अनन्नास मे सोडा ज्यादा पड जाने से खराब हो गया, नहीं लिया। दोपहर के भोजन मे २-३ आम ज्यादा लिये।

१४-६-४१

मानसिक स्थिति पर विचार-विनिमय। घूमते समय जानकीदेवी, शान्ता-बाई से मनःस्थिति कही। जेल मे ता० १४ मई को डायरी में जो नोट किया था, वह घूमने से वापस आने पर पढकर समझा दिया।
बापूजी से आज प्रथम बार जेल से आने के बाद खानगी बातचीत। किशोरीलालभाई, राजकुमारी अमृतकौर, गोमती बहन, डा० सुशीला भी वहा थे। मैंने अपनी मानसिक स्थिति कही। ता० १४ मई को नागपुर जेल मे जो डायरी मे नोट किया था, वह पढ़कर सुनाया। अन्य विचार-विनमय।
बापू को डायरी सुनाकर मन थोड़ा हल्का हुआ।
जयपुर से हीरालालजी शास्त्री, कपूरचन्दजी पाटनी, सरदार हरलाल-सिंहजी, लादूरामजी जोशी, रतन बहन शास्त्री व चन्द्रकला आये। देर तक जयपुर की स्थिति समझी।

१५-६-४१

घूमते समय जानकी व चि० शान्ता से मन:स्थिति का खुलासा। चिरंजीलाल बड़जाते, कमलनयन से बातचीत। कमलनयन अमरावती, नासिक होते हुए बम्बई गया।

कु० कमला, सरला विधाणी, अकोला से आई। बापूजी से उन्हें मिलाया। ठीक परिचय करा दिया। धन्नीबाई रांका भी नागपुर से आई।

हीरालाल शास्त्री, कपूरचन्द्रजी पाटनणी, हरलालसिंहजी, लादूरामजी, रतन बहन वगैरा से जयपुर-स्थिति पर विचार-विनिमय, देर तक। बापूजी से भी मिलना, स्थिति समझाना। उनकी राय समझना।
शाम को मीराबहन से शान्ति मिलने के उपाय पर चर्चा।
डा० अब्राहम चोपड़ा वगैरा आये।

सेवाग्राम, १६-६-४१

मंदिर देखा, डा० मन्नू त्रिवेदी की माता व दादी से मिलना। बातचीत। सन्तोष देना। बगले पर चि० शान्ता, रामेश्वर, सीता वगैरा मिली। श्री किशोरीलालभाई मश्रूवाला ने श्री सुरेन्द्रजी व गंगाबहन, काशी-बहन गांधी, सन्तोष बहन गांधी आदि के हवाले से कु० राधा बहन गांधी व चि० शान्ताबाई के बारे में जो कुछ कहा, उससे थोड़ा दुख व आश्चर्य हुआ। विचार चलते रहे। दुनिया दुरंगी आदि। सांसारिक लोग जन्म का ही नाता मानना चाहते हैं, माना हुआ नाता नहीं।
जयपुर पार्टी आई, देर तक जयपुर के सम्बन्ध में विचार-विनिमय।
बापू को बातचीत का सारांश लिखकर भेजा।
चि० शान्ता, सुशीला आये। थोड़ी देर घूमना, शांता से किशोरलाल-भाई ने जो कहा था, वह कहा।

१७-६-४१

सुबह घूमते वक्त शान्ताबाई से महिला आश्रम के बारे में चर्चा।

डा. दास से स्वास्थ्य के सम्बन्ध में विचार-विनिमय। हिमालय, कश्मीर वगैरा जाने के बारे में विचार। पू० बापूजी आज आये। उनसे भी विचार-विनिमय। उनकी राय हुई कि जुलाई के बाद जाना ठीक रहेगा। रिषभदास राका, सोनीराम, मदनलाल, दामोदर, लक्ष्मीनारायण, श्रीमन से बातें।

जयपुर पार्टी—हीरालाल शास्त्री, कपूरचन्दजी, हरलालसिंहजी, लादूरामजी, रतनजी वगैरा से देर तक बातचीत।

पू० राजेन्द्रबाबू, डा० गोपीचन्द, मियांजी से देर तक बातचीत होती रही।

१८-६-४१

जयपुर पार्टी—हीरालालजी, रतनजी वगैरा से बातचीत।

दामोदर, श्रीमन्नारायण, राम अग्रवाल, दादा धर्माधिकारी वगैरा से सवेरे बातचीत। दास को शान्ताबाई, श्रीनिवास रुइया से।

गगन बिहारी मेहता कलकत्तावाले आये। देर तक उनसे बातचीत होती रही।

चि० श्रीनिवास रुइया, शान्ताबाई से व्यापार (बनोशा फैक्ट्री) व शिक्षण के बारे में बातें। बनोशा फैक्टरी में आठ हजार रु० का नकद नफा रहा, कहा। शान्ता मानकर व उसके पिता आये। पिता ने शान्ता की स्थिति कही। शान्ता झूठ बोलती मालूम दी। भविष्य में शायद सुधर जावे।

बापू ने चन्द्रमल जौहरी के बारे पुछवाया। मैंने कहा, वह हि० हाऊसिंग में पूरा असफल रहा। बेईमानी तो खास कोई पकड़ में नहीं आई, वगैरा।

मीराबहन अपनी स्थिति थोड़ी देर कहने पाई। इतने में डा० दास मोटर लेकर आ गये बरसात के कारण।

चि० हरगोविन्द के बुखार का विचार रहा। मेहमानों का व्यवहार भी ठीक नहीं मालूम दिया।

सेवाग्राम, १९-६-४१

चि० रामेश्वर बजाज से सगाई, विवाह आदि के सम्बन्ध में थोड़ी बातें।

लादूरामजी जोशी से जयपुर-सीकर प्रजा-मण्डल के सम्बन्ध में उनके विचार, स्थिति समझी-सुनी।

सुबह घूमते समय जानकीदेवी, चि० शान्ता से बातचीत।

वापस आते समय धन्नीबाई रांका ने अम्बुभकर, उसका लड़का राम, बजरंग ठेकेदार, ठाकरे, आचरण वगैरा के बारे में समझाया।

पू० बापू से स्वास्थ्य, प्रोग्राम, मन स्थिति पर थोड़ी देर बात। उनकी इच्छा फिलहाल मुझे यहीं रहना चाहिए—यह रही। मुझे एकान्त १५-२० मिनट रोज, जो भी कुछ समय तक देना संभव हो तो, देने को कहा, जो समय बापू को अनुकूल हो।

दाभा, बलवन्तसिंह के साथ जमीन का नक्शा देखा। दो दस्तावेज पर सही कर दाभाजी को दिये।

बाबासाहब देशमुख, हीगणी सूबेदार, वेंकट नायडू मिलने आये।

शान्ता व श्रीनिवास से बातचीत। जल्दी सोने का प्रयत्न।

२०-६-४१

महेशदत्त के लिए महादेव हरिजन तीन आने रोज पर रखा।

पू० बापूजी के साथ २॥ बजे चर्खा संघ की सभा में पहुंचना।

पांच बजे तक वहां ठहरना। ठीक चर्चा, विचार-विनिमय।

घनश्यामसिंहजी गुप्त दुर्गवालों की लड़कियां चि० शकुन्तला, सुशीला, धर्मशीला आयी, थोड़ी देर तक बातचीत।

२१-६-४१

चर्खा संघ की सभा में पू० बापू के साथ पहुंचना।

महेश को डा० दास के यहां पहुंचाया। वहां उनके चार्ज में।

२२-६-४१

घूमते समय जानकीदेवी से, चि० शान्ता के समक्ष, स्वभाव, क्रोध,

जिद आदि की चर्चा देर तक होती रही।
श्रीमन्नारायण, दामोदर से कॉमर्स कालेज के बारे में अपने विचार स्पष्ट तौर से कहे। श्री केदार वा. चांसलर आज भी नहीं आवेंगे, उन्हें पत्र भेजना पड़ेगा। उस बारे में अपने विचार कहे व मसौदा तैयार करने को कहा।
पू० बापू के साथ चर्चा संघ की सभा में आया। आज की सभा बहुत ही गंभीर हुई। पू० जाजूजी अपना दुख कहते रो गये। पू० बापूजी को भी कल देशपाण्डे के कथन, व्यवहार से चोट पहुंची। मुझे भी। इस पर चर्चा, विचार-विनिमय, देर तक।
शारदा (चिमनलाल भाई की लड़की) का व्यवहार, क्षुद्रता व बिना जवाबदारी का रहा।
दादा, श्रीमन्नारायण, दामोदर से कालेज के बारे में देर तक चर्चा होती रही।

२३-६-४१

नालवाड़ी पैदल गये, रास्ते में चि० शान्ताबाई से मिले। बाद में चि० रमा से बातचीत की, थोड़ा आश्चर्य व दुख हुआ।
आज कॉमर्स कालेज के बारे में, वा०चा० श्री केदार को खुलासेवार पत्र मराठी में लिखकर दामोदर के साथ नागपुर भेजा।
आबिदअली बम्बई से आया। हि० हाउसिंग, मुकुन्द आदि की स्थिति खासकर हिन्दू-मुस्लिम झगड़े की हालत विस्तार से समझी।
मेरे पूछने पर कहा कि मैं अगर इस काम के लिए बम्बई आकर रहूं तो मेरा ठीक उपयोग हो सकेगा।

सेवाग्राम, २४-६-४१

सुबह घूमते समय जानकीदेवी, शान्ताबाई से बातचीत, खासकर स्वभाव, भेद, व्यवहार, मेहमान, नौकर, खानपान आदि के सम्बन्ध में। बातचीत में मुझे भी क्रोध आ गया। बाद में बुरा लगा। मैंने जानकीदेवी से कहा, शान्ताबाई के साथ जाकर बातचीत पेट भरकर लो, वगैरा।

दामोदर से श्री केदार साहब चागनर ने जो बातचीत की, वह सनदी, मामले के सम्बन्ध में। मैंने कह दिया, दो सेशन ६४-६५ विद्यार्थियों के खोल दिये जावें। लड़कों से यूनिवर्सिटी की ओपाम कह दी जावे। निर्मला, शान्तिकुमार, उनकी स्त्री, बालचन्दभाई के भाई, मास्टर, उनकी स्त्री, मथुरादास गोकुलदास के दो लड़के वगैरा आये। बातचीत, विनोद, देर तक। श्री मुन्शी व लीलावती से भी देर तक बातचीत, उनके भविष्य के प्रोग्राम के सम्बन्ध में।

२५-६-४१

सवेरे पहले घूमते समय श्री मनोज्ञा से उनकी बहन के सम्बन्ध में व रायों की व्यवस्था की चर्चा। वापस लौटते समय गोपालराव काले नागपुर जेल से छूटकर आये, उनसे बातचीत।
पू० बापूजी से घूमते समय ठीक-ठीक मन:स्थिति पर विचार-विनिमय हुआ। कल फिर बातचीत होगी।
चि० राधा गांधी के बारे में अपने मन के विचार कह दिये।
शाम को घूमते समय श्री जवाहरलालजी से महिला आश्रम के बारे में, श्री बलवन्तसिंहजी से टेकड़ी पर के खेत के विषय में, वापस लौटते समय मीराबहन से उनकी मन:स्थिति के बारे में बातचीत।
नागपुर प्रान्त कांग्रेस के काम के लिए कई कार्यकर्ता चुने—भीकूलालजी चाण्डक, काले, बजरंग ठेकेदार, मोघेजी, कन्नमवार इत्यादि।
श्री कन्हैयालाल मुंशी के स्टेटमेंट वगैरा देखे। विचार-विनिमय होता रहा।

२६-६-४१

पू० बापूजी से आज घूमते समय व बाद में १० से ११ तक एकान्त में मन:स्थिति पर साफ-साफ बातें। अपनी स्थिति ज्यादा स्पष्ट तौर से समझा सका। अब मुझे आशा हो गई कि वह मेरी स्थिति पूरी तौर से समझ गये हैं। परमात्मा ने किया तो कोई मार्ग निकल जावेगा।
आज नासिक जाने का निश्चय हुआ। तैयारी। बाद में बम्बई से फोन

आया, श्री रामेश्वरजी बिड़ला बम्बई आ गये, इसलिए मुझे पहले बम्बई आने को कहा। मैं पू० बापूजी की आज्ञा लेकर बम्बई रवाना हुआ।
चि० राधा गांधी से बातचीत, थोड़ा समझाया।
सेकण्ड से वर्धा से रवाना। हंसाबहन मेहता भी उसी डब्बे में।
बडनेरा के पास मालूम दिया, बाथरूम खुलता नहीं। बडनेरा में आखिर कांच फोड़कर दरवाजा खोला तो उसमें से एक आदमी निकला। चोरी के इरादे से था। भुसावल में मालूम हुआ कि वह डब्बा स्त्रियों का था।

बम्बई, २७-६-४१

भुसावल में दूसरा डब्बा बदलना पड़ा। ऊपर की सीट मिली।
नासिक में श्री गोपाल नेवटिया, आनन्दकिशोर मिलने आये।
दादर में केशवदेवजी, कमल, सावित्री, बिड़ला की मोटर तथा प्रहलाद पन्ना वगैरा आये। एक बार बिड़ला हाउस जाना।
बिड़ला हाउस में रामेश्वरजी से मिलना, मदनलाल पित्ती, नारायणलालजी, सर राधाकृष्णन, देवास के राजा खासेराव जाधव, रामकृष्ण डालमिया, श्री सुव्रता बहन रुइया, बाद में गोविन्दलालजी पित्ती, सुशील रुइया, सुव्रताबाई, पालीरामजी फतेचन्द तथा अन्य कई मित्र लोग आये।
प्रभुदयाल भी आये। रामेश्वरजी बिड़ला से, कमलनयन व रामेश्वर के बारे में ठीक बातचीत हुई। धर्मादे के रुपये मेरी सलाह से लगाने को कहा। उन्होंने कहा जो धर्मादे के जमा होते हैं, वह सब मेरी (जमनालाल) की सम्मति से ही लगते रहेंगे।
मैया (मां), सावित्री, बच्चों, जगदीश वगैरा से थोड़ी देर बातचीत। ब्रिज खेलना।

२८-६-४१

सुव्रताबाई, चि० सुशील रुइया से बातचीत। दो पत्र रह गये थे, वे सुव्रताबाई से मिले। उन्हें थोड़े में हाल कहा। सुशील पत्र भेजने वाला है। मदन-कान्ता से थोड़ी देर मिलना।

शान्ताबाई रिती, मदन रिसी से मिलना।
घर (शान्तिभवन) पर मालती (प्रकाशनाथ), कान्ता, मदन, इन्दु
पद्मावती व मदन रिसी मिलने आये, साथ में ही भोजन-विनोद।
मालती से व मदन रिसी से अलग-अलग बातचीत हुई। दोनों की [illegible]
मालूम हुई।
वेंकटलाल, प्रह्लाद, गंगा, टक्करबापा, मेनन, लक्ष्मणदासजी इत्यादि
तथा अन्य मित्र लोग आये।
पंजाब मेल से नासिक रवाना, साथ में रामेश्वर नेवटिया।

नासिक रोड, २९-६-४१

सुबह ही रामगोपाल केशरीलाल, कान्ता, पार्वती डीडवानिया, सावित्री,
श्री धर्मनारायणजी, सुरेन्द्र, उनकी माँ से मिलना। घूमते समय राम-
गोपाल साथ रहा। श्री कोहली सुपरिटेंडेंट, नासिक जेल से मिलना।
बापूराव सूबेदार हो गया। उनसे मिलकर खुशी हुई।
शाम को पांडव-गुफा जाकर आये। करीब दो मील पैदल चलना।
चढ़ना-उतरना। साथ में सावित्री, मैना, कमलनयन व कमल नेवटिया
थे।
जीवनलालभाई के घर गया। बाद में जीवनलालभाई आये। मुकुन्द
आयरन आदि की बातचीत।
कमल से देर तक उसके स्वभाव में जो त्रुटियाँ आदि हैं, बतलाई।

३०-६-४१

श्री जीवनलालभाई आ गये। पत्ते खेलना, बाद में मुकन्द आयरन की
स्थिति बातचीत से देर तक समझी।
सरला, रणछोड़दास, कमल, सावित्री मुझसे मिलने आये। यह
(सावित्री) भी दुःखी मालूम दी।

१-७-४१

रात भर व दिनभर पानी पड़ता रहा। बिड़ला (जूने) सेनेटोरियम के
ऊपर के बरामदे में घूमना।

रामेश्वर नेवटिया, श्रीगोपाल, कमल से बातचीत। रामेश्वर को अपने विचार नोट करा दिये। कमल को भी उसके आलस्य व असभ्यता के व्यवहार आदि के बारे में समझाया। सावित्री की माता व सावित्री से भी बातचीत। सावित्री की माता ने कहा, दोनों की भूल है, इत्यादि। मैंने अपने विचार साफ तौर से कहे।

रामेश्वर नागपुर एक्सप्रेस से बम्बई रवाना हुआ। कमल, सावित्री, राहुल, सावित्री की माता दोपहर को ३॥ की इलाहाबाद एक्सप्रेस से बम्बई रवाना हुए। कमल की इच्छा मोटर से जाने की थी। मैंने 'ना' कर दी, रेल से गये। खेलना, पत्र लिखना, धर्मनारायणजी से बहुत देर तक बातचीत।

२-७-४१

रात भर व दिन भर बरसात की झड़ लगी रही। सुबह मालूम हुआ कि कल्याण के पास रेलवे लाइन बह गई। पहले श्रीगोपाल ने स्टेशन जाकर तपास की तो पूरा पता नहीं लगा। बाद में श्रीगोपाल व मैं दोनों नासिक (देवलाली) स्टेशन गये। तपास करने से इतना ही पता लगा, कल शाम से बम्बई से कोई गाड़ी नहीं आई। बम्बई की मेल बी० बी० सी० आई० से गई। टेलीफोन का प्रयत्न दिन भर करते रहे। रे० लाइन खराब, तार की लाइन भी खराब। कल यहाँ से रामेश्वर, कमला (छोटी), बाद में सावित्री, कमल, राहुल, गैया वगैरा गये थे। उनके सुरक्षित बम्बई पहुंचने की सूचना रात के आठ बजे पहले रामेश्वर नेवटिया के फोन से, बाद में सावित्री के फोन से मालूम हुई। ये लोग आज दो बजे दिन में पहुंचे। मन की चिन्ता मिटी। जयदयाल डालमिया कल्याण तक जाकर वापस बम्बई चले गये, अब नहीं आवेंगे।

३-७-४१

आज तीन बजे बाद बरसात खुली, सूर्य-दर्शन भी हुए। शाम को दो-तीन बंगले व जमीनें देखी। जीवनलालभाई, चन्दाबहन, श्रीगोपाल साथ थे।
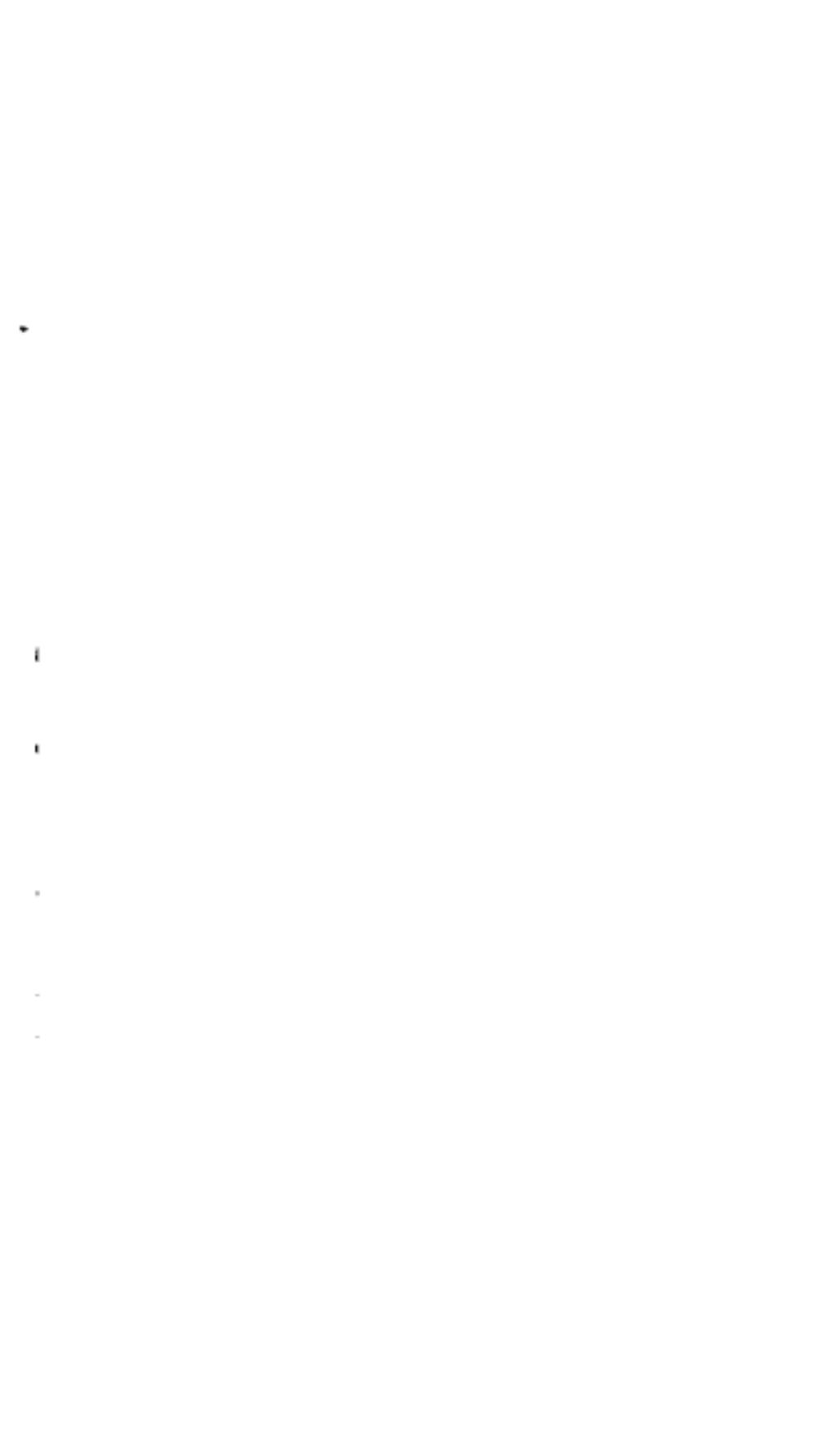
धामणगाव स्टेशन पर बारलिंगे विद्यार्थी ने कहा, बाबा सा० देशमुख अनशन कर रहे हैं। बगले जाकर तपास की, स्नान किया।

श्री बाबा सा० देशमुख विरुलकर के यहां जाना। साथ में दादा धर्माधिकारी व दामोदर थे। उन्हें समझाया। बाद में उन्होंने मोसम्मी का रस मेरे हाथ से लिया। उनकी हालत दयनीय व चिन्ताजनक है।

भोजन के बाद पू० बापू से मिलना। बातचीत, शिमला कार्यक्रम ता० १५ को जाना निश्चय।

चि० शान्ता, रमा से देर तक बातचीत, अन्य व्यवहार।

सरदार पृथ्वीसिंह आज बम्बई से आये। बातचीत।

९-७-४१

सुबह आठ बजे घूमने निकलना, सरदार पृथ्वीसिंह, शान्ताबाई साथ में। सेवाग्राम पैदल। बापू रास्ते में मिले, विनोद।

बालारामजी चूड़ीवाले की स्त्री मणीबाई आई। धर्मादे की रकम को निकाल, पद्रह सौ रु० कोढ़ी सस्था को दिया, गोरक्षण में आठ सौ करीब, महादेव मदिर।

नागपुर बैंक का झगडा पूनमचन्द व रिषभदास रांका को समझाया। बाजूजी के फैसले की नकल दोनों को दिखाई। काफी समय लगा। दुःख भी हुआ। चोट भी पहुची।

पू० बापू से तीन से चार बजे तक बातचीत। शिमला में राजकुमारी को, बापू ने कहा, मेरी मानसिक स्थिति पूरी तरह बता दी है। राजकुमारी का आया हुआ पत्र भी पढ़ा।

बापू गोपीचन्द डाक्टर को जलियांवाला बाग के बारे में लिखेंगे। पृथ्वीसिंह के बारे में मैंने अपने विचार कहे। मुझे यह योजना आवश्यक मालूम देती है। डा० सुशीला की मातृ गा में व्यवस्था प्रह्लाद को समझाई। मेहता का इलाज, जेल में आने की परवानगी नहीं देना। वासन्ती के बारे में बापू ने कहा, धीरेन्द्र नहीं है, इसलिए खुलासा नहीं हो सकता।

१०-७-४१

सुबह ४। बजे उठना। पैदल सेवाग्राम।
पू० बापू से वक्तव्य देने व जेल जाने के बारे में विचार-विनिमय। जे
जाने की नजदीक भविष्य में इजाजत नहीं, मानसिक व शारीरिक श
आने पर ही विचार होगा। वक्तव्य निकालने की जरूरत नहीं। श्रीम
से हृदयनारायणजी के बारे में बातचीत।
डा० जीवराज मेहता बम्बई से आये, बातचीत।
चिरंजीलाल बड़जाते ने ब+ज० का आंकड़ा समझाया, जमा-खर्च वगैरा
समझाया। मेरी इच्छा उन्हें बतायी कि ब+ज में एक पाई जमा न
रहे। जमा रखने वाले नहीं माने तो खाते जमनालाल सन्स में हवाले
डाल दिये जायें। लक्ष्मीनारायण मंदिर ट्रस्ट बढ़ाया जाय।
चि० कृष्णा बजाज ने पत्र दिया। उसे समझाकर सारी स्थिति कही।
उसे कह दिया, तुम लोग अच्छी तरह से इन्दौर में रहोगे तो तीस रु०
मासिक भेजता रहूंगा। जहां तक संभव होगा। अगर तू अपनी जिम्मे-
वारी पर दुकान करना चाहता है तो हजार-पन्द्रह सौ रुपये देने का
विचार करूंगा। बाद में मासिक सहायता नहीं मिलेगी।
डा० सुशीला बम्बई गई। श्री अब्दुल गफ्फार खां शाम को आये। देर
तक बातचीत।
किशोरीलाल भाई, जाजूजी को बाबा साहब के बारे में अपने विचार
बताये।

११-७-४१

मां के भजन, बातचीत। गुलाब को कुछ देने के बारे मे खुलासा किया।
बरसात रात भर होती रही, खासकर सुबह भी पानी बरसता रहा।
घूमने जाना नही हो सका। पीछे के बरांडे में थोड़ा घूमना। दिन भर
बरसात व हवा का जोर रहा। मोटर सेवाग्राम के रास्ते मे फेल हो
गई। खान साहब, नायजी, वहा नहीं जा सके। श्रीमन्नारायण, पार्वती

मोटर में २॥-३ घंटे बैठे रहे।
डा० जीवराजजी मेहता कलकत्ता गये। पार्वती डिडवानिया मेल से नागपुर गई।
शाम को वर्धा थोड़ी घूमी। सेवाग्राम मोटर से गये, खान साहब साथ में। डा० दास, महेश, जानकीदेवी, मदू से बातें। भटपट वापस। महादेवभाई देसाई साथ आये।
महादेवभाई ने देहरादून जेल में जवाहरलाल से जो बातें हुईं वे विस्तार से कहीं। सुनकर सुख व समाधान मिले। भूलाभाई, मौलाना के विचार, स्थिति समझी। कोई आश्चर्य नहीं हुआ। सरदार, मुन्शी वगैरा के बारे में बातें हुईं।

१२-७-४१

रामकिशनजी डालमिया दुर्गाबहन (उनकी स्त्री) बम्बई से आये, बातचीत। उनके ज्योतिषी भी सकुटुम्ब मद्रास से आये। जन्मपत्री मिल गई। महादेवभाई दिल्ली गये।
सेवाग्राम, बापू से मिलना, जानकीदेवी, मदालसा से बातचीत।

१३-७-४१

सेवाग्राम पैदल जाना। वहां बापू के साथ बराडे में घूमना। स्वास्थ्य के बारे में, शिमला के बारे में सूचना।
रामकिशन डालमिया से बातें। उन्होंने जन्मपत्री, मेरी, मदालसा की व चि० शान्ता की सुनायी।
बापू के पास विनोबा, काका साहब, अखाड़े, लाठी, तलवार, सिखाने की ठीक चर्चा। बम्बई हिन्दी प्रचार के बारे में काकासाहब व नाणावटी की भूल पर बापू ने ठपका दिया।
रात को—नायजी, किशोरीलालभाई, जाजूजी, गोमतीबहन के साथ रामकिशन डालमिया ने देर तक ज्योतिष-शास्त्र के महत्व पर विचार-विनिमय किया।

वर्धा, १४-७-४१

सुबह जल्दी उठना। लक्ष्मी व मां ने भजन भी सुनाये। वे गंगाविसन के हिसाब के बारे में देर तक कहती रही, शुरू से आखिर तक। पैदल सेवाग्राम जाने की तैयारी। बिरदीचन्द बंग वगैरा मिले। बातचीत। बाद में वासन्ती साथ हुई। मीराबहन की स्थिति पर विचार-विनिमय। वासन्ती की स्थिति पर भी। बाद में जानकीदेवी, श्रीमन, मदालसा मिले। वापस शान्ताबहन के घर आना। साढ़े पांच मील घूमना। शान्ताबाई के यहां नाश्ता। कमला लेले से आश्रम के बारे में बातचीत।

बापू की जन्म-कुण्डली डालमिया ने सुनाई, मालिश के समय। विनोबा का सत्याग्रह, नालवाड़ी में ६ बजे शाम को। भाषण पौन घंटा ठीक हुआ। विनोबा भाषण व भोजन के बाद गिरफ्तार कर लिये गए। बापू, सेवाग्राम, प्रार्थना। बापू से मन:स्थिति पूछी। कहा, कोई सुधार नहीं हुआ। रामकृष्ण व दुर्गाबहन डालमिया से बातचीत—उन्हें समझाया।

वर्धा, इटारसी, भोपाल रेलवे, १५-७-४१

जानकीदेवी के साथ घूमना। महिला आश्रम, काका साहब, नालवाड़ी जेल होते हुए बंगले पर आना। जानकीदेवी से भावी जीवन के बारे में बातचीत।

श्रीमन्नारायण से सोशल सर्विस व फिजिकल कल्चर कालेज के बारे में बातचीत होती रही।

जेल में पू० विनोबा से एक घंटे तक (६-१० से ७-१५ बजे तक) ठीक बातें हुईं।

अभंग सुना।

ग्रांड ट्रंक एक्सप्रेस (विट्ठल साथ में) सेकण्ड में शिमला के लिए रवाना। श्री रामकिशन डालमिया व दुर्गाबहन साथ में थी। रास्ते में खूब दिल . . . खानगी जन्म-कुण्डली, भावी जीवन, सार्वजनिक सेवा-भार

पर विचार-विनिमय होता रहा। गो सेवा, सोशल सर्विस, फिजिकल कल्चर कालेज, महिला शिक्षा मंडल, नव भारत छात्रालय आदि के बारे में निर्णय नहीं हुआ।

घनश्यामदासजी बिड़ला से भेंट हुई। बातचीत नहीं हो सकी। मुलाकात हो गई।

इटारसी व होशंगाबाद में भी कुछ मित्र आए। लाला अर्जुनलाल जी से बातचीत।

विनोबा को एक वर्ष की सादी सजा हुई, 'बी०' वर्ग में।

आगरा, दिल्ली, १६-७-४१

आगरा से मथुरा तक श्री रामकृष्ण डालमिया से बातचीत। कल जो बातें की थी, उन्हीं पर और भी कुछ विचार-विनिमय।

गो सेवा संघ में पू० बापूजी की इच्छा व आज्ञा मुजब काम करना है। वर्धा में सोशल सर्विस कालेज या। फिजिकल कल्चर कालेज स्थापित करना है। महिला शिक्षा मण्डल को सहायता, 'कमला मेमोरियल फण्ड को मदद। फिलहाल यही निश्चय हुआ। अभी पच्चीस हजार रु० वह मेरे पास भेज देंगे, उसमें से नवभारत छात्रालय, एक-दो क्वाटर, तालाब वगैरह में मेरी इच्छा मुजब खर्च करना है। पुरानी योजनाओं का भी वह गंभीरतापूर्वक विचार करेंगे। मुकुन्द के शेयर लाहौर के कारखाने की कीमत बाबत मुकुन्दलाल से बात करना।

दिल्ली में सीतारामजी सेकसरिया, रामगोपाल गाडोदिया स्टेशन पर आये। गाडोदियाजी के यहां ठहरना। चि० शांति की बच्ची से खेलना। टब-स्नान, भोजन, आराम। यहां गर्मी बहुत ज्यादा पड़ती है। श्री वियोगी हरि, देवीदास गांधी, प्रभुदयाल अग्रवाल, परमेश्वरी प्रसाद, विन्ध्या वगैरा मिले। हरिजन कालोनी में ठक्करबापा से मिलना। बुढी (हरिजन) से भजन सुनना। बाद में रात को कालका मेल से १। घंटा लेट रवाना होना।

शिमला वेस्ट, १७-७-४१

कालका से शिमला, ५६ मील मोटर में। मोटर किराया ११ रुपये,

एक रु. सोहनलाल ड्राइवर को इनाम। कमीशन एजेन्ट ने एक रुपया ठगकर लिया, मालूम दिया।

आज जन्म मे प्रथम बार राजकुमारीबहन के रिक्शा मे बैठना पड़ा, क्योंकि मवीबवश का आग्रह था, वर्षा पड़ रही थी, राजकुमारीबहन भोजन की राह देख रही होंगी, इन्ही सब विचारों के कारण।

राजकुमारीबहन, शमशेर जंग व उनकी स्त्री मिले। स्नान, भोजन, बातचीत, बापू को तार, पत्र भेजे।

श्री त्रिवेदी का पता लगाना शुरू किया। व्यवस्था बहुत ही उत्तम, आराम, चि० मदू को पत्र भेजा।

घूमने ५। से ६॥ बजे तक। करीब पौने तीन मील, राजकुमारीबहन साथ में।

चर्खा — आध घंटा। बाद में भोजन। सब्जी स्टीम की हुई। आलू भी स्टीम किये हुए दूध के साथ। पेट भी भरा। सन्तोष मिला। पानकी भाजी अच्छी लगी।

१८-७-४१

घूमते-घूमते साढ़े पांच बजे गये। पौने सात बजे आये। साथ में बूढ़े रामकृष्णजी (राजपूत), तोफा बाई (कुतिया)। मुंशीजी की उमर आठ वर्ष की है तो भी उत्साह, स्फूर्ति ठीक है। इनके घर में यह पेंशनीय वर्ष से काम करते हैं। ईमानदार, खैरख्वाह हैं। कुटुम्बियों के प्रम हो रहे हैं। तोफा की देखरेख व सेवा तो इतनी ज्यादा होती है कि अमीरों के लड़कों को भी इतना सुख नसीब नही होता। इसके सुख को देखकर किसी को ईर्ष्या हो तो आश्चर्य नही होना चाहिए।

बापू का हृदय-स्पर्शी पत्र मिला। जवाब भेजा। प्रभावती के पत्र का जवाब भेजा।

मि० एच० मॉरिस लंकास्टर मिलने आये। बातचीत होती रही।

समरहिल स्टेशन पर राजकुमारीबहन के साथ घूमना।

जर्मन रेडियो सुना।